शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

प्रथम सत्र : बीजपत्र MM1

आधुनिक गद्य साहित्य

द्वितीय सत्र : बीजपत्र MM5

आधुनिक गद्य साहित्य

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नुसार सुधारित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2023-24 से)

एम. ए. भाग–1 : हिंदी

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2024
एम. ए. भाग 1 (हिंदी)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 500

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN-978-93-89345-22-3

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी- शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सलाहकार समिति ■

प्रो. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रो. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रो. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. एस. महाजन
अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) श्रीमती एस. एच. ठकार
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) डी. के. मोरे (सदस्य सचिव)
संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ हिंदी अध्ययन मंडल ■

अध्यक्ष

प्रो. डॉ. साताप्पा शामराव सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

सदस्य

- **प्रो. डॉ. नितीन चंद्रकांत धावडे**
  मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा
- **डॉ. श्रीमती मनिषा बाळासाहेब जाधव**
  आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, ११७, शुक्रवार पेठ, सातारा-४१५ ००२.
- **डॉ. श्रीमती वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
  श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. हणमंत महादेव सोहनी**
  सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) अशोक विठोबा बाचुळकर**
  आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
  कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स ॲण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
  आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा
- **प्रो. डॉ. अनिल मारुती साळुंखे**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा, जि. सोलापुर-४१३२०३
- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
  श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपूर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत**
  प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात**
  आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली
- **डॉ. परशराम रामजी रगडे**
  शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की दूरशिक्षा योजना के अंतर्गत स्नातकोत्तर हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित अध्ययन सामग्री, नियमित रुप से प्रवेश न ले पाने वाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इसमें एक ओर विश्वविद्यालय की सामाजिक संवेदनशीलता दिखाई देती है, तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचित छात्रों को सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्धता स्नातक स्तर तक की अध्ययन सामग्री से दूरशिक्षा योजना के छात्र जिस तरह लाभान्वित हुए हैं, उसी तरह स्नातकोत्तर स्तर के छात्र भी प्रस्तुत स्वयं-अध्ययन सामग्री से लाभान्वित होंगे, यह विश्वास है।

दूरशिक्षा के छात्रों का महाविद्यालयों तथा अध्यापकों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से कोई संबंध नहीं आता। उनकी इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन सामग्री को सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पुनर्रचित पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र का स्वरुप तथा अंक-वितरण को ध्यान में रखकर अध्ययन-सामग्री को आवश्यकतानुसार विस्तृत तथा सूक्ष्म रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमें आशा ही नहीं, बल्कि विश्वास भी हैं कि प्रस्तुत अध्ययन सामग्री स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

प्रस्तुत सामग्री सामूहिक प्रयास का फल है। शिवाजी विश्वविद्यालय के मा. कुलपति, सम-कुलपति, कुलसचिव, अधिष्ठाता, मानव्य विद्या शाखा, दूरशिक्षा विभाग के संचालक एवं उनके सभी सहयोगी तथा इकाई लेखक आदि के सक्रिय सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद।

■ **सम्पादक** ■

प्रो. डॉ. सुनील बापू बनसोडे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर,
ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर

डॉ. प्रवीणकुमार चौगुले
श्रीमती कस्तुरबाई वालचंद कॉलेज ऑफ
आर्टस् ॲण्ड सायन्स, सांगली

(v)

लेखकाचे नाव	घटक क्रमांक	
	सत्र-1	सत्र-2
★ **प्रो. (डॉ.) नितीन धवडे** मुधोजी कॉलेज फलटण, ता. फलटण, जि. सातारा	1	-
★ **प्रो. (डॉ.) रमेशकुमार गवळी** कृष्णा महाविद्यालय, रेठरे बुद्रुक, पो. शिवनगर, ता. कराड, जि. सातारा	2	-
★ **डॉ. प्रकाश मुंज** पोस्ट डॉक्टर फेलो, हिंदी अधिविभाग, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर	3	4
★ **डॉ. प्रवीणकुमार चौगुले** श्रीमती कस्तुरबाई वालचंद कॉलेज ऑफ आर्ट्स अ‍ॅण्ड सायन्स सांगली	4	1
★ **श्री. संतोष साळुंखे** नाईट कॉलेज ऑफ आर्टस अ‍ॅण्ड कॉमर्स, इचलकरंजी	-	2
★ **प्रो. डॉ. सुपर्णा संसुद्धी** जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर	-	3

■ **सम्पादक** ■

प्रो. (डॉ.) सुनील बनसोडे
जयसिंगपुर कॉलेज, जयसिंगपुर,
ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर

डॉ. प्रवीणकुमार चौगुले
श्रीमती कस्तुरबाई वालचंद कॉलेज ऑफ आर्ट्स
अ‍ॅण्ड सायन्स, सांगली

अनुक्रम

इकाई		पृष्ठ
	सत्र–1 बीजपत्र–MM1 : आधुनिक गद्य साहित्य	
1.	गोदान (उपन्यास) – प्रेमचंद	1
2.	स्कंदगुप्त (नाटक) – जयशंकर प्रसाद	55
3.	हादसे (आत्मकथा) – रमणिका गुप्ता	83
4.	कथा मंजरी (कहानी–संग्रह) – संपा. डॉ. महेन्द्र कुलश्रेष्ठ	107
	सत्र–2 बीजपत्र–MM5 : आधुनिक गद्य साहित्य	
1.	धरती धन न अपना (उपन्यास) : जगदीश चन्द्र	191
2.	काला पत्थर (नाटक) – डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र'	229
3.	माटी की मूरतें (रेखाचित्र–संग्रह)– रामवृक्ष बेनीपुरी	266
4.	श्रेष्ठ निबंध – संपादक डॉ. अशोक गुप्त	293

हर इकाई की शुरूआत उद्देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्ध होगी।

इकाई –1
गोदान (उपन्यास) प्रेमचंद

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 प्रेमचंद जी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व, कृतित्व

1.3.2 उपन्यासकार प्रेमचंद

1.3.3 'गोदान' उपन्यास का परिचय

1.3.4 'गोदान' का कथानक

1.3.5 'गोदान' के प्रमुख पात्र

1.3.6 'गोदान' में चित्रित समस्याएँ

1.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं-अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने से आप

1. प्रेमचंद जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2. हिंदी साहित्य की एक सर्वोत्कृष्ठ रचना से परिचित हो जाएँगे।
3. गोदान में चित्रित सामंती मनोवृत्ति के बीच फँसे निम्न-वर्गीय समाज की स्थिति को जान सकेंगे।
4. गोदान के कथानक के केंद्र में होनेवाले भारतीय किसानों के जीवन-संघर्ष से परिचित होंगे।

5. गोदान में चित्रित पात्रों को तथा उनकी चारित्रिक विशेषताओं को जान सकेंगे।

6. गोदान में चित्रित समस्याओं से अवगत होंगे।

7. भारतीय जन-जीवन तथा ग्रामीण और शहरी परिवेश के अंतर्द्वंद्व को जान सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना

हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद जी का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने हिंदी उपन्यास साहित्य को एक नई दृष्टि और यथार्थ की नई भूमि प्रदान की हिंदी उपन्यास की विकासयात्रा में प्रेमचंद जी के बहुमूल्य योगदान को देखते हुए आलोचकों ने उन्हें 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से अलंकृत किया है। बहुआयामी प्रतिभा के धनी प्रेमचंद जी ने कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना, बाल-साहित्य आदि विधाओं में साहित्य लेखन किया। उनका रचना संसार बहुत बड़ा और समृद्ध है हिंदी कहानी और उपन्यास की चर्चा प्रेमचंद जी के बिना अधूरी है। प्रेमचंद जी का साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने समय में रहा है। उनके कथा साहित्य में समकालीन परिस्थितियों का जो सूक्ष्म अंकन हुआ है, वह साहित्य की उत्कृष्ठता का उत्तम उदाहरण है। हिंदी साहित्य में अनेक साहित्यकारों द्वारा अनेक उपन्यासों की रचना हुई है। इन उपन्यासों में कुछ उपन्यास अधिक चर्चित और प्रसिद्ध भी रहे हैं। लेकिन इन सभी उपन्यासों में प्रेमचंद जी का 'गोदान' सर्वाधिक प्रसिद्ध, चर्चित एवं सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इसे कृषक जीवन का महाकाव्य भी कहा गया है। उपन्यास में यह कृषक जीवन होरी के माध्यम से चित्रित हुआ है। होरी पूरे भारतीय किसानों का प्रतिनिधित्व करता हुआ दिखाई देता हैं। अर्थात गोदान की कथा केवल अकेले होरी की कथा नहीं हैं, बल्कि पूरे भारतीय किसानों की कथा-व्यथा है।

उपन्यास में प्रेमचंद जी ने जमींदारी प्रथा का विरोध करते हुए छुआछूत, सामाजिक असमानता और भेदभाव जैसी समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत उपन्यास मूलत: कृषक जीवन की समस्याओं को केंद्र में रखकर लिखा गया है। किसान जीवन के अलग-अलग पहलुओं को प्रेमचंद जी ने बारीकी से उपन्यास में उजागर किया है। वैसे तो इस उपन्यास में किसानों की ऋण-समस्या को केंद्र में रखा गया है। लेकिन उसी के साथ-साथ अन्य समस्याओं को भी प्रेमचंद जी ने रेखांकित किया है। गाँव की प्रकृति और वहाँ के जनजीवन का वास्तविक चित्रण उपन्यास में दिखाई देता है। कृषक जीवन की दुःखभरी कहानी को प्रेमचंद जी ने इतनी तल्लीनता और आत्मीयता से प्रस्तुत किया है कि ऐसा चित्रण हमें अन्य जगहों पर बहुत कम दिखाई देता है।

'गोदान' का कथानक ग्रामीण जीवन पर आधारित कथानक है। उपन्यास का नायक होरी एक भारतीय किसान है। गोदान में भारतीय ग्रामीण परिवेश के अनेकमुखी दर्शन होते हैं। भारतीय किसानों के जीवन के समस्त संस्कारों से युक्त उसकी वर्तमान स्थिति का चित्रण उपन्यास में मिलता है। आरंभ में अपने घर गाय रखने की होरी की तीव्र इच्छा दिखाई देती है। वह किसी तरह गाय लेकर भी आता है। लेकिन वह उस गाय को रख सकने में असमर्थ हो जाता है। उसे अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। और अंत में जब वह मरता है, तब परिवार के पास न गाय होती है, न पैसा। उसकी पत्नी धनिया बीस आने का 'गोदान'

करती है। इस तरह उपन्यास के आरंभ और अंत में भारतीय किसानों की दयनीय स्थिति उजागर होती है। भारतीय ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर कर, ग्रामीण जीवन की स्थिति एवं परिवेश को रेखांकित करना ही इस उपन्यास का उद्देश्य है।

प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद जी यह बताना चाहते हैं कि, महाजनी युग में किसान के लिए अपने अस्तित्व को बनाए रखना असंभव हो गया था। उपन्यास का नायक होरी जीवनभर अपने अस्तित्व के लिए जीवन संघर्ष करता रहता है। लेकिन अंतत: उसे मजदूर बनना पड़ता है। उपन्यास में लेखक ने समस्या से ज्यादा चरित्र के विकास पर बल दिया है। इसीलिए होरी भारतीय किसान के मूर्तिमान सजीव रूप में हमारे सामने उपस्थित होता है। किसानों और मजदूरों के होनेवाले शोषण को उजागर करने के लिए प्रेमचंद जी ने इस उपन्यास में ग्रामीण एवं नागरी जीवन की कहानी को प्रस्तुत किया है। उनका मानना है कि किसानों और मजदूरों का शोषण गाँव और नगर के सभ्य और बदमाश दोनों मिलकर करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। अपनी कड़ी मेहनत से सभी का पेट भरनेवाला किसान ही भूखा क्यों रहता है? उसकी गरीबी एवं अभाव-भरी जिंदगी समाप्त क्यों नहीं होती? उसकी छोटी-छोटी अभिलाषाओं की पूर्ति क्यों नहीं होती? आजीविका चलाने हेतु किसानों एवं मजदूरों की ओर से कई स्तरों पर किए जानेवाले जीवन संघर्ष का अंत कब होगा? मानो इसी तरह के अनेक सवाल प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखक प्रेमचंद हमारे सामने उपस्थित करते हैं।

1.3 विषय विवेचन

3.1 प्रेमचंद जी का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व –

भारतीय साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रेमचंद आधुनिक भारत के उन कथाकारों में से हैं, जिन्होंने अपने साहित्य में भारतीय ग्रामीण जीवन का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने लेखन का सीधा संबंध जन-जीवन के साथ स्थापित किया। जिससे भारतीय साहित्यिक परंपरा में एक नए युग का प्रारंभ हुआ। इसलिए प्रेमचंद जी को हिंदी साहित्य का युग-प्रवर्तक साहित्यकार कहा जाता है। वे केवल हिंदी साहित्य में परिवर्तन लानेवाले साहित्यकर नहीं थें, बल्कि उनके साहित्य के प्रभाव से पूरे भारतीय साहित्य को एक नई दृष्टि और दिशा मिली।

जीवन परिचय :-

जन्म, जन्म स्थान और नाम :-

प्रेमचंद जी के जन्म के संदर्भ में विद्वानों में मत-मतांतर हैं। लेकिन उनके पिताजी द्वारा उनकी जन्म-कुंडली बनवाई थी। उस जन्म-कुंडली के अनुसार उनकी जन्म-तिथि 31 जुलाई, 1880 ई. है और इसी को ही उनकी प्रामाणिक जन्म तिथि के रूप में स्वीकार किया गया है। उनका जन्म 'लमही' नामक गाँव में हुआ था, जो बनारस के पास है। प्रेमचंद को बचपन में कहानी सुनना अच्छा लगता था। उनकी दादी उन्हें कहानियाँ सुनाती थी। प्रेमचंद के मन पर इन कथाओं का बहुत प्रभाव पड़ा पिताजी की आमदनी कम होने

के कारण उनका बचपन गरीबी में बीता। प्रेमचंद जी का वास्तविक नाम धनपतराय था। लेकिन लोग उन्हें स्नेह से 'नवाबराय' इस नाम से पुकारते थें। 'नवाबराय' इस नाम से ही उन्होंने उर्दू में साहित्य सृजन किया है हिंदी साहित्य में लेखन के लिए उन्होंने 'प्रेमचंद' यह नाम धारण किया। आगे चलकर वे इसी नाम से हिंदी साहित्य में ही नहीं बल्कि वैश्विक साहित्य स्तर पर प्रसिद्ध हुए।

परिवार : –

प्रेमचंद का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ। उनके पिताजी का नाम 'अजायबराय' और माता का नाम 'आनंदीदेवी' था। उनके पिताजी डाक में मुंशी थे। उनको तीन बहनें थी। उनमें से दो की असमय मृत्यु हुई। प्रेमचंद के बचपन में ही उनके माताजी की मृत्यु हुई। उस समय प्रेमचंद केवल आठ साल के थें पिताजी ने दूसरा विवाह किया। विमाता से उन्हें कभी माँ का प्रेम प्राप्त नहीं हुआ। अर्थात माँ के लाड-प्यार से उन्हें वंचित ही रहना पड़ा। पंद्रह वर्ष की आयु में ही उनका विवाह हुआ। कहा जाता है कि उनकी पहली पत्नी बहुत झगडालू थी। पत्नी के साथ उनकी कभी नहीं बनी। झगडालू पत्नी के कारण उन्हें पारिवारिक सुख नहीं मिला। पहली पत्नी के चले जाने के बाद सन 1909 ई. में उन्होंने बाल-विधवा शिवरानी देवी के साथ अपना दाम्पत्य जीवन शुरू किया।

शिक्षा :–

प्रेमचंद की आरंभिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। पहले वे मौलवी साहब से उर्दू- फारसी पढ़ते रहें इसके उपरांत काशी के क्वींस कॉलेज में उन्होंने दाखिला लिया। पिताजी के मृत्यु के करण वे मॅट्रिक की परीक्षा नहीं दे पाए थें। अगले वर्ष उन्होंने दूसरी श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की गणित में कमजोर होने के कारण इंटर की परीक्षा में वे अनुत्तीर्ण हुए। फिर भी शिक्षा तथा पढ़ने की उनमें अत्यधिक लालसा थी। लेकिन आर्थिक अभावभरी स्थितियाँ उनकी शिक्षा में बाधा बन रही थी। इसलिए नौकरी करते हुए उन्होंने इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण की और बाद में गोरखपुर में रहकर बी.ए. की उपाधि प्राप्त की।

नौकरी :–

आर्थिक स्थिति संतोषजनक न होने के कारण प्रेमचंद को विद्यार्थी जीवन में नौकरी की आवश्यकता थी। प्रारंभ में वे ट्यूशन पर काम चलाते थें। फिर उन्होंने मिशन स्कूल में अध्यापन करना शुरू किया। मैट्रिक की परीक्षा में सफल हो जाने पर वे शिक्षा विभाग में नौकरी करने लगे थे। अपनी नौकरी में वे अपने प्रयास और योग्यता के बल पर 'डिप्टी इंस्पेक्टर ऑफ़ स्कूल' इस पद तक पहुँच गए थें। इस समय देश में आजादी के आंदोलन ने पूरा जोर पकड़ लिया था। गांधी जी के असहयोग आंदोलन और विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दिया। इसके बाद उन्हें अनेक प्रकार के आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ा 'मर्यादा', 'जागरण', तथा 'हंस' पत्रिकाओं का उनके द्वारा संपादन किया गया। आजीविका चलाने के लिए उन्होंने बंबई फिल्म कंपनी में भी काम किया।

मृत्यु : – प्रेमचंद की मृत्यु 08 अक्तूबर, 1936 ई. को हुई।

प्रेमचंद जी का व्यक्तित्व :-

व्यक्तित्व :-

प्रेमचंद जी के व्यक्तित्व को बताने के लिए अनेक विचारकों ने उनके साहित्य में व्यक्त विचारों का आधार लिया हुआ दिखाई देता है। अर्थात प्रेमचंद जी के व्यक्तित्व को लेकर विचारकों में मत भिन्नता दिखाई देती है। प्रेमचंद जी प्रारंभ में आर्य समाज की सुधारवादी भावना से प्रभावित थें। विचारकों का एक वर्ग उन्हें आदर्शवादी मानता है, तो दूसरा यथार्थवादी। परंतु प्रेमचंद जी ने स्वयं को आदर्शोन्मुख यथार्थवादी घोषित किया था। वे गांधी जी के अहिंसा और सत्याग्रह में विश्वास तो करते थें, परंतु पूर्ण रूप से नहीं प्रेमचंद जी ने हिंसक क्रांति का पूरी तरह से कभी भी समर्थन नहीं किया। वे तो हिंसक क्रांति के आंशिक समर्थक थें।

उनके व्यक्तित्व की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि, वे विशुद्ध रूप से न तो गांधीवादी थें और न ही मार्क्सवादी। उन्होंने इन दोनों विचारधाराओं की मान्यताओं को अपनी दृष्टि से मानव कल्याण के लिए स्वीकार किया था। वे तो मनुष्य को सिद्धांत से ऊपर मानते थें। उनके व्यक्तित्व में गांधीवाद और प्रगतिवाद दोनों ही विचारधाराओं का संघर्ष मिलता है। इसीलिए तो उनकी रचनाओं में उन्होंने इन दोनों विचारधाराओं का समन्वय करने का प्रयास किया हुआ दिखाई देता है। इस प्रकार प्रेमचंद जी के व्यक्तित्व को लेकर हम कह सकते हैं कि आरंभ में प्रेमचंद आदर्शवादी थें। अत: उनके आरंभिक रचनाओं में इसके दर्शन होते हैं, लेकिन जब उन्होंने देखा कि केवल आदर्शवाद से समाज में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा, तो वे आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी बने और उस प्रकार की रचनाओं का उन्होंने सृजन किया। लेकिन उन्होंने देखा कि इससे भी समाज में कोई परिवर्तन नजर नहीं आ रहा है तो वे पूरी तरह से यथार्थवादी बने। 'कफन' कहानी और 'गोदान' उपन्यास इसका उत्तम उदाहरण है।

प्रेमचंद का कृतित्त्व

कृतित्त्व :-

हिंदी साहित्य को एक कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में प्रेमचंद जी की बहुत बड़ी देन है। उपन्यासकार तथा कहानीकार के रूप में उनकी अपनी एक विशेष पहचान है। उनकी कई रचनाएँ वैश्विक साहित्य के स्तर पर सर्वोत्कृष्ट रचनाओं के रूप में स्थापित हो चुकी हैं। विश्व की कई भाषाओं में उनकी रचनाओं का अनुवाद भी हो चुका है। अनेक रचनाओं का दूरदर्शन पर धारावाहिक के रूप में प्रसारण भी हो चुका है। कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, आलोचना, निबंध, संपादन आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने अपनी कलम चलाई है। प्रेमचंद जी ने अपने साहित्यिक जीवन का प्रारंभ उर्दू साहित्य लेखन से किया था। उर्दू में वे 'नवाबराय' इस नाम से लिखते थें। उनका पहला कहानी-संग्रह 'सोजेवतन' अंग्रेज सरकार ने जप्त किया था। अंग्रेज सरकार की नीति और व्यवहार को देखकर उन्होंने 'प्रेमचंद' इस उपनाम से लिखना आरंभ किया। आगे चलकर वही नाम उनकी पहचान बन गया। उनके कृतित्व का संक्षेप परिचय निम्नांकित है।

कहानी साहित्य : –

प्रेमचंद जी ने लगभग 300 से भी अधिक कहानियों का सृजन किया। उनकी यह कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ खण्डों में प्रकाशित है। उनकी पहली कहानी 'पंच परमेश्वर' सन 1916 ई. में प्रकाशित हुई थी। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में किसान, दीन, दलित, मजदूर वर्ग का शोषण और उनपर होनेवाले अन्याय का चित्रण किया हैं। सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं को केंद्र में रखकर भी उन्होंने अनेक सुंदर कहानियों का सृजन किया है। उनकी प्रमुख कहनियाँ इस प्रकार हैं – 'कफ़न' 'सवा सेर गेहूँ', 'बूढी काकी' 'सज्जनता का दंड', 'ठाकुर का कुँआ', 'बड़े घर की बेटी', 'ईदगाह', 'शतरंज के खिलाडी', 'पूस की रात', 'आत्माराम', 'दूध का दाम', 'दो बैलों की कथा' आदि।

उपन्यास साहित्य :–

उपन्यास–सम्राट के रूप में प्रसिद्ध प्रेमचंद जी का उपन्यास साहित्य हिंदी साहित्य की अमूल्य निधी है। हिंदी उपन्यास साहित्य को एक नई दिशा प्रदान करने की दृष्टि से उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। इसीलिए तो जिस काल में प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों की रचना की, वह काल हिंदी उपन्यास के विकासक्रम में 'प्रेमचंद युग' के नाम से जाना जाता है। उनके द्वारा लिखे गए उपन्यासों का संक्षेप में परिचय निम्लिखित है।

1) **सेवासदन –** 'सेवासदन' यह प्रेमचंद जी का हिंदी में लिखा पहला उपन्यास है। सन 1918 ई. में इसका प्रकाशन हुआ इस उपन्यास में दहेज–प्रथा और अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण किया गया है। उपन्यास में वेश्याओं की स्थिति का भी चित्रण कर उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त हुई है। उनकी इस स्थिति के लिए व्यवस्था को जिम्मेदार माना गया है।

2) **प्रेमाश्रम –** सन 1921 ई. में प्रकाशित इस उपन्यास में जमींदार तथा किसानों के संघर्ष को दिखाया है। प्रेमचंद ने किसान जीवन को आधार बनाकर इस उपन्यास की रचना की है। इसमें जमींदार तथा किसानों के संघर्ष को दिखाया है। किसानों के ऊपर होने वाले अन्याय, अत्याचार और शोषण का जीवंत चित्रण इस उपन्यास में मिलता है।

3) **रंगभूमि –** 'रंगभूमि' आकार की दृष्टि से सबसे बड़ा उपन्यास है। इसका प्रकाशन सन 1924 ई. हुआ। यह उपन्यास असहयोग आंदोलन के दौरान लिखा होने से इसका प्रभाव उपन्यास की विषयवस्तु पर सर्वत्र दिखाई देता है। गांधीवाद से प्रभावित इस उपन्यास का नायक 'सूरदास' दलित है। अत: दलित जीवन का चित्रण उपन्यास में अधिक मात्रा में हुआ है। उपन्यास में पूँजिपति एवं सामंतों द्वारा किए जानेवाले शोषण, अन्याय और अत्याचार का वास्तविक चित्रण मिलता है।

4) **कायाकल्प –** सन 1926 ई. प्रकाशित इस उपन्यास में अपनी मानवतावादी दृष्टि का परिचय देते हुए प्रेमचंद जी ने सांप्रदायिक समस्या को विषय बनाया है। साथ ही गरीबों की दयनीय दशा, विवशता तथा उन–पर होने वाले अन्याय अत्याचार का भी चित्रण किया गया है।

5) **निर्मला –** सन 1927 ई. में प्रकाशित इस उपन्यास में दहेज-प्रथा और अनमेल विवाह से उत्पन्न समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। वृद्ध के साथ शादी हो जाने के कारण निर्मला को किस प्रकार का जीवन जीना पड़ता है। इसका चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक सामाजिक कुरीतियों की कटु आलोचना करते हैं।

6) **गबन –** 'गबन' उपन्यास का प्रकशन सन 1931 ई. में हुआ। इसमें निम्न-मध्यवर्ग का झूठा दिखावा, स्त्रियों की आभूषण-प्रियता, विधवाओं की दुर्दशा एवं राष्ट्रीय आंदोलन में सहभागी देशभक्तों के प्रति ब्रिटिश सरकार द्वारा किए जानेवाले अत्याचार का चित्रण मिलता है। साथ ही देश की पराधीनता के एहसास से उत्पन्न मानसिकता और उसका दर्द भी इसमें देखा जा सकता है।

7) **कर्मभूमि –** इस उपन्यास का प्रकशन सन 1932 ई. में हुआ। इस उपन्यास में तत्कालीन समय के राजनीतिक आंदोलन, जमींदारों के शोषण का विरोध, दलित, मजदूर वर्ग की समस्याओं का चित्रण कर सत्याग्रह के द्वारा उसका समाधान बताया है। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद सामूहिक संघर्ष की शक्ति को दर्शाते हैं। उपन्यास में नारी की सक्रिय सामजिक भूमिका और कुशल नेतृत्त्व का भी चित्रण हुआ है।

8) **गोदान –** 'गोदान' प्रेमचंद जी का अंतिम एवं सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। सन 1935 ई. में प्रकाशित इस रचना को ग्रामीण जीवन और कृषि संस्कृति का महाकाव्य माना जाता है। ग्रामीण जीवन का इतना सजीव, व्यापक और प्रभावशाली चित्रण हिंदी के किसी अन्य उपन्यास में नहीं मिलता। इसमें लेखक ने गाँव और शहर की दो कथाओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत कर इसके माध्यम से भारतीय जन-जीवन के एक व्यापक परिवेश को उजागर किया है।

अन्य साहित्य :-

कहानी और उपन्यास लेखन के साथ-साथ प्रेमचंद जी ने नाटक, जीवनी, अनुवाद, संपादन के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया है। उनके द्वारा लिखित 'कर्बला' और 'संग्राम' नाटक प्रसिद्ध हैं। 'कर्बला' यह ऐतिहासिक तो 'संग्राम' सामाजिक नाटक है। 'दुर्गादास' प्रेमचंद लिखित एक जीवनी है। 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' इस जवाहरलाल नेहरु लिखित अंग्रेजी पत्र-संग्रह का प्रेमचंद जी ने हिंदी में अनुवाद किया है। संपादक के रूप में 'मर्यादा', 'जागरण', तथा 'हंस' पत्रिकाओं का उन्होंने संपादन कार्य भी किया है।

1.3.2 उपन्यासकार प्रेमचंद

हिंदी उपन्यास साहित्य को एक नई दृष्टि और दिशा प्रदान करने में प्रेमचंद जी का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इसीलिए तो हिंदी उपन्यास साहित्य के विकासक्रम का एक पूरा युग 'प्रेमचंद युग' नाम से प्रसिद्ध है। प्रेमचंद जी के 'सेवासदन' उपन्यास का प्रकाशन हिंदी उपन्यास साहित्य क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण घटना थी। क्योंकि इसके पूर्व के उपन्यास साहित्य में अजीबोगरीब घटनाओं के द्वारा कुतूहल उत्पन्न करनेवाला एवं चमत्कार-पूर्ण चित्रण किया जाता था। सामाजिक आंदोलनों से प्रभावित इन उपन्यासों का समाज सुधार संबंधी प्रचार करना ही एकमात्र लक्ष्य था। जीवन की सही अभिव्यक्ति का वह माध्यम नहीं बन पाया था।

वैसे तो प्रेमचंद पूर्व काल में अनेक हिंदी उपन्यासकारों द्वारा लिखे गए अनेक उपन्यास मिलते हैं। परंतु इनमें से अधिकतर उपन्यासों का झुकाव मनोरंजन की ओर ही अधिक-रहा दिखाई देता है। 'सेवासदन' हिंदी उपन्यास साहित्य की पहली प्रौढ़ रचना मानी जाती है, जिसके प्रकाशन से हिंदी उपन्यास के एक नए युग का आरंभ हो जाता है।

'सेवासदन' के बाद प्रेमचंद जी ने क्रमशः 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'निर्मला', 'प्रतिज्ञा', 'गबन', 'कर्मभूमि', और 'गोदान' आदि उपन्यासों की रचना की। इन उपन्यासों के माध्यम से प्रेमचंद जी ने हिंदी कथा साहित्य को मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के साथ सार्थक रूप में जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया। समाज में फैली हुई अनेक सामाजिक समस्याओं, जैसे जमीदारों, पूँजीपतियों और सरकारी कर्मचारियों द्वारा किसानों का शोषण, निर्धनता, अशिक्षा, अंध:विश्वास, दहेज़ प्रथा, समाज में नारी की स्थिति, विधवा एवं वेश्याओं की समस्या, वृद्ध विवाह, सांप्रदायिक वैमनस्य, अस्पृश्यता, मध्यवर्ग की कुंठाएँ आदि समस्याओं को प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों का विषय बनाकर जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है।

'सेवासदन' उपन्यास विवाह से जुडी समस्याओं पर आधारित है। इसमें तिलक-दहेज़ की प्रथा, कुलीनता का प्रश्न, विवाह के बाद पत्नी का घर में स्थान आदि का चित्रण मिलता है। साथ ही इसमें वेश्याओं की स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है। 'निर्मला' उपन्यास में दहेज़-प्रथा और वृद्ध विवाह के कारण होनेवाले पारिवारिक विघटन तथा उससे उत्पन्न समस्या का चित्रण मिलता है। 'प्रेमाश्रम' में सबसे पहले किसान जीवन की समस्याओं को विषय बनाया गया है। 'रंगभूमि' और 'कर्मभूमि' में भी ग्रामीणों की स्थिति का चित्रण मिलता है। 'गोदान' को तो ग्रामीण जीवन और कृषि संस्कृति का महाकाव्य ही माना जाता है। ग्रामीण जीवन का इतना सजीव, व्यापक और प्रभावशाली चित्रण हिंदी के किसी अन्य उपन्यास में नहीं मिलता। अपनी मानवतावादी दृष्टि का परिचय देते हुए प्रेमचंद जी ने 'कायाकल्प' और 'सेवासदन' उपन्यास में सांप्रदायिक समस्या को विषय बनाया है। अन्तर्जातीय विवाह के प्रश्न को तथा उच्चवर्गीय और मध्यवर्गीय समाज में नारी की स्थिति और अपने अधिकारों के प्रति उनमें आनेवाली जागृति को उनके सभी उपन्यासों में देखा जा सकता है। 'प्रतिज्ञा' में विधवा-विवाह को विषय बनाया गया है। 'कर्मभूमि' उपन्यास में समाज में हरिजनों की स्थिति और उनकी समस्याओं का चित्रण किया गया है। देश की पराधीनता के एहसास से उत्पन्न मानसिकता और दर्द को 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'गबन', और 'कर्मभूमि' में देख सकते हैं। पूँजीवाद के बढ़ते प्रभाव का और पुराने मूल्यों के विघटन का चित्रण 'रंगभूमि' में किया गया है। सामान्य जीवन की धड़कन तो प्रेमचंद जी के। सभी उपन्यासों में पाई जाती है। डॉ. नगेन्द्र जी के शब्दों में ''उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों की सामान्य जिंदगी को उसकी संपूर्ण मार्मिकता में प्रस्तुत किया है। विशेषता यह है कि सामान्य जिंदगी के ये ब्यौरे मनोवैज्ञानिक स्थितियों से संकलित हैं, जिनकी पृष्ठभूमि में जीवन का गहरा और व्यापक अनुभव तथा तीव्र संवेदना विद्यमान है।''

भाषाशैली की दृष्टि से भी प्रेमचंद जी की हिंदी उपन्यास को एक विशिष्ट देन रही है। विषय के अनुरूप चित्रात्मक भाषा-शैली का प्रयोग हिंदी उपन्यास में सर्वप्रथम प्रेमचंद जी ने ही किया। उनकी भाषा-

शैली की विशेषता यह है कि उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए दृश्य अत्यंत सजीव, गतिमान और नाटकीय हैं। उनके उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा शब्द-चयन और वाक्य-रचना की दृष्टि से सरल और बोलचाल की भाषा है। मुहावरें और कहावतों के प्रयोग ने उनकी भाषा को और भी अधिक लोक के निकट ला दिया। भाषा के सटीक, सार्थक और व्यंजनापूर्ण प्रयोग ने ही प्रेमचंद जी को अन्य उपन्यासकारों से अलग स्थापित किया। तात्पर्य प्रेमचंद जी ने ही अपनी विशिष्ट भाषा-शैली प्रयोग से हिंदी उपन्यास को अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम प्रदान किया।

1.3.3 'गोदान' उपन्यास का परिचय

'गोदान' प्रेमचंद जी की एक सर्वोत्तम रचना है। इसका प्रकाशन सन 1935 ई. में हुआ। प्रेमचंद जी के अन्य उपन्यासों की तुलना में 'गोदान' सर्वाधिक प्रसिद्ध, चर्चित एवं सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इसे कृषक जीवन का महाकाव्य कहा जाता है। उपन्यास में भारतीय ग्रामीण समाज एवं परिवेश का सजीव चित्रण मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास मूलत: कृषक जीवन की समस्याओं को केंद्र में रखकर लिखा गया है। भारतीय किसान जीवन का बहुत ही सूक्ष्मता से अंकन प्रस्तुत उपन्यास में दिखाई देता है। इसमें लेखक ने गाँव और शहर की दो कथाओं को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। इसके माध्यम से लेखक भारतीय जन-जीवन के एक व्यापक परिवेश को उजागर करते हैं। भारतीय ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर कर, ग्रामीण जीवन की स्थिति एवं परिवेश को रेखांकित करना ही इस उपन्यास का उद्देश्य है।

'गोदान' होरी नामक एक ऐसे किसान की कहानी है। जो जीवनभर कड़ी मेहनत करता है, अनेक प्रकार के कष्ट उठाता है, अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए हमेशा प्रयत्न करता है, परंतु उसे उसके परिश्रम का फल मिलने के बजाय असफलता का सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं परिस्थितियाँ और नियति उसे किसान से मजदूर बनने के लिए विवश करती हैं। उपन्यास की कथा केवल अकेले होरी की कथा नहीं है, बल्कि उस काल के सभी भारतीय किसानों की कथा है। इसमें गाँव की और शहर की दोनों कथाओं का संगठन इतनी कुशलता से किया गया है कि, कथा-प्रवाह में कहीं भी बाधा उपस्थित नहीं होती होरी तथा गाँव की कथा आधिकारिक कथा है और शहर की कथा प्रासंगिक है। इसी प्रासंगिक कथा के माध्यम से ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन के बीच होनेवाली विषमता उजागर होती है। दोनों ही कथाएँ एक-दूसरे का साथ देते हुई आगे बढती हैं। गाँव की कथा से ग्रामीण जीवन की समस्याएँ तो शहर की कथा से शहरी जीवन की समस्याएँ प्रकट होती हैं। आधिकारिक कथा में धर्म के ठेकेदारों, महाजनों एवं साहूकारों तथा जमींदारों के शोषण के जाल में उलझा हुआ होरी, किसान से मजदूर बनने के लिए विवश हो जाता है। प्रासंगिक कथा में सभ्य नागरिक समाज की स्थिति भी सामाजिक प्रगति की दृष्टि से कोई अच्छी नहीं है। खुद को जनता के सेवक कहलानेवाले स्वार्थी पत्रकार भी अमीरों से चुपके से रुपए खाते हैं। दार्शनिक दृष्टि रखनेवाले प्रोफ़ेसर भी कुछ सीमा तक अपनेआप को समाज से तटस्थ ही रखते हैं। गाँव और शहर दोनों से संबंध रखनेवाले जमींदार भी किसानों का शोषण कर अधिकारियों को खुश करते हैं। लेखक ने इन्हीं स्थितियों का चित्रण दोनों कथाओं के माध्यम से कर तत्कालिन युग-जीवन को उजागर किया है।

उपन्यास में गाँव और शहर के अनेक पात्रों का चित्रण हुआ है। गाँव के पात्रों में – होरी (नायक), धनिया (नायिका), गोबर (होरी का बेटा), झुनिया (गोबर की पत्नी), सोना और रूपा (होरी की पुत्री), रायसाहब (जमींदार), हीरा और शोभा (होरी के भाई), भोला (झुनिया के पिता), सिलिया (चमारिन स्त्री), मातादीन और दातादीन (ब्राह्मण बाप बेटे), दुलारी सहुआइन (दुकान की मालकिन), झिंगुरीसिंह, पटेश्वरीलाल (गाँव के साहूकार) आदि प्रमुख पात्र हैं। शहरी पात्रों में मेहता (दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर), मालती (डॉक्टर एवं आधुनिक नारी), खन्ना (मिल मालिक), गोविंदी (खन्ना की पत्नी), ओंकारनाथ (संपादक), मिर्जा खुर्शीद, तंखा आदि प्रमुख हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में तत्कालिन भारतीय परिवेश का तथा देश–काल की परिस्थितियों का सजीव एवं यथार्थ चित्रण किया गया है। अत: विचारकों का मानना हैं कि, अगर हमें तत्कालिन भारतीय परिदृश्य को समझना है, तो हमें 'गोदान' को पढ़ना चाहिए। लेखक ने होरी और धनिया के परिवार के माध्यम से भारत की ग्रामीण संस्कृति को सजीव और साकार किया है, जो संस्कृति अब समाप्त हो रही है या होने जा रही है। यह एक ऐसी कथा है, जिसमें महाजनी तथा साहूकारी व्यवस्था में किसान के निरंतर होनेवाले शोषण और उससे उत्पन्न त्रासद स्थितियों को बड़े ही यथार्थ रूप में उजागर किया है। नायक होरी की पीड़ा, दु:ख और वेदना पाठक के मन में उसके प्रति गहरी संवेदना उत्पन्न करती है। आजीवन निरंतर कई स्तरों पर संघर्ष करने के बाद भी होरी की एक गाय की आकांक्षा पूरी नहीं हो पाती, वह इस इच्छा को मन में लिए ही इस दुनिया से विदा लेता है। धनिया सुतली बेचकर आए बीस आने दातादीन के हाथ में रखकर कहती है, ''महाराज घर में न गाय है न बछिया, न पैसा, यही इनका गोदान है।'' इस तरह अविरत जीवन संघर्ष करनेवाला, जीवन की लड़ाई लडनेवाला एक योद्धा होरी बीस आने का 'गो–दान' कर मर जाता है। तात्पर्य 'गोदान' भारतीय कृषक जीवन के संत्रासमय संघर्ष की कहानी है।

1.3.4 'गोदान' उपन्यास का कथानक

'गोदान' उपन्यास में ग्रामीण एवं नागरिक दोनों ही प्रकार की जीवन की कथाओं का चित्रण मिलता है। कथा का प्रारंभ ग्रामीण जीवन के संघर्षमय वातावरण से होता है। होरी 'बेलारी' नामक गाँव का एक किसान है। उसकी अपनी पाँच बीघा जमीन है। होरी को जमींदार रायसाहब अमरपाल सिंह से भेंट करने जाना है। होरी का इस तरह अपना काम–धाम छोड़कर रायसाहब से मिलने जाना धनिया को बिल्कुल पसंद नहीं है। इसलिए वह जमींदार के यहाँ होरी के जाने की आदत का विरोध करती है। परंतु होरी धनिया से कहता है कि, ''सबसे मिलने जुलने का परसाद है कि अब तक जान बची हुई है।'' ऐसा कहकर वह रायसाहब से मिलने चला जाता है। रास्ते में वह अपनी दीन दशा के बारे में सोचते हुए और एक गाय खरीदने की अभिलाषा पर विचार करता हुआ आगे बढ़ता है। इतने में उसकी पड़ोस के गाँव में रहनेवाले भोले से भेंट हो जाती है। भोला अपनी गायों के साथ चला आ रहा होता है। भोले की एक गाय को देखते ही होरी की गाय खरीदने की लालसा और भी तीव्र हो जाती है। भोला विदुर है वह अपने विवाह को लेकर चिंता में है होरी उसकी प्रशंसा करते हुए एक विधवा से उसका विवाह कर देने का लालच दिखाता है। उसके बदले में भोला

भी होरी को वही गाय लेने के लिए कहता है। परंतु होरी अपनी मर्यादा बचाने के लिए उस समय गाय नहीं लेता। वह भोला से कहता है, फिर मंगा लूँगा।

इसी समय भोला भूसे की कमी की होरी से बात करता है। उसकी समस्या सुनकर होरी उसे थोड़ा-सा भूसा अपने घर से देने का वचन देता है। होरी उस समय गाय इसलिए नहीं लेता कि, कहीं भोला को ऐसा न लगे कि यह मेरी मजबूरी का फायदा उठा रहा है। होरी वहाँ से आगे निकलकर रायसाहब के पास पहुँचता है। राय साहब कौंसिल के सदस्य हैं। वे न्याय-अन्याय की बातें भी खूब करते हैं। किसी पर अत्याचार करना बुरा समझते हैं। होरी के सामने वे अपनी मजबूरी और मुसीबत का रोना रो कर यह सिद्ध करना चाहते हैं कि वे कितने बड़े सज्जन आदमी है। परंतु उसी वक्त उनका एक नौकर आकर बताता है कि, मजदूर बिना मजदूरी के काम करना नहीं चाहते। रायसाहब अत्यधिक क्रोधित हो जाते हैं। और मजदूरों को धमकाने के लिए चले जाते हैं। रायसाहब के परिवर्तित रूप को देखकर होरी सोचता है कि अभी-अभी तो रायसाहब कैसी नीति और धर्म की बातें कर रहे थें और अचानक इतने क्रोधित कैसे हो गए? होरी रायसाहब द्वारा आयोजित 'धनुष यज्ञ' की लीला में राजा जनक के माली की भूमिका पाकर अपने भाग्य को सराहता हुआ घर लौट आता है।

घर आने पर होरी रायसाहब की बहुत प्रशंसा करता है। परंतु होरी का बेटा गोबर रायसाहब को 'रंगा सियार' कहता है। क्योंकि वे भौतिक सुख समृद्धि के सारे साधन होने पर भी दु:खी बनने का नाटक करते हैं। इसके बाद होरी भोला से गाय खरीदने और उसे भूसा देने का जो वचन दिया है, इसे धनिया और गोबर को बताता है। साथ ही भोला का विवाह करने की अपनी चालाकी भरे आश्वासन को भी कहता है। होरी की यह चालाकी माँ और बेटे को अच्छी नहीं लगती। अत: वे दोनों उसका तिरस्कार करते हैं। परंतु होरी धनिया से कहता है कि, भोला तुम्हारी बहुत प्रशंसा कर रहा था। ऐसा कहकर वह धनिया को अपने पक्ष में कर लेता है। गाय आने की बात से होरी की दोनों लड़कियाँ सोना और रूपा तथा गोबर, धनिया आदि सभी आनंदित हो जाते हैं। क्योंकि निर्धन के घर लक्ष्मी का आगमन होनेवाला था।

एक दिन भोला भूसा लेने होरी के घर आता है। धनिया और घर के अन्य सदस्य उसका स्वागत करते हैं। होरी एक खाँचा भूसा देने को कहता है। परंतु धनिया तीन खाँचे भरती है और गोबर को भोला के घर पहुँचाने को कहती है। भोला के घर पहुँचने पर गोबर की भोला की विधवा बेटी झुनिया से मुलाकात होती है। दोनों परस्पर एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो जाते हैं। दूसरे दिन गोबर गाय ले जाने के लिए भोला के घर फिर से आता है। गाय आने की खुशी में होरी का परिवार अत्यधिक आनंदित रहता है। गाय के स्वागत की तैयारी शुरू होती है। इसी बीच होरी एक बाँस वाले को साझे के बाँस बेच देता है। वह भाइयों से इस बात को छुपाकर कुछ रूपयों की बेईमानी करना चाहता है। परंतु उसमें वह सफल नहीं होता। गोबर के गाय लेकर आने पर पूरा गाँव गाय देखने के लिए इकठ्ठा हो जाता है। सभी गाय की प्रशंसा करते हैं। पूरा गाँव होरी की गाय देखने आता है, परंतु उसके सगे भाई हीरा और शोभा गाय देखने नहीं आते। जब होरी उन्हें बुलाने जाता है, तो दो भाईयों के बीच चल रहे वार्तालाप को सुनता है। दोनों भाई आपस में होरी की बुराई कर रहे होते हैं। दोनों का मानना था कि, होरी ने बँटवारे के समय जो रुपए हमसे छिपाकर रखे थें, उन्हीं रुपयों से

वह गाय खरीद रहा है। होरी दुखी मन से घर लौट आता है और धनिया को सारी बातें सुनाता है। धनिया को बहुत गुस्सा आता है और वह हीरा के घर जाकर उससे खूब लड़ती है। पूरा गाँव इस झगड़े को एक तमाशा के रूप में देखता है। गोबर गाय लाते समय झुनिया उसे उसके गाँव तक छोड़ने आती है। रास्ते में दोनों एक दूसरे का जिंदगीभर साथ देने की प्रतिज्ञा करते हैं। झुनिया दुनियादारी की बातें करते हुए तथा अपने बातों से गोबर को प्रभावित कर उसे पूर्ण रूप से अपने वश में कर लेती है। दोनों छिपकर आपस में मिलने का वादा कर एक दूसरे से अलग हो जाते हैं।

रायसाहब के गाँव सेमरी में छिड़काव आदि कर 'धनुष यज्ञ' की तैयारी आरंभ हो जाती है। वहाँ मंडप, फूल, गमले, बिजली आदि का व्यवस्था की जा रही है। रायसाहब के मेहमान गाँव और शहर दोनों स्थानों से पधारे हुए हैं। इनमें'बिजली' नामक पत्र के संपादक पंडित ओंकारनाथ, वकील दलाल श्याम बिहारी तंखा, दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर डॉ. बी. मेहता, मिल मालिक मिस्टर खन्ना एवं उनकी पत्नी गोविंदी खन्ना, लेडी डॉक्टर मिस मालती तथा लखपति मिर्जा खुर्शेद आदि मेहमान शहर से आए हुए हैं। रायसाहब उनका स्वागत कर उनके ठहरने की व्यवस्था करते हैं। फिर सब लोग एक साथ बैठते हैं, तो उनमें विविध विषयों पर चर्चा होने लगती है। वे सभी अपने-अपने व्यवसाय के अनुरूप बातें करते हैं। रायसाहब जमींदार वर्ग की मजबूरी को बताते हुए आदर्शवाद को लेकर बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। परंतु उनकी कथनी और करनी में बड़ा अंतर है। वे स्वयं किसानों पर अत्याचार करते हैं। डॉक्टर मेहता उनकी बातों का विरोध करते हुए कहते हैं कि, सिद्धांत और व्यवहार में अंतर नहीं होना चाहिए। ओंकारनाथ रायसाहब की बातों का समर्थन करते हुए बुद्धि के महत्व पर एक भाषण-सा देना आरंभ करते हैं। तंखा रायसाहब को प्रभावित कर उन्हें प्रसन्न करना चाहते हैं। मिस मालती ओंकारनाथ के आदर्शवाद पर तीखा प्रहार कर उनसे नम्र रहने की बात करती है। परंतु ओंकारनाथ खोखले आदर्श की दुहाई देते हुए अपने को बड़ा सिद्धांतवादी और दृढ़ चरित्र वाला सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। मेहता सबकी कटु आलोचना करते हैं। मिस्टर खन्ना मालती पर लट्टू है। वह हर प्रकार से उसे रिझाने का प्रयत्न करते हैं। काफी लंबे वाद-विवाद के उपरांत भोजन का कार्यक्रम प्रारंभ होता है। भोजन में मांस एवं मदिरा दोनों की व्यवस्था क गई है। ओंकारनाथ शराब को देखते ही अपने कमरे में चले जाते हैं। अन्य सभी में शर्त लग जाती है की अगर मालती ओंकारनाथ को शराब पिलाने में सफल हुई तो उन्हें एक हजार रुपए दिए जाएँगे। राय साहब मालती का नाम लेकर ओंकारनाथ को वहाँ ले आते हैं। मालती बड़े ही नाटकीय रूप में उनका स्वागत करती है। उन्हें कर्मठ राष्ट्र सेवी जनता का नायक आदि विशेषणों से संबोधित कर उनकी बड़ी प्रशंसा करती है। अंत में अपने रूप सौंदर्य और नारीत्व का प्रभाव जमाकर उन्हें शराब पिलाती है। शर्त जितने कारण अन्य सभी मालती की प्रशंसा करते हुए उसे एक हजार रूपए देते हैं।

सभी लोग धनुष यज्ञ देखने के लिए पंडाल में जा रहे होते हैं। इतने में एक लंबा तगड़ा पठान कंधे पर बंदूक धरें वहाँ पहुँचता है और गुस्से से कहता है कि उसके आदमी को रायसाहब के आदमियों ने लूटा है। वह रुपयें लौटाने की बात करता है। रुपए न मिलने पर सबको गोली मारने की धमकी भी देता है। सभी का डर के मारे बुरा हाल हो जाता है। पठान रुपए न मिलने पर मालती को उठा ले जाने की बात भी करता है।

राय साहब थोड़ा सा साहस दिखाते हैं, परंतु बाकी सब छिपने की जगह ढूंढते हैं। इसी समय होरी माली का रूप धारण कर रायसाहब को ढूंढते हुए वहाँ पहुँचता है। वह तुरंत पठान को पटकनी देकर उसकी छाती पर बैठ जाता है और उसकी दाढ़ी खींच लेता है। दाढ़ी खींचने पर पता चलता है कि मेहता ने ही पठान का रूप धारण किया था। मेहता अपने भेस परिवर्तन से समाज के लोगों की असलियत सामने लाता है।

दूसरे दिन सभी शिकार के लिए जाते हैं। दो-दो जनों की तीन टोलियाँ बनाई जाती है। रायसाहब और मिस्टर खन्ना, मिर्जा खुर्शेद और तंखा, तथा मेहता और मालती तीनों टोलियाँ अलग-अलग शिकार के लिए चली जाती है। मालती मेहता के प्रति आकर्षित है। परंतु मेहता के मन में मालती को लेकर ऐसी कोई बात नहीं है। मेहता एक चिड़िया का शिकार करते हैं, जिसे एक जंगली लड़की नदी के पानी में बह रही चिड़िया को पकडकर मेहता को लाकर देती है। लड़की के इस व्यवहार से मेहता बहुत खुश होते हैं। वह जंगली लड़की मालती और मेहता को अपनी झोपड़ी में ले जाती है और उनके भोजन की व्यवस्था करती है। लड़की के प्रति मेहता का मुक्त भाव से देखना मालती को अच्छा नहीं लगता, इसलिए वह ईर्ष्या करती है। खन्ना और रायसाहब के बीच मील के शेयर को लेकर बातचीत होती है। खन्ना रायसाहब से उनकी मिल के शेयर खरीदने का आग्रह करते हैं। परंतु रायसाहब अपनी आर्थिक समस्याओं का बखान कर शेयर खरीदने की बात टाल देते हैं। तीसरी टोली में मिर्जा और तंखा हैं। मिर्जा एक हिरण का शिकार करते हैं और उसे एक ग्रामीण युवक को देते हैं। सभी उस युवक के गाँव जाते हैं और खा-पीकर ख़ुशी से पूरा दिन बिताकर श्याम को लौट आते हैं।

इधर होरी के घर गाय के आ जाने से बहुत ही उत्साह-भरा माहौल है। पूरा परिवार गाय की सेवा में लगा हुआ है। सोना और रूपा तो मानो उसकी सहेलियाँ बन चुकी हैं। बरसात की पहली बारिश होते ही खेत जोतने और बोने की चहल-पहल शुरू हो जाती है। किसानों में बड़ा उत्साह और उमंग का वातावरण है। परंतु इतने में रायसाहब का कारिंदा नोखेराम ऐलान करता है कि बिना लगान चुकाए कोई भी अपने खेत नहीं जोत सकेगा। होरी रूपयों के इंतजाम के लिए महाजनों के यहाँ भागा फिरता है। गाँव में कई महाजन हैं - झिंगुरीसिंह, मंगरुशाह, दुलारी, दातादिन। झिंगुरीसिंह होरी की गाय लेना चाहते हैं। वे होरी को समझा बुझाकर अपनी गाय बेचने को तैयार करते हैं। कुछ दिन बीतने पर धनिया भी इसके लिए तैयार हो जाती है, परंतु अंत में यह निर्णय होता है कि गाय न बेचकर रुपयों का इंतजाम सूद पर रुपए लेकर किया जाए।

उसी दिन रात को जब होरी अपने बीमार भाई शोभा को देखकर घर लौटता है, तो अपने दूसरे भाई हीरा को गाय के पास खड़ा देखता है। उसी रात गाय को जहर दिए जाने से वह मर जाती है। होरी को लगता है की हीरा ने ही गाय को जहर दिया है और वह इस बात को धनिया से कहता है। उसी रात हीरा घर से भाग जाता है। सुबह धनिया हीरा पर गऊ-हत्या का अपराध लगाकर पूरे गाँव में चिल्ला-चिल्लाकर गाय को जहर देकर मारने की बात बताती है। इससे होरी धनिया को मारता है और अपने भाई को बचाने के लिए सच को छिपाकर अपने पुत्र गोबर की झूठी कसम खाता है। दरोगा जाँच-पड़ताल करने गाँव पहुँचता है। होरी अपने परिवार की इज्जत बचाने के लिए महाजनों से रुपए उधार लेकर दरोगा को देना चाहता है। धनिया अत्यधिक गुस्से में आकर रुपए छिन लेती है और दरोगा एवं गाँववालों को बहुत कुछ सुनाती है।

अंत में दरोगा गाँववालों से ही पचास रुपए वसूल कर चला जाता है। गाँव के महाजन दरोगा को कोसते रह जाते हैं, क्योंकि यह रुपए उन्हें ही देने पड़ते हैं।

हीरा के घर से भाग जाने से होरी उसकी स्त्री पुनिया की सहायता करने लगता है। धनिया पहले तो गुस्सा करती है परंतु बाद में शांत हो जाती है। इसी बीच होरी बीमार पड़ता है और महीने भर में ठीक भी होता है। जाड़ों की रात में एक दिन होरी अपने खेत की झोपड़ी में एक फटे-पुराने कंबल द्वारा सर्दी से बचने और सोने का प्रयत्न कर रहा होता है। तभी धनिया आकर उससे कहती है कि, झुनिया पाँच महीने की गर्भवती है। वह गोबर, भोला, झुनिया सभी पर गुस्सा करती है। होरी भी यह सब सुनकर बहुत ही गुस्से में आता है। वह झुनिया को घर से बाहर निकालने की बात करते हुए घर की ओर चल पड़ता है। होरी को गुस्से में देखकर धनिया की झुनिया के प्रति दया उत्पन्न होती है। वह होरी से उससे कुछ ना कहने के लिए प्रार्थना करती है। घर आकर दोनों ही झुनिया को सांत्वना देते हुए गोबर के बारे में पूछते हैं। झुनिया बताती है कि उसने मुझे गाँव तक छोड़ा और फिर पता नहीं कहाँ चला गया।

दूसरे ही दिन झुनिया पूरे गाँव की चर्चा का विषय बन जाती है। सब लोग मिलकर होरी को जाति से निकाल देते हैं। उसका हुक्का पानी बंद कर दिया जाता है। एक दिन पंडित दातादिन धनिया से मिलकर झुनिया को घर में न रखने की बात करता है। जबकि खुद उनके बेटे मातादिन ने एक चमारिन सिलिया को रखैल बनाए रखा है। इसी तरह गाँव के अन्य बड़े लोग भी झुनिया को घर से निकाल देने की सलाह धनिया को देते हैं। परंतु धनिया सबको को उत्तर देकर उनका मुँह बंद कर देती है। अंत में जब पटेश्वरी लाल को यह लगता है कि, झुनिया के गाँव में रहने से हमारी किसी की कोई इज्जत नहीं रहेगी, तो वह गाँव के महाजनों एवं नोखेराम आदि के साथ मिलकर एक षडयंत्र रचता है।

अब फिर से पंचायत को होरी का गला दबाने का मौका मिलता है। झुनिया एक लड़के को जन्म देती है। बिरादरी में ऐसे पाप के लिए पंचायत होरी पर सौ रुपए नकद और तीस मन अनाज का डांड लगाती है। धनिया पंचायत के इस निर्णय का बहुत विरोध करती है। लेकिन होरी इस निर्णय को सर्वोपरी मानकर उसका स्वीकार करने में ही अपनी मर्यादा की रक्षा समझता है। वह अपना घर झिंगुरीसिंह के पास गिरवी रखकर अस्सी रुपए लाता है और डांड की रकम चुकाता है।

गोबर लोक-लज्जा के भय से लखनऊ भाग जाता है। वहाँ पंद्रह रुपए वेतन पर मिर्जा खुर्शीद के यहाँ नौकरी करता है। उन्हीं की कोठरी में रहता है। डांड में सारा अनाज देने से होरी के पास कुछ नहीं बचता। उस समय पुनिया उसकी मदद करती है। बारिश न होने के कारण उसकी ईख सुख जाती है। भोला गाय के रुपयों की माँग करता है। परंतु होरी रुपए नहीं दे पाता। भोला होरी के बैल ले जाता है। गाँववाले इसका विरोध करते हैं, लेकिन मर्यादावादी और ईमानदार होरी विवश होकर इसकी अनुमति देता है।

मालती को राजनीतिक और सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहना पसंद है। उसी के प्रयत्न से मेहता एक कार्यक्रम में भाषण देते समय महिलाओं के समान अधिकार की माँग छोड़कर महिलाओं को त्याग, दया, क्षमा को अपनाने की सलाह देते हैं। उनकी दृष्टि से गृहस्थ जीवन के लिए इन बातों की बहुत आवश्यकता

है। मालती मेहता से सहमत होती है। एक दिन मेहता मालती पर आरोप लगाते हैं कि उसी के कारण मिस्टर खन्ना मिसेज खन्ना से अच्छा बर्ताव नहीं करते। यह सुनकर मालती गुस्सा हो जाती है और अपने घर चली जाती है।

रायसाहब को पता चल जाता है की होरी से वसूल किए गए डांड के सारे पैसे गाँव के मुखिया लोग आपस में खा गए। वे नोखेराम से रुपए देने को कहते हैं। तो सभी महाजन 'बिजली' के संपादक ओंकारनाथ को बताते हैं कि रायसाहब हमसे जुर्माना वसूल करते हैं। ओंकारनाथ रायसाहब को बताते हैं कि वे अपनी पत्रिका में आपके बारे में सनसनीखेज खबर छापनेवाले हैं। रायसाहब सौ ग्राहकों का चंदा रिश्वत के रूप में देकर किसी तरह इस खबर को छापने से रोक लेते हैं।

गाँव में बुवाई की शुरूआत होती है। होरी के पास बैल न होने के कारण उसकी असहायता का फायदा उठाकर दातादिन होरी के सामने साझे में बुवाई करने का प्रस्ताव रखता है। मानो होरी को मजदूर बनने के लिए विवश करता है। उधर दातादीन का बेटा मातादीन झुनिया को अपने प्रेम-पाश में फँसाने का प्रयत्न करता है। होरी के ईख बेचने जाने पर महाजन मिल मालिक से मिलकर कर्ज के सारे रुपए वसूल करते हैं। मिस्टर खन्ना और उनकी पत्नी गोविंदी जी के स्वभाव एक-दूसरे से मेल नहीं खाते। गोविंदी जी सीधा-सादा जीवन जीना पसंद करती हैं। परंतु मिस्टर खन्ना विलासमय जीवन के आग्रही हैं। एक बार पति-पत्नी में बेटे के इलाज को लेकर अलग-अलग डॉक्टर को बुलाने संबंधी झगड़ा हो जाता है। गुस्से में आकर गोविंदी पार्क में चली जाती है। वहाँ पर उसकी मुलाकात मेहता से होती है। मेहता उसकी प्रशंसा करते हुए समझा बुझाकर घर लाते हैं।

होरी दातादीन की खेती में मजदूरी करने लगता है। ईख काटते समय कड़ी मेहनत करने से वह बेहोश हो जाता है। उधर गोबर नौकरी छोड़कर खोंचा लगाने का काम शुरू करता है। उसके पास दो पैसे आ जाते हैं। एक दिन वह गाँव आता है। सभी के लिए सामान लाता है। गाँव में गोबर महाजनों के बारे में लोगों के बीच बातें कर उनकी बड़ी बेइज्जती करता है। होली के अवसर पर गोबर गाँव के मुखिया लोगों की नकल करता है। परिणाम-स्वरूप गोबर को सभी महाजनों के क्रोध का शिकार बनना पड़ता है। जंगी को शहर में नौकरी लगाने का लालच दिखाकर उसे प्रभावित करता है। भोला को मनाकर उससे अपने बैल ले आता है। दातादीन को उधार के तीस रुपए के बदले सत्तर रुपए देना चाहता है। लगान वसूल करके रसीद न देने पर नोखेराम को अदालत की धमकी देता है। झुनिया को फुसलाकर शहर ले जाते समय उसका माँ से झगड़ा हो जाता है। सिर झुकाकर माँ के आशीर्वाद लिए बिना ही बिल्कुल उद्दंड और स्वार्थी बनकर गोबर बाल-बच्चों को लेकर शहर चला जाता है।

रायसाहब को उनकी अपनें कई समस्याएँ थी। उन्हें अपनी बेटी का विवाह करना था। अदालत में एक मुकदमा भी करना था। चुनाव की भी तैयारी करनी थी। कुंवर दिग्विजय सिंह के साथ विवाह तय हुआ था। राजासाहब के विरोध में चुनाव लड़ना था। पैसों की कमी के कारण वे तंखा से उधार पैसे लेने के लिए जाते हैं। लेकिन वह पैसे देने से मना करता है। फिर रायसाहब खन्ना के पास जाते हैं। पहले तो खन्ना पैसे देने के

लिए आनाकानी करता है। लेकिन बाद में कमीशन लेकर पैसों का इंतजाम करने की बात करता है। इसी बीच मेहता महिलाओं की व्यायाम शाला के लिए चंदा माँगने वहाँ आ जाते हैं। खन्ना चंदा देने से मना करते हैं। गोविंदी जी को भी व्यायाम शाला की नींव रखने के लिए जाने से मना करते हैं। रायसाहब चंदे के लिए पाँच हजार रुपए लिख देते हैं। फिर मालती वहाँ पहुँचती है और खन्ना से एक हजार रुपए का चेक लिखवा लेती है।

मातादीन की रखैल सिलिया द्वारा अनाज के ढेर से कोई सेर भर अनाज दुलारी सहुआइन को देने पर मातादीन उस पर गुस्सा करते हुए उसे धिक्कारता है और उसे निकल जाने को कहता है। सिलिया दु:खी हो जाती है। सिलिया के पिता हरखू के कहने पर उसके साथी मातादिन के मुँह में हड्डी डालकर उसे जाति भ्रष्ट कर देते हैं। धनिया सिलिया को अपने घर रख लेती है। सिलिया मजदूरी करके जैसे-तैसे गुजारा करती है। सोना की आयु सत्रह साल की हो गई थी। उसके विवाह के लिए पैसों की आवश्यकता थी। सोना को मालूम था कि उसके पिता होरी विवाह के लिए दुलारी से दो सौ रुपए लेनेवाले हैं। ससुरालवाले बिना दहेज लिए बहू लेने को तैयार हो जाते हैं। परंतु धनिया अपनी मर्यादा को बचाने के लिए दहेज देना चाहती है।

भोला नोहरी नामक एक जवान विधवा से विवाह करता है। नोहरी के साथ बहुओं की नहीं पटती। भोला की पुत्र कामना उसे घर से भगा देती है। नोखेराम नोहरी की लालसा से भोले को अपना नौकर रख लेता है। लाला पटेश्वरी साहूकार मंगरुशाह को भड़काकर होरी की सारी ईख की नीलामी कर देता है। दुलारी को उगाई की उम्मीद न होने से वह होरी को बेटी की शादी के लिए दो सौ रुपए नहीं देती। इतने में नोहरी होरी के प्रति सहानुभूति दिखाकर उसे दो सौ रुपए देकर अपनी दयाशीलता का परिचय देती है।

शहर में परिवार समेत आने पर गोबर देखता है कि जहाँ वह खोंचा लगाता था, वहाँ पर किसी दूसरे ने खोंचा लगाना शुरू किया है। परिणाम-स्वरूप उसको कारोबार में घाटा होता है। इसलिए वह मिल में नौकरी शुरू करता है। झुनिया को गोबर की कामुकता पसंद नहीं है। इसी बीच गोबर का बेटा मर जाता है। झुनिया गर्भवती है। गोबर नशा करना शुरू करता है। झुनिया को मार-पिट करता है, गालियाँ देता है। चुहिया की मदद से झुनिया एक बेटे को जन्म देती है। मिल में गोबर का झगड़ा हो जाने से गोबर घायल हो जाता है। झुनिया द्वारा गोबर की सेवा करने के दौरान पति-पत्नी में फिर से संबंध स्वाभाविक हो जाते हैं।

खन्ना मजदूरों की हड़ताल को अन्याय-पूर्ण मानते थें। परंतु मिश्रा, संपादक, गोविंदी आदि ने मजदूरों की माँग को न्याय-संगत कहा था। जब खन्ना ने मेहता से इस हड़ताल के बारे में पूछा, तो उन्होंने भी इसे न्याय-संगत बताया। इसी समय मालती का आगमन होता है और मेहता तथा खन्ना को अपने हाथों से बनाए भोजन के लिए निमंत्रित करती है। इतने में खन्ना को मिल से धुआँ उठता हुआ दिखाई देता है। पूरी मिल अग्नि की ज्वालाओं की चपेट में आ जाती है। खन्ना, मेहता और मालती तुरंत मोटर में बैठकर मिल की तरफ निकलते हैं। पूरी मिल जलकर राख हो जाती है। खन्ना पागल की तरह बर्ताव करता है और घर लौटकर गोविंदी के चरणों पर गिर पड़ता है। गोविंदी धन की निंदा करते हुए खन्ना को सांत्वना देती है।

नोहरी होरी को पैसे देकर पूरे गाँव में अपनी उदारता प्रचार-प्रसार करती है। होरी खेत में हल चलते हुए सिलिया और नोहरी के बारे में सोच रहा होता है। इतने में वहाँ मातादिन आता है और सिलिया को देने के लिए होरी को दो रुपए देता है। रुपए पाकर सिलिया बहुत ही आनंदित होती है। अपने इस आनंद को सोना को बताने के लिए नदी पार कर सोनारी गाँव जाती है। रात का समय होने के कारण पूरे गाँव में सन्नाटा है। किवाड़ खटखटाने पर मथुरा दरवाजा खोलता है और सिलिया से प्रणय की बात करता है। इतने में सोना जागती है। इतनी रात में आने के कारण वह सिलिया को बहुत फटकारती है। सिलिया दु:खी मन से लौट आती है।

खन्ना और गोविंदी के संबंधों में संपत्ति के कारण जो कटुता निर्माण हुई थी, वह समाप्त होकर उनके संबंध फिर से मधुर हो जाते हैं। खन्ना मिल को फिर चलाने हेतु सभी की सलाह लेने इधर-उधर घूमते हैं। मेहता के व्यक्तित्व से मालती पूरी तरह प्रभावित हो चुकी है। वह जैसे भी हो, मेहता को प्राप्त करना चाहती है। मेहता की दृष्टि से जीवन का मध्यम मार्ग ही सेवा-भाव है और वही सर्वश्रेष्ठ है। मेहता और मालती इसी मध्यम मार्ग का स्वीकार कर गाँव की ओर निकल पड़ते हैं। एक दिन वे होरी के गाँव पहुँचते हैं। मालती गाँव की स्त्रियों में जागृति लाने हेतु उन्हें सफाई का महत्व समझाती है। उनकी बीमारी का इलाज करती है। शाम के वक्त मेहता और मालती दोनों टहलने के लिए नदी किनारे जाते हैं। दोनों 'में' प्रेम इस विषय पर गहरी बातचीत होती है। 'प्रेम' इस विषय को लेकर दोनों के विचार भिन्न हैं। प्रेम-संबंधी मेहता के संकीर्ण रूप को देखकर मालती उदास होती है। उसके अनुसार प्रेम भौतिक मार्गों से परे की वस्तु है। दोनों अपने-अपने मत पर अटल रहते हैं।

रायसाहब की लड़की की शादी होने पर उन्हें ससुराल की धन-संपत्ति मिल जाती है। उनकी चुनाव में भी जीत हो जाती। राजासाहब रायसाहब के पुत्र रूद्रपाल के साथ अपनी बेटी की सगाई की बात करते हैं। रायसाहब भी इसके लिए तैयार होते हैं। परंतु रुद्रपाल ने मालती की छोटी बहन सरोज से चुपचाप विवाह कर लिया होता है। इस बात को लेकर पिता-पुत्र में विवाद उत्पन्न होता है। सार्वजनिक जीवन में बड़ा रौब ज़मानेवाले रायसाहब की अपने पुत्र के सामने कुछ भी नहीं चलती। उनका गर्व तथा अभिमान चूर-चूर हो जाता है। रुद्रपाल सरोज के साथ इंग्लैंड चला जाता है और रायसाहब की फिजूलखर्ची पर केस भी दायर करता है। मिर्जा खुर्शीद वीरांगनाओं की स्थिति में सुधार लाने की दृष्टि से प्रयत्न कर रहे होते हैं। परंतु मेहता उनकी इन बातों से असहमत हैं। मालती का अधिकतर समय जनसेवा में ही बीत जाता है। वह मेहता से बहुत कम मिल पाती है। मेहता लोगों की मदद करने में ही अपना पूरा वेतन खर्च कर डालते हैं। मकान का किराया देने के लिए भी उनके पास पैसे नहीं होते। मालती मकान का किराया देकर मेहता को अपने बंगले में रहने के लिए ले जाती है। अमीरों का खिलौना बनी रहने वाली मालती को लोगों की सेवा में व्यस्त देखकर मेहता उससे बहुत प्रभावित होते हैं और मालती के सामने विवाह का प्रस्ताव रखते हैं। परंतु मालती खुद को विवाह बंधन में बाँधना नहीं चाहती। अत: वह मेहता को एक अच्छे मित्र एवं सहयोगी के रूप में स्वीकार करती है।

एक दिन अचानक निमोनिया हो जाने से सिलिया के बच्चे की मौत होती है। बच्चे की मौत का आघात सिलिया और मातादीन को फिर से एकत्र लाता है। और वे दोनों बिना लोक-लाज के एक साथ रहना आरंभ करते हैं। दिन प्रतिदिन होरी की आर्थिक स्थिति ख़राब होती जाती है। अब तो उसे कर्ज भी मिलना मुश्किल हो जाता है। अंत में होरी हताश, निराश होकर दो सौ रुपये के बदले में अपनी छोटी बेटी रूपा का विवाह एक चालीस वर्ष के संपन्न किसान से कर देता है। गोबर इस विवाह के लिए घर आता है। परंतु इस बार गोबर में बहुत परिवर्तन दिखाई देता है। वह अपने आचरण से बहुत ही शालीनता और सौजन्यता का परिचय देता है। विवाह हो जाने के बाद झुनिया को गाँव में ही छोड़कर अकेला शहर चला जाता है।

अब होरी एक ठेकेदार के यहाँ कंकड़ खोदने का काम शुरू करता है। उद्देश्य यही है कि कुछ पैसे आने पर गोबर के बच्चे के लिए गाय खरीद ली जाए। धनिया भी उसके साथ कंकड़ खोदने का काम करती है। एक दिन हीरा भी लौट आता है और होरी से अपने गलत कर्मों के लिए क्षमा माँगता है। एक दिन जेठ की कड़ी धूप में कंकड खोदते समय होरी को लू लग जाने से वह बेहोश हो जाता है। उसे डोली में उठाकर घर लाया जाता है। परंतु अब वह पूरी तरह से शक्ति-हीन हो जाता है। उसके आँखों के सामने उसके जीवन के विभिन्न स्मृति-चिह्न आकर चले जाते हैं। धनिया घरेलू उपचार करती है, परंतु उसका कोई फायदा नहीं होता होश आने पर वह धनिया से क्षमा माँगते हुए अपने महाप्रयाण की तैयारी करता है। हीरा 'गो-दान' करने की बात करता है। अन्य लोग भी इस बात को दोहराते हैं। अत: धनिया सुतली बेचकर आए बीस आने दातादीन के हाथ में रखकर कहती है, ''महाराज घर में न गाय है न बछिया, न पैसा। यही इनका गोदान है।'' इस तरह अविरत जीवन संघर्ष करनेवाला एक योद्धा होरी बीस आने का गोदान कर मर जाता है।

1.3.5 'गोदान' के प्रमुख पात्र

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों की भरमार है। उपन्यास में गाँव तथा शहर की दो कथाएँ एक साथ चलती हैं। अत: दोनों कथाओं से जुड़े अनेक ग्रामीण तथा शहरी पात्र उपन्यास में दिखाई देते हैं। लेखक प्रेमचंद जी ने कथा से ज्यादा चरित्र के विकास पर अधिक बल दिया है। इसलिए उपन्यास में इन सभी पात्रों का विस्तार से चित्रण हुआ है। गाँव के पात्रों में - होरी (नायक), धनिया (नायिका), गोबर (होरी का बेटा), झुनिया (गोबर की पत्नी), सोना और रूपा (होरी के पुत्री), रायसाहब (जमींदार), हीरा और शोभा (होरी के भाई), भोला (झुनिया के पिता), सिलिया (चमारिन स्त्री), मातादीन और दातादीन (ब्राह्मण बाप बेटे), दुलारी सहुआइन (दुकान की मालकिन), झिंगुरीसिंह,पटेश्वरीलाल (गाँव के साहूकार) आदि पात्र हैं। शहरी पात्रों में मेहता (दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर), मालती (डॉक्टर एवं आधुनिक नारी), खन्ना (मिल मालिक), गोविंदी (खन्ना की पत्नी), ओंकारनाथ (संपादक), मिर्जा खुर्शीद, तंखा आदि पात्र हैं। इन पात्रों में से कुछ प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण एवं उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

होरी :-

होरी गोदान उपन्यास का मुख्य पात्र एवं नायक है। उपन्यास में आरंभ से लेकर अंत तक होरी की दयनीय और संघर्षपूर्ण कथा कही गई है। होरी भारतीय किसान वर्ग का प्रतिनिधि है। भारतीय किसान की समस्त विषमता को लेखक ने होरी के माध्यम से उजागर किया है। होरी हमेशा शोषक वर्ग के हाथों यातना सहने को मजबूर है। महाजनों की एक पूरी टोली सदैव उसका शोषण करती है। होरी हमेशा परिस्थितियों के सामने नतमस्तक होता दिखाई देता है। वह कभी विद्रोह नहीं करता। सरलता, ईमानदारी और उदारता जैसे गुण उसके चरित्र की सबसे बड़ी पूँजी है। लेकिन जीवनभर संघर्ष करनेवाले होरी के बारे में स्वयं लेखक ने लिखा है, ''ऐसे प्राणी की मृत्यु पर एक गौ भी दान करने को न हो, इससे अधिक जीवन की विडंबना और क्या हो सकती है?'' उपन्यास में होरी का चरित्र जिस रूप में चित्रित हुआ है, उससे उसकी जो चारित्रिक विशेषताएँ उजागर होती हैं, वे निम्नांकित हैं।

1) **परिवार के मुखिया की जिम्मेदारी निभानेवाला :-**

बेलारी गाँव में रहनेवाला होरी अपने परिवार का मुखिया है। उसकी अपनी पाँच बीघा जमीन है। उसके परिवार में बेटा गोबर, दो बेटियाँ - सोना और रूपा तथा पत्नी धनिया आदि सदस्य हैं। वह कड़ी मेहनत करके फसल उगाता है, फिर भी उसे दो वक्त की भरपेट रोटी भी नसीब नहीं होती। अपनी जिंदगी की छोटी-छोटी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए उसे हमेशा महाजनों से कर्ज लेना पड़ता है। वह जानता है कि इस जीवन संघर्ष से छुटकारा पाना मुश्किल है। परिस्थितियों के सामने वह विवश बन जाता है। वह सोचता है कि अगर दोनों भाई अलग नहीं होते, तो आज उसके खेत में भी हल चल रहे होते। उसके बच्चों को भी दूध नसीब होता। धनिया जब गौ हत्या का मुकदमा हीरा पर दायर करना चाहती है, तो परिवार की इज्जत बचाने के लिए होरी बेटे के सिर पर हाथ रखकर झूठी सौगंध खाता है। पुलिस द्वारा घर की तलाशी को घर की बेइज्जती समझता है। इसलिए कर्जा लेकर दरोगा को रिश्वत देने को तैयार हो जाता है। हीरा गाँव छोड़कर भाग जाता है। हीरा की खेती करना वह अपना धर्म मानता है। बेटे गोबर के भाग जाने पर भी बहू झुनिया को अपने घर में रखता है। उसके कारण घर पर आए संकट का सामना करता है। वह अपनी बेटी सोना की शादी के लिए दो सौ रुपए का कर्जा लेता है। कर्ज के पैसों को ईमानदारी से चुकाने की मानसिकता भी रखता है। गोबर के बेटे के दूध का इंतजाम हो इसलिए एक गाय खरीदना चाहता है। इसलिए वह पत्थर तोड़ने का काम भी करता है। भाइयों के अलग होने पर भी होरी उनके प्रति पहले की तरह सद्भावना रखता है। हीरा की पत्नी पूनिया का स्वभाव झगडालू होने पर भी उसे बहू मानता है। दमड़ी बंसौर चौधरी जब पूनिया को धक्का देता है तो होरी अत्यधिक गुस्से में आकर चौधरी को एक लात जमा कर कहता है, ''अब अपना भला चाहते हो चौधरी तो यहाँ से चले जाओ, नहीं तो तुम्हारी लाश उठेगी। तुमने अपने को समझा क्या है? तुम्हारी इतनी मजाल की मेरी बहू पर हाथ उठाओ?'' भाईयों से अलग होने पर भी खून के रिश्ते के कारण वह पूनिया का अपमान अपना अपमान समझता है। वह भाई हीरा की मदद के लिए पत्नी धनिया को भी छोड़ने को तैयार हो जाता है वह सोचता है, ''धनिया से मेरा कोई संबंध नहीं

जहाँ चाहे जाए वह जब इज्जत बिगड़ने पर आ गई तो इस घर में कैसे रह सकती है?'' खेती में पूनिया की सहायता करने पर भी होरी की बदनामी होती है। लोग कहते हैं कि उसने सारी उपज अपने लिए रखी एहसान के बदले चरित्र पर कलंक लगे जाने पर भी होरी अपना सरल और उदार स्वभाव नहीं छोड़ता। घर का मुखिया होने का अपना कर्तव्य वह निभाता जाता है

2) व्यवहार-कुशल :-

होरी रायसाहब के यहाँ निरंतर आता-जाता रहता है। इसका कारण है रायसाहब की कृपा-दृष्टि उस पर बनी रहे। उसका मानना है कि मालिकों से मिलते-जुलते रहने के कारण ही सब उसका आदर करते हैं। नहीं तो पाँच बीघे जमीन वाले किसान की क्या औकात है? किसी भी समय पैसे की एवं कर्ज लेने की जरूरत पड़ जाने पर कर्ज मिल सके, इसलिए वह महाजनों से अच्छे संबंध बनाए रखना चाहता है। होरी साहूकारों से हँसी-मजाक करके उनसे कर्ज लेना भी अच्छी तरह जनता है। जब वह पटेश्वरी और साहूकार की खुशामद करता है, तो उनकी वसूली के तकाजे कम हो जाते हैं। साथ ही पुराना कर्ज बाकी होने पर भी नया कर्ज मिलता है। होरी रायसाहब के नाटक 'धनुष यज्ञ' में माली की भूमिका से सबको खुश कर देता है। वह पठान भेस में आए मेहता को अपने काबू में इसलिए करता है कि, वह रायसाहब को सुरक्षा दे सके तथा उन्हें प्रभावित कर सके।

3) गरीबी तथा आर्थिक अभावों से भरा जीवन :-

होरी बहुत ही गरीब है। गरीबी तथा आर्थिक अभावों ने उसे पूरी तरह असहाय एवं लाचार बना दिया है। पैसे के अभाव में बच्चों के लिए दवा-दारू का इलाज न होने के कारण उसके तीन लड़के बचपन में ही मर गए थें। उसके लड़के गोबर के लिए दूध तक नसीब नहीं हुआ था। चालीस साल की उम्र में उसके गिरते स्वास्थ्य की ओर संकेत देते हुए धनिया कहती है ''तुम्हारी दशा देखकर मैं सुखी जाती हूँ कि भगवान यह बुढ़ापा कैसे कटेगा? किसके द्वार पर भीख माँगेंगे?'' होरी कहता है, ''साठ तक पहुँचने की नौबत न आ पाएगी धनिया। इसके पहले ही चल देंगे।'' जाड़ों की रातों में खेत की रखवाली करने जाने पर सर्दी से बचने के लिए उसके पास जन्म के पहले के कंबल और पाँच साल पहले बनवाई गई फटी मिर्जई है। कड़ाके की सर्दी से बचने के यही साधन उसके पास हैं। पैरों को पेट में डालकर और हाथों को जांघों के बीच में दबाकर और कंबल से मुँह छुपा कर अपनी गर्म साँस से अपने को गर्म करने की वह चेष्टा करता है। किसान से मजदूर बन जाना यह उसके जीवन की सबसे बड़ी दर्दनाक मजबूरी है। मातादिन के यहाँ मजदूरी करते समय उसे उसकी झिड़कियाँ सहनी पड़ती है। अन्याय सहना और परिस्थितियों से समझौता करना मानो उसकी नियति है। मजदूर बनकर अत्यधिक काम करने से वह बेहोश भी हो जाता है। ठेकेदार के यहाँ पत्थर की खुदाई करते समय उसे लू लग जाती है और वही उसके जीवन का अंत कर देती है। जीवन संघर्ष करते हुए बार-बार हारने पर भी वह हिम्मत नहीं हारता, बल्कि भाग्य से लड़ता रहता है।

4) खेती की मर्यादा का पालन करनेवाला :

होरी बहुत ही मेहनती और अपने काम के प्रति निष्ठा रखनेवाला किसान है। परिस्थिति चाहे जैसी भी हो वह हर हाल में किसानी को मर्यादाजनक कार्य मानता है। होरी अच्छी तरह जानता है कि, खेती करने से उसके एक दिन की मजदूरी एक आने से भी कम है। फिर भी अपनी मर्यादा को बनाए रखने के लिए वह खेती में डटकर काम करना चाहता है। उसके लिए निरंतर संघर्ष करता रहता है। वह अपने बेटे गोबर से कहता है, ''खेती में जो मरजाद है, वह नौकरी में नहीं है।''

5) भाईयों के प्रति प्रेम तथा अपनत्व रखनेवाला :–

अपने भाईयों से अलग होने पर भी होरी अपने दोनों भाई हीरा और शोभा से प्रेमपूर्ण व्यवहार बनाए रखता है। गाँव के सभी लोग जब उसकी गाय देखने आते हैं, तो उसे लगता है कि उसके भाई भी गाय देखने आ जाए। अत: वह उन्हें बुलाने उनके घर चला जाता है। वह यह भी जानता है कि हीरा ने ही गाय को जहर खिला दिया है, फिर भी भाई को बचाने के लिए वह कहता है, ''मेरा सुबहा किसी पर नहीं है। सरकार गाय अपनी मौत से मरी है। बूढी हो गई थी'' भाई हीरा को बचाने के लिए वह अपने बेटे की झूठी सौगंध खाता है। हीरा के भाग जाने से वह दु:खी होता है। उसके परिवार का आधार बनता है। हीरा लौटकर जब अपनी कहानी सुना कर होरी से माफी माँगता है तब होरी को बहुत ख़ुशी होती है।

6) पिता होने का कर्तव्य निभानेवाला :–

उपन्यास में होरी एक अच्छे पिता के रूप में अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए प्रयत्नशील दिखाया गया है। वह हमेशा अपने बच्चों का ख्याल रखता है। गोबर को बचपन में दूध न मिलने की बात उसे हमेशा कचोटती रहती है। उसका मानना है की गोबर को यदि बचपन में दूध पिने को मिलता तो ताकतवर जवान बन जाता। गोबर के घर छोड़कर चले जाने पर भी वह अपने मन में बेटे के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखता। वह दो सौ रुपए का कर्जा लेकर अपनी बेटी सोना की शादी करता है। उसे मजबूरी में दो सौ रुपए लेकर रामसेवक से अपनी दूसरी बेटी रूपा की शादी करनी पड़ती है। इस बात से उसका मन बहुत दु:खी हो जाता है।

7) सीधा–सादा मानवता प्रेमी किसान :–

होरी का स्वभाव बहुत ही सरल, भोला और निश्छल है। वह छल कपट करना नहीं जानता। उसकी कथनी और करनी में प्राय: समानता रहती है। परंतु कभी–कभी समय पड़ने पर थोड़े से स्वार्थ के लिए झूठ बोलना वह पाप नहीं समझता। समस्त मानव जाति के लिए उसके दिल में ममत्व और सहानुभूति है। किसी दूसरे की असहायता का फायदा उठाना वह नहीं जानता। भोले के पास भूसा ना होने का फायदा उठाकर वह तुरंत उसकी गाय अपने लिए ले सकता था। परंतु गाय की रस्सी भोला को लौटाते हुए वह कहता है, ''रुपया तो दादा मेरे पास नहीं। हाँ, थोड़ा–सा भूसा बचा है, वह तुम्हें दूँगा। चलकर उठा लो। भूसे के लिए

तुम गाय बेचोगे और मैं लूँगा। मेरे हाथ न कट जाएँगे।'' अपने घर में भूसे की कमी होनेपर भी वह भोले को तीन खौंचा भूसा उसे देता है।

8) यथार्थ चरित्र के रूप में प्रस्तुत :-

उपन्यास में होरी अपने समस्त गुण-दोषों को लेकर एक यथार्थ चरित्र के रूप में हमारे सामने आता है। कुछ फायदे के लिए होरी आम आदमियों की तरह झूठ भी बोलता है। वह भोले को सगाई का झूठा आश्वासन देकर उससे गाय लेना चाहता है। लेकिन उसी वक्त उसकी अंतरात्मा उसे धिक्कारती है। वह कहता है, ''किसी भाई का नीलाम पर चढ़ा हुआ बैल लेने में जो पाप है, वह इस समय तुम्हारी गाय लेने में है। ''वह सोचता है कि अगर वह भोले के पैसे समय पर नहीं लौटाता तो भोला पैसे माँगने आएगा, गुस्सा करेगा, गालियाँ देगा, तो इसमें शर्म करने की कोई बात नहीं। उसका मानना है कि कभी कभी थोड़ा-सा छल करना जायज है। वह यह भी मानता है कि अपने पास कुछ आने पर भी महाजन से झूठ कहना, बेचते समय सन को गिला करके बेचना, रूई में बिनौले भरना गरीबी तथा दरिद्रता की मजबूरियाँ है और यह कोई बुरी बातें नहीं हैं। होरी बाँस बेचते समय भी अपने भाई से ढाई रुपए की बेईमानी करने का प्रयत्न करता है। इससे होरी को अपने आप पर बहुत पछतावा होता है। खलियान में जब सारा अनाज तुल जाने पर जमींदार और महाजन अपना हक ले जाने के बाद उसके पास केवल पाँच शेर अनाज बचता है। अत: वह चुपके से रातों-रात भूसा छिपाता है। पुनिया पर हाथ उठानेवाले चौधरी को लात मारता है, परंतु खुद सभी के सामने धनिया की पिटाई करता है। पर इस बात का भी उसे पश्चाताप होता है। इसीलिए तो वह मरते समय धनिया से माफी माँगता है। भोला की गाय के रुपए देने में देर करता है और फिर सोचता है जो आदमी हम पर इतना विश्वास करें, उसके साथ धोखा करना नीचता है।

9) धार्मिक विश्वास में पूर्ण आस्थावान एवं भाग्यवादी :-

होरी का भाग्यवाद और कर्मवाद पर पूरा विश्वास है। समाज में प्रचलित सभी धार्मिक विश्वासों में होरी की पूरी तरह से आस्था है। प्राकृतिक आपदाओं और ईश्वर के रौद्र रूप से वह सदा आशंकित रहता है। उधार लिए पैसों को चुकाना वह अपना धर्म मानता है। उसका मानना है कि उसकी गरीबी और दु:ख-दर्द की स्थिति यह सब उसके पूर्व जन्म के पाप का फल है और सब प्रकार का सुख भोग रहे रायसाहब उनके पूर्व जन्म के पुण्य का फल है। एक स्थान पर वह गोबर से कहता है ''बेटा छोटे-बड़े भगवान के घर से बनकर आते हैं। संपत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है। उन्होंने पूर्व-जन्म में जैसे कर्म किए हैं, उसका आनंद भोग रहे हैं। हमने कुछ संचा नहीं तो भोगे क्या?'' वह ब्राह्मण और पंचों को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता है। इसीलिए उनके अनुचित निर्णय को भी सर झुकाकर स्वीकार कर लेता है। जब भोला बैल खोलकर ले जाने के लिए आता है तो होरी उससे कहता है अगर तुम्हारा धर्म कहे तो बैल खोलकर ले जाओ जब भोला सचमुच बैल ले जाता है, तो होरी इसे भाग्य का विधान मानता है।

10) कर्ज के शोषण का शिकार :-

आर्थिक अभाव के कारण होरी को निरंतर कर्जा लेना पड़ता है। इसी कर्ज के कारण उसके जिंदगी की परेशनियाँ बढती जाती हैं। दातादीन जैसे पाखंडी ब्याज का अधिक दर लगाते हैं, यह जानते हुए भी होरी उनके रुपए चुकाता है। बिरादरी में अपनी इज्जत बनी रहे इसलिए अपनी औकात के हिसाब से होरी सामाजिक कार्यों में खर्च करता है। चाहे उसके लिए कर्ज भी क्यों न लेना पड़े भाईयों से अलग होते समय उसने जो कर्जा लिया था वह बढ़ता ही जाता है, जो उसे ही चुकाना पड़ता है। होरी आलू बोने के लिए दातादीन से तीस रुपए का कर्जा लेता है। आलू तो चोर ले जाते हैं, लेकिन तीस रुपए का कर्जा ब्याज सहित दो सौ रुपए हो जाता है। होरी सोचता है कि इस तरह ब्याज बढ़ता जाएगा तो एक दिन उसके घर द्वार की नीलामी निश्चित हो जाएगी।

11) धर्म मर्यादा की रक्षा करनेवाला :-

होरी धर्म की मर्यादा की रक्षा करने के लिए बिरादरी का विरोध होने के बावजूद बहू झुनिया को घर में रखकर सारी परेशानियों का सामना करता है। बिरादरी का दंड भरने के लिए वह अपना मकान गिरवी रखता है। मातादिन जब सिलिया का परित्याग करता है, होरी उसे अपने घर में शरण देता है। वह हमेशा मानवता धर्म का पालन करता है। चाहे उसके लिए उसे कितनी ही विपत्ति का सामना करना पड़े। होरी धनिया की फटकार सहता है। पुत्र के व्यंग्य वचन सहता है। महाजन की गालियाँ, मालिक की धमकियाँ आदि सभी को सहते हुए एक वीर योद्धा की तरह अंत तक जीवन संघर्ष करता रहता है। अंत में वह मिट जाता है, लेकिन उसका इस तरह मिटना उसकी हार नहीं है, बल्कि कर्म के लिए एक प्रकार की प्रेरणा है। उसका मर जाना केवल मरना नहीं है, बल्कि मर कर भी अमर हो जाना है। एक किसान के रूप में अपना अस्तित्व बनाए रखने का वह अंत तक प्रयास करता है। स्वयं लेखक के शब्दों में, ''जीवन के सारे संकट, सारी निराशाएँ मानो उसके चरणों पर लोट रही थीं। कौन कहता जीवन संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह हर्ष, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इसी हार में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे वस्त्र उसकी विजय पताकाएँ हैं।''

धनिया :-

धनिया होरी की पत्नी है। वह उपन्यास की नायिका है। होरी के साथ गृहस्थी चलाते हुए और आनेवाली परेशानियों का सामना करते-करते छत्तीस साल की उम्र में ही वह बूढ़ी बन चुकी है, उसके बाह्य व्यक्तित्व को लेकर लेखक ने लिखा है, ''उसकी अवस्था छत्तीस वर्ष की है पर सारे बाल पक गए थें, चेहरे पर झुर्रियां पड गई थीं। सारी देह ढल गई थी, सुंदर गेहूँआ रंग सांवला हो गा गया और आँखों से कम सुझने लगा था। इस चिरस्थायी जीर्णावस्था ने उसके आत्मसम्मान को उदासीनता का रूप दे दिया था।'' एक भारतीय नारी की तरह धनिया हर सुख-दुःख में, संकट की घडी में हमेशा अपने पति का साथ देती है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

1) ऊपर से कठोर लेकिन हृदय से कोमल :–

धनिया होरी के सीधे–सादे व्यक्तित्व पर गुस्सा करती रहती है। वह इस बात को लेकर होरी को फटकारती भी है। उसके व्यवहार कुशल न होने कारण उसकी अन्य लोगों से ज्यादा बनती नहीं है। डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में, ''वह ऊपर से कठोर है, लेकिन हृदय से बहुत कोमल है। प्रेमचंद के नारी पात्रों में वह अन्यतम है। उसके बराबर न कोई परिश्रम करनेवाली है, न और किसी पर सरस्वती की ऐसी कृपा है।'' धनिया पूरे गाँव में अपने झगडालू स्वभाव के कारण प्रसिद्ध है। अत: गाँव के महाजन उसका सामना करने से डरते हैं। परंतु हृदय से वह कोमल एवं दयालु है। दीन और दु:खियों के प्रति सहानुभूति होने से वह उन्हें अपने घर में आश्रय भी देती है। पूरे गाँव तथा बिरादरी का विरोध होने के बावजूद भी वह पाँच महीने की गर्भवती झुनिया को अपने घर में रखती है। साथ ही घर से निकाली गई सिलिया को अपने घर में आश्रय देती है।

2) मातृ स्नेही व्यक्तित्व :–

पाँच महीने की गर्भवती झुनिया जब घर आती है, तो इस बात की होरी को खबर देने वह खेत में जाती है। होरी इस बात को सुनकर अत्यधिक क्रोध में आता है। गुस्से में ही वह घर की ओर निकल पड़ता है और धनिया से कहता है, वह झुनिया का झोटा पकड़कर घर से बाहर निकल देगा। होरी का यह क्रोधित रूप देखकर धनिया का मातृत्व जाग उठता है। वह होरी से प्रार्थना करती है कि, ''देखो, तुम्हें मेरी सौंह उस पर हाथ न उठाना। वह तो आप ही रो रही है। भाग की खोटी न होती तो यह दिन ही क्यों आता?'' प्रेमचंद जी के शब्दों में, ''धनिया का मातृ–स्नेह उस अँधेरे में भी जैसे दीपक के समान उसकी चिंता आकृति को शोभा प्रदान करने लगा। होरी को इस बीते यौवन में भी वही कोमल हृदय बालिका नजर आई, जिसने पच्चीस साल पहले उसके जीवन में प्रवेश किया था। उस आलिंगन में कितना अगाध वात्सल्य था, जो सारे कलंक, सारी बाधाओं और सारी मूलबद्ध परंपराओं को अपने अंदर समेट लेता था।'' घर आकर दोनों पति–पत्नी झुनिया को सांत्वना देते हैं। धनिया की यही मातृत्व भावना हमेशा झुनिया की रक्षा करती है। पूरा गाँव धनिया से झुनिया को घर में रखने के कारण टोकता है, उसे घर से निकाल देने को कहते है। लेकिन धनिया सबको मुँह तोड़ जवाब देती है। जब सिलिया दातादीन और स्वयं उसके माँ–बाप द्वारा ठुकराने पर निराश्रित हो जाती है तब धनिया उसके प्रति करुणा प्रकट करते हुए कहती है, ''जगह की कौन कमी है बेटी? तू चल मेरे घर।''

3) **अन्याय का विरोध करनेवाली :–**

उपन्यास में धनिया हमेशा अन्याय का विरोध करती दिखाई देती है। इस कारण वह अपने पति होरी से भी उलझती है। झुनिया को लेकर उसके घर पर बड़ी विपदा आ जाती है। होरी का हुक्का पानी बंद कर उस पर जुर्माना लगाया जाता है। होरी सर झुकाकर बिरादरी और पंचों के इस अन्याय को स्वीकार कर लेता है। परंतु धनिया इस अन्याय का विरोध करती हुई कहती है, ''पंचों गरीब को सताकर सुख न पाओगे। इतना समझ लेना हम तो मिट जाएँगे, कौन जाने इस गाँव में रहें या न रहें लेकिन मेरा सराप तुमको जरुर से जरुर

लगेगा। मुझसे इतना बड़ा जरीमाना इसलिए लिया जा रहा है, कि मैंने अपनी बहु को क्यों अपने घर में रखा? क्यों उसको घर से निकाल कर सडक की भिखारिन नहीं बना दिया? यही न्याय हैं?'' सिलिया को घर में रखने से दातादीन के बिगड़ने की बात होरी धनिया से कहता है। इस पर धनिया कहती है, ''बिगड़ेंगे तो एक रोटी बेसी खाँ लेंगे और क्या करेंगे? कोई उनकी दबैल हूँ। उसकी इज्जत ली, बिरादरी से निकलवाया, अब कहते हैं मेरा तुमसे कोई वास्ता नहीं। आदमी है कि कसाई'' इसी प्रकार भोला जब झुनिया को घर से निकालने के लिए आता है तो धनिया उसे भी फटकारती है। वह अन्याय को किसी भी तरह सहन करने के लिए तैयार नहीं होती। जब होरी हीरा के घर की तलाशी बचाने के लिए दरोगा को रिश्वत देने जाता है तो धनिया बिना कोई परवाह किए उससे रुपए छिन लेती है और दरोगा से कहती है, ''देख लिया तुम्हारा न्याय और अक्ल की दौड़। गरीबों का गला काटना दूसरी बात है, दूध का दूध और पानी का पानी करना दूसरी।'' गाँव के पंचों और साहूकारों को सुनाते हुए कहती है, ''ये हमारे गाँव के मुखिया हैं। गरीबों का खून चूसनेवाले। सूद, ब्याज, नजर-नजराना, घूस-घास जैसे भी हो गरीबों को लूटो उस पर सूराज चाहिए। जेल जाने से सूराज नहीं मिलेगा, सुराज मिलेगा धर्म से, न्याय से।'' इस तरह धनिया अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती हुई दिखाई देती है।

4) स्वाभिमानी तथा दृढ़ चरित्र-वाली नारी :-

किसान से मजदूर बनने के लिए विवश होने पर होरी और धनिया दातादीन के यहाँ मजदूर बनकर काम करना शुरू करते हैं। परंतु धनिया का स्वाभिमान एवं आत्मसम्मान थोडा भी कम नहीं होता। एक दिन दातादीन काम करते वक्त हाँफती हुई देखकर धनिया को डांटता है और कहता है, ''अगर यही हाल है तो भीख भी माँगोगे।'' इस पर धनिया तुरंत उत्तर देती है, ''भीख माँगो तुम, जो भिखमंगों की जात हो। हम तो मजूर ठहरे, जहाँ काम करेंगे, वही चार पैसे पायेंगे।'' विपदा की परिस्थिति में भी धनिया का यह उत्तर उसके स्वाभिमान और दृढ़ चरित्र को ही उजागर करता है। बेटी सोना के विवाह के समय में भी जब समधी दान-दहेज़ संबंधी चिंता न करने की बात करते हैं, तो धनिया का स्वाभिमान जाग जाता है और वह कहती है, ''लेकिन हमें भी तो मरजाद का निर्वाह करना है। संसार क्या कहेगा? रुपया हाथ का मैल है। उसके लिए कुल-मरजादा नहीं छोड़ी जाती। जो कुछ हमसे हो सकेगा, देंगे और गौरी को लेना पड़ेगा।''

5) सत्यवादिनी नारी :-

धनिया सत्यवादिनी नारी है। झूठ और दांभिकता से उसे घृणा है। धार्मिक आडंबरों को तथा थोथी मर्यादा को वह निस्सार मानती है। उसकी दृष्टि में मानवता ही मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है। उसके संपूर्ण चरित्र का आधार सत्य और यथार्थ है। वह सत्य और करुणा की मूर्ति है। सत्य के लिए वह अपने पति होरी से भी उलझती है। वह होरी की तरह छल-फरेब करना नहीं जानती। कभी भी झूठ नहीं बोलती।

6) **संघर्षशील नारी :-**

धनिया उपन्यास में निरंतर जीवन संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। उसके जीवन का संघर्ष कभी ख़त्म नहीं होता। विवाह के बाद के दिन देवरों के पालन-पोषण में निकल जाते हैं। बाद में आर्थिक अभाव भरी स्थिति में उसे होरी की गृहस्थी चलानी पड़ती है। परिवार तथा बच्चों की चिंता में और निरंतर आनेवाली

परेशानियों के कारण वह समय से पहले बूढी हो जाती है। एक के बाद एक आनेवाली विपदाओं का धनिया डटकर सामना करती है। एक वीर और कर्मठ नारी के समान वह आनेवाले संकटों से कभी हार नहीं मानती। किसान से मजदूर बनने पर धनिया पति के साथ मिलकर मजदूरी भी करती है। जीवन संघर्ष में वह अपने पति का साथ कभी नहीं छोडती। जिनकी उसने सहायता की वे भी उसे सताते एवं दुःख पहुँचाते हैं। उनके इस प्रकार के व्यवहार से उसका मन बहुत दुःखी होता है। परंतु धनिया इन सभी बातों को स्वीकार कर अपनी जिंदगी जीती रहती है।

7) होरी की जीवनसंगिनी और पतिव्रता नारी :–

धनिया के बारे में लेखक ने लिखा है, ''कभी किसीने उसे किसी दूसरे की ओर ताकते नहीं देखा'' एक बार पटेश्वरी ने उसके साथ छेड़-छाड़ करने का प्रयास किया था। धनिया ने उसका ऐसा मुँहतोड़ जवाब दिया था कि वह उसे भूल नहीं पाता। वह पति के कंधे से कंधा मिलाकर जीवन संघर्ष करती है।

परंतु हीरा के प्रसंग में जब होरी सभी के सामने उसे पिटता है, तो उसे वह सहन नहीं कर पाती और पति से बोलना छोड़ देती है। लेकिन जब होरी बीमार पड़ता है, तब धनिया अपने सारे मान-अपमान को भूलकर पति की सेवा करती है। उस समय वह कहती है, ''पति जब मर रहा है तो उससे कैसे बैर। ऐसी दशा में तो बैरियों से बैर नहीं रहता, वह तो अपना पति है। लाख बुरा हो, पर उसीके साथ जीवन के पच्चीस साल कटे हैं। सुख लिया है तो उसी के साथ, दुःख भोगा है तो उसी के साथ। अब तो चाहे अच्छा हो या बुरा, अपना है।''

८) ग्रामीण नारी समाज का प्रतिनिधि पात्र :–

उपन्यास में धनिया का अत्यंत स्वाभाविक रूप में चित्रण मिलता है। वह ग्रामीण नारी समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, जो अपने स्वाभिमान को बनाए रखते हुए जीवनभर गरीबी, दरिद्रता और शोषण के खिलाफ संघर्ष करते रहते हैं। वह जीवन में कभी हार नहीं मानती। उसमें नारी सुलभ अन्य गुण भी दिखाई देते हैं, जैसे अपनी प्रशंसा सुनकर खुश हो उठना, अपनों का ही विरोध देखकर चुप हो जाना। धनिया संकटों का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहती है। जिस तरह होरी जीवनभर संघर्ष करते हुए मर जाता है, उसी तरह धनिया भी संघर्षरत रहती है। वह बड़े साहस, धैर्य के साथ गृहस्थी की जिम्मेदारी को निभाती है।

9) साहसी तथा निर्भीक नारी :–

धनिया गरीब है, परंतु किसीसे डरती नहीं। जो उसके मन में है, उसे बेबाकी से बोल देती है। झुनिया और सिलिया के प्रसंग में पूरे गाँव का और बिरादरी का विरोध होते हुए भी उन दोनों को अपने घर में रखने का साहस दिखाती है। दरोगा को होरी जब रिश्वत दे रहा होता है, तब धनिया रिश्वत के पैसे छिन लेने का प्रयास करती है और दरोगा से ललकार से कहती है, ''मैं दमड़ी भी नहीं दूँगी, चाहे मुझे हाकिम के इजलास तक ही चढ़ना पड़े।'' धनिया वहाँ उपस्थित मुखिया, साहूकार, पटवारी किसी की भी परवाह न करते हुए

सभी को सुनाती है। पंचों के अन्याय और दंड का विरोध करते हुए वह कहती है, ''पंचों, गरीब को सताकर सुख न पाओगे। इतना समझ लेना हम तो मिट जाएँगे, कौन जाने इस गाँव में रहें या न रहें, लेकिन मेरा सराप तुमको जरुर से जरुर लगेगा। मुझसे इतना बड़ा जरीमाना इसलिए लिया जा रहा है, कि मैंने अपनी बहु को क्यों अपने घर में रखा? क्यों उसको घर से निकाल कर सडक की भिखारिन नहीं बना दिया? यही न्याय हैं?'' बिरादरी से निकाल दिए जाने की धमकी का उस पर कोई असर नहीं होता। वह कहती है, ''बिरादरी में रहकर हमारी मुकुत नहीं हो जाएगी। अब भी अपने पसीने की कमाई खाते हैं, तब भी अपने पसीने की कमाई खाएँगे।'' इस तरह सत्य की शक्ति धनिया को साहसी बना देती है। वह अपने निर्णय पर अटल रहती है।

10) सहनशील नारी :-

धनिया दूसरों के लिए कष्ट सहती है। विवाह के उपरांत संयुक्त परिवार में देवर-देवरानियों के लिए कष्ट उठाती है। आराम की रोटी कभी नसीब नहीं होती, फिर भी अपने कर्तव्य से कभी मुँह नहीं मुखरती। होरी उसके बारे में कहता है, ''बेचारी जब से घर में आई है, कभी भी आराम से नहीं बैठी। डोली से उतरते ही सारा काम सर के ऊपर ले लिया। तब देवरों के लिए मरती थी, अब बच्चों के लिए मरती है।'' अभावग्रस्त जीवन के कारण कईं बार उसे सभी को खिलाकर पानी पीकर सोना पड़ा है। पति द्वारा पिटे जाने पर उसे भी सहन करती है। गाय खरीदने की लालसा से पति के साथ देर रात तक सुतली कातती है। होरी की सहधर्मिणी और सहकर्मिनी बनकर हमेशा साथ देती है। होरी जब भी संकट में होता है, तो उसका पक्ष लेकर उसकी रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहती है। वह अपने माध्यम से होरी के चरित्र को पूर्णता प्रदान करती है। उसके बिना होरी का जीवन अधूरा लगता है।

गोबर :-

गोबर होरी और धनिया का बेटा है। उसका स्वभाव अपने पिता से बिल्कुल विपरीत है। वह अन्याय को सहन नहीं करना चाहता, अत: उसका विरोध करता है। नई पीढ़ी का असंतोष उसीके माध्यम से प्रकट होता है। अभावग्रस्त जीवन और कर्ज के शोषण के कारण अपने पिता की असहायता देखकर गोबर का स्वभाव विद्रोही बन जाता है। उसे किसानी में कोई मर्यादा दिखाई नहीं देती। उसका मानना है कि पैसा ही सब-कुछ है। पैसा ही हमें समाज में प्रतिष्ठा दिलाता है। उसके अनुसार, ''जिसके साथ चार पैसे गम खाओ, वही अपना खाली हाथ माँ-बाप भी नहीं पूछते।'' गोबर की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1) विद्रोही स्वभाव :-

गोबर भले ही होरी का पुत्र है, लेकिन उसका स्वभाव अपने पिता से बिल्कुल भिन्न है। उसने बचपन से अपने पिता को कड़ी मेहनत करते देखा है। छोटी-छोटी आकांक्षाओं की पूर्ति न होने से दु:खी होते देखा है। अत: जमींदार, महाजन, आदि के अन्याय को देखकर वह विद्रोह करना चाहता है। लेकिन होरी उसे ऐसा करने से रोकता है। समाज में वह देखता है कि धन से ही व्यक्ति का सम्मान होता है। जिसके पास धन है,

चाहे फिर वह चरित्रहीन हो, शोषक क्यों न हो समाज में उसकी ओर आदर की दृष्टि से देखा जाता है। गोबर इन सभी बातों को अच्छी तरह से समझता है। उसे होरी का बार-बार रायसाहब के यहाँ जाना पसंद नहीं, इसलिए वह कहता है, ''यह तुम रोज-रोज मालिकों की खुशामद करने क्यों जाते हो? बाकी न चुके तो प्यादा आकर गालियाँ सुनाता है, बेगार देनी पड़ती है, नजर-नजराना सभी तो हमसे भराया जाता है, फिर किसी को क्यों सलामी करें?'' गोबर के अनुसार, ''यहाँ जिसके हाथ लाठी है, गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।'' इसलिए वह किसी का भी अन्याय सहने के लिए तैयार नहीं होता। उसका कर्मकांड और भाग्यवाद पर भी विश्वास नहीं है। उसके अनुसार भगवान ने सबको समान बनाया है। सामाजिक विषमता का निर्माण तो इन अत्याचारियों ने किया है। होरी जब रायसाहब के दु:खों की बात करता है, तो गोबर उनकी असलियत सामने लाते हुए कहता है, ''अगर रायसाहब को हजारों चिंताएँ सताती हैं, तो फिर अपना इलाका हमें क्यों नहीं दे देते? हम अपने खेत, बैल, हल, कुदाल सब उन्हें देने को तैयार हैं। यह सब धूर्तता है। जिसे दु:ख होता है, वह दर्जनों मोटरें नहीं रखता, महलों में नहीं रहता, हलवा पूड़ी नहीं खाता और न नाच रंग में लिप्त रहता है।'' इस तरह किसानों, मजदूरों का शोषण कर मजे की जिंदगी जीनेवाले धनवान लोगों के प्रति गोबर के मन में विद्रोह की भावना है।

2) जागरूक युवक :-

गोबर जानता है कि रायसाहब जैसे लोग गरीब किसानों की कमाई पर भजन-पूजन तथा दान-धर्म करते हैं। वह इसी वास्तविकता को सामने लाते हुए कहता है ''यह पाप का धन पचे कैसे? इसलिए दान-धर्म करना पड़ता है। भगवान का भजन भी इसीलिए होता है। भूखे-नंगे रहकर भगवान भजन करें, तो हम भी देखें। हमें कोई दोनों जून खाने को दे दे, तो हम आठों पहर भगवान का जाप ही करते रहें।'' अन्याय का यह ज्ञान गोबर को जीवन की पाठशाला से मिला है। इस तरह गोबर उन युवक किसानों का प्रतिनिधित्व करता है, जो अत्याचारियों की वास्तविकता को समझने लगे थें। वे उनका विरोध भी करना चाहते हैं। परंतु विरोध कैसे करें इसे नहीं जानते।

3) रुढियों के बंधनों से विवश :-

गोबर गाँव के महाजन और साहूकारों की भी असलियत जनता है। परंतु उसकी समझ में नहीं आता इस अन्याय का कैसे प्रतिकार करें? होरी की चापलूसी करने की आदत उसे बिल्कुल पसंद नहीं है। जो बातें गाँव में रहकर उसकी समझ में नहीं आती वह शहर में जाकर आती हैं। शहर में वह राजनीतिक सभाओं में दिए जानेवाले भाषणों को सुनता है। और समझता है कि अपना भाग्य खुद बनाना होगा, अपनी बुद्धि के बल पर परेशानियों पर विजय हासिल करनी होगी। परंतु जब वह गाँव लौटता है, तो होरी आदि की स्थिति देखकर हताश हो जाता है। वह महसूस करता है कि होरी की रुढ़िवादी मान्यताओं को तोड़ने का सामर्थ्य उसमें नहीं है। अत: गोबर निराश और विवश होकर शहर लौट आता है।

4) कानून का जानकार :–

गोबर शहर में रहकर कानून संबंधी अनेक बातों को जानने लगता है। कायदे–कानून की दृष्टि से सजग होता है। दातादीन का हिसाब लगाकर उसके ब्याज का परिमाण बताता है। लगान चुकाने पर रसीद लेने पर जोर देता है। गोबर पिता से कहता है। कर्ज की रकम चुकाने पर रसीद लिजिए। रसीद देने में अनाकानी करने पर डाक से रुपए भेज दीजिए, ताकि देने पर भी न देने की कोई बात न करें। वह साहूकारों और महाजनों की करतूतों को उजागर करने के लिए उन्हें अदालत में खिंचने की धमकी भी देता है। अन्याय होने की संभावना को देखते हुए वह उसी समय संबंधित को टोकता है। इस तरह गोबर कानून का जानकर होने से अन्याय–अत्याचार के खिलाफ बोलने का साहस दिखाता है।

5) निर्दयी स्वभाव :–

झुनिया के गर्भवती होने पर गोबर उसे घर के बीच रास्ते में ही छोड़कर शहर भाग जाता है। जिसके साथ जिंदगी बिताने का वादा किया था उसे भूल जाता है। शहर से गाँव आकर फिर से शहर लौटते समय अपनी माँ से झगडा करता है। पाँव छूकर आशीर्वाद भी नहीं लेता। माँ के दिल को दु:ख पहुँचाता है। पिता से भी उल्टी–सीधी बातें करता है। झुनिया को मार–पिट भी करता है, जबकि झुनिया उस समय गर्भवती होती है। अपने परिवार के प्रति उसमें अपनापन दिखाई नहीं देता। इसीलिए तो वह केवल अपने बारे में सोचकर परिवार की जिम्मेदारी लेने से मना करता है।

6) अल्हड़ युवक :–

दुनियादारी की परिपक्कता गोबर में न आने से वह झुनिया के आकर्षण में फँस जाता है। उस पर जान न्यौछावर करने की बात करता है। जिंदगीभर साथ देने का वादा करता है। वह सोचता है झुनिया को अपना लेने से पूरा गाँव उसका विरोधी बनेगा। बिरादरी झंझट पैदा करेगी। ऐसा होने पर वह गाँव छोड़ देगा वह जानता है कि समाज में पैसेवालों का ही सम्मान होता है। इसलिए वह शहर में जाकर पैसे कमाने का निर्णय लेता है। झुनिया को छोड़कर भागने का उसे दु:ख है। लेकिन यह सोचते हुए मन को समझाता है कि, ''झुनिया उसे दगाबाज समझती है, तो समझे। वह तो अब तभी आवेगा, जब वह पैसे के बल से गाँव का मुँह बंद कर सके और दादा, अम्मा उसे कुल कलंक न समझकर कुल का तिलक समझें।'' इस तरह युवावस्था की अल्हड़ता गोबर में दिखाई देती है।

7) स्वार्थी व्यक्तित्व :–

गोबर के आचरण से उसके स्वार्थी स्वभाव का भी पता चलता है। झुनिया को छोड़कर शहर भाग जानेवाला गोबर झुनिया की खबर तक नहीं लेता। शहर में मिर्जा खुर्शीद के यहाँ काम करता है, वही रहता है। परंतु जब मिर्जा खुर्शीद उसे पाँच रुपए उधार माँगते है, तो पैसे नहीं है कहकर बात टाल देता है। जिस बाप ने उसका पालन–पोषण किया, उसी बाप के सामने वह कहता है, वह लावारिस की तरह बड़ा हुआ है। जीवनभर कड़ी मेहनत करनेवाले माँ–बाप का दिल दु:खाता है। शहर जाते समय माँ के चरणस्पर्श भी नहीं

करता। घर की जिम्मेदारी को टालते हुए वह स्पष्ट शब्दों में कहता है कि, ''और तुम भी चाहती हो और दादा भी चाहते हैं कि मैं सारा कर्जा चुकाऊँ, लगान दूँ, लड़कियों का ब्याह करूँ, जैसे मेरी जिंदगी तुम्हारा देना भरने के लिए है, मेरे भी तो बाल-बच्चे हैं। तुम्हारी गृहस्थी का सारा बोझ मैं नहीं उठा सकता।'' इस तरह गोबर का स्वार्थी होना सिद्ध होता है।

8) धनी बनने की आकांक्षा रखनेवाला :-

समाज की स्थितियों को देखने के पश्चात् गोबर का कहना है कि धनी व्यक्ति को ही समाज में प्रतिष्ठा तथा यश मिलता है। धन के सामने परिश्रम, सदाचरण, ईमानदारी को कोई महत्व नहीं है। आर्थिक अभाव से ग्रस्त अपने पिता को देखकर वह पैसे कमाने की ठान लेता है। पैसे कमाने के लिए वह भी गाँव के महाजनों के हथकंडों को अपनाता है। वह सूद पर पैसे देना आरंभ करता है। सूदखोरों की तरह ही वह भी शहर में आकर स्वार्थी बन जाता है। पैसे होने पर भी वह मिर्जा खुर्शीद को उधार पर पैसे नहीं देता। सूदखोरी, शोषण, अत्याचार का विरोध करनेवाला गोबर स्वयं धनी बनने की आकांक्षा में वही सब करने लगता है। ऐसा क्यों होता है? इसका कारण है, गोबर का अशिक्षित होना। वह शिक्षित होता तो शायद ऐसा नहीं करता। उसने तो धन कमाने के उसी मार्ग को अपनाया, जिसे उसने अपने गाँव में बचपन से ही देखा था। उसका शहर में भाग जाने के पीछे पैसे कमाना यह भी एक कारण रहा है।

9) निर्भीक युवक :-

उपन्यास में गोबर का चरित्र एक निर्भीक युवक के रूप में अंकित हुआ है। शहर में रहने से उसे जीवन के विभिन्न अनुभव प्राप्त हुए हैं। साथ ही रायसाहब को उसने नजदीक से देखा है। अत: उनसे वह बिल्कुल नहीं डरता। रायसाहब का कारकुन नोखेराम जब होरी को सताने हेतु दुबारा लगान वसूल करने की बात करता है, तो गोबर उससे कहता है कि गाँव वालों की गवाही दिलवाकर यह सिद्ध कर देगा कि नोखेराम बिना रसीद दिए लगान वसूली करता है। साथ ही गोबर नोखेराम को यह धमकी देता है कि तुम्हारी सारी करतूतें रायसाहब को बताऊँगा। इससे नोखेराम डर जाता है और होरी को सताना छोड़ देता है। इस तरह प्रेमचंद गोबर की निर्भिकता और दृढ़ता में सत्य का बल होने की बात करते हुए कहते हैं, ''उसकी वाणी में सत्य का बल था। डरपोक प्राणियों में सत्य भी गूंगा हो जाता है।''

संक्षेप में गोबर भारतीय किसानों के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो अन्याय का विरोध करते हुए उज्वल भविष्य की और बढ़ रहा है।

प्रोफेसर मेहता :-

प्रस्तुत उपन्यास में प्रोफेसर मेहता दर्शनशास्त्र के अध्यापक के रूप में चित्रित हुए हैं। समाज में व्याप्त सभी समस्याओं पर वे अपने विचार व्यक्त करते हैं। शहरी बुद्धिजीवि लोगों की मानसिकता मेहता के माध्यम से उजागर होती है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1) स्पष्टवादी व्यक्तित्व :-

मेहता स्पष्टवादी व्यक्ति हैं। हमेशा सच बोलते हैं। वे किसी की भी निरर्थक प्रशंसा नहीं करते। शिकार के वक्त जंगली लड़की संबंधी डॉ. मालती से नि:संकोच अपनी टिप्पणी देते हुए वे कहते हैं, ''कुछ बातें तो उसमें ऐसी है कि अगर तुममें होती तो तुम सचमुच देवी हो जाती।'' स्वयं लेखक ने उनके स्पष्टवादी स्वभाव के बारे में लिखा है, ''मेहता को कटु सत्य कहने में संकोच नहीं होता था। मेहता साहब स्त्रियों की सभा में जो भाषण देते हैं और स्त्रियों के सामने जो उनकी कटु और निष्ठुर आलोचना करते हैं, वह भी उनकी स्पष्टवादिता का ही प्रमाण है।''

मेहता शादी संबंधी अपना मत रायसाहब को सुनाते हुए कहते हैं, ''क्षमा कीजिएगा, आप ऐसा प्रश्न लेकर आए हैं कि, उस पर गंभीर विचार करना मैं हास्यास्पद समझता हूँ। आप अपनी शादी के जिम्मेदार हो सकते हैं। लड़के की शादी का दायित्व क्यों अपने ऊपर लेते हैं? खासकर जब आपका लड़का बालिक है। और अपना नफा-नुकसान समझता है। कम से कम मैं तो शादी जैसे महत्व के मुकाबले में प्रतिष्ठा का कोई स्थान नहीं समझता।''

2) दोहरी जीवन दृष्टि रखनेवालों से नफरत :-

मेहता दोहरी जीवन दृष्टि रखनेवालों से नफरत करते हैं। उनका मानना कि, अगर मांस खाना पसंद है, तो खुलकर खाओ। बुरा समझते हो तो मत खाओ। परंतु बुरा समझना और छिपकर खाना धूर्तता है, कायरता है। मेहता रायसाहब के व्यक्तित्व से भलिभाँति परिचित हैं। इसीलिए रायसाहब से कहते हैं, ''मानता हूँ आपका अपने आदमियों के साथ बहुत अच्छा बर्ताव है। मगर प्रश्न यह है कि उसमें स्वार्थ है या नहीं?'' मेहता की दृष्टि से अगर आप स्वार्थ के लिए अच्छा बर्ताव करते हो, तो निश्चित रूप से आपका व्यक्तित्व दोहरा है।

3) भावुक और संवेदनशील व्यक्तित्व :-

मेहता भावुक और संवेदनशील व्यक्ति है। दु:खी, पीड़ित, असहाय लोगों के प्रति उनके दिल में सहानुभूति है। गोविंदी जी के दु:ख से द्रवित होकर वह कहते हैं, ''मुझे न मालूम था आप उनसे इतनी दु:खी हैं। मेरी बुद्धि का दोष, आँखों का दोष, कल्पना का दोष, और क्या कहूँ? वरना आपको इतनी वेदना क्यों सहनी पड़ती?'' गाँव के किसानों के शोषण को लेकर भी वे संवेदनशील हैं। किसान और मजदूरों के जीवन से जुड़े प्रश्न और समस्या को लेकर वे सोचते हैं। किसानों के लिए कुछ करने की दृष्टि से गाँव की तरफ निकल पड़ते हैं।

4) धन संबंधी विचार :-

मेहता के अनुसार धन केवल जीवन निर्वाह के साधन के रूप में महत्व रखता है। उससे ज्यादा वे धन को महत्व नहीं देते। उनका कहना है कि, सामाजिक विषमता के प्रश्न को केवल धन के समान वितरण से

समाप्त नहीं किया जा सकता। क्योंकि छोटे-बड़े का भेद केवल धन के आधार पर नहीं होता। उसके लिए धन के प्रति होनेवाली मोह की भावना समाप्त होनी चाहिए।

5) विवाह संबंधी विचार :-

विवाह के संबंध में मेहता ओंकारनाथ से कहते हैं, ''मैं समझता हूँ मुक्त भोग आत्मा के विकास में बाधक नहीं होता। विवाह तो आत्मा को और जीवन को पिंजरे में बंद कर देता है।'' मेहता एक दृष्टि से विवाह को मनुष्य जीवन का बंधन स्वीकार करते हैं। मेहता विवाह को एक सामाजिक समझौता मानते हुए कहते हैं, ''विवाह को मैं सामाजिक समझौता समझता हूँ और उसे तोड़ने का अधिकार न पुरुष को है न स्त्री को। समझौता करने के पहले स्वाधीन हैं, समझौता हो जाने के बाद आपके हाथ कट जाते हैं।'' अर्थात एक बार अगर विवाह हो जाए तो उसे स्त्री-पुरुष को निभाना ही चाहिए। इसलिए विवाह करने के पहले ही सोचना चाहिए। मेहता ने समाज की दृष्टि से विवाहित जीवन को और व्यक्ति की दृष्टि से अविवाहित जीवन को श्रेष्ठ माना है।

6) जीवन संबंधी विचार :-

मेहता ने जीवन के दो मार्ग- प्रवृत्ति और निवृत्ति में से बीच के एक मार्ग को महत्व दिया है और वह मार्ग है - सेवा मार्ग। मेहता के अनुसार जीवन की सार्थकता इसी मार्ग को अपनाने में है। मेहता जीवन संबंधी अपनी धारणा गोविंदी को बताते हुए कहते हैं, ''जीवन मेरे लिए आनंदमय क्रीड़ा है। सरल, स्वच्छंद, जहाँ ईर्ष्या और जलन के लिए कोई स्थान नहीं। मैं भूत की चिंता नहीं करता, भविष्य की परवाह नहीं करता, मेरे लिए वर्तमान सब कुछ है।'' मेहता के अनुसार मनुष्य को वर्तमान में जीना चाहिए। जीवन का आनंद लेते हुए हमें जीना आना चाहिए। हम निरर्थक बातों में उलझकर जीवन के आनंद से वंचित रहते हैं।

7) स्त्री संबंधी विचार :-

मेहता मिर्जा खुर्शीद को स्त्री की परिभाषा बताते हुए कहते हैं, '' स्त्री पृथ्वी की भाँति धैर्यवान, शांति संपन्न है, सहिष्णु है। संसार में जो कुछ सुंदर है उसी की प्रतिमा को मैं स्त्री कहता हूँ। मैं उससे यही आशा रखता हूँ कि उसे मार ही डालो तो भी प्रतिहिंसा का भाव उसमें ना आए। अगर मैं उसकी आँखों के सामने किसी स्त्री को प्यार करूँ, तो भी उसकी ईर्ष्या न जागे। ऐसी नारी पाकर मैं उसके चरणों में गिर पडूँगा और उस पर अपने को अर्पण कर दूँगा।'' स्त्री को लेकर मेहता की जो कल्पना है वही यहाँ पर उजागर हुई है। स्त्री पुरुष की यथार्थ स्थिति को लेकर मेहता के विचार हैं, ''मेरे जेहन में औरत वफा और त्याग की मूर्ति है। जो अपनी बेजुबानी से, अपनी कुर्बानी से अपने को बिल्कुल मिटाकर पति की आत्मा का अंश बन जाती है।'' तात्पर्य मेहता के अनुसार स्त्री को अपने पति के प्रति पूरी तरह से समर्पित होना चाहिए। मिसेज खन्ना की तारीफ करते हुए मेहता कहते हैं, ''मैं ऐसी बीवी चाहता हूँ, जो मेरे जीवन को पवित्र और उज्ज्वल बना दे, अपने प्रेम और त्याग से।'' 'वीमेंस लीग' में भाषण देते हुए मेहता स्त्री का गुणगान इस प्रकार करते हैं, ''स्त्री पुरुष से उतनी श्रेष्ठ है, जितना प्रकाश अंधेरे से। मनुष्य के लिए क्षमा, त्याग और अहिंसा जीवन के

उच्चतम आदर्श हैं। नारी इस आदर्श को प्राप्त कर चुकी है।'' अर्थात मेहता की दृष्टि से नारी में ये सब गुण होते हैं।

8) पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण के विरोधी :-

मेहता को स्त्रियों द्वारा पश्चिमी सभ्यता का किया जानेवाला अंधानुकरण बिल्कुल पसंद नहीं। स्त्रियों के पाश्चात्य रूप का विरोध करते हुए मेहता कहते हैं, ''मुझे खेद है हमारी बहने पश्चिम का आदर्श ले रही है। जहाँ नारी ने अपना पद खो दिया है और स्वामिनी से गिरकर विलास की वस्तु बन गई है। पश्चिम की स्त्री स्वच्छंद होना चाहती है, इसलिए कि वह अधिक से अधिक विलास कर सके। हमारी माताओं का आदर्श कभी विलास नहीं रहा।'' उनका आग्रह है कि आप पश्चिम की अंधी नकल न करके अच्छी चीजों को ग्रहण करें। पश्चिम की स्त्रियों का इस तरह भोग विलास में लिप्त रहना और अपनी लज्जा और गरिमा को खो देना उन्हें अच्छा नहीं लगता।

9) परिश्रमी तथा समय के पाबंद :-

परिश्रमी तथा समय के पाबंद ऐसा मेहता का व्यक्तित्व है। वे निरंतर काम में व्यस्त रहना पसंद करते हैं। दूसरों के लिए परिश्रम करने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। समय का दुरुपयोग करना वे पाप समझते हैं। अपने काम में वे इतने व्यस्त रहते थें कि वे आधी रात को सोते थे और रात समाप्त होने से पहले ही उठ जाते थें। कैसा भी काम हो, उसके लिए वे जैसे भी हो समय निकाल लेते थें।

10) बहुमुखी प्रतिभा से युक्त :-

हर काम में रूचि लेना उनका स्वभाव था। कभी वे कबड्डी खेलते हुए नजर आते हैं, तो कभी मजदूर आंदोलन में सहभागी होते हैं। शिकार खेलने जाने पर मालती को कंधे पर बिठाकर नाला पार करते समय अपनी रोमांटिक प्रवृत्ति का परिचय देते हैं। उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व से मालती आकर्षित हो जाती है। मेहता मिस्टर खन्ना और मिसेज खन्ना के बीच समझौता कर देते हैं। वे अपने विषय के अच्छे ज्ञानी हैं। किसी भी समस्या को सुलझाने की दृष्टि उनके पास है।

11) वोट संबंधी विचार :-

'वीमेंस लीग' में सरोज तथा अन्य युवतियों से माँग की जाती है कि हमें पुरुषों के बराबर वोट मिलना चाहिए। मेहता वोट संबंधी अपना मत व्यक्त करते हुए कहते हैं, ''वोट नए युग का मायाजाल है, मरीचिका है, कलंक है, धोखा है। उसके चक्कर में पडकर आप न इधर की होगी न उधर की। संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से मिलता है। वह आपको मिला हुआ है। उन अधिकारों के सामने वोट कोई चीज नहीं।''

12) प्रेम संबंधी विचार :-

'वीमेंस लीग' में सरोज जब प्रेम संबंधी प्रश्न पूछती है, तो उसके उत्तर में मेहता कहते हैं, ''जिसे तुम प्रेम कहती हो, वह धोखा है, उद्दीप्त लालसा का विकृत रूप है। सच्चा आनंद, सच्ची शांति केवल सेवा व्रत में है। मालती मेहता से पूछती है, तुम कैसे प्रेम से संतुष्ट होंगे? उत्तर में मेहता ने कहा ''बस यही कि जो

मन में हो वही मुख पर हो। मेरे लिए रंग-रूप, हाव-भाव और नाजो-अंदाज का मूल्य बस उतना ही है, जितना होना चाहिए।'' प्रेम में वे समर्पण भाव को अत्यधिक महत्व देते हैं।

13) दानशूर व्यक्तित्व :-

मेहता को जितना भी वेतन मिलता है, उसमें से अधिकतर वे असहायों की मदद के लिए खर्च करते हैं। मकान का किराया देने के लिए भी उनके पास पैसे नहीं बचते। पूरा मासिक वेतन छात्रों, विधवाओं और असहायों की मदद के लिए देते हैं। अपने इस दानशूर स्वभाव के कारण उन्हें कर्ज भी लेना पड़ता है।

14) शोषकों के प्रति घृणा का भाव :-

मेहता शोषण करनेवालों से घृणा करते हैं। इसीलिए वे मिल मालिक मिस्टर खन्ना की ओर सम्मान की दृष्टि से कभी नहीं देखते। परंतु खन्ना के मिल में आग लगने के बाद खन्ना को अपने किए पर पश्चाताप होता है, तब मेहता खन्ना की इज्जत करते हैं। इस प्रकार मेहता एक आदर्श पात्र के रूप में उपन्यास में चित्रित हुए हैं। अपने चरित्र के माध्यम से पाठकों को प्रभावित करते हैं। उनके इस चरित्र से पाठकों को उनका अनुसरण करने की एक प्रेरणा मिलती है।

रायसाहब :-

रायसाहब अमरपाल सिंह जमींदार है। वे सेमरी गाँव में रहते हैं। रायसाहब अपने समय के जमींदारों के प्रतिनिधि हैं। उनके चरित्र में दोहरापन दिखाई देता है। वे वास्तव में किसानों और मजदूरों का शोषण करते हैं। परंतु दिखाते है कि मुझे इन गरीब, दीन लोगों की कितनी चिंता है। मैं ही इन लोगों का हितचिंतक हूँ। समाज सेवक होने का वे केवल दिखावा करते हैं। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

1) अपने फायदे के लिए भोले-भाले लोगों को अपने पक्ष में करना :-

रायसाहब हर समय अपना फायदा देखते हैं। किसान और मजदूरों की परेशानियों से उन्हें कोई लेना-देना नहीं है। उन्हें तो केवल अपनी पड़ी है। इसीलिए तो किसान होरी को अपने पक्ष में रखकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना उनका मकसद है। वे अच्छी तरह जानते हैं कि होरी जैसे भोले-भाले लोग ही उनकी चिकनी चुपड़ी बातों से प्रभावित होकर उनकी प्रशंसा करेंगे। साथ ही अपने भाग्य की सराहना भी करेंगे। उनका मानना है कि इन लोगों के माध्यम से ही लगान वसूल करने के लिए एक प्रकार से मदद ही होगी। एक दिन वे होरी से बहुत ही आत्मीयता से बातें कर रहे होते हैं। परंतु उसी वक्त उनका एक नौकर आकर बताता है कि, मजदूर बिना मजदूरी के काम करना नहीं चाहते। रायसाहब अत्यधिक क्रोधित हो जाते हैं और मजदूरों को धमकाने के लिए चले जाते हैं। रायसाहब के परिवर्तित रूप को देखकर होरी भी सोचता है कि अभी-अभी तो रायसाहब कैसी नीति और धर्म की बातें कर रहे थें और अचानक इतने क्रोधित कैसे हो गए?

2) देशप्रेमी होने का दिखावा करनेवाले :-

रायसाहब देशप्रेमी होने का केवल दिखावा करते हैं। सत्याग्रह आंदोलन में उनका सहभाग भी अपने स्वार्थ के लिए है। वे सत्याग्रह संग्राम में सहभाग लेकर यश एवं प्रसिद्धी प्राप्त करते हैं। कौंसिल की मेंबरी छोड़कर जेल जाते हैं। इससे लोगों की उन पर बड़ी श्रद्धा बनती है। लेकिन उनके इलाके में किसानों और

मजदूरों के लिए कोई छूट नहीं दी जाती। डांड और बेगार की सख्ती भी कम नहीं होती। परंतु बदनामी मुख्तारों के जिम्मे आती है। सब कुछ उन्हीं के कहने पर होता है। लेकिन लोगों को लगता है रायसाहब बहुत अच्छे हैं। चारों ओर उनकी अच्छाई की बातें होती है। वे गरीब किसानों और मजदूरों से हँस कर बोल लेते हैं, तो लोग कृतकृत्य हो जाते हैं।

3) अवसरवादी व्यक्ति :-

रायसाहब एक अवसरवादी व्यक्ति हैं। अवसरों का लाभ कैसे उठाना चाहिए, इसे वे बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। शहर के बुद्धिजीवियों को दावत देते हैं, उन्हें शिकार पर ले जाते हैं, यह सब वे इसलिए करते हैं कि अवसर मिलने पर उनसे फायदा उठाया जा सके। वे सरकारी अफसर, पुलिस और अंग्रेजों को समय-समय पर भेंट और नजराना देकर उन्हें खुश रखते हैं। हर किसी का अपने लिए कैसे फायदा हो सकता है, इसी की तलाश में वे रहते हैं।

4) धूर्त व्यक्ति :-

रायसाहब बड़े व्यक्ति हैं। अपने आचरण में दोहरी नीति अपनाते हैं। एक तरफ जेल जाकर देश-प्रेमियों की सूची में अपना नाम दर्ज कर देते हैं, तो दूसरी तरफ सरकार को खुश करके 'रायबहादुर' की उपाधि प्राप्त कर लेते हैं। उनकी कथनी और करनी में बहुत बड़ा अंतर है। वे मुँह से स्वदेश की नीति की सराहना करते दिखाई देते हैं, तो व्यवहार में पाश्चात्य पद्धति का अनुकरण करते हैं। परंपरा के नाम पर किसानों से नजराना लेते हैं, तो दूसरी ओर आदर्शवाद की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं। उनके द्वारा ओंकारनाथ को इसलिए रिश्वत दी जाती है कि उनकी लोगों में जो प्रतिमा है, उसे धूमिल करने वाली कोई खबर अखबार में न छपे।

5) खुद के आचरण का स्वयं समर्थन करनेवाले :-

रायसाहब स्वयं अपनी स्थिति को ओंकारनाथ को बताते हुए कहते हैं, ''मुझे किसानों के साथ जीना मरना है। मुझसे बढ़कर उनका दूसरा कोई हितचिंतक नहीं हो सकता। लेकिन मेरी गुजर कैसे हो?'' वे स्पष्ट रूप से कह देते हैं कि दावत और चंदे के लिए लोगों के घर से ही वे खर्च निकालेंगे। उनकी यह बात सुनकर मेहता व्यंग्य से कहते हैं, ''गुड़ से मारने वाला जहर से मारने वाले की अपेक्षा सफल हो सकता है।'' उपन्यास में रायसाहब गाँव और शहर को जोड़ने वाली कड़ी के रूप में दिखाई देते हैं।

६) सत्याग्रह आंदोलन में सहभाग को लेकर दो अलग-अलग मत :-

देश सेवा करने के लिए उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया। लेकिन इसके लिए वे पछताते नहीं, वे कहते हैं ''मैं अपने को रोक न सका, जेल गया और लाखों रुपयों की जेरबारी हुई और अभी तक उसका तावान दे रहा हूँ। मुझे उसका पछतावा नहीं है, बिल्कुल नहीं।'' बाद में रायसाहब आंदोलन में सहभागी होने के लिए पछतावा करके कहते हैं, ''कांग्रेस में शरीक हुआ, उसका तावान अभी तक देता आ रहा हूँ। काली किताब में नाम दर्ज हो गया है।'' बाद में जब रायसाहब अंग्रेजों की प्रशंसा करने लगते हैं। जिसके कारण उन्हें राजा की पदवी मिल जाती है। जिस समय उन्हें पदवी प्रदान की गई, उस समय उनका मन आनंद के

भाव से विभोर हो गया। वे कहते हैं, ''विद्रोहियों के फेर में पड़कर व्यर्थ बदनामी हुई थी। जेल जाने पर अफसर की नजर में गिर गए।'' जिस डी.एस.पी. ने उन्हें पिछली बार गिरफ्तार किया था, वह उस समय उनके सामने हाथ बाँधे खड़ा था और शायद अपने अपराध के लिए क्षमा माँग रहा था।

7) पतन की ओर उन्मुख जमींदारों के प्रतीक :-

रायसाहब पतन की ओर उन्मुख जमीदारों के प्रतीक है। उनकी बेटी का तलाक हो जाता है। बेटे से झगड़ा हो जाता है। रायसाहब जीवन भर कर्ज के बोझ से दबे रहते हैं। लेकिन अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए दूसरों को दावत देते रहते हैं। फिर भी उनके लिए अनुकूल समय आता है और वे बर्बाद होने से बचते हैं। उनके तीन मंसूबे पूरे हो जाते हैं। उनकी कन्या की शादी हो जाती है। उन्हें होम मेंबरी मिल जाती है और मुकदमे में जीत भी हासिल होने से ताल्लुकदारों में प्रथम श्रेणी का स्थान प्राप्त होता है। इस तरह उपन्यास में रायसाहब तत्कालिन जमींदारों के प्रतिनिधि के रूप में चित्रित हुए हैं।

डॉ. मालती :-

प्रस्तुत उपन्यास में मालती एक विकसनशील चरित्र है। उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक वह एक कुतूहल के रूप में दिखाई देती है। मालती एक शहरी पात्र है। वह इंग्लैंड से डॉक्टरी पढ़कर आई है। लखनऊ में वह प्रैक्टिस कर रही है। उसके रहन-सहन पर पश्चिमी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वह बाहर से फैशन वाली लगने पर भी भीतर से उसका चरित्र उदारता से युक्त है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1) पारिवारिक जिम्मेदारी को निभानेवाली :-

मालती के पिता शराबी हैं। वे हमेशा बीमार रहते हैं। मालती को दो बहने हैं। पिताजी पर पच्चीस हजार रुपयों का कर्ज होने पर भी वे उसके प्रति लापरवाह हैं। मालती अविवाहित है। वह खुद परिवार का सारा बोझ उठाती है। यह जिम्मेदारी उसे विवाह पर सोचने ही नहीं देती।

2) पुरुष मनोविज्ञान की जानकार :-

मालती को पुरुष मनोविज्ञान की अच्छी जानकारी है। वह आमोद-प्रमोद के जीवन का सार-तत्व समझती है। वह पुरुषों को लुभाने और रिझाने में माहिर है। पुरुषों के बीच तितली की भाँति घूमने-फिरने में वह कोई संकोच महसूस नहीं करती। विवाहित जीवन की अपेक्षा मालती अविवाहित जीवन में सफलता की किरणें देखती है। गोविंदी उसके आचरण से नाराज होकर कहती है, ''ऐसी औरतें समाज में हैं, तो पुरुषों के कान तो गर्म करती हैं।''

3) हँसमुख और मिलनसार :-

मालती बहुत हँसमुख और मिलनसार स्वभाव की है। ताल्लुकदारों के महलों तक उसका आना-जाना लगा रहता है। मेकअप करने में वह कोई संकोच महसूस नहीं करती। विनोद में वह ओंकारनाथ को शराब

पिलाकर मूर्ख बना देती है। वह इसलिए विनोद करती है कि इससे उसका कर्तव्य भार कुछ हल्का हो जाता है। मालती ऊपर से पश्चिमी संस्कृति का अनुसरण करनेवाली दिखाई देती है। परंतु वास्तव में वह भीतर से भारतीय आदर्श की उपासिका है। इसलिए लेखक ने मालती के बारे में लिखा है, ''मालती बाहर से तितली और भीतर से मधुमक्खी है।''

4) मेहता के प्रति आकर्षित :-

मालती के अनेक पुरुष मित्र हैं। जिनमें खन्ना, रायसाहब, मिर्जा, तंखा आदि हैं। खन्ना तो उस पर पूरी तरह लट्टू है। लेकिन मालती मेहता के पौरुष के प्रति उसी समय आकर्षित हो जाती है, जब मेहता पठान के भेस में उन्हें जबरदस्ती उठा लेने की चुनौती देते हैं। शिकार करते समय मेहता को जब जंगल की महिला की सहानुभूति मिलती है, तो मालती ईर्ष्या करती है। उससे मेहता मालती की ओर आकर्षित नहीं हो पाते मालती मेहता की ओर जितना आगे बढ़ती मेहता उतना पीछे हट जाते हैं।

5) स्वाभिमानी एवं निर्भीक :-

मालती स्वाभिमानी एवं निर्भीक है। वह खन्ना से प्रेम नहीं करती। परंतु जब मेहता आरोप लगाते हैं कि मिसेज खन्ना मालती के कारण दु:खी हैं और मालती उन पति-पत्नी में झगड़े का कारण बनी हैं, तो मालती गुस्से में आकर उनके इस आरोप का कड़ा जवाब देते हुए कहती है, ''आपने यह अनुमान कैसे लगा लिया कि मैं खन्ना और गोविंदी के बीच आना चाहती हूँ।'' वह खन्ना के प्रति अपनी बात रखते हुए कहती है, ''मैं खन्ना को अपनी जूतियों की नोक के बराबर भी नहीं समझती।'' मेहता से नारज होकर वह कहती है, ''आपको मुझ पर आक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है।''

6) विवाह बंधन में बंध जाना नहीं चाहती :-

मालती मेहता की सेवा, निस्वार्थ भावना, वीरता, आदर और आदर्श से प्रभावित होकर उनके प्रति आकर्षित होती है। परंतु शरू में मेहता के मन में मालती के प्रति ऐसी कोई भावना नहीं है। वे मालती के बारे में अपना मत स्पष्ट करते हुए उससे कहते हैं, ''तुम सब कुछ कर सकती हो। बुद्धिमानी हो, चतुर हो, प्रतिभावान हो, दयालु हो, चंचल हो, स्वाभिमानी हो, त्याग कर सकती हो, लेकिन प्रेम नहीं कर सकती।'' परंतु मेहता जब मालती को स्वीकार करना चाहते हैं, तब मालती विवाह बंधन में बंध जाना नहीं चाहती। वह लोकहित के लिए व्यापक क्षेत्र में बंधन-मुक्त होकर काम करना चाहती है। अपने संपूर्ण जीवन को समाज के लिए समर्पित कर देने के लिए वह विवाह के सीमित और स्वार्थपूर्ण दायरे को ठुकरा देती है।

7) विकसनशील चरित्र :-

पहले मालती की दृष्टि केवल अपने परिवार तक सीमित थी। परिवार की जिम्मेदारी का निर्वाह करने के लिए ही वह अर्थार्जन करती थी। लेकिन बाद में धीरे-धीरे बदलती परिस्थिति ने मालती को मानसिक धरातल पर व्यापक बना दिया। बाद में शारीरिक सौंदर्य और साज-शृंगार में ही समय व्यतीत करनेवाली मालती की दृष्टि इन बातों से हटकर लोकहित और लोकसेवा में केंद्रित हो जाती है। वह नागरिक जीवन की

सीमा से निकलकर ग्रामीण लोगों के जीवन की समस्याओं से, उनके दुःख और पीडाओं को समझने के लिए गाँवों की ओर निकल पड़ती है। वह गाँव के लोगों के विकास के लिए प्रयत्न करती है। वह अच्छी तरह से जानती है कि शहरी सभ्य महिलाओं का क्रिया-कलाप केवल अपने भोग विलास के लिए होता है। वे केवल विलासमय जीवन चाहती हैं। लेकिन दूसरी ओर ग्रामीण महिलाएँ अपना पूरा जीवन त्याग में बिताती हैं। मालती स्वयं ग्रामीण महिलाओं के उदात्त विचारों से प्रभावित होती है और उस दृष्टि से खुद का आत्म-विस्तार करती है। मेहता मालती के व्यक्तित्व को लेकर कहते हैं, ''मालती आग में पड़कर चमकने वाली वस्तु है।'' जब मेहता अपने प्रेम को खूंखार शेर बताते हैं, तो मालती कहती है, ''अगर प्रेम खूंखार शेर है, तो मैं उससे दूर ही रहूँगी। प्रेम देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है, वह संपूर्ण आत्म-समर्पण है।''

8) अविवाहित रहने का संकल्प करने वाली :-

मालती अविवाहित रहने का संकल्प करती है। जब मेहता लोकहित में समर्पित मालती के रूप को देखते हैं, तो उससे प्रभावित होकर मालती के सामने विवाह का प्रस्ताव रखते हैं। परंतु मालती उनके प्रस्ताव का अस्वीकार करती है। और अपना निर्णय सुनाते हुए कहती है, ''तुम मेरे पथ-प्रदर्शक हो, मेरे देवता हो, गुरु हो। यह वरदान मेरे जीवन को सार्थक करने को काफी है। यह मेरी पूर्णता है।'' वह मित्र बनकर रहना चाहती है, क्योंकि उसकी दृष्टि से उसी प्रकार रहना जीवन के लिए सुखकर है। विवाहित जीवन की अपेक्षा अविवाहित जीवन में उसे सफलता की किरणें दिखाई देती हैं।

9) नेतृत्व गुण :-

मालती का व्यक्तित्व नेतृत्व गुणों से संपन्न हैं। समाज में नेतृत्व करने की क्षमता उसके पास है। उसकी इसी क्षमता के कारण उसे नगर कांग्रेस कमेटी की सभानेत्री के रूप में चुना जाता है। उसमें समाज परिवर्तन की दृष्टि से क्रांतिकारी चेतना भी विद्यमान है। अपने इसी चेतना के कारण वह सत्याग्रह आंदोलन में सहभाग लेती है, जिसके लिए उसे एक बार जेल भी जाना पड़ता है।

10) स्त्री के समान अधिकारों की हिमायती :-

मालती समाज में पुरुषों के समान स्त्रियों के लिए भी अधिकार चाहती है। वह स्त्री के समान अधिकार संबंधी बहस एवं वाद-विवाद में सहभाग लेती है और कहती है, ''फिर अभी यह कौन जानता है कि स्त्रियाँ अभी जिस रास्ते पर चलना चाहती हैं, वही सत्य है। संभव है आगे चलकर हमें अपनी धारणा बदलनी पड़े।'' इससे स्पष्ट है कि मालती स्त्रियों के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव लाना चाहती है।

11) लोगों की सेवा के लिए समर्पित :-

मालती गाँव-गाँव घूमकर तथा ग्रामीण लोगों के संपर्क में आकर समझ जाती है कि गाँव के लोगों में लगन, समर्पण वृत्ति, सरलता है। लेकिन शहरी लोगों में वह दिखाई नहीं देती। इसलिए वह गाँव के लोगों की सेवा करना अपना कर्तव्य समझती है। वह गोबर के बेटे को चेचक निकलने पर न केवल उसकी चिकित्सा करती है, बल्कि माँ जैसी सेवा भी करती है। उसकी सेवा को देखकर गाँव की स्त्रियाँ उसकी बहुत

सराहना करती हैं। मालती सोचती है कि समाज में शोषण की समस्या सभी जगहों पर फैली हुई है। गाँव में अंध:विश्वास, धर्म की आड़ में किया जानेवाला शोषण, आर्थिक शोषण, स्वार्थी प्रवृत्तियाँ अधिक मात्रा में हैं। इनसे गाँवों को मुक्ति दिलाना बहुत आवश्यक है। इसलिए मालती सामाजिक परिवर्तन लाने का निर्णय लेती है। इसके लिए वह मेहता की मदद चाहती है। अत: वह मेहता से कहती है, ''अपनी विद्या और बुद्धि के जोड़ के साथ उसे रास्ते पर ले आओ। मैं भी तुम्हारे पीछे चलूँगी। अपने साथ मेरा जीवन भी सार्थक कर दो।''

इस तरह प्रस्तुत उपन्यास में मालती एक स्वाभिमानी नारी के रूप में हमारे सामने उपस्थित होकर पुरुष-प्रधान समाज में एक प्रेरणादायी पात्र के रूप में अपनी एक अलग पहचान पाठकों के मन पर छोड़ देती है।

1.3.6 'गोदान' में चित्रित समस्याएँ :-

'गोदान' में प्रेमचंद जी ने गाँव और शहर की कथा के माध्यम से अनेक समस्याओं का चित्रण किया है। इनमें से अधिकतर समस्याओं के केंद्र में उपन्यास का नायक 'होरी' है। उपन्यास में मुख्यत: दो वर्गों का संघर्ष दिखाया गया है। उनमें से एक है शोषक और दूसरा है शोषित। एक वर्ग सुख-समृद्धि से युक्त है। साधन-संपन्न, सबल है। लेकिन दूसरा वर्ग अभाव-भरी जिंदगी से युक्त है। वह साधन-हीन और निर्बल। है प्रेमचंद जी ने 'समस्या' शब्द का कहीं भी स्पष्ट उल्लेख न करते हुए शोषक और शोषित इन दोनों वर्गों की जीवन-संबंधी मान्यताएँ, उनकी आर्थिक स्थितियाँ एवं उनकी सबलता और निर्बलता का चित्रण किया है। कृषिप्रधान भारत देश के किसान की वास्तिविक स्थिति कैसी हैं? वह किन हालातों में अपना जीवन-यापन करता है? उसकी सामाजिक एवं धार्मिक आस्थाएँ कैसी है? इसी का चित्रण 'गोदान' में लेखक ने 'होरी' के माध्यम से किया है। इस चित्रण में विभिन्न प्रकार की अनेक समस्याएँ उजागर हुई हैं। वे समस्याएँ निम्नांकित हैं।

1) शहरी लोगों द्वारा गाँव के लोगों के शोषण की समस्या :-

शोषण की समस्या 'गोदान' उपन्यास की एक मुख्य समस्या है। उपन्यास में चित्रित शहरी जीवन का संबंध प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में ग्रामीण जीवन से है। उपन्यास का मूल उद्देश्य किसानों की वास्तविक दशा को चित्रित करना है। अत: इसमें शहरी जीवन के उन्हीं पहलुओं को स्थान दिया गया है, जिनका किसानों से संबंध है। जमींदार, साहूकार, मिल-मालिक आदि का गाँव से संबंध रहता है। जमींदार आदि किसानों की कमाई पर शहर में भौतिक सुख समृद्धि से युक्त विलासमय जीवन जीते हैं। मिल-मालिक गाँव से प्राप्त होनेवाले कच्चे माल द्वारा अपने उत्पादन कार्य को आगे बढ़ाते हुए अपनी धन-संपत्ति को और अधिक बढ़ाते हैं। साहूकार गाँवों में अपने प्रतिनिधि नियुक्त कर कर्ज तथा ब्याज के पैसे वसूल करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में जमींदार रायसाहब, मिल-मालिक खन्ना के द्वारा इसी प्रकार के किसानों के शोषण को दिखाया है। परिणाम-स्वरूप होरी जैसे किसानों के जीवन की परेशानियाँ और भी बढ़ जाती हैं।

2) आर्थिक अभाव की समस्या :-

भारतीय किसानों की सभी समस्याओं का मूल आर्थिक अभाव है। होरी, गोबर एक ऐसे समाज में रहते हैं, जहाँ धन का स्थान सर्वोपरी है। धन से ही व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा बढती है। धन से समाज में उच्च स्थान प्राप्त किया जाता है। धन के बल पर व्यक्ति के कुकर्मों को भी छिपाया जाता है। परंतु धन-हीन होने पर सत्कर्म भी कुकर्म के रूप सिद्ध किए जाते हैं। इसीलिए तो गोबर पैसे कमाने के लिए शहर भाग जाता है। वहाँ थोड़े रुपए कमाकर जब वह गाँव आता है, तो उसमें इतना साहस आ जाता है कि, वह गाँव के साहूकार, महाजन आदि की खुलकर हँसी उड़ाता है। तात्पर्य आर्थिक अभाव ही मनुष्य के आत्मविश्वास को नष्ट कर उसे दबकर रहने के लिए विवश करता है। अन्याय, शोषण को चुपचाप सहने के लिए बाध्य करता है।

3) किसानों के शोषण की समस्या :-

प्रेमचंद जी ने इस उपन्यास की रचना ही किसानों के शोषण को उजागर करने के लिए की है । हर कोई अवसर मिलते ही किसानों का शोषण करता है। परंतु यह शोषण प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष रुप में होता है। प्रस्तुत उपन्यास में होरी को प्रत्यक्ष रूप में कोई भी परेशान नहीं करता। उससे जितने भी पैसे वसूल किए जाते हैं, वे सब कानून, धर्म, न्याय, परंपरा आदि के नाम पर वसूल किए जाते हैं। शोषण की इस नई पद्धति को उपन्यास में कई स्थानों पर देखा जा सकता है। रायसाहब होरी से नजर-नजराना लेते हैं। यह इसलिए की यह परंपरा से चला आ रहा रिवाज है। होरी मंगरूशाह का कर्जदार होने के कारण वे उसकी ईख की नीलामी कर देते हैं। बिरादरी उस पर इसलिए दंड लगाती है की उसने झुनिया को घर में आश्रय देकर बहुत बड़ा अपराध किया है। दातादीन होरी से खेत में मजदूर की तरह कड़ी मेहनत करवाता है। तीस रुपए के बदले दो सौ रुपए वसूल करता है। इस तरह जीवनभर कड़ी मेहनत, परिश्रम करनेवाला होरी सभी से लूट लिया जाता है। परिवार के लिए आवश्यक साधन जुटाने में भी वह असमर्थ रहता है। परिवार के लिए होनेवाली उसकी छोटी-छोटी आकांक्षाओं की भी पूर्ति नहीं हो पाती। शरीर में शक्ति न होने पर भी अधिक परिश्रम करने से होरी को असमय में ही मृत्यु को गले लगाना पड़ता है। इस तरह लेखक बताना चाहते हैं कि शोषण तथा हराम की खानेवाले जीवनभर आनंद भोगते हैं और शोषित दुःख, पीड़ा, वेदना को सहते हुए जीवनभर संघर्ष करते रहते हैं। होरी के जीवन की यही मुख्य समस्या है।

4) धर्म की समस्या :-

होरी के माध्यम से ही लेखक ने इस एक महत्वपूर्ण समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। होरी की भाग्यवाद और कर्मवाद पर अमिट श्रद्धा होने से वह अपनी दीन दशा को अपने पूर्वजन्म के पापों का कारण मानता है। रूढ़ि-परंपरा का वह अंधा भक्त है। बिरादरी की मर्यादा उसके लिए सर्वोपरी है। अपने पूर्वजों की जमीन के प्रति उसके मन में मर्यादा का भाव है। परिस्थिति चाहे जैसी भी हो वह हर हाल में

किसानी को मर्यादाजनक कार्य मानता है। होरी अच्छी तरह जानता है कि, खेती करने से उसके एक दिन की मजदूरी एक आने से भी कम है। फिर भी अपनी मर्यादा को बनाए रखने के लिए वह खेती में डटकर काम करना चाहता है। उसके लिए निरंतर संघर्ष करता रहता है। वह अपने बेटे गोबर से कहता है, ''खेती में जो मरजाद है, वह नौकरी में नहीं है।'' एक स्थान पर वह गोबर से कहता है 'बेटा छोटे-बड़े भगवान के घर से बनकर आते हैं।' संपत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है। उन्होंने पूर्व-जन्म में जैसे कर्म किए हैं, उसका आनंद भोग रहे हैं। हमने कुछ संचा नहीं तो भोगे क्या?'' वह ब्राह्मण और पंचों को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता है। इसीलिए उनके अनुचित निर्णय को भी सर झुकाकर स्वीकार कर लेता है। जब भोला बैल खोलकर ले जाने के लिए आता है तो होरी उससे कहता है, ''अगर तुम्हारा धर्म कहे तो बैल खोलकर ले जाओ।'' जब भोला सचमुच बैल ले जाता है, तो होरी इसे भाग्य का विधान मानता है। पंडितों पर उसकी बड़ी श्रद्धा है, अत: दातादीन धर्म के नाम पर उसका शोषण करता है।

5) अशिक्षा की समस्या :-

समाज में अन्याय-अत्याचार एवं शोषण की घटनाओं को अशिक्षा के कारण ही बढ़ावा मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास में भी होरी की दशा एक महत्वपूर्ण कारण उसका अशिक्षित होना है। अशिक्षित होने के कारण ही होरी में वास्तविकता को समझने की क्षमता नहीं है। अत: होरी उसके होनेवाले शोषण को भी समझ नहीं पाता। दूसरी ओर शोषक वर्ग हमेशा यही चाहता है कि निम्न वर्ग सदा के लिए अशिक्षित ही बना रहे और वे उस दृष्टि से प्रयास भी करते हैं। क्योंकि उन्हें डर है कि शिक्षित होने पर शोषित शोषकों की असलीयत जान जाएँगे। निम्न वर्ग का अशिक्षित रहने का और एक कारण यह भी है की आधुनिक शिक्षा इतनी मँहगी है कि होरी के बच्चों के लिए उसे प्राप्त करना उसके लिए बहुत कठिन बात है। अपनी अशिक्षा के कारण ही होरी धर्म के बाह्य रूप को ही सच मान लेता है और कष्ट उठाता रहता है। अगर वह शिक्षित होता तो धर्म को लेकर अंध:विश्वासी नहीं होता।

6) शहर के मजदूरों की समस्या :-

प्रस्तुत उपन्यास में प्रेमचंद जी ने किसानों की समस्या के साथ मजदूरों की समस्या को भी उजागर किया है। मजदूर भी अशिक्षित हैं। वे अनेक प्रकार की बुराइयों का शिकार हैं। परंतु शहर में रहने के कारण अपने अधिकारों के प्रति वे अधिक जागृत हैं। अपने अधिकारों को पाने के लिए, शोषण के खिलाफ आवाज उठाने के लिए मजदूरों द्वारा हड़तालें की जाती हैं। मिलें जला दी जाती है। परंतु इससे उनकी समस्या का समाधान नहीं होता। शहरों में शोषक और शोषित का संघर्ष अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वहाँ भी मजदूरों की समस्या किसानों की तरह ही है। आर्थिक अभाव उन्हें भी जीवन संघर्ष के लिए विवश करता है।

7) स्त्रियों की शिक्षा एवं अधिकारों की समस्या :-

शहरी समाज की इस समस्या के दर्शन हमें आए दिन होते रहते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने इस समस्या को गोविंदी और मालती के माध्यम से उजागर किया है। गोविंदी एक आदर्श नारी है। उसकी जैसी

नारियों में ही सेवा एवं त्याग की भावना संभव है। दूसरी ओर मालती सांसारिक भोग-विलास को ही नारी जीवन की सार्थकता मानती है। मालती पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित नारी है। वह विवाह को नारी के लिए बंधन मानती है। अत: आजीवन अविवाहित रहने का निर्णय लेती है। उसका मानना है कि नारियों को अपना जीवन उन्मुक्त रूप में जीने का अधिकार है। परंतु उपन्यास के अंतिम भाग में लेखक ने मालती को मेहता के संपर्क में लाकर उसमें बहुत बड़ा परिवर्तन लाया और उसके माध्यम से यह संकेत दिया कि मालती जैसी नारियों को जन-कल्याण के क्षेत्र में आगे आकर मेहता जैसे पुरुषों का साथ देना चाहिए। लेखक का कहना है कि शिक्षित स्त्रियों के अपने अधिकारों का यह मतलब नहीं है कि वे उन्मुक्त रूप से अपना जीवन जिए क्योंकि शिक्षित स्त्रियों द्वारा इस प्रकार अपने अधिकारों के नाम पर उन्मुक्त, भोग-विलास से युक्त जीवन जीना भी समाज के लिए एक समस्या का विषय बन सकता है।

8) पुरुष प्रधान संस्कृति में पीड़ित नारी की समस्या :-

पुरुष प्रधान संस्कृति में पीड़ित नारी की दशा को भी लेखक ने एक समस्या के रूप में इस उपन्यास में उजागर किया है। हम सभी जानते हैं कि पुरुष प्रधान संस्कृति में नारी को हमेशा से ही दुय्यम स्थान देकर उसके अस्तित्व को ही नकारने की कोशिश की गई है। प्रेमचंद जी ने नारी जीवन के इसी पक्ष को उजागर कर पुरुष प्रधान सत्ता तंत्र का क्रूर चेहरा हमारे सामने लाने प्रयास किया है। हीरा सबके सामने पुनिया को लातों से पीटता है और कहता है ''तू छोटे-छोटे आदमियों से लडती फिरती है, किसकी पगड़ी नीचे होती है बता।'' पुनिया रो-रोकर कहती है, ''भाग फूट गया कि तुम जैसे कसाई के पाले पड़ी।'' होरी अपने भाई पर गोहत्या का अपराध नहीं लगाना चाहता। वह नहीं चाहता की दरोगा उसके घर की तलाशी ले। लेकिन धनिया उसे जेल भेजना चाहती है। इस बात को लेकर वह होरी से उलझती है। होरी धनिया को सबके सामने पीटता है। इस पर धनिया कहती है, ''मार तो रहा है और मार ले, जो तू अपने बाप का बेटा होगा तो आज मुझे मारकर तब पानी पीएगा।'' उस समय धनिया को इस बात का दु:ख अधिक होता है कि जिस आदमी की गृहस्थी चलाने में उसे उसने इतना त्याग किया, मानो उसका यह पुरस्कार है। गोबर भी झुनिया के गर्भवती होने पर बीच रास्ते में छोड़कर भाग जाता है। धनिया उसे अपने घर में आश्रय देती है। परंतु झुनिया का पिता यह शर्त रखता है कि या तो झुनिया को घर से निकाल दे या गाय के पैसे चुका दे। उस समय वह कहता है, ''उसने मेरी नाक कटाई है, मैं उसे ठोकरें खाते देखना चाहता हूँ।'' एक बाप का अपनी बेटी के प्रति इस प्रकार का रवैया निश्चित ही अविश्वसनीय है। इसी तरह सिलिया द्वारा मातादीन के साथ रहने की बात करने पर माँ और भाई द्वारा उसे पीटना, पीड़ित नारी का ही उदाहरण है।

9) परिवार विघटन की समस्या :-

होरी के दो भाई और एक बेटा है। होरी सोचता है कि अगर परिवार संगठित होता तो आज उसकी यह दशा नहीं होती। पारिवारिक संपत्ति का बँटवारा और उससे भाईयों के बीच आई कटुता भी ग्रामीण जीवन का वास्तव है। बड़ा भाई होने के कारण होरी का अलग हुए अपने भाईयों के प्रति स्नेह बना रहता है। होरी अपने दोनों भाईयों-हीरा और शोभा को पाल-पोसकर बड़ा करता है। उनका विवाह करता है। बहुओं के

लिए गहने बनवाता है। लेकिन वे अलग हो जाते हैं। होरी पछताता है, ''जिनके पीछे जवानी धुल में मिला दी वह मेरे मुद्दई हो गए'' तीन हल एक साथ चलते, अब तीन अलग-अलग चलते हैं। होरी तो अपने परिवार की जिम्मेदारी को निभाता है, लेकिन उसका बेटा गोबर परिवार की जिम्मेदारी से मुखर जाता है। शहर से पहली बार घर लौटकर वह स्पष्ट शब्दों में कहता है, ''और तुम भी चाहती हो, और दादा भी चाहते हैं कि मैं सारा कर्जा चुकाऊँ, लगान दूँ, लड़कियों का ब्याह करूँ; जैसे मेरी जिंदगी तुम्हारा देना भरने के लिए है। मेरे भी तो बाल-बच्चे हैं। तुम्हारी गृहस्थी का सारा बोझ मैं नहीं उठा सकता।'' गोबर की इन बातों से परिवार विघटन का स्वर ही ध्वनित होता है। बाप जिस परिवार के लिए मर मिटा, बेटा उसी परिवार से मुँह मोड़कर चला जाता है। लेखक दो पीढ़ियों के बीच आए अंतर को बताते हुए, नई पीढ़ी का गाँव छोड़कर शहर जाकर बसना भी परिवार विघटन का कारण मानते हैं।

10) किसान से मजदूर बनने की समस्या :-

प्रस्तुत उपन्यास होरी के किसान से मजदूर बनने की ही कथा-व्यथा है। किसान से मजदूर बन जाना यह होरी के जीवन की सबसे बड़ी दर्दनाक मजबूरी है। अपनी खेती करने के लिए आवश्यक साधन और पैसे न होने के कारण होरी को विवश होकर मजदूर बनना पड़ता है। मातादिन के यहाँ मजदूरी करते समय उसे उसकी झिड़कियाँ सहनी पड़ती है। अन्याय सहना और परिस्थितियों से समझौता करना मानो उसकी नियति है। मजदूर बनकर अत्यधिक काम करने से वह बेहोश भी हो जाता है। गोबर के बच्चे के लिए गाय खरीद ली जाए, इस उद्देश्य से होरी एक ठेकेदार के यहाँ पत्थर की खुदाई करने का काम करता है। काम करते समय उसे लू लग जाती है और वही उसके जीवन का अंत कर देती है। जीवन संघर्ष करते हुए बार-बार हारने पर भी वह हिम्मत नहीं हारता, बल्कि भाग्य से लड़ता रहता है। वह जीवनभर कड़ी मेहनत करता है, अनेक प्रकार के कष्ट उठाता है, अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए हमेशा प्रयत्न करता है, परंतु उसे उसके परिश्रम का फल मिलने के बजाय असफलता का सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं परिस्थितियाँ और नियति उसे किसान से मजदूर बनने के लिए विवश करती हैं।

11) कर्ज की समस्या :-

'गोदान' उपन्यास में कर्ज की समस्या एक मुख्य समस्या है। इसी समस्या के चक्रव्यूह में फँसकर होरी का जीवन, संघर्ष में ही बीत जाता है। यह समस्या केवल ग्रामीण किसानों की नहीं है, बल्कि शहर के अमीर तथा धनवान लोगों की भी रही है। 'गोदान' का होरी कर्ज के बोझ तले इतना दब जाता है कि जवानी में ही बुढ़ापा आ जाता है। बड़ी मुश्किल से कर्ज का भार सहते हुए होरी अपनी गृहस्थी चलाने का प्रयास करता है। परिवार की तलाशी से बचने के लिए उसे रिश्वत देनी पड़ती है। परंतु इस रिश्वत के पैसे देने के लिए भी उसे कर्ज लेना पड़ता है। इसी कर्ज के कारण एक दिन होरी को किसान से मजदूर होना पड़ता है। कर्ज से छुटकारा पाने के लिए होरी को अपनी छोटी बेटी रूपा का विवाह अधिक उम्र वाले व्यक्ति से करना पड़ता है। होरी ने दातादीन से आलू बोने के लिए तीस रुपए का कर्ज लिया था। आठ-नौ साल में वह सौ रुपए हो जाता है। होरी ने झिंगुरीसिंह से चालीस रुपए का कर्ज लिया था, जो ब्याज सहित लगभग सौ रुपए

हो जाता है। होरी ने मंगरूशाह से पाँच साल पहले साठ रुपए का कर्ज लिया था, इसके बदले में होरी सौ रुपए भी दे चुका था। फिर भी उस पर साठ रुपए का कर्ज बाकी था। इस तरह लिए हुए कर्ज को चुकाने में ही होरी की पूरी जिंदगी ख़त्म होती है। परंतु कर्ज और उसका ब्याज ख़त्म नहीं होता।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

अ) निम्नलिखित बहु-विकल्पी प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।

1) 'गोदान' उपन्यास के लेखक कौन हैं?

अ) प्रेमचंद ब) यशपाल क) जैनेंद्र ड) जयशंकर प्रसाद

2) 'गोदान' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष कौन-सा है?

अ) 1932 ब) 1930 क) 1935 ड) 1940

3) प्रेमचंद का जन्मदिन इनमें से कौन-सा है?

अ) 31 जुलाई, 1880 ब) 25 जुलाई, 1881

क) 25 जुलाई, 1882 ड) 20 जुलाई, 1880

4) 'गोदान' को किस प्रकार का उपन्यास माना जाता है?

अ) ऐतिहासिक ब) महाकाव्यात्मक क) आत्मकथात्मक ड) रहस्यात्मक

5) प्रेमचंद किस प्रकार के उपन्यासकार माने जाते हैं?

अ) आदर्शवादी ब) यथार्थवादी क) आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी ड) मनोवैज्ञानिक

6) 'गोदान' उपन्यास का नायक कौन है?

अ) होरी ब) हीरा क) प्रोफेसर मेहता ड) रायसाहब

7) होरी की पत्नी का नाम क्या है?

अ) धनिया ब) पूनिया क) मालती ड) सिलिया

8) गोदान की मालती किस प्रकार की महिला पात्र है?

अ) आदर्शवादी ब) समाजवादी क) यथार्थवादी ड) साम्यवादी

9) 'गोदान' उपन्यास में किसके जीवन की करूण त्रासदी का चित्रण है?

अ) किसान ब) जमींदार क) पूँजीवादी ड) मध्य वर्ग

10) 'गोदान' उपन्यास के पात्र किस प्रकार के हैं?

अ) शहरी ब) शहरी-ग्रामीण क) महानगरीय ड) आँचलिक

11) 'गोदान' की मुख्य कथा किस गाँव की है?

अ) बेलारी ब) पूर्णिया क) मेरीगंज ड) लमही

12) होरी के बेटे का नाम क्या है?

अ) गोबर ब) रमेश क) सुरेश ड) रामनाथ

13) उपन्यास का एक पात्र मेहता पेशे-से कौन है?

अ) प्रोफेसर ब) डॉक्टर क) इंजीनियर ड) वकील

14) 'गोदान' में चित्रित पात्र ओंकारनाथ कौन है?

अ) पत्रकार ब) जमींदार क) साहूकार ड) किसान

15) 'गोदान' उपन्यास में डॉक्टर का पात्र किस महिला ने निभाया है?

अ) मालती ब) धनिया क) सिलिया ड) मातादीन

16) 'गोदान' उपन्यास में चित्रित पात्र रायसाहब कौन हैं?

अ) जमींदार ब) साहूकार क) नेता ड) किसान

17) 'गोदान' में चित्रित पात्र किस विषय पर केंद्रित हैं?

अ) ग्राम जीवन ब) शहरी जीवन क) महानगरीय जीवन ड) राजनीतिक जीवन

18) प्रेमचंद सबसे अधिक किससे प्रभावित थें?

अ) साम्यवाद ब) गांधीवाद क) प्रयोगवाद ड) प्रयोगवाद

19) 'गोदान' उपन्यास किस भाव भूमि पर खड़ा है?

अ) यथार्थ ब) आदर्श क) काल्पनिक ड) मनोवैज्ञानिक

20) 'गोदान' उपन्यास की नायिका कौन है?

अ) धनिया ब) पूनिया क) सिलिया ड) मालती

21) 'गोदान' कौन करना चाहता है?

अ) होरी ब) रायसाहब क) ओंकारनाथ ड) प्रोफेसर मेहता

22) 'गोदान' उपन्यास में कृषक जीवन का प्रातिनिधिक पात्र कौन है?

अ) होरी ब) गोबर क) रायसाहब ड) खन्ना

23) मिस्टर खन्ना पेशे से कौन हैं?

अ) उद्योगपति ब) किसान क) डॉक्टर ड) जमींदार

24) रायसाहब का वास्तविक नाम क्या है?

अ) अमरकांत सिंह ब) ओंकारनाथ क) अमरनाथ ड) रामनाथ

25) प्रोफेसर मेहता किस विषय के अध्यापक हैं?

अ) अंग्रेजी ब) भाषा विज्ञान क) हिंदी ड) दर्शनशास्त्र

26) मिस्टर खन्ना किस प्रकार के प्रतिनिधिक पात्र हैं?

अ) प्रयोगवाद ब) आधुनिकतावाद क) पूँजीवाद ड) प्रगतिवाद

27) प्रेमचंद जी के किस उपन्यास को गोदान की पूर्व-पीठिका का कहा जाता है?

अ) प्रेमाश्रम ब) सेवासदन क) कर्मभूमि ड) रंगभूमि

28) गोबर किस प्रकार का युवक है?

अ) आदर्शवादी ब) विद्रोही वृत्ति क) अहिंसावादी ड) प्रयोगवादी

29) प्रोफेसर मेहता किस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं?

अ) किसान ब) राजनीतिक क) बुद्धिजीवी ड) मजदूर

30) होरी के गोदान की इच्छा कौन पूरी करती है?

अ) धनिया ब) पूनिया क) मालती ब) सिलिया

ब) उचित मिलान कीजिए

1.	अ) होरी	1) मिल मालिक
	ब) गोबर	2) होरी का भाई
	क) हीरा	3) होरी का पुत्र
	ड) मिस्टर खन्ना	4) गोदान का नायक
2.	अ) रायसाहब	1) होरी का पुत्र
	ब) प्रोफ़ेसर मेहता	2) अध्यापक
	क) गोबर	3) जमींदार
	ड) खन्ना	4) उद्योगपति

3. अ) दातादीन 1) हीरा की पत्नी

ब) सिलिया 2) गोबर की पत्नी

क) झुनिया 3) गाँव का महाजन

ड) पुनिया 4) गाँव की चमारिन

4. अ) मेहता 1) दातादीन का पिता

ब) खन्ना 2) बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतीक

क) गोबर 3) मिल मालिक

ड) मातादीन 4) विद्रोही युवक

5. अ) सोना 1) पुरानी रुढियों में बंधी नारी

ब) मिसेस खन्ना 2) होरी की बेटी

क) सरोज 3) गोबर की पत्नी

ड) झुनिया 4) स्वच्छंदता प्रिय

6. अ) सेवासदन 1) 1935 ई. में प्रकाशन

ब) गोदान 2) 1918 ई. में प्रकाशन

क) रंगभूमि 3) 1932 ई. में प्रकाशन

ड) कर्मभूमि 4) 1924 ई. में प्रकाशन

7. अ) प्रेमाश्रम 1) किसानों का शोषण

ब) कायाकल्प 2) दहेज़ प्रथा तथा अनमेल विवाह

क) निर्मला 3) किसान तथा जमींदारों का संघर्ष

ड) गोदान 4) सांप्रदायिक समस्या

8. अ) हीरा की पत्नी 1) गोविंदी

ब) व्यवहार कुशल नारी 2) मालती

क) डॉक्टर नारी 3) पुनिया

ड) खन्ना की पत्नी 4) धनिया

9. अ) लमही 1) हिंदी में लेखन

ब) धनपतराय 2) उर्दू में लेखन

क) नवाबराय 3) वास्तविक नाम

ड) प्रेमचंद 4) जन्म गाँव

10) अ) होरी की पत्नी 1) सरोज

ब) हीरा की पत्नी 2) धनिया

क) गोबर की पत्नी 3) पुनिया

ड) रुद्रपाल सिंह की पत्नी 4) झुनिया

क) निम्नलिखित वाक्यों में से सही/गलत का चयन कीजिए।

1) 'गोदान' उपन्यास के लेखक प्रेमचंद हैं।

2) हीरा गोदान उपन्यास का नायक है।

3) होरी की पत्नी का नाम धनिया है।

4) गोदान उपन्यास की कथा 'बेलारी' नामक गाँव की है।

5) गाँव के ग्वाले का नाम हीरा है।

6) 'गोदान' की इच्छा होरी व्यक्त करता है।

7) गोदान की मालती यथार्थवादी नारी है।

8) 'बिजली' नामक पत्र के संपादक ओंकारनाथ हैं।

9) प्रोफेसर मेहता अंग्रेजी के प्राध्यापक हैं।

10) मिस्टर खन्ना मिल मालिक हैं।

11) खन्ना की पत्नी का नाम गोविंदी है।

12) होरी के लड़के का नाम गोबर है।

13) रायसाहब और खन्ना दोनों जमींदार हैं।

14) 'गोदान' उपन्यास की प्रधान समस्या किसान जीवन की त्रासदी है।

15) 'गोदान' उपन्यास में शहर और ग्रामीण जीवन की कथा समानांतर चलती है।

16) 'गोदान' का नायक 'होरी' समस्त भारतीय किसान जीवन का प्रतिनिधि पात्र है।

17) मिस्टर खन्ना पेशे से प्रोफेसर हैं।

18) 'गोदान' की धनिया एक भारतीय ग्रामीण परिश्रमी अखंड नारी का प्रतीक पात्र है।

19) 'गोदान' में चित्रित नगरीय जीवन अधिक जटिल और विषम है।

20) 'गोदान' उपन्यास भारतीय किसान जीवन का यथार्थवादी दर्पण है।

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1. परसाद - प्रसाद।
2. ईख - गन्ना, ऊख।
3. ललचा उठना - किसी चीज या वस्तु के प्रति अत्यधिक मोह होना।
4. डींगे हाँकना - बड़ी-बड़ी बातें करना या बढ़ चढ़कर बातें करना।
5. पटकनी देना - नीचे गिराकर अपने अधीन करना।
6. डांड - दंड, सजा, जुर्माना।
7. महाजन - धनिक, अमीर, दूसरों को ब्याज पर पैसे देनेवाला।
8. तहकीकात - जाँच-पड़ताल।
9. जाड़ों की रात - सर्दी या ठण्ड के दिनों की रात।
10. आगबबूला होना - अत्यधिक क्रोधित हो जाना।
11. डोरे डालना - किसी को अपने प्रेम के अधीन करने के लिए प्रयत्न करना, अपनी बात मनवाने का प्रयत्न करना।
12. खोंचा लगाना - छोटी-मोटी वस्तुएँ बेचने का व्यवसाय शुरू करना।
13. फ़िराक - चिंता।
14. मुकदमा दायर करना - फिर्याद दाखिल करना।
15. संकीर्ण - संकुचित।
16. ढिंढोरा पिटना - ऐलान करना अथवा बड़ी आवाज में किसी बात को सभी लोगों तक पहुँचाना।
17. भुगतान करना - बाकी रहे पैसों को लौटाना।
18. फिजूलखर्ची - अनावश्यक बातों पर व्यर्थ पैसे खर्च करना।
19. साँझा - मेलजोल, समझौता।
20. खूँखार - हिंसक, निर्दयी।

21. विपन्नावस्था - मुसीबत या संकट की स्थिति।

22. अल्हड़ - उन्मुक्त, नियंत्रण रहित, बिना सोचे समझे निर्णय लेनेवाला।

23. अभिसार - आगे बढ़ना, प्रिय से मिलने जाना।

24. शावक - पशु-पक्षी का बच्चा।

25. मंडराना - किसी स्थान या वास्तु के आसपास चक्कर लगाना।

26. पूँजीपति - धनिक, विभिन्न उद्योग-व्यवसाय में पैसे लगानेवाला।

27. सामंतवाद - एक ऐसी शासन व्यवस्था जिसमें राज्य की जमीन जमींदारों के अधिकार में होती थी।

28. पाखंडी, मक्कार - धोखेबाज, ठगी, धूर्त।

29. आमोद-प्रमोद - धूमधाम की दावत, बहुत बड़े भोजन का आयोजन।

30. जायदाद - संपत्ति, धान-दौलत।

31. पटवारी - ग्रामस्तर का प्रशासन अधिकारी, लेखापाल।

32. आडंबर - झूठा दिखावा, ढोंग।

33. मुँह पर ताला पड़ा होना - कोई बात न करना, चुपचाप बैठे रहना।

34. ईंट का जवाब पत्थर से देना - क्रिया के जवाब में कड़ी प्रतिक्रिया देना।

35. नाक पर मक्खी न बैठने देना - स्वाभिमानी तथा घमंडी होना।

36. पाँव तले गर्दन दबी होना - किसी के एहसान के बोझ से जीना या किसी के अधीन होकर जीना।

37. मुँह में कालिख लगना - किसी को मुँह दिखाने के लायक न रहना।

38. माथे पर पाठे होना - किसी बात को लेकर अप्रसन्नता, रोष आदि प्रकट करना

39. रंगा सियार - विलासी, रंगेल मिजाजी, शौकीन।

40. बुवाई करना - बीज बोना।

41. आनाकानी करना - किसी बात को टालना।

42. बेगार - बिना मजदूरी के बलपूर्वक करवाया जानेवाला काम।

43. आमोद-प्रमोद - भोग-विलास, हँसी-ख़ुशी, अथवा मन प्रसन्न करने के लिए किए जानेवाले कार्य।

1.6 अ) स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

1) अ) प्रेमचंद	2) क) 1935
3) अ) 31 जुलाई, 1880	4) ब) महाकाव्यात्मक
5) क) आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी	6) अ) होरी
7) अ) धनिया	8) अ) आदर्शवादी
9) अ) किसान	10) ब) शहरी–ग्रामीण
11) अ) बेलारी	12) अ) गोबर
13) अ) प्रोफेसर	14) अ) पत्रकार
15) अ) मालती	16) अ) जमींदार
17) अ) ग्राम जीवन	18) ब) गांधीवाद
19) अ) यथार्थ	20) अ) धनिया
21) अ) होरी	22) अ) होरी
23) अ) उद्योगपति	24) अ) अमरकांत सिंह
25) ड) दर्शनशास्त्र	26) क) पूँजीवाद
27) अ) प्रेमाश्रम	28) ब) विद्रोही वृत्ति
29) क) बुद्धिजीवी	30) अ) धनिया

ब) स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर (उचित मिलान)

1. अ–4, ब–3, क–2, ड–1	2. अ–3, ब– 2, क–1, ड–4
3. अ–3, ब–4, क–2, ड–1	4. अ–2, ब–3, क–4, ड–1
5. अ–2, ब–1, क–4, ड–3	6. अ–2, ब–1, क–4, ड–3
7. अ–3, ब–4, क–2, ड–1	8. अ–3, ब–4, क–2, ड–1
9. अ–4, ब–3, क–2, ड–1	10. अ–2, ब–3, क–4, ड–1

क) स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर (सही/गलत)

1) सही	2) गलत	3) सही	4) सही	5) गलत
6) सही	7) गलत	8) सही	9) गलत	10) सही

11) सही	12) सही	13) गलत	14) सही	15) सही
16) सही	17) गलत	18) सही	19) सही	20) सही

1.7 सारांश

1. प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से लेखक प्रेमचंद हमारे सामने कुछ प्रश्न उपस्थित करते हैं। जैसे अपनी कड़ी मेहनत से सभी का पेट भरनेवाला किसान ही भूखा क्यों रहता है? उसकी गरीबी एवं अभाव भरी जिंदगी समाप्त क्यों नहीं होती? उसकी छोटी-छोटी अभिलाषाओं की पूर्ति क्यों नहीं होती? आजीविका चलाने हेतु किसानों एवं मजदूरों की ओर से कई स्तरों पर किए जानेवाले जीवन संघर्ष का अंत कब होगा?
2. किसानों और मजदूरों के होनेवाले शोषण को उजागर करने के लिए प्रेमचंद जी ने इस उपन्यास में ग्रामीण एवं नागरी जीवन की कहानी को प्रस्तुत की है।
3. 'गोदान' होरी नामक एक ऐसे किसान की कहानी है, जो जीवनभर कड़ी मेहनत करता है, अनेक प्रकार के कष्ट उठाता है, अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए हमेशा प्रयत्न करता है, परंतु उसे उसके परिश्रम का फल मिलने के बजाय असफलता का सामना करना पड़ता है। इतना ही नहीं परिस्थितियाँ और नियति उसे किसान से मजदूर बनने के लिए विवश करती हैं।
4. प्रेमचंद जी का 'गोदान' उपन्यास स्वतंत्रता-पूर्व भारत का वास्तविक चित्र है।
5. यह उपन्यास ग्रामीण भारतीय जीवन की कठोर वास्तविकताओं को उजागर करता है।
6. गरीब, निर्धन किसानों, मजदूरों को अपनी आजीविका के लिए कितने स्तरों पर संघर्ष करना पड़ता है, इसे यह उपन्यास दर्शाता है।
7. उपन्यास का नायक होरी समस्त भारतीय किसानों की त्रासदी का प्रतिनिधित्व करता है।
8. उपन्यास के माध्यम से लेखक प्रेमचंद जी ने तत्कालिन समाज में पूंजीपति, जमींदार और साहूकार आदि के द्वारा शोषित, पीड़ित किसानों की करुण त्रासदी का चित्रण किया है। वह तत्कालिन समय में जितना प्रासंगिक था, आज भी उतना ही प्रासंगिक है।
9. 'गोदान' न केवल उपन्यास है, बल्कि समस्त भारतीय किसान जीवन का महाकाव्य है।
10. 'गोदान' आज भी नए परिप्रेक्ष्य में विचार के लिए प्रेरित करता है। यह औपनिवेशिक युग में किसानों के शोषण की कथा ही नहीं, समकालीन नव-उपनिवेशवाद, भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ और उसके विमर्शों से सामना करनेवाली सच्ची रचना भी है।

1.8 स्वाध्याय –

अ) लघुत्तरी प्रश्न

1. प्रेमचंद जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
2. उपन्यासकार के रूप में प्रेमचंद जी का परिचय दीजिए।
3. विषय तथा समस्या की दृष्टि से प्रेमचंद जी के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय दीजिए।
4. 'गोदान' में किसानों के शोषण की समस्या को उजागर किया है, संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
5. गोबर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
6. रायसाहब का चरित्र-चित्रण कीजिए।
7. प्रोफेसर मेहता की चारित्रिक विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।
8. डॉ. मालती का चरित्र-चित्रण कीजिए।
9. ''गोदान' में भारतीय किसानों के जीवन संघर्ष को चित्रित किया है' संक्षेप में विवेचन कीजिए।
10. गाँव के महाजनों द्वारा किए जानेवाले शोषण पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'गोदान' की कथावस्तु को अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'गोदान' का नायक होरी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. ''गोदान' में भारतीय ग्रामीण समाज एवं परिवेश का सजीव चित्रण मिलता है' स्पष्ट कीजिए ।
4. ''गोदान' भारतीय कृषि संस्कृति का महाकाव्य है।' पठित उपन्यास के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
5. 'धनिया' के चरित्र में भारतीय नारी की विशेषताएँ उजागर होती हैं। विवेचन कीजिए।
6. ''गोदान' में समकालीन परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण हुआ हैं।' स्पष्ट कीजिए।
7. 'गोदान' में चित्रित गाँव तथा शहर से संबंधित समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
8. 'गोदान' के मुख्य पात्रों का परिचय देते हुए, 'गोदान' उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
9. उपन्यास के तत्वों के आधारपर 'गोदान' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।
10. ''गोदान' भारतीय कृषक जीवन के संत्रासमय संघर्ष की कहानी है।' पठित उपन्यास के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य –

1. 'गोदान' की तरह मराठी में ग्रामीण तथा किसान जीवन पर आधारित लिखे गए कथा–साहित्य की सूची बनाइए।
2. भानु काले लिखित मराठी पुस्तक 'अंगारवाटा शोध शरद जोशींचा' का हिंदी में अनुवाद करने का प्रयास करें।
3. वर्तमान किसानों के जीवन की समस्याओं पर शोधालेख लिखिए।
4. अपने संपर्क में आए किसी किसान परिवार के जीवन संघर्ष को अपने शब्दों में लिखिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए –

1. इन्द्रनाथ मदान – गोदान : मूल्यांकन और मूल्यांकन।
2. डॉ. खेलचंद आनंद – हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यासकार।
3. डॉ. सरजूप्रसाद मिश्र – हिंदी के सात उपन्यास।
4. डॉ. नगेन्द्र – हिंदी साहित्य का इतिहास।
5. संजीव – फाँस (उपन्यास)।
6. पंकज सुबीर – अकाल में उत्सव (उपन्यास)।
7. प्रेमचंद – प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि (उपन्यास)।
8. किशोर पटनायक – किसान आंदोलन : दशा और दिशा।

❑❑❑

इकाई–2

स्कंदगुप्त (नाटक) – जयशंकर प्रसाद

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय, व्यक्तित्व, कृतित्व

2.3.2 नाटककार जयशंकर प्रसाद

2.3.3 'स्कंधगुप्त' का परिचय

2.3.4 'स्कंधगुप्त' का कथानक

2.3.5 'स्कंधगुप्त' के प्रमुख पात्र

2.3.6 'स्कंधगुप्त' : संवाद भाषा

2.3.7 देश काल तथा वातावरण

2.3.8 'स्कंधगुप्त' : रंगमंचीयता

2.3.9 'स्कंधगुप्त' नाटक की ऐतिहासिकता

2.3.10 उद्देश्य

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1. जय शंकर प्रसाद के कृतियों से परिचित हो जाएंगे।
2. व्यक्ति के राष्ट्रीय दायित्व को समझ पाएंगे।
3. गुप्तकालीन संस्कृति एवं इतिहास से परिचित हो जाएंगे।
4. भारत पर किए गए हुणों के आक्रमण को जान पाएंगे।
5. गुप्त वंशीय देशभक्त स्कंदगुप्त विक्रमादित्य के शौर्य, संयम तथा कर्तव्य परायणता से परिचित हो जाएंगे।
6. घरेलु सत्ता संघर्ष के षढयंत्र से परिचित हो जाएंगे।

2.2 प्रस्तावना

प्रसिद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद का 'स्कंदगुप्त' 1928 में प्रकाशित नाटक है। प्रस्तुत नाटक में सन् 455 से सन् 466 तक कुल 11 वर्षो के काल का वर्णन चित्रित किया गया है। प्रस्तुत नाटक में हूणों के आक्रमण के दौरान गुप्तवंशीय देशभक्त युवराज स्कंदगुप्त (विक्रमादित्य) के शौर्य, संयम तथा कर्तव्यपरायणता को दर्शा कर उसके आधार पर प्रसाद जी ने आज के दौर के युवको में राष्ट्रीय चेतना को प्रज्वलित करने की कोशिश की है। इस संदर्भ में प्रसाद जी का ही कथन द्रष्टव्य है ''इतिहास का अनुशीलन किसी भी जाति को अपना आदर्श संघठित करने के लिए अत्यंत लाभदायक होता है। मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकांड घटनाओं का दिग्दर्शन करना है, जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति को बनाने का प्रयत्न किया है।'' साथ ही प्रस्तुत नाटक में पारिवारिक कलह, सत्ता का मोह, उसके कारण किये गये षढयंत्र तथा उसके परिणाम स्वरूप उत्पन्न देश के पतन को भी रेखांकित किया गया है।

2.3 विषय विवेचन -

2.3.1 जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय :-

जयशंकर प्रसाद का जन्म गुरुवार दि. 3 अप्रैल 1890 में उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर में हुआ। इनके पितामह बाबू शिवरतन साहू और पिता बाबू देवीप्रसाद दान देने और कलाकारों का आदर सत्कार करने के लिए विख्यात थे। प्रसाद जी की प्राथमिक शिक्षा काशी के क्वींस कॉलेज में हुई थी। लेकिन वह अल्पकालिक ही हो पाई। इसलिए उनकी शिक्षा का व्यापक प्रबंध घर पर ही किया गया था।प्रसाद जी के प्रारंभिक शिक्षक श्री मोहनी लाल गुप्त थे जिन्होंने हिन्दी और संस्कृत में प्रसाद जी की अच्छी प्रगति करा दी। प्रसाद जी ने संस्कृत के विद्वान हरिहर महाराज से संस्कृत का गहरा अध्ययन किया। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के संस्कृत अध्यापक महामहोपाध्याय पं.देवीप्रसाद शुक्ल; कवि चक्रवर्ती को प्रसाद जी का काव्य गुरु माना जाता है। प्रसाद जी ने वेद, इतिहास, पुराण तथा साहित्यशास्त्र का गहरा अध्ययन किया

था। प्रसाद जी का पहला विवाह सन 1909 में विंध्यवासिनी के साथ हुआ था। लेकिन क्षय रोग के कारण 1916 में उनकी मृत्यु हो गई। 1917 में उन्होंने सरस्वतीदेवी के साथ दूसरा विवाह किया। लेकिन 1919 में क्षय रोग के कारण उनकी भी मृत्यु हो गई। 1919 में उन्होंने रिश्तेदार तथा घरवालों के दबाव से तीसरा विवाह कमलादेवी के साथ किया। उनका एकमात्र पुत्ररत्न शंकर प्रसाद का जन्म 1922 में हुआ। स्वयं प्रसाद जी की मृत्यु क्षय रोग से ग्रस्त होकर 15 नवंबर 1937 (उम्र 47 वर्ष) को काशी में हुई।

2.3.2 नाटककार जय शंकर प्रसाद का कृतित्व

जय शंकर प्रसाद का साहित्य

2.3.2.1 प्रकाशित नाटक–

- 1. सज्जन (1911)
- 2. कल्याण परिणय (1912)
- 3. प्रायश्चित्त (1913)
- 4. करुणालय (1913)
- 5. राज्यश्री (1915)
- 6. विशाखा (1921)
- 7. अजातशत्रु (1922)
- 8. कामना (1927)
- 9. जनमेजय का नाग यज्ञ (1926)
- 10. स्कंदगुप्त (1928)
- 11. एक घूंट (1929)
- 12. चन्द्रगुप्त (1931)
- 13. ध्रुव स्वामिनी (1933)

2.3.2.2 काव्य

- 1. खंडकाव्य – प्रेम पथिक (1914)
- 2. खंडकाव्य – महाराणा का महत्व (1914)

- 3. महाकाव्य – कामायनी (1935)
- 4. गीतिकाव्य – झरना (1918)
- 5. गीतिकाव्य –आँसू (1925)
- 6. गीतिकाव्य – लहर (1933)

2.3.2.3 कहानी संग्रह

- 1. छाया (1912)
- 2. प्रतिध्वनि (1926)
- 3. आकाशदीप (1926)
- 4. आँधी (1931)
- 5. इंद्रजाल (1936)

2.3.2.4 उपन्यास

- 1. कंकाल (1929)
- 2. तितली (1934)
- 3. इरावती (1935)

2.3.3. 'स्कंदगुप्त' नाटक का परिचय –

गुप्तकालीन मगध सम्राट कुमारगुप्त की दो राणीयां हैं। बडे राणी का नाम है देवकी और छोटे राणी का नाम है अनंतदेवी। बडी राणी देवकी के पुत्र हैं स्कंदगुप्त (विक्रमादित्य) जो युवराज भी हैं और छोटी राणी के पुत्र का नाम है, पुरगुप्त जो राजकुमार है।स्कंदगुप्त युवराज होने के कारण कुमारगुप्त के बाद सम्राट बनने का अधिकार भी उसीका होता है। सम्राट बनने के सारे गुण स्कंदगुप्त में है। राज्य के सभी स्कंदगुप्त को ही राजा के रूप में संतोषजनक दृष्टि से देखते हैं।लेकिन छोटी रानी अनंत देवी को ये बात रास नहीं आती। विलासी जीवन में लुप्त कुमारगुप्त को अपने वश में कर तथा प्रधान सेनापति भटार्क को अपने साथ मिलाकर वह षढयंत्र रचती रहती है।

पड़ोसी मालव राष्ट्र से दूत आकर उनके राजा बंधुवर्मा का उनके राज्य पर आक्रमण करनेवाले शक और हूणों से रक्षा करने का संदेश स्कंदगुप्त को देता है। ऐसे समय में कि जब स्कंदगुप्त की सेना शत्रु पुष्यमित्रों से जूझ रही है, फिर भी महानायक पर्णदत्त तथा उनके पुत्र चक्रपालित पर युद्ध का भार सौंपकर स्कंदगुप्त 'शरणागत की रक्षा करना और संधी का पालन करना क्षत्रिय धर्म है' कहकर मालव राष्ट्र के मदद

के लिए रवाना हो जाते हैं। इसी समय का फायदा उठाकर षढ़यंत्रकारी अनंतदेवी, भटार्क, बौद्ध कापालिक प्रपंचबुद्धी के मार्गदर्शन में सम्राट कुमारगुप्त की मौत की सूचना देकर अनंतदेवी के पुत्र राजकुमार पुरगुप्त को सम्राट घोषित करते हैं। अनंतदेवी और भटार्क साम्राज्य के परम भक्त तथा शुभचिंतक पृथ्वीसेन,महाप्रतिहार और दंड नायक के विरोध करने पर उन्हें बंदी बनाने की कोशिश करते हैं। लेकिन जब राष्ट्र संकटों से घिरा हुआ हो तो राज्य में अंतर्गत विद्रोह नहीं होना चाहिए ऐसा सोचकर वे तीनों आत्महत्या करने के लिये मजबूर हो जाते हैं। इस तरह अनंत देवी का रास्ता साफ हो जाता है और वह अपने पुत्र पुरगुप्त को राजा घोषित करती है।

प्रपंचबुद्धी ही के कहने पर श्रवनाग को लालच दिखाकर तथा मदिरा पिलाकर स्कन्द की माता देवकी की हत्या करने के लिए राजी किया जाता है। लेकिन श्रवनाग की पत्नी रामा बीच में रोड़ा बनकर खड़ी हो जाती है। इधर मालव देश के राजा बंधुवर्मा की मदद के लिये गए हुए युवराज को अपने राज्य में घटित षढयंत्र का पता चलता है। स्कंदगुप्त कुसुमपुर पहुंचकर देखता है कि उसकी माता देवकी को बंदी बना लिया गया है और अनंतदेवी के आदेश से उसे जान से मारने की तयारीयां चल रही है। भटार्क से दो हाथ कर उसे गिराकर अपनी माँ को बचा लेता है और क्षमा याचना करने पर विमाता अनंतदेवी, पुरगुप्त तथा भटार्क को माफ कर देता है। दुश्मनों का सामना करने के लिये वह सैन्य शक्ति संघटित करता है और सफलता प्राप्त कर उस राज्य की प्राप्ति भी कर लेता है। लेकिन अपने सौतेले भाई आनंतदेवी के पुत्र पुरगुप्त को ही वह मगध के सिंहासन पर बिठाता है।

इधर मालव राष्ट्र के राजा बंधुवर्मा अपनी पत्नी जयमाला और बहन देवसेना से विचार विमर्श कर आनेवाले संकटों से अवगत होकर स्कंदगुप्त ने शक और हूणों से राष्ट्र की रक्षा की, इसलिए तथा राष्ट्र ही की रक्षा के लिए अपना राज्य स्कंदगुप्त को भेंट स्वरूप देकर उनका राज्याभिषेक करना चाहता है। देवसेना स्कंदगुप्त को चाहती है। उसकी सहेली विजया भी स्कंदगुप्त को चाहती है लेकिन यह सोचकर की देवसेना ही उससे शादी करेगी वह उसके रास्ते से हटकर विद्रोही षढ़यंत्रकारी भटार्क से जा मिलती है। भटार्क की माँ कमला भटार्क को राष्ट्रद्रोही होने के कारण तथा राज्याभिषेक में कुछ गड़बड़ी करने के लिए आया हुआ है यह जानकर कोसती रहती है। वही विजया आकर भटार्क के साथ होने की घोषणा करती है। इसी समय सम्राट कुमारगुप्त के भाई और स्कन्दगुप्त के चाचा गोविंदगुप्त मुद्गल तथा मातृगुप्त के साथ आकर भटार्क, विजया, श्रवनाग और कमला को बंदी बनाकर स्कंदगुप्त के सामने पेश करते हैं। श्रवनाग पश्चाताप करते हुए मृत्यु दंड की मांग करता है। लेकिन माँ देवकी के कहने पर उसकी पत्नी रामा के देशप्रेम को याद रखते हुए श्रवनाग को स्कंदगुप्त सिर्फ माफ ही नहीं करते अपितु उसे अंतर्वेद के विषयपति नियुक्त करता है।

माँ ही के कहने पर वह भटार्क को भी माफ कर देता है। लेकिन विजया को उनके साथ देखकर स्कंदगुप्त विचलित और दु:खी हो जाता है। यहाँ देवसेना स्कंदगुप्त का विजया की ओर आकर्षित होना भांप जाती है और विजया को ही वह जीत गई मानती है।

तृतीय अंक में स्कंदगुप्त को प्रपंचबुद्धी, भटार्क और अनंतदेवी के षढयंत्र का सामना करना पडता है। वे कापालिक प्रपंचबुद्धि के मार्गदर्शन में सब करते रहते हैं। विजया देवसेना को जलन के कारण मार डालना चाहती है। भटार्क, अनंतदेवी उसका साथ देते हैं और प्रपंचबुद्धी को उग्रतारा को प्रसन्न करने के लिए राजबलि चाहिए होती है इसलिए विजया देवसेना को फुसलाकर स्मशान में ले आती हैं। जहां प्रपंचबुद्धी उसका बलि चढानेवालाही होता हैं कि तभी मातृगुप्त को इस बात की खबर लगने के कारण वह स्कन्द को वहाँ ले आता है। स्कंदगुप्त प्रेमिका तथा बंधूवर्मा की बहन देवसेना को हत्या से बचाकर प्रपंचबुद्धि को सजा देता है और मातृगुप्त को इस काम के उपहार में कश्मीर राज्य का शासक बना देता है।

इसी बीच भीमवर्मा खबर लाता हैं कि शकमण्डल से विजय का समाचार आया है किन्तु गोविंदगुप्त यह इच्छा जताते हुए कि बंधुवर्मा को गुप्त साम्राज्य का महाबलाधिकृत बनाए जाए वीरगति को प्राप्त हुए हैं। आर्य साम्राज्य का विस्तार हुआ है। सिंधु के प्रदेश से म्लेच्छ राज्य ध्वस्त हो गया है। सम्राट स्कंदहगुप्त ने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धरण कर ली है।

इसी दौरान पश्चिमोत्तर सीमा की ओर गांधार के घाटी रणक्षेत्र में दुष्मनो का सामना करना पडता है। सैनिक चर खबर लता है कि हूण शीघ्र ही नदी पार कर आक्रमण की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बंधुवर्मा के पूछने पर कुंभा के रणक्षेत्र में गद्दार भटार्क फिर एक बार दुश्मनो से मिल जाने के उसके कार्यकलापों से अवगत कराता है। स्कंदगुप्त बंधुवर्मा को कुंभ की रणक्षेत्र की ओर जाने के लिए कहता है किन्तु मगध की सेना उसकी अपेक्षा स्कन्ध के होने से ज्यादा ताकत के साथ लढ़ सकेगी कहकर स्कन्द को भेजकर खुद मालव सेना के साथ हूणों से लढ़ विजय प्राप्त करता है और बहन देवसेना तथा भाई भीमवर्मा स्कंदगुप्त के हैं कहकर अंतिम सांस लेता है। कुंभ के रण क्षेत्र में चक्रपालित भटार्क के दुश्मनों से मिल जाने की खबर देता है। लेकिन युद्ध के समय उस पर संदेह जताकर उसे खिलाफ करने की अपेक्षा उसकी गद्दारी से उसे वाकिब कराता है। लेकिन उसके यह कहने पर की वह गद्दार नहीं है, देशभक्त है। उसे मौका देने के लिए उसे रणनीति में शरीक करता है। स्कन्द के नेतृत्व में सेना जी जान से लढ़ती है और विजय प्राप्त करती है। लेकिन गद्दार भटार्क हूणों से मिलकर भागनेवाले हूणों को बांध से जाने का मौका देकर तथा उनका पीछा करनेवाले गुप्त के सैनिकों को नदी पार करते वक्त बांध तोड़कर नदी में बहा देता है।

चौथे अंक में नाचगाना, मदिरा मे लिप्त भटार्क से स्कन्द की माँ देवकी पूछने आती है कि स्कन्द कहाँ है? वह कहता है कि वह कुंभ की धारा में बह गया। स्कन्द के मरने की खबर सुनकर देवकी वही गिरकर मृत्यु को प्राप्त होती है। भटार्क के गद्दारी पर उसकी माँ कमला उसे कोसती है और उसे बेटा कहने में शर्म महसुस करती है। भटार्क को पश्चाताप होता है और वह शस्त्र त्याग देता है। कमला के कहने पर वह देवकी का अंतिम संस्कार राजसन्मान के साथ करने की सूचना सैनिकों को देता है।

चतुर्थ अंक के सप्तम दृश्य में कमला माँ की कुटी में स्कंद विपरित परिस्थितीयां निर्माण होने के कारण नि:सहाय और अकेला दिखाई देता है। हताश स्कन्द को कमला हिम्मत बांधती है।लढने की प्रेरणा देती है।

पर्णदत्त और देवसेना देवकी के समाधि के पास कुटिया बनाकर भिक मांगकर जीवन व्यथित करते हैं। स्कन्द वहाँ आकर माँ की समाधि का दर्शन कर देवसेना से मिलता है। वह देवसेना से गुजारिश कर यह कहता है कि अब हम अलग नहीं होंगे। लेकिन देवसेना यह कहकर कि आपने विजया को चाहा था। इसलिए मैं प्रतिदान के रूप में आपकी नहीं हो सकती। बावजूद इसके की मैंने जिंदगीभर आपके सिवा किसी को नहीं चाहा। मैं आजीवन आपकी दासी बनी रहूँगी। स्कन्द भी उसके सामने माँ के समाधि को साक्षी बनाकर आजीवन कुमार जीवन व्यथित करने की प्रतिज्ञा लेता है।

देवसेना प्राणदत्त को लाने के लिए चली जाती है। तभी विजया वहाँ आकर स्कन्द से अपने प्यार, यौवन तथा राज्य प्राप्त करने के लिए धन की अभिलाषा देकर उसके साथ हो जाने की गुजारिश करती है। किन्तु स्कन्द उसे अपनी प्रतिज्ञा सुना कर लताड़ता है। उसकी यह बात वहाँ आए हुए भटार्क सुनता है और उसे भला बुरा सुनाता है। शर्म से ग्लानित होकर विजया आत्महत्या कर लेती है। स्कन्द के कहने पर विजया के अंतिम संस्कार के लिए जो गड्डा खोदा जाता है उसमें भटार्क को रत्नगृह मिल जाता है। भटार्क रत्न देश के काम में लाने की बात कहकर सेना संकलन करने की आज्ञा स्कंद से माँगता है।

पर्णदत्त भीक के रूप में नागरिकों से देश के लिए लढ़नेवाले युवक माँगता है। बहुत से युवक निकल पड़ते हैं। स्कंदगुप्त, चक्रपालित, भीमवर्मा, मातृगुप्त, श्रवनाग, कमला, देवसेना, रामा सब प्रकट हो जाते हैं।

इधर अनंतदेवी, प्रख्यातकीर्ति और पुरगुप्त हूण सेनापति के साथ स्कन्ध गुप्त के लौट आनेपर विचार-विमर्श कर रहे होते हैं कि तभी धातुसेन वहाँ आकर सब को बंदी बना लेता है। रणक्षेत्र में खींगिल हूण सेना के साथ आता है और घमासान युद्ध के बाद घायल होकर बंदी हो जाता है। आर्य पर्णदत्त सम्राट को बचाने की कोशिष में शहीद होता है।बंदी अनंतदेवी और पुरगुप्त के क्षमा याचना करने पर उन्हें माफ करते हुए स्कंदगुप्त रक्त का टीका पुरगुप्त को लगा कर उसे सम्राट घोषित करता है और उसे सख्त निर्देश देता है कि उसके बाद उसके जन्मभूमि की दुर्दशा न हो। वह हूण खींगिल को भी छोड़ सख्त ताकित करता है कि सिंध के पार के इस पवित्र देश में कभी आने का साहस न करें। देवसेना भी उससे कहीं चले जाने की आज्ञा मांगती है। उसे कठिन ह्रदय से आशीर्वाद देकर खुद हतभाग्य होकर स्कन्द अकेला रह जाता है।

2.3.4 'स्कंदगुप्त' नाटक की कथावस्तु

प्रसिद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद का 'स्कंदगुप्त' नाटक दीर्घ नाटक है। इसलिए आलोचक इस नाटक को महाकाव्यात्मक नाटक मानते हैं। प्रस्तुत नाटक पांच अंको में और कुल तैन्तीस दृश्यो में विभाजित है।

- ❖ प्रथम अंक की प्रथम दृश्य में उज्जयिनी में गुप्त साम्राज्य के स्कंधवार में घुमते हुए युवराज स्कंदगुप्त के स्वगत कथन से होती है। जिसमें उसकी उदासीन मन:स्थिति और गुप्त साम्राज्य के प्रति समर्पित भाव का प्रदर्शन होता है। राज्य के महानायक पर्णदत्त उन्हें अपने अधिकारों के प्रयोग और उत्तरदायित्व के निर्वाह करने की प्रेरणा देते हैं। छोटी माता रानी अनंतदेवी द्वारा रचे जानेवाले षडयंत्र का पता भी स्कंद को चल जाता है।वह विलासी जीवन में लुप्त स्कंद के पिता कुमारगुप्त को अपने वश में कर तथा प्रधान सेनापति भटार्क को अपने साथ मिलाकर षढयंत्र रचती रहती है।

पड़ोसी मालव राष्ट्र से दूत आकर उनके राजा बंधुवर्मा का उनके राज्य पर आक्रमण करनेवाले शक और हूणों से रक्षा करने का संदेश स्कंदगुप्त को देता है।ऐसे समय में कि जब स्कंदगुप्त की सेना शत्रु पुष्यमित्रों से जूझ रही है, फिर भी महानायक पर्णदत्त तथा उनके पुत्र चक्रपालित पर युद्ध का भार सौंपकर स्कंदगुप्त 'शरणागत की रक्षा करना और संधी का पालन करना क्षत्रिय धर्म है' कहकर मालव राष्ट्र के मदद के लिए रवाना हो जाते हैं।

दूसरा दृश्य कुसुमपूर के राज मन्दिर में सम्राट कुमारगुप्त और उनकी परिषद में घटित होता है। इस दृश्य में धातुसेन और मुद्गल का हास्य–विनोद दर्षाया गया है। मंत्री कुमारामात्य पृथ्विसेन महाराज को मालव, हुणों और पुष्यमित्रो के आक्रमण और संबंधित योजना से अवगत कराते हैं। इस दृश्य का अंत महाराणी अनंतदेवी द्वारा महाराज के लिये किये गए नृत्य–गायन और मदिरापान के प्रबंध से होता है।

तृतीय दृश्य का आरंभ मातृगुप्त के स्वगत कथन से है जिसमें वह कवि कर्म की विडंबना और मातृभूमि कश्मीर से विलग के दर्द को प्रस्तुत करता है। यही मातृगुप्त तथा कुमारदास के वार्तालाप से मगध साम्राज्य में होनेवाली भावी हलचल का पता चल जाता है।

चतुर्थ तथा पंचम दृश्य में स्कंद न होने का फायदा उठाकर षढ़यंत्रकारी अनंतदेवी, भटार्क, बौद्ध कापालिक प्रपंचबुद्धी के मार्गदर्शन में सम्राट कुमारगुप्त की मौत की सूचना देकर अनंतदेवी के पुत्र राजकुमार पुरगुप्त को सम्राट घोषित करते हैं। अनंतदेवी और भटार्क साम्राज्य के परम भक्त तथा शुभचिंतक पृथ्वीसेन, महाप्रतिहार और दंड नायक के विरोध करने पर उन्हें बंदी बनाने की कोशिश करते हैं। लेकिन जब राष्ट्र संकटों से घिरा हुआ हो तो राज्य में अंतर्गत विद्रोह नहीं होना चाहिए ऐसा सोचकर वे तीनों आत्महत्या करने के लिये मजबूर हो जाते हैं। इस तरह अनंतदेवी का रास्ता साफ हो जाता है और वह अपने पुत्र पुरगुप्त को राजा घोषित करती है।

छटे दृश्य में हुणों के बर्बरता का संकेत मिलता है। सप्तम दृश्य अवंती के दुर्ग से संबधित है। स्कन्दुप्त की सहायता पाकर मालव राज्य विदेशी आक्रमण से मुक्त होता है। इसी दृश्य में स्कंद विजया की ओर और मालव की राजकन्या देवसेना स्कंदगुप्त की ओर आकर्षित हो जाते हैं।

❖ नाटक के दूसरे अंक के पहले दृश्य की शुरुआत मालव के शुप्रा–कुंज–तट पर देवसेना और विजया के बीच के संवाद से होती है जिससे विजया का स्कंद के प्रति आकर्षण स्पष्ट होता है। लेकिन स्कंद और चक्रपालित का संवाद सुनकर विजया स्कंद का राज्य प्राप्ति के प्रति उदासीन भाव अपने महत्वकांक्षा में बाधा महसूस करती है।

द्वितीय दृश्य में प्रपंचबुद्धी के कहने पर श्रवनाग को लालच दिखाकर तथा मदिरा पिलाकर स्कन्द की माता देवकी की हत्या करने के लिए राजी किया जाता है।

तृतीय दृश्य देवकी की मन्दिर में श्रवनाग की पत्नी रामा राजमाता देवकी की हत्या के षढयंत्र के बीच रोड़ा बनकर खड़ी हो जाती है।

चतुर्थ दृश्य में देवकी और रामा बंदी गृह में दिखाई देते हैं।श्रवनाग अनंतदेवी के आदेश पर देवकी माता की हत्या के लिये तत्पर है।लेकिन इधर मालव देश के राजा बंधुवर्मा की मदद के लिये गए हुए युवराज को अपने राज्य में घटित षढयंत्र का पता चलता है।स्कंदगुप्त कुसुमपुर पहुंचकर देखता है कि उसकी माता देवकी को बंदी बना लिया गया है और अनंतदेवी के आदेश से उसे जान से मारने की तयारीयां चल रही है। स्कंद गद्दार भटार्क से दो हाथ कर उसे गिराकर अपनी माँ को बचा लेता है।

पंचम दृश्य अवंती दुर्ग का है जिसमें मालव राष्ट्र के राजा बंधुवर्मा अपनी पत्नी जयमाला और बहन देवसेना से तथा अपने छोटे भाई भीम वर्मा के साथ सहमती से विचार विमर्श कर आनेवाले संकटों से अवगत होकर स्कंदगुप्त ने शक और हूणों से राष्ट्र की रक्षा की है। इसलिए तथा राष्ट्र ही की सुरक्षितता के लिए अपना राज्य स्कंदगुप्त को भेंट स्वरूप देकर उनका राज्याभिषेक करना चाहता है। मालव राज्य स्कंद के नियंत्रण में देने का निर्णय लेता है।

षष्ट्म दृश्य में भटार्क को उसकी माता गद्दारी के कारण कोसती है। भटार्क की माँ कमला भटार्क को राष्ट्रद्रोही होने के कारण तथा राज्याभिषेक में कुछ गड़बड़ी करने के लिए आया हुआ है यह जानकर कोसती रहती है। इसी दृश्य में भटार्क के महत्वकांक्षा को देखकर विजया उसकी ओर आकर्षित हो जाती है। साथ ही देवसेना स्कंदगुप्त को चाहती है। उसकी सहेली विजया भी स्कंदगुप्त को चाहती है। लेकिन यह सोचकर की देवसेना ही उससे शादी करेगी। इसलिए उसके रास्ते से हटकर विद्रोही षढ़यंत्रकारी भटार्क से जा मिलती है।

सातवे दृश्य में राजसभा में स्कंद अपनी माँ देवकी की चरण वंदना करता है। इसी समय सम्राट कुमारगुप्त के भाई और स्कन्दगुप्त के चाचा गोविंदगुप्त मुद्गल तथा मातृगुप्त के साथ आकर भटार्क, विजया, श्रवनाग और कमला को बंदी बनाकर स्कंदगुप्त के सामने पेश करते हैं। श्रवनाग पश्चाताप करते हुए मृत्यु दंड की मांग करता है। लेकिन माँ देवकी के कहने पर उसकी पत्नी रामा के देशप्रेम को याद रखते हुए श्रवनाग को स्कंदगुप्त सिर्फ माफ ही नहीं करता अपितु उसे अंतर्वेद के विषयपति नियुक्त करता है।

माँ के कहने ही पर वह भटार्क को भी माफ कर देता है। वही विजया आकर भटार्क के साथ होने की घोषणा करती है। लेकिन विजया को उनके साथ देखकर स्कंदगुप्त विचलित और दु:खी हो जाता है। यहाँ देवसेना स्कंदगुप्त का विजया की ओर आकर्षित होना भांप जाती है और विजया को ही वह जीत गई मानती है।

- तृतीय अंक के पहले दृश्य में शिप्रा तट पर प्रपंच बुद्धी और भटार्क के वार्तालाप के दौरान विजया और देवसेना पहुंचति है। स्कंदगुप्त को प्रपंचबुद्धी, भटार्क और अनंतदेवी के षढयंत्र का सामना करना पडता है।वे कापालिक प्रपंचबुद्धि के मार्गदर्शन में सारे षढयंत्र करते रहते हैं।

दुसरे दृश्य में विजया देवसेना को जलन के कारण मार डालना चाहती है। भटार्क, अनंतदेवी उसका साथ देते हैं और प्रपंचबुद्धी को उग्रतारा को प्रसन्न करने के लिए राजबलि चाहिए होती है इसलिए विजया देवसेना को फुसलाकर स्मशान में ले आती हैं। जहां प्रपंचबुद्धी उसका बलि चढानेवालाही होता है कि तभी

मातृगुप्त को इस बात की खबर लगने के कारण वह स्कन्द को वहाँ ले आता है। स्कंदगुप्त प्रेमिका तथा बंधूवर्मा की बहन देवसेना को हत्या से बचाकर प्रपंचबुद्धि को सजा देता है।

तृतीय दृश्य मगध में अनंतदेवी, पुरगुप्त, विजया और भटार्क के षडयंत्रों को स्पष्ट करता है। अनंत देवी की अपने बेटे पुरगुप्त को राजा बनाने की इच्छा अभी खत्म नही हुई है। बौद्धों को स्कंद के विरुद्ध भडकाने की कोशिश होती है। भटार्क हूण सेनापति से मिलकर आर्यावर्त को संकट में डालता है।

चतुर्थ दृश्य में स्कंद द्वारा मातृगुप्त की निष्ठा एवं कार्य के उपहार में उसे कश्मीर राज्य का शासक बना दिया जाता है।

पंचम और षष्ठ दृश्यों में गांधार घाटी और दुर्ग के सम्मुख कुंभ के रणक्षेत्र का चित्र स्पष्ट होता है।जहाँ भीमवर्मा खबर लाता है कि शकमण्डल से विजय का समाचार आया है किन्तु गोविंदगुप्त यह इच्छा जताते हुए कि बंधुवर्मा को गुप्त साम्राज्य का महाबलाधिकृत बनाए जाए वीरगति को प्राप्त हुए हैं। आर्य साम्राज्य का विस्तार हुआ है। सिंधु के प्रदेश से म्लेच्छ राज्य ध्वस्त हो गया है। सम्राट स्कंदहगुप्त ने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण कर ली है।

इसी दौरान पश्चिमोत्तर सीमा की ओर गांधार के घाटी रणक्षेत्र में दुष्मनों का सामना करना पडता है।सैनिक चर खबर लाता है कि हूण शीघ्र ही नदी पार कर आक्रमण की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बंधुवर्मा के पूछने पर कुंभा के रणक्षेत्र में गद्दार भटार्क फिर एक बार दुश्मनों से मिल जाने के उसके कार्यकलापों से अवगत कराता है। स्कंदगुप्त बंधुवर्मा को कुंभ की रणक्षेत्र की ओर जाने के लिए कहता है किन्तु मगध की सेना उसकी अपेक्षा स्कन्ध के होने से ज्यादा ताकत के साथ लढ़ सकेगी कहकर स्कन्द को भेजकर खुद मालव सेना के साथ हूणों से लढ़ विजय प्राप्त करता है और बहन देवसेना तथा भाई भीमवर्मा स्कंदगुप्त के हैं कहकर अंतिम सांस लेता है। कुंभ के रण क्षेत्र में चक्रपालित भटार्क के दुश्मनों से मिल जाने की खबर देता है। लेकिन युद्ध के समय उस पर संदेह जताकर उसे खिलाफ करने की अपेक्षा उसकी गद्दारी से उसे वाकिब कराता है।लेकिन उसके यह कहने पर की वह गद्दार नहीं है, देशभक्त है। उसे मौका देने के लिए उसे रणनीति में शरीक करता है। स्कन्द के नेतृत्व में सेना जी जान से लढ़ती है और विजय प्राप्त करती है। लेकिन गद्दार भटार्क हूणों से मिलकर भागनेवाले हूणों को बांध से जाने का मौका देकर तथा उनका पीछा करनेवाले स्कंदगुप्त और उनके सैनिकों को नदी पार करते वक्त बांध तोड़कर नदी में बहा देता है।

❖ चौथे अंक के पहले दृश्य में अनंत देवी विजया को अपने पुत्र की महाराणी बनने का स्वप्न दिखाती है लेकिन विजया राजी नही होती। वह श्रवनाग के ताडना से आहत होकर चुने हुए अपने गलत रास्तों पर विचार करने लगती है।

दुसरे दृश्य में नाचगाना, मदिरा मे लिप्त भटार्क से स्कन्द की माँ देवकी पूछने आती है कि स्कन्द कहाँ है? वह कहता है कि वह कुंभ की धारा में बह गया। स्कन्द के मरने की खबर सुनकर देवकी वही गिरकर मृत्यु को प्राप्त होती है। भटार्क के गद्दारी पर उसकी माँ कमला उसे कोसती है और उसे बेटा कहने में शर्म

महसुस करती है।इसलिये लज्जित भटार्क शस्त्र त्याग अपने कुकर्म पर पश्चाताप व्यक्त करता है। माँ कमला के कहने पर वह देवकी का अंतिम संस्कार राजसन्मान के साथ करने की सूचना सैनिकों को देता है।

तृतीय दृश्य में मातृगुप्त का अपनी प्रेमिका मालिनी से भेंट होती है।

चतुर्थ दृश्य के अंतर्गत बौद्ध जनता और संघ के विरुद्ध हो जाने की सूचना है।

पांचवे दृश्य में ब्राम्हण तथा बौध्द के संघर्ष को दिखाकर उन्हें धातुसेन और प्रख्यात कीर्ति द्वारा मानव धर्म सिखाने की कोशिश प्रसाद जी ने की है।

षष्ठम दृश्य में विजया मातृगुप्त को भारत के महिमा के गीत गाने के लिये प्रेरित करती हुई दिखाई देती है।

चतुर्थ अंक के सप्तम दृश्य में कमला माँ की कुटी में स्कंद विपरित परिस्थितियां निर्माण होने के कारण नि:सहाय और अकेला दिखाई देता है। हताश स्कन्द को कमला हिम्मत बांधती है। लढने की प्रेरणा देती है।

❖ नाटक के अंतिम पंचम अंक के पहले दृश्य में विजया अपने किये पर शरमिंदा नजर आती है और क्षमा के लिये स्कंद से मिलना चाहती है।

दुसरे दृश्य में पर्णदत्त और देवसेना देवकी के समाधि के पास कुटिया बनाकर भिख मांगकर जीवन व्यथित करते हुए दिखाई देते हैं। स्कन्द वहाँ आकर माँ की समाधि का दर्शन कर देवसेना से मिलता है।वह देवसेना से गुजारिश कर कहता है कि अब हम अलग नहीं होंगे। लेकिन देवसेना यह कहकर कि आपने विजया को चाहा था।इसलिए मैं प्रतिदान के रूप में आपकी नहीं हो सकती। बावजूद इसके की मैंने जिंदगीभर आपके सिवा किसी को नहीं चाहा। मैं आजीवन आपकी दासी बनी रहूँगी। स्कन्द भी उसके सामने मॉ के समाधि को साक्षी बनाकर आजीवन कुमार जीवन व्यतीत करने की प्रतिज्ञा लेता है। देवसेना प्राणदत्त को लाने के लिए चली जाती है। तभी विजया वहाँ आकर स्कन्द से अपने प्यार, यौवन तथा राज्य प्राप्त करने के लिए अपने पास के धन की अभिलाषा देकर उसके साथ हो जाने की गुजारिश करती है। किन्तु स्कन्द उसे अपनी प्रतिज्ञा सुना कर लताड़ता है। उसकी यह बात वहाँ आए हुए विजया का प्रेमी भटार्क सुनता है और उसे भला बुरा सुनाता है। शर्म से ग्लानित होकर विजया आत्महत्या कर लेती है। स्कन्द के कहने पर विजया के अंतिम संस्कार के लिए जो गड्ढा खोदा जाता है उसमें भटार्क को रत्नगृह मिल जाता है। भटार्क रत्न देश के काम में लाने की बात कहकर सेना संकलन करने की आज्ञा स्कंद से माँगता है।

तृतीय दृश्य में देवसेना और पर्णदत्त भीक के रूप में नागरिकों से देश के लिए हुणों के खिलाफ लढ़नेवाले युवक माँगते हैं।बहुत से युवक निकल पड़ते हैं।उनके साथ बदले हुए वेश में स्कंदगुप्त, चक्रपालित, भीमवर्मा, मातृगुप्त, श्रवनाग, कमला, देवसेना, रामा सब प्रकट हो जाते हैं। सभी राष्ट्र सेवा के लिये प्रस्तुत हो जाते हैं।

चतुर्थ दृश्य अनंतदेवी, प्रख्यातकीर्ति और पुरगुप्त हूण सेनापति के साथ स्कन्ध गुप्त के लौट आनेपर विचार-विमर्श कर रहे होते हैं कि तभी धातुसेन वहाँ आकर सबको बंदी बना लेता है।

पांचवे दृश्य में रणक्षेत्र में खींगिल हूण सेना के साथ आता है और घमासान युद्ध के बाद घायल होकर बंदी हो जाता है। आर्य पर्णदत्त सम्राट को बचाने की कोशिश में शहीद होता है। बंदी अनंतदेवी और पुरगुप्त के क्षमा याचना करने पर उन्हें माफ करते हुए स्कंदगुप्त रक्त का टीका भाई पुरगुप्त को लगा कर उसे सम्राट घोषित करता है और उसे सख्त निर्देश देता है कि उसके बाद उसके जन्मभूमि की दुर्दशा न हो।वह हूण खींगिल को भी छोड़ सख्त ताकित करता है कि सिंध के पार के इस पवित्र देश में कभी आने का साहस न करें।

षष्ट्म दृश्य इस अंक और नाटक का भी अंतिम दृश्य है देवसेना के गीत से उसकी पीडा झलकती है। स्कंद और उसकी भाऊक भेंट होती है जिसमे वह उससे दूर कहीं चले जाने की आज्ञा मांगती है।उसे कठिन हृदय से आशीर्वाद देकर खुद हतभाग्य होकर स्कन्द अकेला रह जाता है। यही नाटक समाप्त होता है।

2.3.5 'स्कंद गुप्त' नाटक के प्रमुख पात्र :-

नाटककार जयशंकर प्रसादजीने अपने स्कंदगुप्त नाटक द्वारा पात्रों को स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रधान किया है। उनके पूर्व तक हिंदी नाटको के पात्रों की स्थिति नाटककार के व्यक्तित्व से जुडा रहता था। उनपर नाटककार का व्यक्तित्व लदा रहता था। उनमें स्वतंत्र और स्वाभाविक जीवन दशा का अभाव रहता था। प्रसादजीने नाटक के पात्रों को मुक्ति दिलाई है। पात्रों का अंर्तद्वंद संघर्ष का चित्रण बडी तटस्थासे किया है।

नाटक के पुरुष पात्र :-

पात्र नाटकगत कथा के वाहक होते है। जयशंकर प्रसाद को मानव-हृदय का कुशल चितेरा कहा जाता है। इस मान्यता का आधार इनके साहित्य, विशेष रुप से उनके नाटको में आये विभिन्न स्वभाववाले पात्र है जो अपनी अनूठी चारित्रिक विशेषताओं के कारण सुधि दर्शक/पाठक को प्रभावित कर लेते है। प्रसाद का नाटक स्कंदगुप्त में पात्र-बहूल नाटक है। प्रहरी, सैनिक, सखी, दासी जैसे गौण पात्रों को छोडभी दे तो पात्रों की संख्या पच्चीस है। प्रस्तुत नाटक के भूमिका के अंतर्गत स्कंदगुप्त के साथ बन्धुवर्मा, चक्रपालित, पर्णदत्त, शर्वनाग, भटार्क, पृथ्वीसेन स्विंगिल, प्रख्यातकीर्ति भीमवर्मा, गोविंदगुप्त आदि पात्रों को जयशंकर प्रसादजीने ऐतिहासिक व्यक्ति बताया है। संस्कृत के प्रसिद्ध कवि कालिदास ही मातृगुप्त है इसका अनुमान भी प्रसादजी ने लगाया है। मुदगल और प्रपंचबुद्धि को उन्होंने कल्पित पात्र बताया है। स्त्री पात्रों में देवकी, अनंतदेवी इतिहास सम्मत है। तो देवसेना और जयमाला के विषय में प्रसाद जी ने लिखा है कि ये वास्तविक और कल्पित पात्र दोनो हो सकते है। विजया, रामा, कमला, मालिनी कल्पित पात्र है।

- **स्कंदगुप्त -**

इस नाटक का नायक स्कंदगुप्त है। वह सच्चा कर्मवीर और उदात्त चरित्र का व्यक्ति है। वह कुलशील, शांत प्रकृती का और गंभीर भावनाओं का गुप्तवंशीय कुमार गुप्त का पूत्र है। संपूर्ण नाटक में उसका व्यक्तित्व प्रधान है। स्कंदगुप्त वीर, निर्भीक, स्वावलंबी, उदार कर्तव्यपरायण और व्यवहार कुशल है। भारत के मालव राज्य में जब शक और हूण आक्रमण करते है। तब उन्हें हारकर भारत से बाहर भगा देता है। उन्हें उनके

जीवन में पारिवारिक षंडयंत्रों का सामना करना पडता है। फिर भी स्कंद अत्यंत शांत, धीर, गंभीर रहते है। उनके चरित्र में अनेक विशेषताएँ इस प्रकार देखने मिलती है।

1. **देशप्रेमी** – स्कंदगुप्त सच्चे देशभक्त थे। विदेशी हूणों का आक्रमण और उनके द्‌वारा किया नृरांस अत्याचार वे सहन नहीं कर पाते है। षडयंत्र द्‌वारा उनका राजपद छिना जाता है। फिर भी अधिकार न होने की परवा न करते वे कहते है – ''यदि कोई साथी न मिला तो साम्राज्य के लिए नहीं जन्मभूमि के उद्धार के लिए मैं अकेला युद्ध करुगा।'' देश प्रेम का बडा दिव्य रुप स्कंदगुप्त में देखने को मिलता है।

2. **माता से प्रेम –** स्कंदगुप्त अपनी माता से अनन्य प्रेम करता है। माता देवकी के पास ठिक अवसर पर पहूँचकर युद्ध के समय अपनी माँ के प्राणो की रक्षा करता है। मालव नरेश की सहायता याचना पर तुरंत वह मालव राज्य में पहुँच जाता है। स्विंगल जैसे बाह्य आक्रमण (आततायी) के साथ युद्ध करते हुए उन्हे पराजित करता है। जब वे कुमा के युद्ध में पराजित होते है तब दूबारा सैन्य शक्ति एकत्रित करते हुए माँ की आशीर्वाद से सभी को इकट्टा करके युद्ध करते है। और विजय प्राप्त करते हैं।

3. **महत्वकांक्षा हिन** :- स्कंदगुप्त आरंभ में अपने अधिकारों के प्रति आसक्तिहीन उदासीन है। अपने अधिकार को सारहीन समझता है। वह कभी बाहर के लोगों के सामने अपने मन की बात स्पष्ट करता नहीं है। नायक के सभी उदात गुण उनमें विद्यमाण है। परंतु बीच बीच में उनका अंतरिक विराग उन्हें जाग उठता है। इसलिए वह कहता है – सम्राट कुमारगुप्त का आसन मेरे योग्य नहीं है। मैं झगडा करना नहीं चाहता, मुझे सिंहासन न चाहिए। पुरगुप्त को रहने दो। मेरा अकेला जीवन है... मुझे करना क्या है। इसप्रकार अत्यंत सरल सीधा स्कंदगुप्त है।

4. **असफल प्रेमी** :- प्रस्तुत नाटक में स्कंदगुप्त अतिशय निराश अकेला रह जाने का कारण उसका असफल प्रेम जीवन है। नाटक की नायिका देवसेना और विजया दोनों के ओर उन्मुखता के कारण वह अन्त द्वंद ग्रस्त बनता है। देवसेना उसे बहोत चाहती है। प्यार करती है मग रवह जानता नही है। बहोत देर के बाद जान जाता है। असल में स्कंदगुप्त विजया से प्रेम करता है मगर वह (विजया) भटार्क की ओर खीच जाती है। जब अंत में स्कंदगुप्त देवसेना की ओर झुकता है। परंतु देवसेना अपने आप कुमारी रहने का व्रत धारण कर लेती है। राष्ट्र का सच्चा सेवक व्यवहार कुशल नेतृत्व एकाकी द्वन्दग्रस्त, निराशा का शिकार इसप्रकार का चित्रण प्रस्तुत नाटक में हुआ है।

इस प्रकार शास्त्रीय दृष्टि से धीरोदत्त नायक के सभी गुण स्कंदगुप्त में वह समाशील राजा, कर्तव्यनिष्ठ, धार्मिक वृत्ति, संपन्न व्यक्मित्व, कर्मनिष्ठ और प्रभावशाली चरित्र का पात्र सामने आता है।

बंधुवर्मा –

बंधुवर्मा प. मालवा का शासक था। उसकी राजधानी दशपुर थी और वह गुप्त सम्राट कुमारगुप्त के अधीनिष्ठ था। मालव के दूसरे भाग की राजधानी उज्ञयिनी (उजैन) थी। वहाँ साम्राज्य स्कंदगुप्त शासन करता था। हूणों के आक्रमण से बच्चने के लिए बंधुवर्मा अपना राज्य स्कंद से सौप देता है। उनके कर्तव्य निष्ठा के

कारण उन्हे गुप्तसाम्राज्य का महाबलाधिकृत बनाया जाता है। गांधार घाटी में साम्राज्य के नासीर सेना का नेतृत्व करते हूए हुणो से युद्ध होता है। उसमें बंधुवर्मा शहीद होते है। वे गरुडध्वज चुमते हुँए आर्यसाम्राज्य का जयजयकार करते दम तोडते है। जन्मभूमि की रक्षा में अपने प्राणो की आहूती देते है।

पर्णदत्त – गुप्त साम्राज्य का अत्यंत विश्वासु निष्ठावान पर्णदत्त पात्र है। जब सम्राट स्कंदगुप्त के सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ होता है। सौराष्ट्र का शासक किसे बनाये तब दिनरात उस विषय का विचार करके पर्णदत्त को चूना जाता है। उदात्त वृत्ति वाले पर्णदत्त ने स्कंद के बहुत आग्रह पर यह पद स्वीकारा है। वृद्धावस्था में पहुंचा हुआ पर्णदत्त सुप्रसिद्ध वीर, अनुभवी एवं निष्ठावान राजसेवक है। जब स्कंद मालव की रक्षा के लिए अवंती जाता है। तब पुष्प मित्रों को रोकने के लिए पर्णदत्त पर दायित्व सौप जाता है। उसकी वीरता की सराहना शत्रू भी करते है। हूण – युद्ध में स्कंद की पराजय की सूचना मिलने पर सीमाप्रांत में जाता है। जखमी वीरों को एकत्रित करके उनकी सेवा करता है। वह क्षत्रिय होकर वीरों के लिए भीख मांगता है। उसका कार्य देखकर नवजवान देश के लिए स्कंदगुप्त को साथ देते है। अंत में स्कंद का अपार स्नेही रक्षण दायित्व निभानेवाला सेवक मारा जाता है।

गोविंदगुप्त – गोविंदगुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय ध्रुवदेवी का द्वितीय पुत्र था। वह अपने पिता के समय वैशाली राजधानी का शासक रहा उसके बाद वह इतर मालवा के शासक के रुप में स्थापित हुआ था। वह अपने भाई सम्राट कुमारगुप्त से रुटकर एकांतवास चला गया था। जब स्कंदगुप्त ने साम्राज्य का दायित्व संभाला तब उसे ढूँढ निकाला गया। नाटक में गोविंदगुप्त का आगमन पराक्रमी प्रजारक्षक के रुप में होता है। वह हूणो के अत्याचार से प्रजा की रक्षा करता है। गोविंदगुप्त धीरगंभीर उदात स्वभाव का व्यक्ति है। ‘महादेवी देवकी’ उसके प्रति सन्मान भाव रखती है। स्कंदगुप्त के लिए वे परमपूज्य है। व्यक्ति की परखने की अद्‌भूत क्षमता उनमें है। वे अपनी वार्धक्यावस्था में गुप्त साम्राज्य का महाबलाधिकृत बनते है। उन्हें हूणों से युद्ध करते समय वीरगती प्राप्त होती है।

पुरगुप्त – स्कंदगुप्त के बाद उनका वैमातृक भाई पुरगुप्त राजसिहासन पर बैठा तब वह वयोवृद्ध हो चुका था। नाटक में उसकी कोई भूमिका नहीं है। केवल वह मगध–शासक के रुप में वर्णित है। कुमारगुप्त के मृत्यू के बाद उन्हे अनंतदेवी भटार्क सम्राट बनाने का प्रयास करते मगर वे असफल होते है । पुरगुप्त दूर्बल चरित्र का और मध्यपि था। वह अपनी माँ दबंग अनंतदेवी के समक्ष मात्र कठपुतली बनकर रहता है। उसकी माँ किसी भी किमंत पर उसे गुप्त साम्राज्य का सम्राट बनाना चाहती है।

भटार्क – गुप्त साम्राज्य का महाबलाधिकृत भटार्क – विचारशील, चतुर, स्वाभिमानी, षडयंत्र में माहिर, महत्वकांक्षी वीर योद्धा है। भारतीय धीरोद्धत नायक के अच्छे रुप भी उसमें दिखाई पडते है। उसे खुद के तलवार पर भरोसा है। वह अनंतदेवी के कुजाल में फँस जाता है। मन से इसे निकलने की इच्छा होने पर भी वह षडयंत्र से निकल नही पाता है। वह अनंतदेवी के उपकार मानता है। उसी ने उसे महत्वपुर्ण पद दिलाया है। साम्राज्य का महाबलाधिकृत बनाया है। इसलिए वह स्कंदगुप्त के विरोधी षडयंत्र में शामिल होता है। और एक वजह यह भी है उसका प्रतिशोध का विचार। पुष्यमित्रों के युद्ध में उसे सेनापति की पदवी नहीं

मिली है। उसपर विरोधियोंने व्यंग्यपूर्ण तानेबाने देना शुरू किया। भटार्क कुमार्गियों के चक्र में पडकर गिरता है। उसकी आत्मा हनन होती हैं। सारा तेज नष्ट हो जाता है। परिणाम स्वरूप उसे कई बार मुँह की खानी पडती है। महादेवी देवकी की हत्या करते समय स्कंदगुप्त से पराजित होता है। गोविंदगुप्त के सामने तलवार निकालते ही छिन ही जाती है। जब उसे बंदी बनाया जाता है तब स्कंदगुप्त अपने माँ इच्छा के नुसार उसे माफ करते छोड देता है। अनंतदेवी के कहने पर वह देवसेना की हत्या करने जाता है। स्कंदगुप्त सामंतो को आमंत्रण देता है। उसमें मगध की सेना भी है। वह हूण सेना को पानी के बाँध तक मार्गदर्शनकर बाँध काँट देता है। उसमें स्कंदगुप्त और सेना बह जाती है। स्कंदगुप्त फिर एक बार देश के लिए रक्षक इकट्टा करके तैयार होते है। तब देश के सच्चे उदारक की भावना देखकर उनमें ग्लानि और प्रायश्चित की भावना उत्पन्न होती है। वह स्कंदगुप्त के साथ देश के सेवा में सामिल होता है।

शर्वनाग –

शर्वनाग नाटक का प्रमुख पात्र नहीं है। पर उसका चरित्र–चित्रण नाटक के प्रसंग और नाटकीयता को जीवंत रखता है। वह सर्वप्रथम सच्चा सैनिक है। छल छपट और षडयंत्र से उसका सबंध नहीं है। उसे केवल अपने शक्ति पर विश्वास है। संशय दृष्टि से फुँक्र फूँक कर पैर रखना उसके वीर प्रकृति के लिए अस्वाभाविक है। भटार्क ने जब उसके सामने महादेवी देवकी का वध करने का प्रस्ताव रखा तब वह दृढता से उसका विरोध करता है। हजारो सैन्य पर आक्रमण कर सकता हूँ मगर अबला महादेवी की हत्या कायरता होगी कहता है। वही शर्वनाग शराब के प्रभाव में पडकर बुध्दि और विवके शुन्य हो जाता है। सोना और शराब उसकी विरता को मार देती है। पशु हो जाता है। रामा जब महादेवी की हत्या में बाधाएँ डालता है। तब रामा को मारने का प्रयास करता है। समय पर स्कंदगुप्त आकर उसके गर्दन पर तलवार रखकर बंदी बनाता है। न्यायालय में उसे अपनी गलती का अहसास होते ही खुद का वध करने के लिए बिनंती करता है। स्कंदगुप्त और महादेवी देवकी क्षमा करके उदारता दिखाती है। सच्ची ग्लानि से प्रेरित होकर स्कंदगुप्त और साम्राज्य की सेवा में जूट जाता है।

कुमारगुप्त –

चंद्रगुप्त द्वितीय और महादेवी ध्रुवदेवी का यह जेष्ठ पुत्र गुप्तवंरा का भाग्यशाली सम्राट था। कुमारगुप्त ने अपने पिता के राज्य को सुरक्षित रखा। अश्वमेध यज्ञ करके पुन: प्रतिष्ठा प्रदान की। उनके शासन के अंतिम काल में स्थिति बदल गयी। नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश से पुष्पमित्रों ने गुप्तो को चूनौती दी। पश्चिमोत्तर सीमा से हूणो उनके लिए संकट उत्पन्न करते है। कुमारगुप्त बहूत भाग्यशाली थे। क्योंकि युवराज स्कंदगुप्त सेनानी थे। वे पुष्पमित्रों के विद्रोह को कुचल देता है। नाटक में कुमारगुप्त की अवस्था कठपुतली की तरह दिखाई है। वह अनंतदेवी के प्रभाव में आकर निर्णय लेता है। मगर यह सत्य नहीं है। वे विवेकशील है उनका विवके सो नहीं गया है। वे पृथ्वीसेन के संकेत से महत्वकांक्षी भटार्क को संयमित रखने का प्रत्यन करते है। इतना ही नहीं अनंतदेवी के इच्छानुसार पुरगुप्त को उत्तरआधिकारी घोषित करने के लिए तैयार नही होते। इसलिए अनंतदेवी भी उससे सशंक रहती है।

चक्रपालित –

चक्रपालित स्कंदगुप्त के सर्वाधिक विश्वस्त सहायक पर्णदत्त का पुत्र है। जब स्कंदगुप्त ने पर्णदत्त को सौराष्ट्र का शासक बनाया था। तब पर्णदत्त ने चक्रपालित को सौराष्ट्र की राजधानी गिरीनगर का प्रमुख नियुक्त किया था। चक्रपालित ने अनेक दुष्टों को मारकर जनता को शासक का अनुगामी बनाया। उसने सुदर्शन झील का संस्कार करके जल व्यवस्था में सुधार किया। नाटक में वर्णित यह प्रसाद की परिकल्पना है। अर्थात पिता की तरह चक्रपालित भी स्कंद का अत्यंत विश्वासु समर्पक रहा है।

पृथ्वीसेन – सम्राट कुमारगुप्त कुमारामात्य महाबलाधिकृत थे।

प्रख्यातकीर्ति – सिंहल के धर्मात्मा बौध्द भिसु थे। जिन्होंने बुध्द भूमि भारत में निवास किया था।

मातृगुप्त – कवि–हृदय के होते हुए भी योद्धा है। स्कंदगुप्त का पराजय उसकी विलुप्त होने के समाचार सुनकर वह विरक्त होकर कश्मीर छोडता है। परंतु समय आने पर आक्रमणकारी हूणो के विरुद्ध तलवार उठाता है। वह स्कंद के साथ विजय में भी शामिल होता है।

कुमारदास (धातुसेन) – एक प्रभावशाली युवक के रूप में नाटक में चित्रित है। हँसमुख स्वभाव के कारण केवल सम्राट कुमारगुप्त का प्रिय बनता है। किंतु युवराज स्कंदगुप्त का अंतरंग सहचर बनता है। वस्तूस्थिति को परखने की अद्‌भूत क्षमता है। बडी सुक्ष्मता से गुप्त साम्राज्य के 'तीसरे पहर के सुर्य' की दुर्बलताओं का, अंतरिक विग्रह का उद्‌धारन करता है। कुमारदास में पुरुषार्थ, अध्यवसाय और कर्तव्य बोध इतना है कि वह भारत के राजनीतिक और धार्मिक परिवर्तनों एवं द्वंदो में न्याय पक्ष लेते हुए। अपने प्राण भी संकट में डालता है। वह बौद्धों और ब्राम्हणों के विवाद को शांत करके उन्हें सहिष्णु बनाता है।

मुदगल (विदूषक) –

मुदगल नाटक का कल्पित पात्र है। नाटक में यह पात्र घटनाओं की सूचना राजकिय महत्वपूर्ण बात को राजा और महत्वपूर्ण व्यक्ति तक पहूँचाता है। वह महादेवी का विश्वास पात्र सेवक है। वह हमेशा विनोदपूर्ण बाते करता है। इसलिए इसे विदूषक कहा गया है।

प्रपंचबुद्धि – बौद्ध कापालिक 'योणचार संघ का प्रधान श्रमण' प्रपंचबुद्धि पतनशील बौद्ध भिसुओं का प्रतिनिधि पात्र है। 'क्रूरकर्मा की अपतारणा' से भी एक बार सन्दर्भ से उठने की आकांक्षा से वह जघन्य कार्य करता है। लेकिन उसे असफलता मिलती है। यह अपरिवर्तनशील स्थिर पात्र है।

भीमवर्मा – इतिहास में केवल उल्लेख है कि स्कंदगुप्त के शासन काल में महाराजा भीमवर्मा को कोशांबी राज्य का दायित्व दिया था। नाटक में भीमवर्मा अपने भाई बंधुवर्मा के पद चिन्हों पर चलते दिखाया है। वह सैनिक है।

स्विंगिल – यह हूण का सैनिक है। जो भारतीय स्कंदगुप्त के मालव राज्य पर आक्रमण के समय उपस्थित था।

नारी पात्र :-

देवसेना - प्रसादजी के ऐतिहासिक स्कंदगुप्त नाटक का प्रमुख पात्र है। देवसेना मानवराज वर्मा की बहन है। उसका चित्रण आदर्श भावपूर्ण से भरा है। उसमें त्याग, देशप्रेम सेवा, सहिष्णता भावना, रहस्यपूर्ण जीवन, गंभीरता, दृढता, पूर्ण चरित्र है। देवसेना का चरित्र प्रसाद जी की आलौकिक भेट है। देवसेना देशप्रेम को उच्चकार्य माननेवाली है। देवसेना का अहं स्वाभिमान त्यागमय वृत्ती स्कंद के प्रति कल्याणकारी कामना, प्रेम है। परंतु उसके अहं और विजया के प्रति अच्छे भाव ही उसे स्कंदगुप्त की पत्नी बनने से रोकता है। उसका स्वाभिमान कहता है कि भाई बंधुवर्मा और भीमवर्मा के त्याग के बदले स्कंदगुप्त का प्रेम न खरीदे। वह स्कंद को पुरूषार्थ मार्ग पर प्रेरित करके राह से हट जाना चाहती है। उसका प्रेम वासनामय है, परंतु शारीरिक वासना से उपर है। जहाँ भोग नहीं पुजा की प्रतिष्ठा है। उसके लिए स्कंद इस जीवन का देवता और जीवन का लक्ष्य है। जब वह अंशति होती है - हृदय में ऊदन का स्वर उठता है। तभी वह संगीत की वीणा हाथ में लेती है। संकट समय पर जब तलवार गर्दन पर रखी हो तभी अपने प्रियतम, मेरे देवता युवराज की जय हो। यही कामना करती है। वह सच्ची क्षत्राणी है। अपने कुल की मर्यादा के लिए कोमल शरीर को नष्ट कर सकती है। हूणो के आक्रमणकाल में छूरी लेकर अंतपुर की रक्षा में सहयोग देती है। देशकल्याण के निमित्त राज्य-त्याग में जयमाला को हिचकते देखकर उसे उत्साहित करती है। कहती है ''शुद्र स्वार्थ सभी, जाने दो भाइयो को देखो! कैसा उदार, कैसा महान और कितना पवित्र।'' लेकिन उनमें कोई फर्क न देखकर खुद देशरक्षा सेवा में वीरों की सेवा करती है। उच्च लक्ष्य के लिए अपने आप साम्राज्य के लिए, बिखरे हुए रत्नों के रक्षा के लिए भीख माँगती है। इतनी देशप्रेम सें प्रेरित है। स्कंद से अत्यंत प्रेम करनेवाली देवसेना उसके मार्ग का काँटा बनती नहीं है। यह पात्र पुरे नाटक में आदर्श स्थापित करता है। सात्वीक प्रेम, त्यागमय वृत्ति, संगीत प्रेमी, स्वाभिमानी और चरित्रगत दृष्टता से परिपूर्ण, राष्ट्र की सच्ची सेविका यह इनकी विशेषता है।

विजया - मालव धनकुबेर की कन्या विजया है। सुंदर और अतिचंचल है। वह उस पुरुष को अपना स्वामी बनाना चाहती है। जिसमें प्रबल महत्वकांक्षा हो। स्कंदगुप्त के दिव्य व्यक्तित्व की ओर आकृष्ट होती है। परंतु उसमें विराग को देखकर उदासीन होती। विजया में द्वेष और प्रतिस्पर्धा का अतिरेक है। प्रणय के क्षेत्र में चंचलता ने उसे व्यभिचारिणी बनाया है। उसके दुर्बलता का कारण है चंचलता, दृढता, स्थिरता, विवेकबुद्धि का अभाव है। उसके प्रणय का लक्ष्य है शारीरिक स्वास्थ एवं सौदर्य जहाँ दोनों का योग वही वह रम सकती है। कभी चक्रपालित ओर झुकती है। तो कभी भटार्क को अपनाती है। देवसेना के प्रति उसके मन में द्वेष है। स्कंदगुप्त का देवसेना के प्रति प्रेम देखकर वह जल उठती है। यहाँ तक देवसेना का नरबलि देने के लिए कापालिक प्रपंच बुद्धि के हवाले कर देती है। कभी वह पुरगुप्त की मधुबाला बन जाती है। अंतमें अपने यौवना धन का उपयोग करके स्कंदगुप्त को खरीदना चाहती मगर यहाँ उसे असफलता मिलती और अंत में वह आत्महत्या करती है।

अनंतदेवी – सम्राट कुमारगुप्त की पत्नी और स्कंद की सौतेली माँ है। वह पुरगुप्त के वयस्कर पुत्र की माँ होते हुए भी कामवासना ग्रस्त है। सम्राट कुमारगुप्त के सामने ढोंगी अभिनय करके उन्हे वशीभूत करती है। वह शर्वनाग को उच्चपद और स्वर्ण का प्रलोभन देकर बेटा पुरगुप्त को सम्राट पद पर बिठाने का षडयंत्र रचती है। वह अत्यंत क्रुर है इसका परिचय जब वह स्कंद की माँ देवकी की हत्या के प्रयास में सामने आती है। अपने स्वार्थ के लिए बाहर के आक्रमणकारी हूणो से सहयोग करने में वह पिछे हटती नही है। उसके में अहंकार की प्रबलता है। विजया जब भटार्क से जुडती है। तब उसका अहंकार उद्दीप्त होता है। वह भटार्क अपने कार्य साधन का अस्त्र बनाकर पुत्र पुरगुप्त को सिंहासन दिलाती है और साम्राज्य का शासन बनना चाहती है। उसके ऐसे अंहकार के कारण विजया और भटार्क उससे दूर चले जाते है।

नाटक में अनंतदेवी का पात्र अति महत्वकांक्षिणी, प्रपंची, दूरदर्शी, संवेगशील रानी, षंडयत्रकारी के रुप में चित्रण हुआ है।

जयमाला –

यह पात्र के नाटक के दो चार स्थल पर संम्मूख आता है। परंतु इसके व्यक्तित्व में उज्वलता, उत्साह, स्वावलंब भरा है। वह खुद को क्षत्राणी मानती है और युद्ध को गान समझती है। युवराज की सहायता पर आशा लगाए पति को ताने मारती है। उसे दायित्व का अहसास कर्तव्यपालन की याद दिलाती है। निर्भिकता गर्व, स्वावलंबन, उत्तरदायित्व वीरता के सभी गुण इस पात्र में देखने को मिलते है। एक स्थान पर युद्ध के समय आत्मविश्वास से कहती है '' क्या मालवेश को दूसरे की सहायता पर ही राज्य करने का साहस हुआ था। जाओ प्रभू! सेना लेकर सिंहविक्रम के सेनापर टूट पडो। दुर्गरक्षा का भार मैं लेती हूँ।'' अत्यंत स्पष्ट और निर्भीडता इस पात्र में है। विजया जब रणसंग्राम से भयभीत होती है तब उसे ताना मारते जयमाला कहती है 'स्वर्ण रत्न की चमक देखनेवाले आँखे बिजली सी तलवारों के तेज को कब सह सकती है।' वह देवसेना की उध्दार वाणी का भी विरोध करती कहती है –''विश्वप्रेम, सर्वभूत –हित कामना परम धर्म है, परंतु इसका अर्थ यह नही हो सकता की अपने पर प्रेम न हो।'' क्योंकि देवसेना स्कंदगुप्त का प्रेम का प्रस्ताव ठुकराती है तब उनके विचारों का विरोध करती है। इतना ही नहीं अपने पति से क्षमा माँगती है। और जो राज्य पाया है वह विश्व साम्राज्य से भी उँचा है। देव यह सिहांसन आपका है, मालवेश का इस पर कोई अधिकार नहीं। आर्यावर्त के सम्राट के अतिरिक्त अब दूसरा कोई मालव के सिंहासन पर नहीं बैठ सकता यह स्पष्ट कहती है।

देवकी – स्कंद की माँ का नाम देवकी था। पति कुमारगुप्त के मृत्यु के बाद शत्रु द्वारा साम्राज्य पर आक्रमण होता है। तब वह दुःखी होती है। जब पराक्रमी पुत्र स्कंदगुप्त शत्रुओं का नाश करके अपनी माँ से विजय गाथा सुनता है। तब आनंद से उसकी आँखो से आनंदाश्रूम छलक ते है। इतना नाटक इस पात्र का उल्लेख किया है।

कमला –

सामान्य वर्ग की नारी पात्र है। कमला सामान्य भारतीय नारी पात्रों का प्रतिनिधीत्व करती है। जो जीवन में नाना प्रकार के दु:ख सहकर भी आपने कर्तव्य से मुँह नहीं मोडती है। वह भटार्क की माँ है। भटार्क को राष्ट्र भक्त बनाने के लिए बहुत कुछ करती है। जब भटार्क स्कंदगुप्त के विरोध कार्य करने लगता तब वह दु:खी होकर उसे धिक्कारती है। स्कंदगुप्त की माता की तरह उसे उत्साहित करा के कर्मभूमि में उतार देती है। कमला का देशप्रेम श्रद्धास्पद है। उसकी फटकार और प्रबोध ही भटार्क को सुमार्ग पर लाती है। स्कंदगुप्त के चरित्र में उनके व्यक्तित्व की शालीनता और राजनिष्ठा झलकती है।

रामा – वह भी कमला की तरह नारी पात्र है। सामान्य होकर भी अपने स्वामी के प्रति भक्ति सेवा भाव रखती है। स्वामी के लिए प्राण त्याग करनेवाली सेविका में रामा आती। रामा शर्वनाग की पत्नी और महादेवी देवकी की सेविका है। महादेवी के प्रति कुतज्ञ भाव से इतनी परिपूरित है कि अनंतदेवी के कुटिल आदेश का पालन करनेवाले अपने पति को धिकारते हूए उसके समक्ष 'पिशायिनी – सी प्रलय की आँधी' बनकर खडी हो जाती है।

मलिनी –

मातृगुप्त की प्रिया मालिनी पात्र नाटक में चित्रित है। मालिनी निश्छत प्रेम के बदले धन को विशेष महत्व देती है। परिणाम स्वरुप वह रुपाजीवा बनकर रह जाती है। उसकी कोई किंमत नहीं रहती जैसे विजया की अवस्था होती है वैसे उसकी भी होती है। मातृगुप्त की पूर्व प्रेमिका और वर्तमान में प्रसिद्ध वेश्या के रुप में चित्रित है।

2.3.6 संवाद भाषा :–

काव्यात्मक भाषा – प्रस्तुत संवाद में कवि–हृदय मातृगुप्त के सुखद जीवन की विफलता और उससे उपजी कंदना काव्यात्मक ढंग से प्रस्तुत की गयी है।

कुछ स्थानपर प्रख्यातकीर्ति जयमाला और मातृगुप्त के संवादो की भाषा दार्शनिकता का पुट लिए हुए है। राष्ट्रशक्ति को संघटन करनेवाले वृद्ध पर्णदत्त के संवादो में भाषा व्यंजन का गुण इसप्रकार है–

पर्णदत्त :– (दाँत पीसकर)''नीच, दुरात्मा विलास का नाटकीय कीडा! बालों को सँवार कर, अच्छे कपडे पहनकर, अब भी घमण्ड से तना हुआ निकालता है। कुल–वधुओ का अपमान सामने देखते हुए भी अकड कर चल रहा है। अब तक विलास और नीच वासना नहीं गयी। जिस देश के नवयुवक ऐसे हो, उसे अवश्य दुसरों के अधिकार में जाना चाहिए। देश पर यह विपत्ति फिर भी यह निराली धज।''भोग–विलास में डुबे नागरिको के व्यवहार से चिढकर राष्ट्र–सेवक पर्णदत्त का उपयुक्त संवाद प्रसाद के समय के है। परतंत्र भारत की युवा पीढी के व्यवहार का वर्णन दिखाई देता है।

बिंम्बात्मक भाषा :–

प्रस्तूत नाटक में संवादो की भाषा बिम्बात्मक भी है। जो पढते समय पाठक के मन में नाट्य व्यापार से संबंधित चित्र साकार होते है। मालव दुर्ग पर जब शकों द्वारा आक्रमण की संभावना होती है तब जयमाला, विजया और देवसेना के आपसी वार्तालप और संगीत संबधी शब्दों के माध्यम से यह चित्र प्रस्तूत होता है। उदा. –

''विजया – युद्ध और गाना।

जयमाला – युद्ध क्या गान नहीं है? रुद्र का श्रृंगीनाद, भैरवी का तांडव नृत्य और शस्त्रों का वाद्य मिलकर भैरव संगीत की सृष्टि होती है। .... उसे सूनने के लिए हृदय में साहस और बल एकत्र करो। अत्याचार के श्मशान में ही मंगल शिव का सत्य सुंदर संगीत का समारंभ होता है।''

स्वगत कथन :– जयशंकर प्रसाद के नाटको में स्वगत कथनों का भरपूर प्रयोग किया है। 'स्कंदगुप्त' नाटक के माध्यम से पात्रों के मानसिक उद्धेलन को उभारने का अच्छा प्रवास किया है। स्कंदगुप्त जैसे व्यक्ति की आस्था, पराजय एवं छल, कपट के बीच उगमगाती है, और कही उसका भीतरी सैनिक, व्यक्ति भ्रष्ट राजनीति में डुबता उतरता है। इन्ही क्षणों का दृश्यांकन उसके स्वगत कथन – ''अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है। अपने को नियामक और कर्ता समझने की बलवती स्पृहा उससे बेगार कराती है। उत्सवो में परिचारक और अस्त्रो में ढाल से भी अधिकार लोलूप मनुष्य क्या अच्छे है? ठहरकर उँह। जो कुछ भी हो, हम तो साम्राज्य के एक सैनिक है। '' इसी संवाद में व्यक्तिगत उदासिनता के साथ राष्ट्र रक्षा के लिए तत्परता का द्वंद साफ झलकता है। इस नाटक में देवसेना, मातृगुप्त, शर्वनाग, विजया आदि पात्रों के चारित्रिक उभार में स्वगत कथनों का विशेष महत्व है।

कटूक्तियों संवाद – कमला, रामा और अनंतदेवी के संवाद कटूक्तियों सें परिपूर्ण है। इन पात्रों के माध्यम से प्रसादजी ने सटीक उपयूक्त, मारक शब्दों का प्रयोग किया है। भटार्क और शर्वनाग को उनके घृणित कृत्य के प्रति अपराध बोध जगाने में समर्थ है। महारानी देवकी की हत्या के षडयंत्र में संम्मिलेत पति शर्वनाग को रामा इन शब्दों में फटकारते है। ''रामा – ओह! मैं समक्ष गई। तूने बेच दिया। पिशाच के हाथों तूने अपने को बेच दिया! अहा! ऐसा सुंदर, ऐसा मनुष्योचित मन कौडी के मोल बेच दिया। लोभवश मनुष्य से पशु हो गया है। रक्तपिपासु! क्रुरकर्मी मनुष्य! कृतघ्नता की कीच का कीडा! नरक की दूर्गध! तेरी इच्छा कदापि पूर्ण न होने दुँगी। .... मेरा पति तो क्या, स्वंय ईश्वर भी हो, नहीं करने पावेगा।''

षडयंत्री भाषा – अनंतदेवी (बात बनाती हुई)– क्या तुम पुरगुप्त के साथ सिंहासन पर नहीं बैठना चाहती हो? क्यों? वह भी तो कुमारगुप्त का पुत्र है?

विजया – कहती हूँ और फिर कहूँगी! प्रलोभन से, धमकी से, भय से कोई भी मुझको भटार्क से वंचित नही कर सकता, ... कह देती हूँ हट जाओ, नहीं तो तुम्हारी समस्त कुमंत्रणा को एक फूँक में उडा दूँगी।

अनंतदेवी – ''क्या! इतना साहस! तूच्छ स्त्री! तू जानती है कि तू किसके साथ वात कर रही है। मैं वही हूँ जो अश्वमेध पराक्रम कुमारगुप्त से बालों को सुगंधित करने के लिए गंधपूर्ण जलवाती थी। जिसकी एक तीखी कोर से गुप्त साम्राज्य डाँवाडोल हो रहा है। उसे तुम ... मैं यह आग लगाऊँगी जो प्रलय के समुद्र से भी न बुझे।''

आकार दृष्टि से प्रसादजीने लघू और दीर्घ दोनों प्रकार के संवादो का प्रयोग कराकर चरित्रों की मनोदशा स्पष्ट की है।

गीतयोजना – स्कंदगुप्त के पाँच अंको में छोटे बडे कुल समुह गीत है। इनमें आमोद गीत, प्रार्थनागीत, उद्बोधन गीत, प्रेमगीत, वेदनागीत है। इनमें अकेले पाँच गीत देवसेना गाती है। एक देवसेना की सखी देवसेना के लिए गाती है। दो गीत विजया ने, दो गीत नर्तकियों ने, दो गीत मातृगुप्त ने गाए हैं। एक गीत स्कंदगुप्त ने, दो गीत नेपथ्य से, एक गीत दु:खी स्त्रियों द्वारा और एक सामुहिक उद्बोधन गीत है।

उदा– देवसेना– ' भरा नैनों में मन में रुप'

घने प्रेम तऊ तले

बैठ छाँह लो भव आतप से तापित और जले।

छाया है विश्वास की श्रद्धा – सरिता – कूल

सिंची आँसूओं से मृदुल है परागमय धुल,

यहाँ कौन जो छले।'

इसप्रकार अनेक गीतो द्वारा पात्रों की मनोदशा का चित्रण सामने आता है।

2.3.7 देशकाल और वातावरण –

नाटक को विश्वसनीयता प्रदान करने के लिए देश काल और वातावरण से महत्व है। प्रत्येक नाटक की कथावस्तु किस देश, काल, किस वातातरण से संबधित है– नाटक की संप्रेषणीयता में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है।

'स्कंदगुप्त' का रचना काल सन 1928 ई है। उस समय भारत में – भारतीय स्वाधीनता आंदोलन तीव्र गति को प्राप्त कर रहा था। ब्रिटीश शासन का अत्याचार बढता जा रहा था। उसी समय गांधी जी के नेतृत्व में चला असहयोग किसी कारण से वापस लिया गया। ऐसे समय में स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भारतीय युवा पीढी में कुछ समय के लिए निराशा भाव बढने लगा। तब 'सायमन कमिशन' की घोषणा ने युवाओं को फिर से सक्रिय किया। अंग्रेजी विभाजनकारी नीति ने सांप्रदायिक दंगे बढा दिये। राजा राजवाडोने स्वाधीनता के आंदोलन में सहयोग नहीं दिया। अंग्रजो ने रजवाडो को पेंशन, उपाधि का लालच देकर स्वाधीनता कें आंदोलन से दूर रखने में कामयाब हुए। उद्योग धंदो पर ब्रिटीश ने कब्जा किया जिसके कारण आर्थिक विषमता बढी। भारतीय युवा ब्रिटीशों की नौकरी करने लगे, पाश्च्यात्य शिक्षा के कारण स्वयंम को उच्च

समझने लगे। ऐसे युवाओं से भारत की स्वतंत्रता से कोई लेन-देन नही रही। इन्ही देशकालगत विषम परिस्थितियो के आलोक में प्रसादने अपने स्वर्णिमय इतिहास का सहारा लेकर स्कंदगुप्त नाटक की रचना की।

स्कंदगुप्त नाटक में भारत देश के इतिहास के गुप्त काल की घटनाओं को आधार बनाया है। गुप्त सम्राट स्कंदगुप्त के नेतृत्व में शको और हूणों संघर्ष प्रासंगिकता, चरित्रों की सृष्टि की है। उज्जयिनी, कुसुमपुर, मगध की राजसभाओं के प्रकोष्ठो से संबधित वातावरण ने इस नाटक की ऐतिहासिकत बरकरार रखी हैं। अवंती दुर्ग, गांधार की घाटी का, रणक्षेत्र, कुंभा का रणक्षेत्र, भटार्क के शिविर आदि युद्ध के वातावरण की सृष्टि सर्जना हुई है। साथ में श्मशान, अनंतदेवी का प्रकोष्ठ, बंदीगृह वाले दृश्य में भयानकता, रचना भी प्रसाद ने की है। मठ, बोधि-विहार, बौद्ध-स्तूप, कथानुरूप वातावरण निर्माण प्रसादजी करते है।

2.3.8 रंगमंचीयता-

कोई भी नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत होकर ही संपुर्णता प्राप्त करता है। रंगमंच की अपनी सीमाएँ और विशेषताएँ होती है। जिसके अनुरुप नाटक की सफलता असफलता निर्भय होती है। स्कंदगुप्त नाटक लम्बी अवधि तक रंगकर्मियो की उपेक्षा में रहा जिसके कई कारण देखने को मिलते है।

1) स्कंदगुप्त नाटक के पाँच अंको में कुल तैतीस दृश्य है।

2) प्रस्तुतिकरण की दृष्टि से यह संख्या अधिक है।

3) दृश्य बहुलता के कारण घटनाओं का विस्तार है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के कारण घटना व्यापार में उज्जयिनी, कुसुमपुर, मगध, अवन्ति दुर्ग, राजसभा, प्रकोष्ठ, बंदीगृह गांधार की घाटी, रणक्षेत्र, कुम्भा का रणक्षेत्र, भटार्क का शिविर, मालव में शिप्रा तट, कुंज, उपवन पर्णकुटी नगर प्रांत का पथ, श्मशान मठ, बोधि विहार आदि तक फैला है। अनेक दृश्यों के कारण नाटक में रंगमचीयता का काफी प्रभाव पडा है।

रंगमंच की दृष्टि से सीमाओ के बावजुद आधुनिक हिंदी रंगमंच में कुछ कल्पनाशील और प्रयोगशील रंगकर्मियो ने नाटक उद्‌देश्य की प्रासंगिकता समझते हुए इसने रंगमंचीय संभावनाओं पर सुझ बुझ विचार किया है। और आवश्यक संशोधन के साथ सफलता पूर्वक मंचन किया है। इसमें व. व. कारत, शांता गांधी, रामगोपाल बजाज जैसे दिग्गज रंग-निर्देशक हैं।

2.3.9 स्कंदगुप्त नाटक की ऐतिहासिकता –

जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखा गया 1928 में प्रकाशित स्कंदगुप्त ऐतिहासिक नाटक है। प्रस्तुत नाटक में गुप्त वंश के सन 455 से 466 तक कुल 11 वर्षो के काल का वर्णन चित्रित किया गया है। प्रस्तुत नाटक में हूणों के आक्रमण के दौरान गुप्तवंशीय देशभक्त युवराज स्कंदगुप्त(विक्रमादित्य) के शौर्य, संयम तथा कर्तव्यपरायणता को दर्शा कर उसके आधार पर प्रसाद जी ने आज के दौर के युवको में राष्ट्रीय चेतना को प्रज्वलित करने की कोशिश की है। इस संदर्भ में प्रसाद जी का ही कथन द्रष्टव्य है ''इतिहास का अनुशीलन

किसी भी जाति को अपना आदर्श संघठित करने के लिए अत्यंत लाभदायक होता है मेरी इच्छा भारतीय इतिहास के अप्रकाशित अंश में से उन प्रकांड घटनाओं का दिग्दर्शन करना है, जिन्होंने हमारी वर्तमान स्थिति को बनाने का प्रयत्न किया है।''

स्कंदगुप्त हूणों के आक्रमण (455 ई.) से हूण युध्द की समाप्ति (466) तक की कहानी है। गुप्त राजवंश का समय 275 ई. से 540 ई.तक रहा है। नाटक के ऐतिहासिकता के संदर्भ में प्रसाद जी लिखतें हैं- पात्रों के ऐतिहासिकता के विरुद्ध चरित्र की दृष्टि जहां तक संभव हो सका है वही होने दिया गया है।फिर भी कल्पना का अवलंब लेना ही पड़ा है। केवल घटना की परंपरा ठीक करने के लिए नाटक की ऐतिहासिकता से हिन्दी के सभी विद्वान सहमत हैं।

प्रसाद जी नाटक की ऐतिहासिकता के संदर्भ में आगे लिखते हैं- ''स्कंदगुप्त का विक्रमादित्य होना तो प्रत्यक्ष प्रमाणों से सिद्ध होता है। स्कंदगुप्त-युवराज (विक्रमादित्य), कुमारगुप्त-मगध का सम्राट, गोविंदगुप्तकुमारगुप्त का भाई, पुरगुप्त कुमारगुप्त का छोटा पुत्र, पर्णदत्त-मगध का महानायक, चक्रपालितपर्ण दत्त का पुत्र, बंधुवर्मा-मालव का राजा, भीमवर्मा-बंधुवर्मा का भाई, मातृगुप्तकवि कालिदास, प्रपंच बुद्धीबौद कापालिक, शर्वनाग-अंतर्वेद का विषय पति, कुमारदास (धातुसेन)-सिंहल का राजकुमार, भटार्क-नवीन महाबलाधिकृत, पृथ्वी सेन-मंत्री कुमारामात्य और खींगिल हूण आक्रमणकारी सभी ऐतिहासिक पात्र हैं।''

2.3.10 उद्देश्य –

जयशंकर प्रसाद एक दुरद्रष्टा नाटककार थे। स्कंदगुप्त नाटक में उन्होंने अपने युग और भविष्य की आवश्यकता थी। नाटक में व्यक्त विश्वमैत्री, राष्ट्र प्रेम साम्प्रदायिकता और जातिय सद्भावना की आवश्यकता भारत को आज भी उतनी है। जितनी प्रसाद के समय में थी और गुप्त काल में भी थी। धार्मिक राजनीतिक और विदेशी शक्तियाँ आज भी किसी-न-किसी रुप में भारत की चारो ओर विद्यमान है।

जैसे युवा स्कंदगुप्त राष्ट्र धर्म से बढकर कोई धर्म नहीं है, कोई प्रेम नही है। यही उद्देश्य प्रसादजी का सफल होता है। देश-रक्षा सबसे आकर्षक स्वर इस नाटक में है। स्कंदगुप्त व्यक्तिगत राग, द्वेषो, इच्छा-आकांक्षाओं से उपर उठकर स्वयं के लिए कुछ भी न चाहते हुए राष्ट्र के लिए सर्वस्व न्योछावर करने का पाठ सिखाता है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

(अ) 1. स्कंदगुप्त नाटक के नाटककार ...... हैं।

(अ) रामधारी सिंह दिनकर (ब) प्रेमचंद

(क) जयशंकर प्रसाद (ड) मोहन राकेश

2. स्कंदगुप्त को ...... उपाधि प्राप्त हो गई थी।

(अ) सम्राट (ब) विक्रमादित्य (क) राजाधिराज (ड) मगध शासक

3. बंधुवर्मा ...... राष्ट्र के राजा थे।

(अ) मालव (ब) मगध (क) कोसल (ड) सिंहल

4. गोविंदगुप्त ...... के भाई थे।

(अ) स्कंदगुप्त (ब) बंधुवर्मा (क) पर्णदत्त (ड) कुमारगुप्त

5. देवसेना ...... की बहन थी।

(अ) पर्णदत्त (ब) मातृगुप्त (क) स्कंदगुप्त (ड) बंधुवर्मा

6. नाटक के अंत में स्कंदगुप्त...... को सम्राट घोषित करता है।

(अ) भटार्क (ब) बंधुवर्मा (क) पुरगुप्त (ड) कुमारगुप्त

7. श्रावनाग की पत्नी का नाम .....है।

(अ) विजया (ब) देवकी (क) रामा (ड) अनंत देवी

8. ...... भटार्क को अपना प्रेमी चुनती है।

(अ) विजया (ब) देवकी (क) रामा (ड) अनंत देवी

9. स्कन्दुप्त के माता का नाम...... है।

(अ) विजया (ब) देवकी (क) रामा (ड) अनंतदेवी

10. ...... अपने बेटे को सम्राट बनाने के लिये षढयंत्र रचती रहती है।

(अ) विजया (ब) देवकी (क) रामा (ड) अनंत देवी

ब) उचित मिलान कीजिए।

1) 1) गोदान अ) निर्मलवर्मा

2) स्कंदगुप्त ब) प्रेमचंद

3) हादसे क) जयशंकर प्रसाद

4) दहलीज ड) रमणिका गुप्ता

अ) 1-ड, 2-अ, 3-क, 4-ब

ब) 1-ब, 2-क, 3-ड, 4-अ

क) 1-अ, 2-ब, 3-क, 4-ड

ड) 1-क, 2-ड, 3-अ, 4-ब

2) 1) उपन्यास — अ) वापसी

2) नाटक — ब) गोदान

3) आत्मकथा — क) स्कंदगुप्त

4) कहानी — ड) हादसे

अ) 1-ड, 2-अ, 3-क, 4-ब

ब) 1-ब, 2-क, 3-ड, 4-अ

क) 1-अ, 2-ब, 3-क, 4-ड

ड) 1-क, 2-ड, 3-अ, 4-ब

3) 1) देवकी — अ) श्राथनाग की पत्नी

2) स्कंदगुप्त — ब) धन कुबेर की कन्या

3) विजया — क) प्रसाद

4) रामा — ड) स्कंदगुप्त की माँ

अ) 1-ड, 2-अ, 3-क, 4-ब

ब) 1-ब, 2-क, 3-ड, 4-अ

क) 1-अ, 2-ब, 3-क, 4-ड

ड) 1-क, 2-ड, 3-अ, 4-ब

क) सही या गलत पहचाने

1) 1) स्कंदगुप्त नाटक कि नायिका देवसेना है।

2) जयशंकर प्रसाद का स्कंदगुप्त नाटक नहीं।

अ) कथन 1 सही 2 गलत

ब) कथन 1 गलत 2 सही

क) कथन 1 और 2 सही

ड) कथन 1 और 2 गलत

2) 1) विजया धन कुबेर की कला है।

2) देवसेना बंधु वर्मा की बहन है।

अ) कथन 1 सही 2 गलत

ब) कथन 1 गलत 2 सही

क) कथन 1 और 2 सही

ड) कथन 1 और 2 गलत

3) 1) सम्राट कुमारगुप्त को दो राणियां थी।

2) अनंतदेवी का पुत्र स्कंदगुप्त था।

अ) कथन 1 सही 2 गलत

ब) कथन 1 गलत 2 सही

क) कथन 1 और 2 सही

ड) कथन 1 और 2 गलत

4) 1) मातृगुप्त को काश्मिर का शासक बना था।

2) पुरगुप्त अनंतदेवी, विजया भटार्क षडयंत्र कट में शामिल थे।

अ) कथन 1 सही 2 गलत

ब) कथन 1 गलत 2 सही

क) कथन 1 और 2 गलत

ड) कथन 1 और 2 सही

5) 1) 'अजातशत्रू' नाटक जयशंकर प्रसाद का नहीं है।

2) तिसरा आदमी जय शंकर प्रसाद की कृति है।

अ) कथन 1 सही 2 गलत

ब) कथन 1 गलत 2 सही

क) कथन 1 और 2 गलत

ड) कथन 1 और 2 सही

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1. महाबलाधिकृत = प्रधान सेनापति
2. स्कंधावार = राज्य का शिविर/छावनी

3. शरीरांत होना = स्वर्ग सिधर जाना

4. विषयपति = किसी छोटे प्रांत का शासक

5. महाप्रतिहार =प्राचीन कल का उच्च राज कर्मचारी (प्रमुख कोतवाल)

6. विक्रमादित्य = विक्रम और आदित्य (सूर्य)= पराक्रम का सूर्य

7. महामहोपाध्याय = गुरुओं के गुरु

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. (क) जयशंकर प्रसाद	2. (ब) विक्रमादित्य	3. (अ) मालव
4. (ड) कुमारगुप्त	5. (अ) पर्णदत्त	6. (क) पुरगुप्त
7. (क) रामा	8. (अ) विजया	9. (ब) देवकी
10. (ड) अनंत देवी		

2.7 सारांश

(1) प्रसिद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद का स्कन्दुप्त नाटक दीर्घ नाटक है। आलोचक इस नाटक को महकाव्यात्मक नाटक मानते हैं। प्रस्तुत नाटक पांच अंको में और कुल तैन्तीस दृश्यो में विभाजित है। स्कंदगुप्त जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखा गया 1928 में प्रकाशित ऐतिहासिक नाटक है। प्रस्तुत नाटक में गुप्त वंश के सन 455 से 466 तक कुल 11 वर्षो के काल का वर्णन चित्रित किया गया है।

(2) प्रस्तुत नाटक में हुणो के आक्रमण के दौरान गुप्त वंशीय देशभक्त युवराज स्कंदगुप्त (विक्रमादित्य) के शौर्य, संयम तथा कर्तव्यपरायणता को दर्शाकर उसके आधार पर प्रसादजी ने आज के दौर के युवको में राष्ट्रीय चेतना को प्रज्वलित करने की कोशिश की है।

(3) प्रस्तुत नाटक में पारिवारिक कलह, सत्ता का मोह, उसके कारण किये गये षढयंत्र तथा उसके परिणाम स्वरूप उत्पन्न देश के पतन को रेखांकित किया गया है।

(4) नाटक में 17 पुरुष पात्र हैं और 08 स्त्री पात्र हैं। नाटक के ऐतिहासिकता के संदर्भ में प्रसाद जी लिखतें हैं- पात्रों के ऐतिहासिकता के विरुद्ध चरित्र की दृष्टि जहां तक संभव हो सका है वही होने दिया गया है। फिर भी कल्पना का अवलंब लेना ही पड़ा है। केवल घटना की परंपरा ठीक करने के लिए नाटक की ऐतिहासिकता से हिन्दी के सभी विद्वान सहमत हैं।

(5) सम्राट स्कन्दुप्त की महानता, त्याग, मानवीयता, पद की अपेक्षा राष्ट्र को महत्व देकर राष्ट्र ही के लिये अपने आपको बलिदान करने की वृत्ति, मित्रप्रेम, क्षत्रिय धर्म का पालन, राजा का दायित्व आदि गुणों को उसके कृति से रेखांकित कर प्रस्तुत नाटक उसके ''विक्रमादित्य'' उपाधि का योग्य प्रमाण प्रस्तुत करता है।

2.8 स्वाध्याय

1. स्कंदगुप्त नाटक की कथावस्तु लिखिए।
2. स्कंदगुप्त नाटक के आधार पर स्कन्धगुप्त का चरित्र चित्रण कीजिए।
3. स्कंदगुप्त नाटक के आधार पर पर्णदत्त का चरित्र चित्रण कीजिए।
4. स्कंदगुप्त नाटक के आधार पर देवसेना का चरित्र चित्रण कीजिए।
5. स्कंदगुप्त नाटक के आधार पर अनंतदेवी का चरित्र चित्रण कीजिए।
6. नाटक के तत्वों के आधार पर स्कंदगुप्त नाटक की समीक्षा कीजिए।
7. स्कन्दगुप्त नाटक की अंकवार तथा दृश्यवार कथावस्तु लिखिए।

2.8.1 लघुत्तरी प्रश्न

अ) स्कंदगुप्त नाटक ऐतिहासिक नाटक है स्पष्ट करें।

ब) जयशंकर प्रसादजी के 'स्कंदगुप्त' नाटक में राष्ट्रीय भावना स्पष्ट करें।

क) स्कंदगुप्त नाटक का उद्‌देश्य स्पष्ट करें।

ड) 'स्कंदगुप्त' नाटक में 'देशकाल वातावरण' तत्व स्पष्ट करें।

इ) स्कंदगुप्त नाटक की 'भाषाशैली' स्पष्ट करें।

2.9 क्षेत्रीय कार्य

1. स्कंदगुप्त नाटक को पटकथा में रूपांतरित कीजिए।
2. स्कंदगुप्त नाटक का मराठी भाषा में अनुवाद कीजिए।
3. किसी ऐतिहासिक पात्र को लेकर नाटक लिखिए।
4. स्कंदगुप्त नाटक के आधार पर स्कंदगुप्त के अंतरद्वंद्व को मंच पर प्रस्तुत कीजिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

जयशंकर प्रसाद के निम्नलिखित नाटक पढिए-

सज्जन, प्रायश्चित्त, करुणालय,

राज्यश्री, विशाखा, अजातशत्रु, कामना,

जनमेजय का नाग यज्ञ, एक घूंट,

चन्द्रगुप्त, ध्रुव स्वामिनी

❑❑❑

इकाई–3
हादसे (आत्मकथा) – रमणिका गुप्ता

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवेचन

3.3.1 रमणिका गुप्ता का जीवन परिचय

3.3.2 'हादसे' आत्मकथा का परिचय

3.3.3 'हादसे' आत्मकथा का आशय

3.3.4 'हादसे' आत्मकथा में चित्रित नारी के आधुनिक रूप

3.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 स्वयं-अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढने के बाद आप-

1. रमणिका गुप्ता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
2. स्त्री की अपराजेय संघर्ष-गाथा से अवगत होंगे।
3. राजनीतिक स्त्री कार्यकर्ता के सम्मुख आनेवाली कठिनाईयों से अवगत होंगे।
4. अबला से सबला के अधिकारों के प्रति सचेत होंगे।
5. उत्तर भारत के राजनीतिक इतिहास के प्रामाणिक दस्तावेज से रू ब रू होंगे।

3.2 प्रस्तावना

आधुनिक काल में हिन्दी गद्य साहित्य पर्याप्त समृद्ध रहा है। वह उपन्यास, कहानी, नाटक, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, डायरी, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, यात्रा - वृत्तान्त जैसी अनेक विधाओं में विकसित हो रहा है। आजकल यह विधाएँ अलग-अलग प्रकार के लेखन की माँग कर रही हैं। आत्मकथा विधा भी स्वानुभूति के धरातल को परानुभूतियों से अवगत कराने की मांग करती है। आत्मकथा में लेखक स्वयं नायक होता है। वह अपने जीवन-संघर्ष, उतार-चढ़ाव, गुणों-अवगुणों, सफलता-असफलताओं, पारिवारिक परिस्थितियों, परिवेश, वंश, योग्यता, कठिनाईयों, उपलब्धियों एवं अपने प्रेरणा स्रोतों का कलात्मक लेखन करता है। हिन्दी साहित्य में लिखी गई सर्वप्रथम आत्मकथा 'अर्द्धकथानक' है, जिसे जैन कवि श्री बनारसीदास ने सन् 1641 में लिखा था। इसके पश्चात् भारतेन्दु हरिश्चंद्र, श्यामसुन्दर दास, यशपाल, हरिवंश राय बच्चन, मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, रमणिका गुप्ता आदि आत्मकथाकारों ने इस विधा को यथार्थ अभिव्यक्ति की नई ऊँचाई पर पहुँचाया है।

3.3 विषय-विवेचन

स्त्री लेखन में राजनीति और राजनीति में स्त्री की सक्रिय सहभागिता का इतिहास भारत में बहुत पुराना नहीं है। स्त्रियों ने विविध साहित्यिक विधाओं में देश के स्वतंत्रतापूर्व और पश्चात की राजनीति को एक अलग नज़रिए के तहत व्याख्यायित एवं विश्लेषित किया है। राजनीति में जिन हिन्दी लेखिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही, उनमें रमणिका गुप्ता का नाम सबसे अधिक प्रचलित है।

3.3.1 रमणिका गुप्ता का जीवन परिचय :-

3.3.1.1 व्यक्तित्व

रमणिका गुप्ता का जन्म 22 अप्रैल, 1930 को सुनाम (पंजाब) के अभिजात्य परिवार में हुआ। इनके पिता प्यारेलाल बेदी, मिलिट्री में लेफ्टिनेंट कर्नल तथा सम्मानित डॉक्टर थे। माता लीलावती बेदी एक गृहिणी थी, जो कि पटियाला रियासत के बहुत बड़े दीवान की सुपुत्री थी। रमणिका के सबसे बड़े भाई सत्यव्रत बेदी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता होने के साथ-साथ ट्रिब्यून पंजाबी, चंडीगढ़ के सह-संपादक भी थे। मंझले भाई चांदव्रत बेदी, चंडीगढ़ सैन्य बल में लेफ्टिनेंट कर्नल के पद से सेवानिवृत्त हुए। सबसे छोटे भाई दिवगंत रविव्रत बेदी ने भी दिल्ली जाकर फोटोग्राफी के क्षेत्र में अच्छी महारथ हसिल की है। रमणिका से भी एक छोटी बहन थी जिसका नाम उर्मिला था।

शिक्षा : एम.ए., बी.एड. तक की पढ़ाई पूरी की है। रमणिका जी के करीबी सारे रिश्ते-नातों के लोग शिक्षित एवं उच्च पद पर आसीन थे। एक शिक्षित एवं सुविधा सम्पन्न घर में पैदा होने के कारण रमणिका जी का उच्चशिक्षित होना सामान्य सी बात थी।

विवाहः अपनी इच्छा के अनुसार वेद प्रकाश गुप्ता के साथ प्रेम विवाह किया। वह बनिए जाते यानी क्षत्रिय (राजपूत) परिवार से भी निचले जाति का होने से परिवार से उसे कड़ा विरोध सहना पड़ा। बंदी बनकर मार भी खानी पड़ी थी।

राजनीतिक सक्रियताः

1. 1970-71 से 1974-79 तक बिहार राज्य विधान-परिषद् की सदस्य।
2. 1979 से 1985 तक राज्य विधान-सभा की सदस्य।
3. 'रमणिका फाउंडेशन' की संस्थापक सदस्य एवं अध्यक्ष।
4. अखिल भारतीय आदिवासी साहित्य के मंच की संचालक।
5. माइन्स, मिनरल एण्ड पीपल नामक गैर सरकारी संस्था में, माइन्स, मिनरल एण्ड वीमेन समिति की परामर्शदात्री।
6. सन् 1975 में मैक्सिको में हुए इफ्टू (आई.एफ.टी.यू) के अंतराष्ट्रीय सम्मेलन तथा बर्लिन में हुए प्रथम अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में मजदूर प्रतिनिधि के रूप में भारत का प्रतिनिधित्त्व किया।
7. लंदन के साऊथ हॉल में हुए दूसरे विश्व दलित सम्मेलन 2000 में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

पुरस्कारः गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार, आजीवन आदिवासी बंधु पुरस्कार।

निधनः 26 मार्च, 2019

रमणिका जी का आंतरिक व्यक्तित्व संवेदनशील एवं संघर्षशील रहा है तथा बाह्य व्यक्तित्व सरलता एवं सादगी से सम्पन्न रहा है। एक संघर्षशील व्यक्ति, स्वाभिमानी, आत्मविश्वासी दयावान, श्रमशील, कर्तव्यनिष्ठ अनुशासनप्रिय और नित्यप्रति वे कर्तव्यशील रही हैं। एक लंबा समय उन्होंने दलित और आदिवासी बस्तियों में बिताया है। वहाँ रहकर अपनी राजनीतिक कार्यशीलता से उन्होंने उपेक्षित वर्ग के समाज में अस्मिता की चेतना का संचार किया है।

3.3.1.2 रमणिका गुप्ता का कृत्तित्व :

समकालीन सुप्रसिद्ध लेखिका रमणिका गुप्ता बहुमुखी प्रतिभा की धनी है। उनका साहित्य हिन्दी साहित्य जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनकी प्रकाशित कृतियों में दो आत्मकथाएँ, दो उपन्यास, कहानी-संग्रह, 16 कविता-संग्रह, आलेख, संपादित पुस्तकें प्रमुख हैं-

आत्मकथाः 1. हादसे, राधाकृष्ण पेपरबैक्स, नई दिल्ली, पहला संस्करण 2005 ।

2. आपहुदरी, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2015 ।

उपन्यासः 1. सीता, अनुराग प्रकाशन, वाराणसी, सं. 1996 ।

2. मौसी, नीलकण्ठ प्रकाशन, पुणे, 1997।

कहानी–संग्रह: १. शिल्पायन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, सं. 2010।

कविता संग्रह: गीत–अग्रीत, अब और तब, खूँटे, आम आदमी के लिए, पूर्वांचल एक कविता यात्रा, प्रकृति युद्धरत है, कैसे करोगे बँटवारा इतिहास का, विज्ञापन बनता कवि, आदम से आदमी तक, भला मैं कैसे मरती, तुम कौन, अब मूरख नहीं बनेंगे, मैं आजाद हुईं हूँ, तिल–तिल नूतन, भीड़ सतर में चलने लगी है, पातियाँ प्रेम की।

संपादित पुस्तके: निज घरे परदेसी, साम्प्रदायिकता के बदलते चेहरे, आदिवासी स्वर और नई शताब्दी, आदिवासी विकास में विस्थापन, आदिवासी साहित्य यात्रा, आदिवासी शौर्य एवं विद्रोह (पूर्वोत्तर), आदिवासी शौर्य एवं विद्रोह (झारखंड), आदिवासी सृजन, मिथक एवं अन्य लोककथाएँ (झारखंड, महाराष्ट्र, गुजरात और अंडमान–निकोबारः आदिवासी लेखन एक उभरती चेतना, आदिवासी अस्मिता के संकट, आदिवासी साहित्य और समाज, एवं विमुक्त–घुमन्तू आदिवासियों का मुक्ति संघर्ष।

अनुवाद: शरणकुमार लिंबाले की पुस्तक 'दलित साहित्य का सौदर्यशास्त्र' का मराठी से हिन्दी में अनुवाद किया है। इनका अपना उपन्यास 'मौसी' का अनुवाद तेलुगू में 'पिन्नी' नाम से और पंजाबी में 'मास्ती' नाम से हो चुका है।

संपादक : सन् 1985 से युद्धरत आम आदमी (त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका) की सम्पादक रहीं हैं।

रमणिका गुप्ता ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री विमर्श के विविध पहलुओं को उजागर कर पुरूषों की घटिया मानसिकताओं, रूढियों, प्रथाओं को तोड़ने की सफल कोशिश की है। साथ ही आदिवासी तथा दलित साहित्य को नया आयाम देकर झारखंड के कोयलांचल से मजदूर आंदोलनों को साहित्य के जरिए राष्ट्रीय फलक पर पहुँचाने का काम किया है। वह देश की वामपंथी प्रगतिशील धारा की प्रमुख रचनाकार रही हैं।

3.3.2 हादसे आत्मकथा का परिचय

रमणिका गुप्ता की आत्मकथा दो भागों में प्रकाशित हैं– इनमें से एक है 'हादसे'। इसका प्रथम संस्करण 2005 में दिल्ली स्थित राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेडद्वारा विमोचित किया गया। फिलहाल 2023 में पाँचवां संस्करण निकालकर, इस कृति को उत्कृष्ट साहित्य का जनसुलभ संस्करण कहा है। आत्मकथा के कवर पेज पर पेड़ के पीछे छीपी एक महिला का आधा चेहरा दिखाई देता है। उसने पलु से आधा मुँह ढका हुआ है। आँखों में नमीं है। यह चित्र मानों–पुस्तक के हर पन्नों के जरिए दिल दहलाने वाली स्त्री दास्ताँ को बयां करना चाहती है। प्रस्तुत किताब की भूमिका रखते हुए हिंदी के प्रसिद्ध लेखक, आलोचक राजेंद्र यादव जी ने 'आत्मकथा के अनेक पाठ' के शीर्षक तहत दुर्दम्य और दुर्धर्ष, अपराजेय संघर्ष–कथा, स्त्री के अपने चुनाव की कहानी तथा भारतीय राजनीति के नाटकीय मोड़ों का इतिहास कहा दिया है।

लेखिका रमणिका गुप्ता जी ने 'हादसे' पुस्तक का समर्पण उनके प्रति दृढ़ विश्वास रखनेवाले मजदूरों, बदलाव में भेंट चढ़ी स्त्री कामगारों, लंबी यात्रा के लिए बाध्य करनेवाले बीहड़ जंगलों तथा संघर्ष के लिए प्रेरित करनेवाले प्रतिद्वंद्वियों को दिया है। आत्मकथा को मुख्यतः चार भागों में विभाजित किया हैं- 1) हादसे, 2) कोयला खदानों में संघर्ष, 3) 1973 में खदानों का राष्ट्रीयकरण और 4) बिहार विधान-परिषद, विधानसभा में उठे विवादः राजनीतिक संस्मरण एवं निष्कर्ष।

3.3.3 हादसे आत्मकथा का आशय

'हादसे' एक स्त्री की आप बीती के जरिए नारी के विविध संदर्भों को उद्घाटित करती है। यह पितृसत्ता और असमान 'जेंडर' संबंधों को उद्घाटित करती है। स्त्रियों के लिए पुरुष पूर्वग्रहों से संघर्ष करना और जीवन में अपने अपने क्षेत्रों में उभर पाना कितना कठिन है, जिसे हादसे आत्मकथा में राजनीतिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक और साहित्यिक दृष्टिकोण से पढ़ा जा सकता है।

हादसे

रमणिका जी बचपन से ही अक्खड़, जिद्दी एवं अपनी इच्छा के अनुसार निर्णय लेनेवाली औरत थी। उन्हें कभी भी अपने परिवार का सामंती दुमुँहापन बर्दाश्त नहीं हुआ। हमेशा परम्परा को तोडने का हठ किया। जब पाँचवी-छठी कक्षा में पढ़ती थीं, तब 'सत्यार्थ प्रकाशन' के समर्थन में तथा मूर्ति-पूजा के विरोध में घंटों बहस करती थीं। इन्हीं बहसों के कारण उन्होंने विक्टोरिया स्कूल की अपनी प्रधानाचार्या से बहुत डाँट खाई थी। अपने से निचले जाति के मित्र से प्रेम विवाह किया। पति वेदप्रकाश गुप्ता का तबादला होने पर उन्होंने धनबाद में ही रहकर सामाजिक संस्थाओं को चलाने का निर्णय लिया। पति तीन-चार साल की बेटी तरंग को लेकर चला गया। बेटा उमंग पहले ही सैनिक स्कूल की छात्रावास में रहता था। वह यह निर्णय परिवार के प्रति अपना बड़ा त्याग समजती है। वह दूसरी शादी करना चाहती थी, पर व्यक्तिगत संबंधों से हटकर सामाजिक कटिबद्धता को प्राथमिकता देती हैं। अपने गलत निर्णय को सही करती हुई रमणिका जी भारतीय स्त्रियों के बारे में सोचती है कि, भारतीय स्त्री गलती होने पर खुद को अपराध बोध मान बैठती है। इससे वह आत्मदया की ग्रंथी से ग्रस्त होती है। किसी की करूणा या दया की दृष्टि से वह दूसरों के नजर में कभी ऊँचा नहीं उठ सकती।

पटियाला कॉलेज में उन्होंने एक नाटक का मंचन किया था। रियासतों का हस्तांतरण का विषय था। जो अखबारों के सुर्खियों में था। अप्रत्यक्ष रूप से यह विषय तत्कालीन फरोदकोट महाराज से जुड़ा था। उन्होंने गुप्ता जी के पिता पर काफी दबाव डाला गया, जिससे वह डरी नहीं। सन 1946 में आबादी की अदला-बदली में पाकिस्तान से शरणार्थी आईं लड़कियों को वह मदद करना चाहती थी, पर उसे रोका। विभाजन और दंगे की त्रासदी पर वह नेताओं की सभा में ही अवसरवादिताओं की पोल खोल कर रखती है। नाओखाली दंगे को लेकर महात्मा गांधीजी जी ने अनशन किया था, उनके समर्थन में भी अपने घर में ही अनशन पर बैठती है। 30 जनवरी 1948 में गांधीजी की हत्या का समाचार सुनकर रमणिका जी दिल्ली जाती है। कॉंग्रेस पार्टी में महिलाओं को दोयम दर्जे का स्थान मिलने से वह आहात होकर सोशालिस्ट पार्टी में

प्रवेश करती है। उन दिनों सोशालिस्ट पार्टी और जनसंघ के संयुक्त तत्वावधान में कच्छ आंदोलन चलाया जा रहा था। तत्कालीन काँग्रेस सरकार ने कंजरकोट, छाटवेट का इलाका पाकिस्तान को देने का निर्णय लिया था। इस निर्णय के खिलाफ शहर, गाँव, कस्बों में जनजागृति करते हेतु वह कच्छ यात्रा पर निकलती है। रास्ते में चंदा इकट्ठा करना, कभी आधे पेट पैदल चलना, तो कभी ट्रक, कभी बस की सवारियाँ करते हुए अनेक कठिनाईयों से जुझते हुए वह कच्छ पहुँचती हैं। एक लाख हस्ताक्षर का अभियान चलाती है। सन 1968 में वे सोशालिस्ट पार्टी की तरफ से मांडू का चुनाव लड़ती है, मगर महज ७०० वोटों से उनकी हार होती है।

कोयला खदानों में संघर्ष :

टाटा कंपनी घाटों में मजदूरों के बच्चों के लिए स्कूल बनाने को तैयार नहीं थी। रमणिकाजी ने हाईस्कूल निर्माण के लिए सोलह हजार रूपयों तक चंदा इकट्ठा किया। हाईस्कूल निर्माण के दौरान सभा में पहनाई गई फूल माला की बोली लगाई, जिसके पन्द्रह सौ रूपए मिले। इस बीच टाटा ने कोर्ट से स्टे-आर्डर लाया। इसके बावजूद रातोंरात स्कूल बनवाया। कोर्ट की अवमानना का केस दर्ज हुआ, लेकिन उद्घाटन के दिन ही स्कूल बनवाने का फोटो दिखाकर रमणिकाजी जीत गई। इसके बाद टाटा कंपनी के खिलाफ ठेकेदारी खत्म करो, ठेकेदारी मजदूरों को स्थायी और नियमित करो तथा स्थानीय बेरोजगारों को नौकरी दो का आंदोलन किया। गोमिया और खुदगड्डा बस्ती में पानी की लडाई शुरू कर टाटा कंपनी के प्रबंधक को टैंकरों द्वारा गाँव को पानी दिलाने के लिए मजबूर किया। पानी के संघर्ष के कारण ही मांडू क्षेत्र देश के नक्शे पर आ गया।

मजदूरों के यूनियन का गठन होने के बाद झारखंड कोलियरी में यूनियन का झंडा फहराने हेतु रमणिकाजी चेकपोस्ट के पार गई। तब एक ठेकेदार ने उन्हें अश्लील शब्द कहते हुए हाथ पकडा। उन्होंने तडाक से उसके मुँह पर थप्पड़ जड़ दिया। एक पहलवान फरसा लेकर उनकी तरफ लपका। इंस्पेक्टर ने उसकी कलाई पर वार किया, फरसा गिर गया। उस समय रमणिका जी पहलवानों के पास दौड़ दौड़कर जाती और कहती- लो हिम्मत है तो मारो, माँ का दूध पिया है तो चलाओ फरसा। सामने खडी हूँ और देखती हूँ किसमें हिम्मत है जो मुझे रोके। मैं जा रहीं हूँ मजदूरों के झोपडों में, जिन्हें आप लोगों ने कैद कर रखा है। राजपूत कर्मचारियों और ठेकेदारों की षड़यंत्र में लिप्त राशन दुकानदार राजाराम परेज ने यूनियन दफ्तर के बाहर खडी रमणिका जी के बाल पकड़कर घसीटा। ब्लाउज भी फाड़ दिया। दफ्तर के भीतर धकेलकर बाहर से दरवाजे को ताला लगाया और अपने साथियों को झोंपडी में आग लगाने को कहा। इस बीच महिला मजदूरों ने पथराव किया, दर्जनों लोग घायल हुए। ताला तोड़कर रमणिका जी को बाहर निकाला। सन् 1971 में बिहार राज्य विधान-परिषद् की सदस्य थी। तब एक खदान बंद करवाकर केदला चौक में आकर जायजा ले रहे थे कि ट्रक आकर रूके या नहीं। उस दौरान ठेकेदार, उनके एजेन्ट, मैनेजर तथा कई बाबू साहब रमणिका जी को गिरफ्तार करवाने के लिए दारोगा पर दबाव डाल रहे थे। दारोगा बालों से पकड़कर घसीटते हुए जीप में ले जाने लगा, पर खदान की महिलाएँ उनके इर्द-गिर्द घेरा बाँधकर भीड़ गए। मजिस्ट्रेट

के आदेश पर दारोगा गोली चलानेवाला था ही, इतने में मांडू के तहसील ने निहत्थों पर गोली चलाने पर रोक लगाई। इस घटना के विरोध में मजिस्ट्रेट का तबादला और थानेदार के निलंबन की मांग को लेकर आमरण अनशन किया। आखिर तीसरे दिन दोनों मांगों की पूर्ति हुई।

कोलियरी का ठेकेदार वशिष्ट सिंह और उसके साथियों ने एक होटल में चाय के लिए बैठी रमणिका जी पर लाठियाँ बरसाई। वह बेहोश हुई। उनका साथी बादल घायल हुआ। ड्राइवर ने उन्हें गाडी में बिठाकर रफ्तार पकडी। ट्रकचालक उनकी गाडी को ठोकर मारकर हत्या करने पर उतारू था। पर टूटी-फूटी गाडी ने तेज रफ्तार पकड़कर अस्पताल तक पहुँचाया। रमणिका जी के शरीर पर लाठियों के मार के इक्कीस घाव थे। आँखों के ऊपर भाले की चोट थी। कालरबोन टूट गई थी और हाथ की कलाई की हड्डी चूर-चूर हुई थी। इस घटना के अगले दिन बीस हजार मजदूरों ने पूरा का पूरा शहर घेर लिया था।

केदला में ठेकेदार और पहलवान की हत्या हुई। उसके बाद बर्ड कंपनी के पर्सनल ऑफिसर के. सिंह की हत्या हुई। मजदूरों का बकाया सूद माफ करने के लिए बर्ड कंपनी के खिलाफ संघर्ष किया था। इस कारण प्रबंधक, इंटक यूनियन और पुलिस तीनों की सांठ-गांठ से मजदूरों को हत्या के मामले में फँसा रहे थे। इस हत्या के पीछे रमणिकाजी की साजिश होने का आरोप था। पुलिस कारवाई से बचने के लिए वह जींस-शर्ट और काला चश्मा पहनकर पूना आ गईं। कांग्रेस के नेता और पुलिस रैलीगढा के मजदूरों की छाती पर कूद-कूदकर नेताओं का, रमणिका गुप्ता का पता पूछते रहें, लेकिन उन्होंने नहीं बताया। पन्नाबाई ने मजदूर सम्मेलन में मजदूरों पर हो रहे जुल्म की दास्तान सुनाई। रैलीगढा मजदूरों को न्याय दिलाने के लिए अखिल भारतीय सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष एस. एम जोशी जी रैलीगढा में आकर अनशन पर बैठ गए। उन्होंने अपने प्राण की बाजी लगाकर पंद्रह दिन तक अनशन पर बैठे। वे काफी कमजोर हो गए थे। बर्ड कंपनी झुक नहीं रही थी। इसपर रमणिका जी ने तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकूर जी से बात कर बर्ड कंपनी से पुलिस फोर्स वापस लेने की मांग की। यह संदेशा मिलती ही बर्ड कंपनी समझौते के लिए तैयार हो गई। 354 मजदूरों के स्थायी करने, तालाबंदी उठाने और सस्पेंशन उठाने का फैसला हो गया। 37 लोग जिन पर हत्या का केस दायर था, उनकी जाँच करवाने का निर्णय हुआ। बाद में इन मजदूरों के जमानत के लिए काफी जद्दोजहद करनी पडी थी।

हत्या की घटना के बाद कोलियरियों के मालिकों एवं पुलिसवाले सर्तक हो गए थे। रैलीगढा में बैठक का ऐलान करने पर कई बार रमणिका जी को जेल भेजा गया। दरअसल मजदूरों से उन्हें अलग रखने हेतु रमणिकाजी की गिरफ्तारी एक राजनैतिक हथकंडा बन गई थी। हजारीबाग के मजदूरों ने स्वतः गिरफ्तर होकर जेल पहुँचे थे। उन्हें जमानत पर छुडाने में छह माह से छह साल लग गए। केस खारिज होने के लिए बारह-तेरह साल लग गए। सब बरी तो हो गए पर बहुत बेहाल हुए। हड़ताल के दौरान कोई ऐसा परिवार नहीं बचा था जिसके घर में भूख से मौत नहीं हुई हो। रमणिका जी और उनके आठ-दस साथी पाँच रूपए का भूँजा चना मँगाकर गुजर करते थे। खेती में काम करवा कर धान जुटाते। कोलियरियों में जाकर मजदूरों से खाना और कफन माँगकर लाते। पत्ते का साग और चूहों के बिलों से लाया धान उबाल कर खाते थे। पूर्व

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के निर्देश से चंदास्वामी ने झारखंड आंदोलन छेड़ने के पूर्व पारसनाथ मंदिर में बडे यज्ञ का आयोजन करवाया। चंदास्वामी रमणिका जी को झांसी की रानी पुकारते थे।

1973 में खदानों का राष्ट्रीयकरण:

कोयला के तीन बडे क्षेत्र थे। धनबाद-झरिया, जो सबसे पुराना और अंग्रेजों के जमाने से चला आ रहा था। दूसरा हजारीबाग और तीसरा राँची। लालमटिया की बडी खदान बहुत बाद में अस्तित्व में आई। केंद्र सरकार की ओर से 1973 में दूसरी बार सभी नॉन-कोकिंग खदानों के राष्ट्रीयकरण का निर्णय लिया। सरकारीकरण के बाद नौकरी के लिए लम्बी लडाई लड़नी पडी। इंदिराजी ने बंगलादेश का निर्माण किया। देश भर में उनकी तूती बोल रही थी। कलकत्ता में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की मीटिंग थी। खुले अधिवेशन में रमणिकाजी इंदिराजी को संबोधित करती हुईं बोली- लोग तो इतिहास बनाते हैं लेकिन आपने तो भूगोल बना दिया है। कुछ लोग कहते हैं आपको खतरा है। याद रखिए यह खतरा बाहर से नहीं, भीतर से है। इसके साथ मजदूरों की खस्ता हालात और मालिकों, ठेकेदारों के रवैये के बारे में विस्तार से बताय़ा। सभी ने वाहवाही की। गृहमंत्री उमाशंकर दीक्षित ने तुम्हारी जबान पर सरस्वती बैठी है बोलकर प्रशंसा की। इसके बाद रामगढ़ से एमएलए का टिकट मिला। दिल्ली में शीला दीक्षित ने उनका इंटरव्यू लिया था। बाद में इंदिराजी ने चुनाव से हटने का आदेश भेजा। इस बात पर बिहार के राजस्व मंत्री चंद्रशेखर सिंह ने कहा कि, मुझे सीता को बनवास देने का आदेश सुनाने के लिए भेजा गया है। रमणिकाजी कहती है कि इंदिरा गांधी कांग्रेसियों के भ्रष्ट और दोहरे चरित्र को पहचानने लगी थीं और उन्हें सुधारना चाहकर भी सुधार नहीं पा रही थीं। उन दिनों कांग्रेस की छवि गिर गई थी, भ्रष्टाचारी आचरण बढ़ गया था, चाटुकारिता अपनी हदें पार कर गई थी।

रामगढ़ में कम्युनिस्ट पार्टी के विधायक मंजूर हसन की हत्या हुई। जिन्होंने शपथ भी नहीं ली थी। इस घटना के पहले दिन सिरका में एटक की यूनियन के साथ इंटक यूनियन का झगडा हुआ था। दोनों यूनियनों में वर्चस्व को लेकर तनाव था। जे. पी. सिंह और उनके साथियों ने भाले-बर्छियों से रमणिकाजी के कार पर हमला किया। वे खुद गाडी चला रही थी, लाठियों की बौछार सहती हुई उन्होंने गाडी की गति तेज की और बच गई। रमणिकाजी ने सन 1973 के बाद एक लम्बी और कठिन लडाई के दौर से गुजरते हुए लगभग सोलह-सत्रह हजार मजदूरों को कुजू-अरगड्डा क्षेत्र में नौकरी दे चुके थे। कोयला श्रमिक संगठन को कोलियरी मजदूर संघ में विलयन किया गया। खदानें राष्ट्रीयकृत होने पर सूखी हड्डियों वाले, झुर्रियों से भरे चेहरों में खुशी की लहर दौडी गई थी पर वह हँसी सूनी आँखों के सन्नाटे में डूब जाती। क्योंकि ठेकेदार नेता बनकर सामने आने लगे थे। अब उनसे लड़ना पड़ रहा था। इंटक में भी दो ग्रुप हो गए थे। राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ में झगडे बढ़ गए थे। नियुक्ति-पत्रों की बंदरबाँट, छीना-झपटी तथा लूट होने लगी थी। जो आंदोलनों में आगे थे वे ही भयंकर दमन का शिकार हुए थे। हजारीबाग से लेकर धनबाद क्षेत्र तक गैर कानूनी खदानों का एक रोजगार खुल गया था। पंचाट यानी आर्बीट्रेशन के अनुसार पंच के फैसले को लागू होने में काफी गड़बडी हुई। गलत मजदूर को काम पर रखा, सही मजदूर को हटा दिया।

रमणिकाजी ने खदानों के विस्थापितों की संघर्ष की नींव रखी और स्थानीय की परिभाषा बनाने हेतु कानूनी लडाई लडी। रेलमंत्री ललित बाबू ने 1973-74 में रमणिकाजी का एमएलसी का टिकट कटवा दिया था जिनकी हत्या हुई। इसमें इंदिरा गांधी का षड़यंत्र होने की चर्चा थी। सन् 1974 में रमणिकाजी हजारीबाग जिला कांग्रेस की अध्यक्ष बनीं। कांग्रेस का गुवाहाटी में अधिवेशन था। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी और आल इंडिया कांग्रेस कमेटी की सदस्य थीं। हजारीबाग जिला में बीस सूत्री कार्यक्रम की सदस्या भी थी। गैर कानूनी खदानों को ठेकेदारों द्वारा चलाने का प्रस्ताव मांडू का विधायक वीरेंद्र पांडे ने संजय गांधी के सम्मुख रखा था। इसके खिलाफ रमणिकाजी ने भाई रविव्रत की मदद से संजय गांधी से मिलीं और बडे बडे नेताओं के षड़यंत्र, ठेकेदारों की मनमानी बताकर खदानों को सरकार द्वारा चलाने की माँग की। इस भेंट के कुछ दिनों बाद केबिनेट में राष्ट्रीयकरण अधिनियम का संशोधन पारित हुआ। हालांकि संजय गांधी इस निर्णय में बाधक बने थे। लेकिन बाद में उन्होंने ही गैर कानूनी खनन करनेवाले रेड़ डलवाने के निर्देश दिए। जिससे खनन कारोबार ठप्प हुआ और रमणिकाजी को धमकियाँ मिलने लगीं।

आपातकाल के दौरान रमणिकाजी ने इंटक यूनियन की भीतरी लडाइयों में इंटक के महाजनों और सूदखोरों को गिरफ्तार करवाना शुरू कर दिया। इससे बहुतों ने सूद का कारोबार छोड़ दिया। इमरजेंसी का लाभ उठाकर निर्दोष मुसलमानों को फँसाया जाने लगा। एक नामी मुस्लिम वकील पर मीसा लगाकर जेल भेजा, यह धारा हटाने का काम रमणिकाजी ने किया। उन्होंने आदिवासियों की जमीनों की वापसी का अभियान चलाया। दिलतों में बासगीत का परचा बांटा। भुईंनी के डोला उतरने की प्रथा को बंद करवाया। खेतिहर मजदूरों की एक विशाल जनसभा आयोजित की। सन् 1976 में पुनः एमएससी का टिकट मिला और बिहार विधान-परिषद की सदस्या बन गई। माफियाओं को गिरफ्तार करनेवाले उपायुक्त के. डी. सिंह के स्थानांतरण करने के विरोध में सदन में खूब हंगामा किया था। सन् 1977 में कांग्रेस से बगावत की क्योंकि उनकी सिफारिश के बावजूद कांग्रेस ने बाहर से आए व्यापारियों, माफिया को विधानसभा का टिकट दे दिया था। कोलियरी संघ से वाकआऊट किया। बाबू सूरज नारायण सिंह के हत्या के आरोप में रमणिकाजी के खिलाफ रमण कमीशन बैठाया। लेकिन कमीशन का फैसला रमणिका जी के पक्ष में आ गया।

सन् 1980 में तत्कालीन कैबिनेट मंत्री तापेश्वर देव को हराकर विधानसभा सदस्य बन गईं। विजय जुलूस में कोयले की रानी, पानी की रानी के नारे गूँज रहे थे। रमणिकाजी ने कोल इंडिया के अध्यक्ष को नोटिस भेजकर किसानों की माँगों पर विचार करने और भविष्य के आंदोलन की ओर सचेत किया। साथ ही विस्थापितों की समस्या, स्थानीय लोगों की नौकरी की समस्या और उसके समाधान के लिए योजनाबद्ध कार्य करने हेतु बिहार सरकार को पत्र भेजा। इसके अलावा महामहीम मुख्य न्यायाधीश, हजारीबाग के उपायुक्त को पत्र भेजकर किसान, आंदोलनकारियों के माँगों के बारे में बताया था। कोल इंडिया ने वाशरी में सड़क बनवाने पर लगी स्टे ऑर्डर हटवा दिया। बावजूद इसके सड़क बनने नहीं दी। केदला बस्ती की रेलवे द्वारा ली गई जमीन अंग्रेजों द्वारा प्रयोग में न लाने पर उन्हें वापस करना जरूरी था लेकिन रेलवे के बडे अधिकारी उसे हड़पना चाहते थे। इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की। नतीजा किसान के पक्ष

में आ गया। सन् 1985 में स्वतंत्र रूप से नाव चिह्न से चुनाव लडी। पर हार गई। सीपीएम और सीटू में जाने के नाम पर मतभेद बढ़ गए। बाद में रमणिकाजी ने माकप में रहकर संघर्ष किया जो अपने में एक इतिहास है।

बिहार विधान–परिषद, विधान–सभा में उठे विवादः राजनीतिक संस्मरण एवं निष्कर्ष

रमणिकाजी को स्त्री होने के कारण ही विधान परिषद और विधानसभा में उन्हें दबाने या डराने की चेष्टा की गई। इसके बावजूद वह डरी नहीं, ना ही झुकी। स्त्री होने के कारण ही माफिया का मुकाबला मुस्तैदी और सफलता से कर पाई। उन्होंने विधानसभा में प्रश्न उठाकर गुंडा एक्ट में गिरफ्तारी की माँग की। कक्ष के बाहर ही विधायक विनोद सिंह और उनके ठेकेदार मित्र हरवंश सिंह ने इस माँग को वापस लेने के लिए धमकाया। इसकी शिकायत परिषद की अध्यक्षा के पास की। सदन में हंगामा मच गया। पूरा सदन रमणिकाजी के साथ था। धनबाद के मशहूर माफिया सूरजदेव सिंह के लोगों ने शंकरदयाल सिंह के समर्थक की सरेआम हत्या कर दी थी। सूरजदेव सिंह ने वी. पी. सिन्हा की हत्या करवा दी। जान को खतरा होने के बावजूद रमणिकाजी ने विधानसभा में इन हत्याओं के साजिशकर्ता सूरजदेव सिंह होने का आरोप लगाया। उन्हें टेलीफोन से धमकियाँ और गालियाँ मिलने लगीं। उनकी गाडी पर गोलियाँ भी चलीं, इससे भी बच गईं।

विस्थापितों को राहत के लिए सरकार की ओर से जो हलफनामा सुप्रीम कोर्ट में दिया था। उसे पढ़ने को लेकर रमणिकाजी ने सवाल किया। इस पर विधायकों ने कुत्सित अर्थ लगाकर हँसना शुरू कर दिए तो मंत्री उत्तर न देकर सीट पर बैठ गए। आक्रोश से भरकर रमणिकाजी रो पडी, पर अडी रही। सदन स्थगित कर दिया। बाद में विधायिका की नैतिकता का प्रश्न उठाकर अध्यक्ष को पत्र लिखा। यह पत्र अखबार में छपा। विवादित सदन की प्रोसीडिंग हटा दी गई। विधायकों की बेइज्जती हुई। उसके बाद विधानसभा में उनपर होनेवाले हमले बंद हुए। मुंबई में याचिका समिति के दौरे में कांग्रेस पार्टी के एक विधायक ने बस में ही शराब पीना शुरू किया। रमणिकाजी द्वारा इसपर आपत्ति जताने पर वह गाली गलौज पर उतरा। रमणिकाजी ने उसे गालियाँ देकर शराब पीनी से रोका। बाद में वह बीच बीच गाडी रोककर नीचे उतरता और शराब पीकर गाडी में चढ़ता। वह कमर में लटके पिस्तौल पर कई बार हाथ रखता, ताकि रमणिका जी डर जाएँ।

कम्यूनिस्ट पार्टी के जुझारू विधायक अजीत सरकार ने अपने क्षेत्र की एक नाबालिग बच्ची के साथ बलात्कार का मामला सदन में उठाया। लेडी डॉक्टर ने जानबूझकर अपराधी को छूटने का मौका दिया। वे जानना चाहते थे कि उस डॉक्टर के खिलाफ सरकार क्या कार्रवाई करेगी। उत्तर दे रहे कुमुद रंजन झा और लेडी डॉक्टर उन्हीं की बहन थी। सरकार गोलमोल उत्तर दे रही थी। रमणिकाजी ने विधायकों को ललकारा– पार्टी का नहीं औरत का पक्ष देखों और मंत्री से जवाब माँगो। आखिर एक महिला छोड़कर कोई आगे नहीं आया। मामला रफादफा कर दिया। यही है राजनीति। बाद में इन्हीं अजीत सरकार की हत्या पप्पु यादव ने करवा दी।

इसी दौर में प्रेस की स्वतंत्रता को लेकर केंद्र सरकार एक बिल लाने जा रही थी। जिसे लेकर प्रेस के लोग जगह जगह धरना दे रहे थे। रमणिकाजी ने अगले दिन सदन में प्रेस की आजादी पर प्रतिबंध की चर्चा

उठी तो तत्काल सदन के बीचोबीच पहुँच गई और अपनी बैग से साडी निकालकर अध्यक्ष की ओर फेंक दी। चूडियों का बंडल अध्यक्ष के बगल में खडे अंगरक्षक को थमा दिया जो उसने अध्यक्ष को दे दिया। सदन में सन्नाटा छा गया। ज्ञानेंद्रपति ने उन्हें समझाया कि चूडी-साडी देकर आपने सरकर को कायर सिद्ध करके अपमानित किया है पर ये सामग्री तो स्त्रियों के प्रतीक चिह्न है- तुमने सरकार भी औरतों की तरह कमजोर और कायर होने का संदेश दिया है। उस दिन के बाद रमणिकाजी ने स्त्री को कायरता के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल करना बंद कर दिया। ऐसी गालियाँ भी देनी बंद कर दीं जिनमें स्त्री शामिल होती हो। रमणिका जी ने कई बार अपनी बात मनवाने के लिए सदन के टेबल पर चढ़कर नारेबाजी की है। उनके पहले किसी भी स्त्री सदस्य ने ऐसा नहीं किया। एक बार पूरा सदन वैल में था, वे टेबल पर चढ़कर अपनी बात कह रही थी। विपक्षी नारेबाजी करने लगे। गर्मागर्म बहस हुई। इसी बीच कांग्रेस पार्टी के रघुनाथ झा ने रमणिकाजी संबोधित कर ताली बजा-बजाकर कहने लगे- नाच नचनिया नाच। सत्तापक्ष ताली पीटता रहा, फब्तियाँ कसता रहा। बाद में अध्यक्ष के आदेश से ऐसी सब बातें कार्रवाई से हटा दी गईं।

प्रणव चटर्जी जब तक जीवित रहे, पर्याप्त संरक्षण देते रहे, उनके बाद कर्पूरी ठाकूर जी काफी अकेले पड़ गए। दरअसल पार्टी में सामंत अधिक थे, विद्वान कम। जननायक कर्पूरी जी ही थे। उनके बाद बिहार को कोई जननायक नहीं मिला। यह तो शुक्र है कि लालूजी के रूप में बिहार को एक जननेता मिल गया नहीं तो बिहार कौरव-पांड़व का युद्धस्थल बन गया होता या दस्यु-युग में बदल जाता। बिहार में भोला पासवान के नेतृत्व में संविद की सरकार बनी। कांग्रेस में फूड़ पड़ चुकी थी। रमणिकाजी ने भी इस्तीफा दिया।

स्त्री राजनीतिज्ञों के प्रति पत्रकारों का भी अजीब-सा रवैया होता है। शुरू शुरू में पत्रकारों ने उन्हें काफी परेशान किया। दूसरों को अपमानित करने के लिए पहले उन्हें डिमौरैलाइज करना, फिर अपनी शर्तें रखना, यही अंदाज बुर्जुआ राजनीतिज्ञों या पत्रकारों का रहा है। मीडिया की नजर किसी को रँगे हाथ पकड़कर ब्लैकमेल करने की अधिक होती थी। ट्रेड यूनियन आंदोलन के दौरान मालिकों के पक्ष में खबरें छापने वाले पत्रकारों की चाँदी हो गई। बुर्जुआ पार्टियों की राजनीति में लोग स्त्रियों के सामने उनकी बहादुरी की तारीफ करेंगे, पर पीठ फेरते ही उसे कुलटा कहकर, अश्लील शब्दों की बौछार कर देंगे। औरत को राजनीति में प्रतिष्ठा मिलने पर उसके खिलाफ चरित्र- हनन का हथियार अपनाते हैं। ऐसे लोगों से कड़ाई से पेश आना पड़ता है। ऐसे लम्पट पुरूषों की लम्पटता खत्म करने पर रमणिकाजी तुल जाती रही हैं। औरत हैं डर जाएगी जैसा निष्कर्ष निकालने का मौका राजनीति में आने के बाद प्रायः पुरूषों को दिया नहीं। उनका मानना था कि लम्पटों, धूतों से पाला पडे तो लज्जा त्यागकर डटना चाहिए। अतः स्त्री-मुक्ति का अर्थ पुरूष विरोध नहीं है। दोनों को साथ चलना है। लेखिका अंत में एक मिसाल देती हैं कि- एक सज्जन ने दनदनाते हुए उनसे पूछा था कि सुना है कि आपके पति ने आपको तलाक दिया है। इस बात पर मुस्कुराती हुई रमणिका जी ने जवाब दिया कि जी हाँ, उन्होंने तलाक देते समय आपसे ही शादी करने की राय भी दी है। आखिर वह सज्जन गजब की ढीठ औरत है बोलकर गायब हुआ।

रमणिका जी की 'हादसे' के प्रारंभिक अध्यायों को तो पढ़कर ऐसा लगता है कि यह एक महिला की कहानी है, जिसने काफी संघर्ष से अपने लिए सामाजिक एवं राजनीतिक पहचान बनाई। लेकिन बाद के

अध्यायों में रमणिका जी का व्यक्तित्व इतना 'दिव्य' बन जाता है कि उनकी कथा बस उनकी दास्तान नहीं रह जाती, बल्कि हजारों-लाखों उन दलितों, मजदूरों, कामीनो के दुःख-तकलीफों एवं संघर्षो की वह गाथा लगने लगती है, जिसे पढ़कर हमारा मन द्रवित हो उठता है।

पंजाब के संभ्रांत परिवार में पैदा होने वाली रमणिका गुप्ता की कहानी महज़ एक ऐसी स्त्री की कहानी नहीं जिन्होंने भारतीय राजनीति में पूरी प्रखरता और साहस के साथ भाग लिया। पूरी आत्मकथा में स्त्रियों के साथ हुए हर तरह के अन्याय, अत्याचार और शोषण को रेखांकित करते हुए उनके कार्यकारी घटकों की तीखी आलोचना करती हैं। भारतीय राजनीति के ऐसे दस्तावेज़ हैं जिसमें राजनीतिक संघर्ष, षड्यन्त्र और उसकी सत्तावादी प्रवृतियों का यथार्थ पूरी प्रखरता से चित्रित हुआ है।

3.3.4 'हादसे' आत्मकथा में चित्रित नारी के आधुनिक रूप–

रमणिका गुप्ता बचपन से ही विद्रोही स्वभाव की होने के कारण अपने आसपास होने वाले स्त्री-दलन और पितृसत्ता के खिलाफ़ वह मुखर विरोध प्रकट करती हैं। चाहे वह मौलिक अधिकारों का प्रश्न हो, स्त्री-शिक्षा का सवाल हो, प्रेम-विवाह की आज़ादी हो या स्त्री-देह और यौनिकता की स्वतंत्रता हो, उन्होंने हर पक्ष पर अपना निर्भीक मत ज़ाहिर किया और लीक से हटकर चलीं हैं।

परम्परा को तोड़ने का हठ–

रमणिका जी सामन्ती परिवार से होने के कारण घर में परदा-प्रथा लागू थी। परिवार में लड़कियों का सिर ढकना लाज़िमी माना जाता था। पारिवारिक परम्परा तोड़ने के लिए सबसे पहले उन्होंने ताँगे में आगे की सीट पर अपने पिता की बगल में बैठने की ज़िद शुरू की। साइकिल लेकर सड़क पर निकल जाती तो घर में हंगामा मच जाता था। उन्हें घर में विद्रोही का-सा रुतबा मिल गया और हर समय टोका जाने लगा। पर वे ज़िद पर अड़ी रहीं। जाति तोड़कर प्रेम विवाह करने के फ़ैसले को परिवार ने एक चुनौती के रूप में देखा और इस निर्णय को बदलने के लिए बहुत दबाव डाला। मामा ने उनका घर से निकलना बंद कर दिया, रोज़ पिटाई होती थी। एक दिन तंग आकर पापा ने ज़हर खाने को कहा, तब रमणिका ने जवाब दिया– ''मेरी माँ और आप ज़िंदगी का सुख देख चुके हैं, भोग चुके हैं। मुझे अभी ज़िन्दगी देखनी बाकी है इसलिए ज़हर मैं नहीं खाऊँगी, बीबी जी खाएँ।'' आखिर पिता ने उन्हें घर से भाग जाने की सलाह दी किन्तु उन्होंने साफ़ इनकार करते हुए कहा– ''शादी तो आप ही को करवानी होगी मेरी। मैं भागूँगी नहीं। इन्तज़ार करूँगी।'' रमणिकाजी परिवार में किसी लड़की द्वारा परम्परा के विरुद्ध किया गया यह पहला विद्रोह था। उन्होंने न अपने घर में परदा किया और न ही छुआछूत चलने दी। छुआछूत के विरोध में उन्होंने ईसाई को अपना रसोइया नियुक्त किया।

संवेदनशील–

रमणिकता गुप्ता के स्कूल में सईदा नाम की एक वेश्या की लड़की पढ़ती थी। अगर कोई उसे चिढ़ाए तो वह उससे झगड़ जाती और मारपीट तक उतर आती। उनकी नजर में सहेली का वेश्या की बेटी होना या

उसकी माँ का वेश्या होना समाज का दोष था। अगर पति से सताई गई कोई स्त्री उनसे मदद माँगती तो वह अपने यहाँ रखकर, अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए प्रोत्साहित किया करती थी। रमणिका जी अपना सुख-दुख मज़दूरों के सुख-दुख के साथ महसूस करती थीं। इसलिए उनकी तकलीफ़ देखकर उनका गुस्सा बढ़ता था। वे गुस्से में रोने लगतीं और पुनः कड़े संघर्ष के लिए तैयार हो जाती थीं। खदानों के राष्ट्रीयकरण के बाद उन्होंने मज़दूरों की बहाली को सुनिश्चित करने को लेकर एक लम्बी लड़ाई लड़ी। ज़रा-सा अन्याय देखते ही तीव्र प्रतिक्रिया करने की आदत ने उन्हें कई बार खतरनाक मोड़ों पर खड़ा कर दिया था। उनके साथ ऐसी कई घटनाएँ घटीं जब पार्टी प्रतिबद्धता और मानवीयता के बीच एक को चुनना था, उन्होंने हमेशा मानवीय संवेदना को ही प्राथमिकता दी और मज़दूरों के हित का साथ दिया। इसके लिए भले पार्टी या उसका ओहदा क्यों न छोड़ना पड़े, इसकी फिक्र नहीं की।

बहादुर और निडर

आन्दोलनों के दौरान कई बार जानलेवा हमले हुए। कई दफ़ा लाठियाँ बरसाई गई जिनसे उनकी हड्डियाँ भी टूटीं परन्तु उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी और न ही हार मानी। वे जानती थीं और मानती थीं कि ऐसे अवसरों पर जोखिम उठाना ज़रूरी होता है। उनका कहना है कि यदि एक औरत आन पर आ जाए तो वह मरदों से अधिक जोखिम उठा सकने की कुव्वत रखती है। एक बार आन्दोलन के समय उन्हें जेल भी जाना पड़ा था। वहाँ के सभी अधिकारी उन्हें महिला कैदी नहीं बल्कि एक नेता कैदी के रूप में देखते थे। उन्होंने कभी किसी लड़ाई को हल्के ढंग से नहीं लिया और न ही कभी अधूरा छोड़ा। 'न बिकेंगे, न आसानी से मरेंगे, दरकार पड़ी तो मारेंगे। उसको तार्किक निष्कर्ष तक पहुँचाया-चाहे जीत हो या हार। बचाव में हताश होकर भागी नहीं क्योंकि वे हार सहने की क्षमता भी रखती थीं।

राजनीति में सक्रिय कार्यकर्ता–

रमणिका गुप्ता का राजनीतिक जीवन 1960 में धनबाद से शुरू हुआ और 1967-68 तक उनकी राजनीतिक सक्रियता निरंतर बढ़ती रही। उनकी राजनीतिक चेतना बहुत अलग थी। वह शुरू से सत्ता विरोधी थीं। राजनीति में रणनीति के तहत उन्होंने कई बार कुछ परिस्थितिजन्य समझौते भी किए किन्तु स्वयं को कभी बेबस या असहाय नहीं माना। उनका मानना है कि राजनीति और समाज-सेवा में आत्मविश्वास, हौसला, निड़रता और हठ ज़रूरी हैं। एक औरत को आगे बढ़ने के लिए विपरीत परिस्थितियों में डटे रहना है- आरोपों, कलंकों और घटनाओं-दुर्घटनाओं तथा ज़्यादतियों को झेलते हुए, अपने रास्ते पर चलते रहना और संकल्प-शक्ति तथा इच्छा-शक्ति का बल बनाए रखना ही है। पीठ थपथपाकर बहादुरी का वास्ता देने वाले राजनीति में बहुत मिलते हैं। उनकी नीयत को पहचानकर सोच-समझकर अपने फ़ैसलों पर अड़िग रहना ही है जो राजनीति में स्त्रियों के लिए लाज़िमी है।

कुशल संगठक, आंदोलनकर्ता –

सन् 1946 में जब महात्मा गांधी ने नोआखाली सांप्रदायिक हिंसा के बाद आमरण अनशन शुरू किया तब तो रमणिकाजी ने घर में ही अनशन शुरू कर दिया। सन् 1968 में मज़दूरों के बच्चों के लिए स्कूल

बनाने के मुद्दे को लेकर टाटा कम्पनी के खिलाफ संघर्ष किया और इसमें कामयाब भी हुईं। सन् 1972 में राजा रामगढ़ की कंदला-झारखंड खदानो के राष्ट्रीकरण हेतु एक लंबी हड़ताल करवा कर, खदानें राष्ट्रीकत करवाने में सफलता हासिल की। सरकार द्वारा पानी की योजना बनवाकर घर-घर में पानी पहुँचाया तो वे 'पानी की रानी' के नाम से मशहूर हो गईं। आदिवासियों के साथ मिलकर जंगल के सिपाहियों के खिलाफ़ उन्होंने नारा दिया- ''घूस नहीं, अब घूसा देंगे।'' मज़दूरों के अधिकारों को सुरक्षित रखने की खातिर यूनियन बनाने के लिए उन्होंने आमरण अनशन किया और अपनी माँगों को मनवाया। खदानों में खटने वाले अनाम मज़दूरों को परिचयपत्र दिलवाने के लिए जॉर्ज फ़र्नाडिस से बात की, जिन्होंने आन्दोलन के लिए नारे दिए- ''हम कौन हैं लिख कर दो-हमारा नाम क्या है लिख कर दो-हम क्या काम करते हैं लिखकर दो-हमारा वेतन क्या है लिखकर दो- हम कहाँ खटते हैं लिखकर दो!'' इसके परिणामस्वरूप सभी मज़दूरों के परिचय-पत्र मिला जो राष्ट्रीयकरण के बाद खदानों में उनकी नौकरी का प्रमाणपत्र माना गया।

सामाजिक कर्तव्य के प्रति कटिबद्ध-

धनबाद तथा हजारीबाग में उच्च विद्यालय एवं छोटे बच्चों के लिए नर्सरी स्कूल का निर्माण, महिलाओं के लिए प्रशिक्षण व सिलाई केन्द्र जैसी कई लोक कल्याणकारी योजनाएँ चलाई। जिनमें लगभग डेढ़ सौ महिलाएँ जीविका अर्जित करती थीं। पति के तबादले के पश्चात उन्होंने कानपुर न जाने का निर्णय लिया ताकि उनका स्वयंसिद्धा होने का संकल्प पूरा हो सके। उन्होंने इसे अपना कर्त्तव्य माना जबकि लोगों ने इस फ़ैसले को निर्ममता, क्रूरता और निर्दयता से युक्त बताया क्योंकि दोनों बच्चियाँ पिता के साथ गई थीं और उन्हें हॉस्टल भेजना पड़ा था। पटियाला में गुमशुदा शरणार्थी लड़कियों की तलाश में रखी एक सभा में उन्होंने भाषण देते हुए खुल कर कह दिया था ''ये जो यहाँ भाषण दे रहे हैं और लड़कियों को खोजने का आश्वासन दे रहे हैं सबके सब झूठ बोलते हैं। इनके घरों में ही तो लड़कियाँ हैं। इन्हीं लोगों के घरों में जाइए, एकएक के यहाँ पाँच-पाँच, दस-दस लड़कियाँ मिल जाएँगी।'' तब रमणिका गुप्ता महज़ सत्रह साल की रही होंगी। इतना साहस, निडरता सामाजिक कर्तव्य के प्रति कटिबद्ध होने के कारण उनमें आ गई थी।

महिला सशक्तिकरण

जब देश विभाजित हुआ तब भारत का उत्तर पश्चिमी भाग पाकिस्तान बना और बंगाल से जुड़ा पूर्वी भाग पूर्वी पाकिस्तान बना। 1971 में इंदिरा गांधी सरकार के हस्तक्षेप से पूर्वी पाकिस्तान एक स्वतंत्र देश के रूप में बांग्लादेश बना। इंदिरा गांधी सरकार की इस सफलता पर बिहार प्रदेश काँग्रेस कमिटी ने सभा आयोजित की। सभा में मंच पर इंदिरा गांधी की उपस्थिति में रमणिका गुप्ता ने भाषण में कहा, ''लोग तो इतिहास बनाते हैं लेकिन आपने तो भूगोल बना दिया है। बांग्लादेश नाम से एक नया देश खड़ा कर दिया है। इसलिए आपके रहते देश पर कोई खतरा नहीं है।'' आत्मकथा में इस दृश्य को राजनीति में महिला सशक्तिकरण की दृष्टि से भी देखा जा सकता है। जहाँ एक महिला राजनीति में निर्णायक की अहम भूमिका पर पदासीन हैं तो दूसरी कार्यकर्ता के रूप में।

निष्कर्ष में रमणिका गुप्ता की आत्मकथा 'हादसे' से पूर्णतया स्पष्ट होता है कि उन्होंने अपना जीवन अपनी शर्तों पर जीया। बँधी-बँधाई रूढ़ियों पर वे न विश्वास करती हैं और न ही पारम्परिक लीक पर चलने को उचित मानती हैं। वे 'स्वयंसिद्धा' हैं और अन्य औरतों के लिए भी प्रेरणा का स्त्रोत हैं।

3.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

3.4.1 (अ) बहुविकल्पीय प्रश्न।

1. रमणिका गुप्ता की हादसे आत्मकथा को अगर दूसरा नाम दिया जा सकता है तो वह है....

   अ) अपराजेय संघर्ष-कथा ब) हार की जीत

   क) पराजेय ड) इनमें से कोई नहीं

2. हादसे आत्मकथा को .... की कहानी भी कहा जा सकता है।

   अ) अबला नारी ब) स्त्री के अपने चुनाव

   क) दुर्बल नारी ड) पराजीत नारी

3. हादसे आत्मकथा सपनों, ... और .... की कहानी है।

   अ) संघर्षों-साहस ब) डर-भय

   क) इच्छा-अनिच्छा ड) इनमें से कोई नहीं

4. रमणिका गुप्ता ने........... के खिलाफ संघर्ष किया।

   अ) सामन्तों, ब) ठेकेदारों क) सूदखोरों ड) यह सभी

5. रमणिका गुप्ता ने .... के हक के लिए जद्दोजहद की।

   अ) मजदूर-कामगार ब) दलित क) आदिवासी ड) यह सभी

6. विभाजन की त्रासदी झेलती .... महिलाओं की आवाज़ बनकर गुप्ता जी जवाब माँगती है।

   अ) मुस्लिम ब) हिंदू क) सिख ड) इसाई

7. हादसे की कथानक .... राज्यों के इर्द-गिर्द घुमती हैं।

   अ) पंजाब ब) बिहार क) झारखंड ड) यह सभी

8. रमणिका गुप्ता को ...... और........ की रानी के नाम से जाना जाता था।

   अ) पंजाब-बिहार ब) पानी-वाणी क) कोयले-पानी ड) इनमें से कोई नहीं

3.4.2 (आ) उचित मिलान कीजिए।

प्रश्न 1. रमणिका गुप्ता और उनकी विधा के प्रकारों के साथ उचित मिलान कीजिए।

1. हादसे अ) कहानी संग्रह

2. बहु-जुठाई	ब) काव्यसंग्रह

3. सीता	क) आत्मकथा

4. मैं आजाद हुई हूँ	ड) उपन्यास

उत्तरः अ) 1- अ,	2- ब,	3- क,	4- ड
ब) 1- अ,	2- क,	3- ब,	4- ड
क) 1- अ,	2- ब,	3- ड,	4- क
ड) 1- क,	2- अ,	3- ड,	4- ब

प्रश्न 2. रमणिका गुप्ता के पारिवारिक सदस्य तथा उनके कार्यों का उचित मिलाप कीजिए।

1. माता	अ) कर्नल, डॉक्टर
2. पिता	ब) एम्पलायमेंट ऑफिसर, लेबल इंस्पेक्टर, श्रमायुक्त
3. भाई	क) कम्यूनिस्ट, लेफ्टिनेंट, फोटोग्राफर
4. पति	ड) बहुत बड़े दीवान की सुपुत्री

उत्तरः अ) 1- अ,	2- ब,	3- क,	4- ड
ब) 1- अ,	2- क,	3- ब,	4- ड
क) 1- ड,	2- अ,	3- क,	4- ब
ड) 1- क,	2- अ,	3- ड,	4- ब

प्रश्न 3. रमणिका जी के पद, सम्मान, कार्यों का उचित सुमेलन कीजिए।

1. सदस्य	अ) मजदूर, दलित सम्मेलन
2. प्रतिनिधित्व	ब) रमणिका फाउंडेशन
3. संस्थापक	क) विधानसभा, विधानपरिषद
4. संपादक	ड) युद्धरत आम आदमी (पत्रिका)

उत्तरः अ) 1- क,	2- अ,	3- ब,	4- ड
ब) 1- अ,	2- क,	3- ब,	4- ड
क) 1- ड,	2- अ,	3- क,	4- ब
ड) 1- क,	2- अ,	3- ड,	4- ब

प्रश्न 4. रमणिका गुप्ता के बारे में नेताओं के कथन के उचित मिलान को पहचानें।

1. झाँसी की रानी	अ) केदार पांडे

2. प्योरटिन | ब) चंदास्वामी
3. सच्ची, जुझारू महिला | क) उमाशंकर दीक्षित
4. तुम्हारी जबान पर सरस्वती बैठी है | ड) प्रणव चटर्जी

उत्तर-अ) 1- क,	2- अ,	3- ब,	4- ड
ब) 1- अ,	2- क,	3- ब,	4- ड
क) 1- ब,	2- ड,	3- अ,	4- क
ड) 1- क,	2- अ,	3- ड,	4- ब

5. निम्नांकित संदर्भों का उचित मिलाप कीजिए।

1. उर्मिला केस	अ) आपातकाल में नेताओं की गिरफ्तारी
2. सुरेश-सुषमा कांड	ब) दलित लड़के से विवाह
3. रमण कमिशन	क) चरित्र हनन
4. मीसा कानून	ड) सूरज बाबू की हत्या के आरोप की जाँच

उत्तर-अ) 1- क,	2- अ,	3- ब,	4- ड
ब) 1- अ,	2- क,	3- ब,	4- ड
क) 1- ब,	2- ड,	3- अ,	4- क
ड) 1- ब,	2-क,	3- ड,	4- अ

3.4.3 **(इ) सही – गलत की पहचान करें।**

1. हादसे आत्मकथा के उचित आशय को पहचानें-

   अ) दुर्दम्य और दुर्धर्ष | ब) अपराजेय संघर्ष कथा

   क) राजनीतिक स्त्री कार्यकर्ता की कहानी | ड) उपरोक्त तीनों सही हैं

2. रमणिका गुप्ता की रचनाओं का प्रकाशन काल का सही अनुक्रम कौनसा है।

   अ) आपहुदरी, हादसे, सीता, बहू-जुठाई | ब) सीता, बहू-जुठाई, हादसे, आपहुदरी

   क) आपहुदरी, सीता, बहू-जुठाई, हादसे | ड) हादसे, सीता, बहू-जुठाई, आपहुदरी

3. निम्नांकित स्थापना और तर्क को ध्यानपूर्वक पढ़े और बहु विकल्पीय उत्तरों में से सही उत्तर का चयन करें।

   1) स्थापनाः औरत और पुरूष की क्षमता का फर्क उन्नीस या बीस ही होता है।

2) तर्कः इन समान गुणों के अतिरिक्त औरत के पास आकर्षित और प्रभावित करने की क्षमता अधिक होती है।

अ) (1) सही और (2) गलत   ब) (2) गलत और (1) सही

क) (1) और (2) दोनों सहीं   ड) (1) और (2) दोनों गलत

4. निम्नांकित स्थापना और तर्क को ध्यानपूर्वक पढ़े और बहु विकल्पीय उत्तरों में से सही उत्तर का चयन करें।

1) स्थापनाः राजनीति में आनेवाली औरतों को खुद सहारा या सहयोगी बनना चाहिए।

2) तर्कः क्योंकि राजनीति में किसी के सहारे के बिना बड़ा मुकाम हासिल नहीं हो पाता।

अ) (1) सही और (2) गलत   ब) (2) गलत और (1) सही

क) (1) और (2) दोनों सहीं   ड) (1) और (2) दोनों गलत

5. निम्नांकित स्थापना और तर्क को ध्यानपूर्वक पढ़े और बहुविकल्पीय उत्तरों में से सही उत्तर का चयन करें।

1. स्थापनाः औरत को किसी निर्णय के लिए पति की इजाज़त माँगना औरतों के अधिकार का हनन है।

2. तर्कः क्योंकि

अ) औरतों के निर्णय लेने की आज़ादी को रमणिका जी बरकरार रखना चाहता है।

ब) किसी समारोह में लोग उन्हें उनके नाम से पहचानें, किसी की पत्नी होने के कारण नहीं।

अ) (1) सही और (2) गलत

ब) (2) गलत और (1) सही

क) (1) और (2) दोनों सहीं

ड) (1) और (2) दोनों गलत

6. पुरुष औरत को उसी हालत में बर्दाश्त करता है.....

1. जब उसे यह यकीन हो जाए कि वह पूरी तरह उसी पर आश्रित है।

2. औरत अपनी इच्छा के अनुसार ख़ुद कोई निर्णय नहीं लेती।

3. पुरूष उस औरत से डरने लगे, तो वह उसे सहता है।

अ) (1) और (2) सही, (3) गलत

ब) (1) सही और (2), (3) गलत

क) (1), (2) और (3) गलत

ड) (1), (2) और (3) तीनों सही

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.5.1 अ) कठिन शब्द

1. अगुवाई - अग्रणी होने की क्रिया, प्रधानता।
2. अभियुक्त - अपराध का आरोप लगाया गया है या उस पर मुकदमा चलाया जा रहा है।
3. खुदसर - जिद्दीपन; हठीलापन।
4. छीछालेदर - दुर्दशा, दुर्गति, ख़राबी, फ़जीहत, गड़बड़।
5. छुईमुई - लाजवंती का पौधा, जिसे छूने से सिकुड़ जाता है, और कुछ देर बाद सामान्य हो जाता है।
6. जद्दोजहद - कठिन प्रयत्न, चेष्टा।
7. जोहार - सबका कल्याण करने वाली प्रकृति की जयजयकार
8. तफतीश - छानबीन, जाँच-पड़ताल या पूछ-ताछ ।
9. थेथर - निड़र, जिद्दी, बात न समझने वाला, मुँहफट, दुराग्रही, उद्दंड।
10. दरकार - आवश्यक, ज़रूरी ।
11. दुर्दम्य - जिद्दी, दुर्धर्ष- जिसे हराना कठिन हो ।
12. नामजद - नामांकित करना, मनोनीत।
13. पैरवी - किसी दूसरे व्यक्ति की तरफ से बोलना, किसी दूसरे व्यक्ति का पक्ष रखना।
14. फितरत- स्वभाव, प्रकृति, चालाकी, चालबाज़ी।
15. बिचौलिया- मध्यस्थ, दलाल।
16. भयादोहन- डरा-धमकाकर पैसे हड़पने या फ़ायदा उठाने की क्रिया।
17. मजमा- भीड़भाड़।
18. मलाल- दुःख, पश्चाताप।
19. मुखातिब- जिससे कुछ कहा जाए।
20. मुखालिफत- दुश्मनी, शत्रुता।
21. मुस्तैद- कटिबद्ध, तेज़, स्फूर्तिवान।
22. शिनाख्त- स्वरूप या गुण का बोध पहचान।
23. हतोत्साहित - जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो ।
24. हलफनामा- शपथपत्र ।

3.5.2 आ) कहावतें

1. युद्ध और प्रेम में हर चीज जायज है-

   युद्ध और प्यार में लोग निष्पक्ष खेल के नियमों से बंधे नहीं हैं और आपको उचित व्यवहार के नियमों का पालन नहीं करना पड़ सकता है।

2. समरथ को नहीं दोष गुसाईं -

   इसका अर्थ है, जो समर्थ है, उसमें कोई दोष नहीं होता। (तुलसीदास के रामायण से उद्धृत चौपाई है)

3.5.3 इ) मुहावरें

1. ऐरे गैरे नत्थू खेरे - महत्वहीन व्यक्ति।
2. उल्लू सीधा करना- अपना काम निकालना।
3. आगाह करना - सचेत करना, चेतावनी देना, सावधान करना।
4. आँखों में धूल झोंकना- धोखा देना।
5. किए किराए पर पानी फेर जाना- काम बिगाड़ देना।
6. दाल में काला होना - किसी बात पर संदेह होना
7. टस से मस नहीं होना- कुछ असर न पड़ना।
8. डंके की चोट- स्पष्ट घोषणा करना।
9. डींग हाँकना- झूठी बड़ाई करना।
10. नहले पे दहला- करारा जवाब देना।
11. बहती गंगा में हाथ धोना- किसी अवसर का लाभ उठा लेना।
12. बात का बतंगड़ बनाना- सीधी बात में झगड़ा उत्पन्न करना।

3.5.4 ई) लोकोक्ति

1. लातों का भूत बातों से नहीं मानते- दुष्ट व्यक्तियों को दंड की भाषा समझ में आती है ।
2. नींद तो बंद आँखों की दीवानी होती है - शारीरिक और मानसिक रूप से थकने के बाद बिस्तर पर लेटते ही नींद आ जाती है ।
3. सुनो जग की, करो मन की - सलाह सबकी माननी चाहिए पर अपने लिए उचित निर्णय लेने की क्षमता, शक्ति सदा अपने हाथों में ही रखनी चाहिए।

उ) पौराणिक संदर्भ

1. लक्ष्मण रेखा – किसी भी मामले में निश्चित हद को पार नहीं करना है, वरना बहुत हानि उठानी होगी। (रामायण में लक्ष्मण ने खींची रेखा के भीतर सीता माता सुरक्षित थी, रावन उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। तभी से आज तक लक्ष्मणरेखा नामक उक्ति इस आशय से प्रयुक्त होती है)
2. सत्यवान सावित्री के वरदान – खदान के मजदूरों ने पहचानपत्र की तुलना सत्यवान सावित्री के वरदान से की है। सावित्री ने यमराज से वरदान माँगा था कि सोने के कटोरे में मैं अपने पोते को दूध पीते हुए देखूँ। यानी उसने सुहाग भी माँगा, औलाद भी माँगी और समृद्धि भी माँगी।
3. अमोघ अस्त्र– रैलीगढ़ा के साइडिंग मजदूरों ने मालिकों के खिलाफ आधी पौनी वैगन लोड करने के बाद काम बंद किया। यह मालिकों के खिलाफ अमोघ अस्त्र था। अमोघ अस्त्रः– जो व्यक्ति एकचित्त हो जाता वही दिव्यास्त्र हासिल करने का अधिकारी बनता। जो सिर्फ इंद्र के पास था। इसकी खूबी ये थी कि यह अचूक होने के चलते एक बार ही प्रयोग हो सकता था। महाभारत में कर्ण को इसे इंद्र ने कवच कुंडल के बदले दिया था।
4. पारसनाथ – पारसनाथ पर्वतीय क्षेत्रों में सदियों से संथाल और अन्य आदिवासी रहते हैं। यह पहाड़ संथाल आदिवासियों की आस्था से जुड़ा है, जिसे वे सदियों से मारांग बुरु के नाम से पूजा करते हैं। मारांग बुरु का शाब्दिक अर्थ 'महान पहाड़' या 'बड़ा पहाड़' होता है।
5. पुनः मूर्षिको भव – यह फॉर्मूला एक संस्कृत कहानी पर आधारित है जिसमें दयापूर्वक एक संत ने एक चूहे को बिल्ली, कुत्ता और शेर बना दिया, जब शेर ने उस संत को ही मारने का प्रयास किया तो संत ने फिर उसे एक चूहा बना दिया।

ऊ) ऐतिहासिक संदर्भ–

1. लोहियावाद – देश में गैर–कांग्रेसवाद की अलख जगाने वाले महान स्वतंत्रता सेनानी और समाजवादी नेता राम मनोहर लोहिया चाहते थे कि दुनियाभर के सोशलिस्ट एकजुट होकर मजबूत मंच बनाए।
2. खुंटकट्टी प्रथा – अभी भी चाईबासा और खूंटी जिले में खुंटकट्टी प्रथा चलती है। इसके तहत जोतदार अपना लगान मुंडा और मानकी के पास जमा करते हैं। हरेक गांव में एक मुंडा होते हैं। दो से अधिक गाँव मिला कर मानकी होते हैं।
3. नोआखली दंगे– ब्रिटिश शासन काल में भारत की स्वतन्त्रता से एक वर्ष पूर्व अक्टूबर–नवम्बर 1946 में बंगाल के चाटगाँव डिवीजन (अब बांग्लादेश में) के नोआखली जनपद में मुसलमानों द्वारा किया गया भयंकर नरसंहार, सामूहिक बलात्कार, अपहरण, हिन्दुओं का बलपूर्वक धर्मान्तरण और हिन्दू सम्पत्तियों की लूट और आगजनी की एक शृंखला थी।

3.6 स्वयं–अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

3.6.1 (अ) बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर।

उत्तर–

1. अ) अपराजेय संघर्ष–कथा
2. ब) स्त्री के अपने चुनाव
3. अ) संघर्ष–साहस
4. ड) यह सभी
5. ड) यह सभी
6. अ) मुस्लिम
7. ड) यह सभी
8. क) कोयले–पानी

3.6.2 (आ) उचित मिलान।

उत्तर–

1.	ड) 1- क,	2- अ,	3- ड,	4- ब
2.	क) 1- ड,	2- अ,	3- क,	4- ब
3.	अ) 1- क,	2- अ,	3- ब,	4- ड
4.	क) 1- ब,	2- ड,	3- अ,	4- क
5.	ड) 1- ब,	2-क,	3- ड,	4- अ

3.6.3 (इ) सही – गलत की पहचान।

उत्तर–

1. ड) उपरोक्त तीनों सही हैं
2. ब) बहू–जुठाई, सीता, हादसे, आपहुदरी
3. क) (1) और (2) दोनों सहीं
4. अ) (1) सही और (2) गलत
5. क) (1) और (2) दोनों सहीं
6. ड) (1), (2) और (3) तीनों सही

3.7 सारांश

(1) हादसे आत्मकथा रमणिका गुप्ता की आप बीती को बयां करती हुई जिद्दी, जुझारू, संघर्षशील स्त्री व्यक्तित्व को रेखांकित करती है।

(2) रमणिका गुप्ता ने व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक आचरण में हमेशा अपने को समर्थ बनाने का लक्ष्य रखा, ताकि वह अपनी शर्तों पर चल सके और समाज को दिशा दे सकें। उन्होंने समाज के पीछे चलने की बजाय समाज को अपने पीछे चलाया। सभी निर्णय अपने हाथ में लेने का साहस किया। इस कारण एक–न–एक विवाद हमेशा उनके इर्द–गिर्द घेरा डाले रहा। इन विवादों, रूढ़ियों, प्रथाओं और मिथकों को तोड़कर खुद को गौरान्वित महसूस करती थीं।

(3) राजनीति में प्रवेश करने वाली स्त्री को पहला खतरा यौन उत्पीड़न का होता है। यह खतरा रमणिका जी के साथ पूरी राजनीतिक यात्रा में अनवरत बना रहता है। तत्कालीन बिहार रमणिका गुप्ता का मुख्य कार्यक्षेत्र था। साठ से लेकर नब्बे के दशक तक के उनके राजनीतिक सफर में बिहार की समूची राजनीति का ब्यौरा हादसे आत्मकथा से मिलता है।

(4) इसमें कोलियरी आंदोलन, जल आंदोलन, आदिवासी आंदोलन, कोयला खदानों का राष्ट्रीकरण तथा तत्कालीन कांग्रेस की सरकार का तख्तापलट इत्यादि महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। इन घटनाओं का भी महज़ तथ्यात्मक वर्णन मात्र उन्होंने नहीं किया बल्कि इसके कार्यकारी अवयवों को विश्लेषित करते हुए उनके द्वारा सामान्य जन- जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को भी दर्शाया हैं।

(5) रमणिका गुप्ता की आत्मकथा महज़ एक स्त्री द्वारा देखे और भोगे हुए यथार्थों का व्याख्यान नहीं है। वह भारतीय राजनीति का नाटकीय इतिहास भी है।

(6) भारतीय राजनीति और भारतीय राज्य के दमन का खुला आख्यान है जिसमें उन्होंने बड़ी प्रखरता से राजनीतिक विडंबनाओं को रेखांकित किया है। राजेन्द्र यादव ने उनकी आत्मकथा को 'एक औरत की नहीं, राजनीतिक कार्यकर्ता की कहानी अधिक' माना है। उनकी आत्मकथा में कामगार-मजदूर, दलित एवं आदिवासी विमर्शों का स्वर प्रमुख है।

3.8 स्वाध्याय

3.8.1 लघुत्तरी प्रश्न

1. रमणिका गुप्ता के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
2. रमणिका गुप्ता के विविध आंदोलनों को विशद कीजिए।
3. रमणिका गुप्ता के सामाजिक कार्यों पर चर्चा कीजिए।

3.8.2 दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. हादसे आत्मकथा रमणिका गुप्ता की अपराजेय संघर्ष कथा हैं- विस्तृत चर्चा करें।
2. हादसे में चित्रित पारंपारिक और आधुनिक नारी के बदलते स्वरूप पर विचार-विमर्श करें।
3. हादसे आत्मकथा राजनीतिक स्त्री कार्यकर्ता के लिए महत्त्वपूर्ण और प्रेरणाप्रद है- स्पष्ट कीजिए।
4. हादसे आत्मकथा उत्तर भारतीय राजनीति का प्रामाणिक दस्तावेज है- विवेचन कीजिए।
5. हादसे आत्मकथा में चित्रित कामगार-मजदूर, दलितों, आदिवासियों की शोषनीय स्थिति को स्पष्ट कीजिए।

3.9 क्षेत्रीय कार्य

1. रमणिका गुप्ता की हादसे आत्मकथा और मराठी के राजनीतिक स्त्री कार्यकर्ता की आत्मकथा का तुलनात्मक अध्ययन करें।

2. महाराष्ट्र की जुझारू राजनीतिक स्त्री कार्यकर्ता से रू ब रू हो जाए।

3. छात्र अपने क्षेत्र की महिला विधायक या सांसद का साक्षात्कार ले।

4. हादसे आत्मकथा का लघुनाटिका में रूपांतरण कर उसका रंगमंचन या नुक्कड नाटक में प्रस्तुति करने की कोशिश करें।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. गोदावरी परूळेकर – जेव्हा माणूस जागा होतो (साहित्य अकादमी), मौज प्रकाशन, मुंबई, 1970।

2. हंसा वाडकर – सांगते ऐका (अभिनेत्री की आपबीती), राजहंस प्रकाशन, मुंबई, 1970।

3. आनंदबाई शिर्के – सांजवात, स्नेहवर्धन प्रकाशन, पुणे, 2008।

4. मल्लिका अमर शेख – मला उद्ध्वस्त व्हायचय, रिया पब्लिकेशन, कोल्हापुर, 2016।

5. आपहुदरी – रमणिका गुप्ता, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2016।

6. कोल्हापुरची रणरागिणी : भारती पोवार, संपा. प्रभाकर पाटील, आमचा गाव आमचा विकास मीडिया ॲण्ड पब्लिकेशन, 2024।

❑❑❑

इकाई–4
कथा मंजरी (कहानी–संग्रह) संपा. डॉ. महेन्द्र कुलश्रेष्ठ

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.2.1 कहानी का स्वरूप

4.2.2 कहानी के तत्व

4.2.3 कहानी के प्रकार

4.2.4 हिंदी कहानी का विकास

4.3 विषय–विवेचन

4.3.1 'कफन' – कहानीकार प्रेमचंद का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.2 'पुरस्कार' – कहानीकार प्रसाद का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.3 'सच बोलने की भूल' – कहानीकार यशपाल का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.4 'मलबे का मालिक' – कहानीकार मोहन राकेश का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.5 'दुःख–भरी दुनिया' – कहानीकार कमलेश्वर का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.6 'दहलीज' – कहानीकार निर्मल वर्मा का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.7 'वापसी' – कहानीकार उषा प्रियंवदा का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.8 'चीफ की दावत' – कहानीकार भीष्म साहनी का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.9 'लड़कियाँ' – कहानीकार ममता कालिया का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.10 'काला बाप गोरा बाप' – कहानीकार महीप सिंह का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.11 'अपराध' – कहानीकार उदयप्रकाश का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.12 'लाक्षागृह' – कहानीकार चित्रा मुद्गल का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.4 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.5 स्वंय अध्ययन के लिए प्रश्न

4.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए प्रश्न

4.1 उद्‌देष्य –

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात आप –

1. साहित्य की लोकप्रिय विधा 'कहानी' से परिचित होंगे।
2. 'कथा मंजरी' के कहानीकारों को जान सकेंगे।
3. 'कथा मंजरी' के कहानियों को गहराई से समझ सकेंगे तथा उनकी विशेषताओं एवं निहित उद्‌देश्य-पक्ष से ज्ञात होगे।
4. 'कथा मंजरी' की कहानियों के कथानक से अवगत होंगे।
5. 'कथा मंजरी' की कहानियों के पात्र एवं उनके चरित्र-चित्रण को आत्मसात कर सकेंगे।
6. कहानी का विवेचन, विश्लेषण तथा रसग्रहण कर सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना –

'कहानी' दुनिया की अत्यंत प्राचीन, महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय विधा है। मानव सभ्यता का इतिहास जितना पुराना है, उतना ही कहानी का इतिहास भी पुराना दिखाई देगा। प्रत्येक सभ्य समाज में कहानी की परंपरा मिलती है। हिंदी कहानी भी इसी परंपरा से होते हुए विकास के नए-नए सोपान पार कर चुकी है। इसमें लोककल्याण की भावना और लोकरंजन का समन्वय है।

'कहानी' के लिए कथा, आख्यान, आख्यायिका, गल्प, वार्ता से सारे शब्द पर्यायवाची शब्द हैं। कहानी या कथा वर्तमान युग के प्रचलित शब्द हैं। 'कहानी' का शाब्दिक अर्थ है – कहना। जो कहा जाए वह कहानी है। परंतु साहित्य के संदर्भ में किसी रोचक घटना का वर्णन कहानी है, वस्तुत: कथा और कहानी पर्यायी शब्द होकर भी दोनों में सूक्ष्म अंतर है। कथा शब्द व्यापक होता है। उसमें कहानी और उपन्यास दोनों अंतर्भूत होते हैं। कहानी गद्‌य शैली में लिखी कौतुहलवर्धक चमत्कृतिपूर्ण घटना की योजना होनेवाली छोटी रचना है, जिसे पाठक एक बैठक में आसानी से बढ पाता है। मूलत: इसमें 'कहने का भाव' होने के कारण उसे 'कहानी' कहा गया है।

4.2.1 'कहानी' का स्वरूप –

वर्तमान हिंदी कहानी के विकास में कहानी के भारतीय एवं पाश्चात्य परंपराओं का योगदान रहा है। भारतीय परम्परा का संबंध संस्कृत से रहा है। संस्कृत में कहानी विधा का वर्णन नहीं है। वहाँ 'आख्यायिका'

या 'आख्यान' का विवेचन है। उसका अर्थ है अपनी क्रमवार कथा सुनाना। वर्तमान हिंदी कहानी का आशय मुख्यत: अंग्रेजी 'Story' या 'Short Story' है। कहानी एक विश्वव्यापी साहित्य की विधा है। भारतीय साहित्यकारों और विद्‌वानों के साथ-साथ अन्य देशों के साहित्यकारों और विद्‌वानों ने भी कहानी को परिभाषित करने के प्रयास किए हैं। कहानी का स्वरूप स्पष्ट करते हुए पाश्चात्य तथा भारतीय विद्‌वानों ने अलग-अलग मत व्यक्त किए हैं।

पाश्चात्य विद्‌वानों के द्‌वारा दी गई कहानी की परिभाषाएँ –

1. ब्रैंडर मैथ्यू - कहानी में एक ही चरित्र अथवा एक ही घटनात्मक स्थिति के बीच विविध प्रकार की भावनाओं का चित्रण होता है, उसे अपने में पूर्ण होना चाहिए।
2. हडसन - कहानी में मूल भाव होता है। उस मूल भाव का विकास लक्ष्य की दिशा में तार्किकता से होता है। कहानी आकार में इतनी छोटी होती है कि एक बैठक में पढ़ी जाए।
3. चेखब - जीवन के खंड चित्र को कहानी कहते हैं।

भारतीय विद्‌वानों के द्‌वारा दी गई कहानी की परिभाषाएँ –

1. प्रेमचंद - कहानी (गल्प) एक रचना है, जिसमें जीवन के एक अंग, किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्‌देश्य होता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विलास, सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।
2. बाबू श्यामसुंदरदास - आख्यायिका एक निश्चित लक्ष्य या प्रभाव को लोकर लिखा हुआ नाटकीय आख्यान है।
3. प्रसाद - सौंदर्य की एक झलक का चित्रण करना और उसके द्‌वारा इस की सृष्टि करना ही कहानी का उद्‌देश्य है।

कहानी की उपर्युक्त सभी परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि 'कहानी गद्‌य शैली की एक ऐसी लघु रचना है कि उसमें एक ही घटना या भाव का लक्ष्य केंद्रित, तार्किक या मनोवैज्ञानिक विकास होता है। उसमें नाटकीयता तथा चमत्कृति होती है। मनोरंजन के साथ-साथ कोई संदेश भी इसमें निहित रहता है।'

4.2.2 कहानी के तत्त्व –

कहानी के छह तत्व माने गए हैं - 1) कथावस्तु, 2) पात्र तथा चरित्र-चित्रण, 3) कथोपकथन, 4) देश-काल वातावरण, 5) भाषा और शैली, 6) उद्‌देश्य। इसके अलावा कहानी का शीर्षक भी महत्वपूर्ण होता है।

1) **कथावस्तु –**

कथावस्तु में कथानक और उसके विकास पर विचार होता है। कहानी की कथावस्तु की चयन–परिधि व्यापक होती है। वह सारे मनुष्य जीवन से संबंधित किसी भी अंश पर लिखी हुई होती है। कहानीकार इतिहास, पुराण, साहित्य, पत्र–पत्रिकाएँ, दैनिक जीवन की घटनाएँ, यहाँ तक की कल्पना से भी कथानक बनाता है। कहानीकार के मन में अपनी कथावस्तु (Plot) के विकास की रूपरेखा होती है। उसे वह पात्र, परिस्थिति, प्रसंग आदि से बुनता है। प्रतिभा के मूल में प्रेरणा, संवेदना, कल्पना होती है। कथानक में संवेदना, संघर्ष, कौतुहल, करूणा, सत्य आदि का होना जरूरी है। कथानक का विकास आरम्भ, कौतुहल, संघर्ष, चरमसीमा तथा अंत आदि चरणों में किया जाता है।

2) **पात्र और चरित्र–चित्रण –**

पात्र और चरित्र–चित्रण कहानी का एक और अभिन्न तत्त्व है। पात्रों के बिना कहानी असम्भव होती है। कहानी में मुख्य और गौण जैसे दो तरह के पात्र होते हैं। नायक, नायिका एवं प्रतिनायक का अंतर्भाव मुख्य पात्रों में होता है। इनकी सहायता करनेवाले पात्र गौण होते हैं। गौण पात्र मुख्य पात्रों के चरित्र–विकास में योग देते हैं। कहानीकार पात्रों के चरित्र का विकास वर्णन, मनोविश्लेषण, संवाद, प्रसंग आदि से करता है। यह चित्रण कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष होता है। पात्रों का चित्रण बाह्य और भीतर से होता है। पोशाक, रहन–सहन, व्यवहार, विचार–वृत्ति, स्वभाव, देहगठन आदि सारी बारीकियों के चित्रण से पात्र पूर्णाकार ग्रहण कर सहज बनते हैं। कहानी में पात्रों की संख्या सीमित होने से वह सुबोध और सरल बन जाती है।

3) **कथोपकथन –**

कथोपकथन का अर्थ हैं संवाद। यह कहानी का प्राण–तत्त्व है। इससे कहानी सजीव होती है। संवाद से कथानक, पात्र तथा प्रसंग आदि का विकास होता है। संवाद से ही कहानी प्रवाही और प्रभावी बनती है। संवादों से कहानी का जीवन से तादात्म्य संभव होता है। कहानी के कथोपकथन देश, काल, पात्र, परिस्थिति और प्रसंग आदि के अनुकूल होने चाहिए। वे संक्षिप्त, प्रभावी तथा कलात्मक होने चाहिए। दीर्घ संवाद से कहानी उबाऊ बनती है। संवाद सहज, स्वाभाविक हो तो कहानी सजीव होती है।

4) **देश–काल–वातावरण –**

देश–काल–वातावरण कहानी का बोधक तत्व है। कहानीकार अपनी कथा के देश–प्रदेश, आकाश–अवकाश को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट करता है। काल बोध से कहानी सुस्पष्ट होने में मदद मिलती है। प्रसंग एवं परिस्थिति वर्णन से कहानी संवेद्य और सहज बनती है। वातावरण वर्णन विरहित कहानी प्रभावहीन होती है। अतएव कहानीकार आवश्यकतानुसार रस्म, रीति, व्यवहार, परंपरा, संस्कृति, पोशाक, गहने, उत्सव आदि के विवरण से अपनी कहानी को रोचक एवं मनोरम बनाता है।

5) **भाषा और शैली –**

भाषा और शैली कहानी का कलातत्व है। कहानी की भाषा देश, काल, वातावरण, पात्र और प्रसंगादि के अनुकूल हो तो रास आती है। कहानी के वाक्य छोटे हो तो पाठक चाव से कहानी पढ़ता है। अलंकार, मुहावरों और कहावतों से युक्त हो तो क्या कहना। कहानी की शैली का चयन कथा के स्वरूप पर निर्भर होना चाहिए। मनोवैज्ञानिक कहानी के लिए विश्लेषण शैली उपयुक्त होती है, तो ऐतिहासिक कहानी के लिए वर्णन-शैली सजीव, रोचक, संवेदनक्षम तथा प्रभावी हो तो कहानी कलात्मक बनने में देर नहीं लगती।

6) **उद्‌देश्य –**

कहानी का प्रमुख उद्‌देश्य जीवन के किसी मार्मिक पक्ष को प्रकाशित करना होता है। उद्‌देश्य के बिना कहानी संभव ही नहीं होती। पहले कहानी रंजन के लिए लिखी जाती थी। आज इसके अलावा कहानी का उद्‌देश्य समस्या-चित्रण, मनोविश्लेषण, उपदेश या सीख भी होता है। समाज, व्यक्ति की विसंगति पर प्रहार करने के उद्‌देश्य से कहानी को व्यंग्यात्मक बनाया जाता है। आदर्श को रखना, मूल्य-संवर्धन, संस्कार-चित्रण जैसे अनेक हेतु से कहानी लिखी जाती है। जीवन की व्यापक और समग्र व्याख्या असल में कहानी का मक्सद होता है।

'शीर्षक' कहानी का तत्व न होनेपर भी अनिवार्य अंग है। 'शीर्षक' से कहानी की पहचान होती है। शीर्षक छोटा, नया और उद्‌देश्य के अनुसार होना चाहिए। इसमें कुतूहल तथा जिज्ञासा निर्माण करने की, पाठक को पढ़ने के लिए प्रेरित करने की शक्ति और क्षमता होनी चाहिए। मौलिक शीर्षक पाठक को कहानी की ओर आकर्षित करता है। विषयानुकूल शीर्षक से कहानी सार्थक सिद्‌ध होती है। सार्थक शीर्षक कहानी का प्रभाव बढ़ाने में मदद करता है।

4.2.3 कहानी के प्रकार –

कहानी के प्रकार विभिन्न आधारों पर निश्चित किए गए हैं। विषयवस्तु के आधार पर घटना प्रधान, पात्र प्रधान, विचार प्रधान, भाव प्रधान, कल्पना प्रधान, हास्य-व्यंग्य प्रधान, काव्य प्रधान तथा प्रतीक प्रधान जैसे आठ भेद माने गए हैं। शैली के आधार पर कहानी के वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, मनोवैज्ञानिक, चित्रात्मक, आत्मकथनात्मक, पात्रात्मक और दैनिकी आदि भेद मिलते हैं। विषय के आधार पर कहानी के धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक आदि भेद माने गए हैं। स्वरूप-विकास के आधार पर निर्माणकालीन, प्रयोगशील, विकासकालीन अथवा विकसनशील, उत्कर्षकालीन और समकालीन जैसे कहानी के कई भेद होते हैं। युग या काल के आधार पर भी कहानी के अनेक भेद किए जा सकते हैं। जैसे- भारतेन्दु-युगीन, प्रेमचंद-युगीन, स्वातंत्र्योत्तर-कालीन, समकालीन आदी अब तो दशक को आधार बनाकर भी साठोत्तरी कहानी, आपातकालोत्तर कहानी, नवम दशक की कहानी, अंतिम दशक की और इक्कीसवीं सदी की कहानी आदि भेद किए जा रहे हैं। रचना तथा विषय की दृष्टि से कहानी के कुछ प्रमुख भेद इस प्रकार हैं –

1. **वर्णनप्रधान कहानियाँ** – इनमें कहानीकार किसी स्थान, पात्र या समय का वर्णन करना ही अपना लक्ष्य मानता है।

2. **घटनाप्रधान कहानियाँ** – इनमें कहानीकार का लक्ष्य किसी घटना–विशेष का रोमांचक चित्रण करना होता है। कहानीकार मुख्य घटना से संबंध रखनेवाली अन्य अनेक छोटी–मोटी घटनाएँ भी प्रस्तुत करता है।

3. **चरित्रप्रधान कहानियाँ** – इनमें कहानीकार की दृष्टि पात्रों के वास्तविक चित्रण पर अधिक रहती है। कहानीकार पात्रों के बाह्य और आंतरिक दोनों प्रकार के चरित्र का अंकन करता है। इनमें घटनाओं का अधिक महत्व नहीं रहता है।

4. **वातावरणप्रधान कहानियाँ** – इनमें कहानीकार किसी प्रसंग को लेकर देश–काल–वातावरण का सजीव और यथार्थ चित्रण करता है।

5. **प्रभावप्रधान कहानियाँ** – इनमें कहानीकार घटना आदि को महत्व न देकर किसी प्रभाव को महत्व देकर कहानी लिखता है।

6. **भावनाप्रधान कहानियाँ** – इनमें कहानीकार स्वाभाविक ढ़ंग से किसी मनोभाव का चित्रण मनोविज्ञान के आधार पर करता है। अंतद्र्वंद्व ऐसी कहानियों का बीज होता है।

7. **समस्याप्रधान कहानियाँ** – इनमें कहानीकार किसी सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक, राजनीतिक या मनोवैज्ञानिक समस्या को प्रमुखता देकर कहानी लिखता है। इसलिए ऐसी कहानियों में कहानीकार का चिंतन–पक्ष प्रकट होता है।

8. **ऐतिहासिक कहानियाँ** – इस कोटी की कहानियों में इतिहास से कथावस्तु ग्रहण की जाती है। ऐतिहासिक कहानियों को दो भागों में विभाजित किया जाता है – 1) ऐसी कहानियाँ जिनकी कथावस्तु सीधे इतिहास की घटनाओं से ग्रहण की जाती है और 2) ऐसी कहानियाँ जिसमें इतिहास की घटनाओं को कल्पना के रंग में रंगकर प्रस्तुत किया जाता है। इसमें वातावरण ऐतिहासिक होता है। इन कहानियों में कल्पना का प्राधान्य है, परंतु ऐतिहासिक वातावरण आदि से अंत तक बना रहता है। अतीत की गौरवशाली घटना पर भावपूर्ण प्रकाश डालना ही ऐतिहासिक कहानियों का प्रमुख उद्देश्य होता है।

9. **सामाजिक कहानियाँ** – इन कहानियों में समाज और सामाजिक जीवन का प्राधान्य रहता है। इन कहानियों की कथावस्तु कोई सामाजिक घटना होती है, पात्रों में सामाजिक जीवन में उलझे हुए लोग रहते हैं और कहानियों में सामाजिक जीवन से संबंधित देश–काल–वातावरण का चित्रण प्रस्तुत किया जाता है। सामाजिक स्तर पर कहानी लिखनेवालों के दो दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। एक वर्ग सामाजिक आदर्श को कहानी में प्रतिष्ठा देता है, तो दूसरा वर्ग समाज के यथार्थ चित्रण को महत्व देता है।

हिंदी में अधिकांश कहानियाँ सामाजिक ही हैं। उनकी विषयवस्तु का संबंध समाज और सामाजिक जीवन से है। आधुनिक युग में कहानीकार मुख्य रूप से सामाजिक कहानियों की ही रचना करते हैं। प्रेमचंद, प्रसाद, जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल आदि कहानिकारों ने उत्कृष्ट कोटि की सामाजिक कहानियाँ लिखी हैं।

10. **मनोवैज्ञानिक कहानियाँ** – जिन कहानियों में मनोविज्ञान का तत्व प्रधान होता है, वे कहानियाँ मनोवैज्ञानिक कहानियाँ कहलाती हैं। इन कहानियों का संबंध सामाजिक या राजनीतिक किसी भी जीवन से हो सकता है। परंतु इनके पात्रों में अनेक प्रकार के द्वंद्व के दर्शन होते हैं। कथासूत्र की परिस्थितियाँ भी मनोवैज्ञानिक अथवा द्वंद्व आदि से प्रभावित होती हैं। इन कहानियों को समझने के लिए थोडा मनोविज्ञान का ज्ञान होना आवश्यक है। मनोविज्ञान के सहारे ही असाधारण परिस्थितियों में पडे. हुए पात्रों का चरित्र–चित्रण किया जा सकता है। इस प्रकार की कहानियों की रचना का मुख्य श्रेय प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रायड को है। हिंदी कहानियों में भी उसका प्रभाव देखने को मिलता है। ऐसी कहानियों में बाह्य–मन की अपेक्षा आंतरमन या अचेतन की व्यंजना अधिक होती है।

11. **आँचलिक कहानियाँ** – किसी अँचल–विशेष की कथा या आधार बनाकर उसका सजीव वातावरण उपस्थित करना आँचलिक कहानियों की विशेषता है। प्रदेश–विशेष का सामाजिक जीवन, रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा और भाषा आदि के विविध प्रयोगों से उसमें उस अँचल–विशेष के जीवन का सुंदर चित्र इन कहानियों में उपस्थित किया जाता है। इसके लिए अँचल–विशेष की लोकभाषा को आधार बनाया जाता है। इस प्रकार की कहानियों के माध्यम से प्रादेशिक संस्कृति को उभार मिलता है और अन्य लोगों को भी इसमें एक विशेष प्रकार का आनंद मिलता है। आँचलिक कहानीकारों में मार्कंडेय, फणीश्वरनाथ 'रेणु', शिवप्रसाद सिंह, नागार्जुन आदि नाम उल्लेखनीय हैं।

उपर्युक्त भेदों के अतिरिक्त प्रतीकप्रधान कहानियाँ, हास्य–व्यंग्यात्मक कहानियाँ, यात्रा–संबंधी कहानियाँ, प्रतिवादी कहानियाँ, राजनीतिक कहानियाँ आदि कहानी के अनेक भेद–उपभेद किए जा सकते हैं।

4.2.4 हिंदी कहानी का विकास –

हिंदी कहानी के विकास को निम्नांकित सोपानों में विभाजित किया जा सकता है –

हिंदी कहानी का उद्भव –

वस्तुत: हिंदी की प्रथम कहानी को लेकर हिंदी में मतमतांतर मिलते हैं। आरम्भिक हिंदी कहानी पर भारतीय प्रभाव था। तत्पश्चात हिंदी कहानी अंग्रेजी लघुकथा (Short Story) के तर्ज पर विकसित होती रही। इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी' कालक्रम की दृष्टि से पहली हिंदी कहानी मानी जाती है। वर्तमान स्वरूप के आधारपर सन 1900 में 'सरस्वती' पत्रिका में छपी किशोरीलाल गोस्वामी की 'इंदुमती' को कुछ इतिहासकार हिंदी की पहली कहानी मानते हैं। परंतु इसके पूर्व 'रानी केतकी की कहानी' के बाद राजा शिवप्रसाद 'सितारे–हिंद' की 'राजा भोज का सपना', भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की 'अभूत–अपूर्व स्वप्न' जैसी कहानियाँ लिखी गई मिलती हैं। बाद में तो कहानी–लेखन का सिलसिला ही आरम्भ हुआ। ऐसी कहानियों

में उल्लेखनीय हैं – मास्टर भगवानदास की 'प्लेग की चुडैल', रामचंद्र शुक्ल लिखित 'ग्यारह वर्ष का समय', गिरजादत्त वाजपेयी की 'पंडित और पंडितानी', बंग महिला की 'दुलाईवाली' आदि। यह सिलसिला आगे निरंतर बढता ही गया।

प्रेमचंद–पूर्व युगीन कहानी –

कहानी के क्षेत्र में प्रेमचंद का आगमन एक अपूर्व घटना है। प्रेमचंद को कहानी–सम्राट के रूप में मान्यता मिलने के कारण यहाँ उनको केंद्र में रखकर हिंदी कहानी के विकास का विवेचन प्रस्तुत है। प्रेमचंद–पूर्व युगीन कालखण्ड में माधवप्रसाद मिश्र ने 'मन की चंचलता', माधवराव सप्रे ने 'एक टोकरी भर मिट्टी', किशोरीलाल गोस्वामी ने 'गुलबहार' जैसी कहानियाँ लिखी पर इस युग में जयशंकर प्रसाद का आगमन प्रभावकारी सिद्ध हुआ। 'इंदु' पत्रिका में प्रसाद की पहली कहानी 'ग्राम' प्रकाशित हुई। राधिकारमण की 'कानों में कंगना', विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' की 'रक्षा–बंधन', चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की 'उसने कहा था' जैसी बहुचर्चित कहानियाँ इसी युग की उपज हैं। इस युग में 'सरस्वती', 'इंदु' जैसी पत्रिकाओं ने हिंदी कहानी प्रकाशन का सिलसिला जारी रखकर कहानी के विकास को गतिमान बनाया। कहानी का यह युग अनुकरण, अनुवाद और प्रयोग का सिद्ध हुआ। इस युग की कहानियाँ इतिवृत्तात्मक, आख्यायिका जैसी ही रही। वस्तुत: हिंदी कहानी का यह आरंभिक काल था।

प्रेमचंद–युगीन कहानी –

हिंदी कहानी का यह महत्वपूर्ण युग है। इस युग के प्रमुख कहानीकार स्वयं प्रेमचंद थे। वे पहले उर्दू में कहानियाँ लिखते थे। सन 1907 में उनकी 'पंच परमेश्वर' कहानी प्रकाशित हुई। हिंदी की वह उनकी पहली कहानी थी। फिर 'आत्माराम', 'बडे घर की बेटी', 'शतरंज के खिलाडी', 'वज्रपात', 'रानी सारंधा', 'अलग्योझा', 'ईदगाह', 'पूस की रात', 'सुजान भगत', 'कफन', 'बडे भाई साहब', 'बोध' जैसी उनकी अनेक कहानियाँ प्रकाशित हुई। 'मानसरोवर' संकलन के खण्डों में उनकी समग्र 300 कहानियाँ संग्रहित हैं। इन कहानियों ने आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानियों का दौर गतिमान किया। आम आदमी या सामान्य व्यक्ति को कहानी का नायक बनाने का श्रेय प्रेमचंद को दिया जाता है। इस युग में प्रसाद के 'छाया', 'प्रतिध्वनि', 'आकाश दीप', 'आँधी', 'इंद्रजाल' जैसे कहानी–संग्रह प्रकाशित हुए। सुदर्शन के 'सुदर्शन सुधा', 'सुदर्शन सुमन', 'तीर्थयात्रा', 'गल्पमंजरी', 'सुप्रभात', 'नगीना' जैसे संग्रह प्रकाशित हुए। विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' का 'कल्पमंदिर' और 'चित्रशाला' की कहानियों की धूम का भी यही समय रहा। इस युग के अन्य कहानीकारों में उल्लेखनीय हैं – आचार्य चतुरसेन शास्त्री, विनोदशंकर व्यास, राम ष्णदास, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' आदि। इन कहानीकारों ने कहानी को सुगठित बनाया। विषय और शैली की विविधता, भाषा का व्यावहारिक रूप आदि की दृष्टि से इस युग की कहानियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रतीकात्मक, ऐतिहासिक तथा हास्यरसयुक्त कहानियों का दौर भी यही से आरम्भ हुआ। हिंदी कहानी का यह निश्चय ही समृद्ध युग था।

प्रेमचंदोत्तर युगीन कहानी –

प्रेमचंदोत्तर युगीन कहानीकारों में मुख्यत: यशपाल, रांगेय राघव, अमृतलाल नागर, भगवतीचरण वर्मा, उपेन्द्रनाथ अश्क, मन्मनाथ गुप्त, सत्येन्द्र सत्यार्थी तथा भैरवप्रसाद गुप्त आदि का नाम आता है। जनवादी, साम्यवादी कहानीकारों की अगुआई यशपाल ने की। 'ज्ञानदान', 'पिंजरे की उडान', 'तर्क का तूफान', 'भस्मावृत्त चिंगारी', 'फूलो का कुर्ता', 'चित्र का शीर्षक' जैसे कहानी-संग्रहों ने मार्क्सवादी कहानी की न सिर्फ धारा बहाई अपितु उसे स्थिर और मजबूत भी बनाया। समता, शोषण-विरोध और क्रांति की बातें करनेवाली उनकी कहानियों ने जनसाधारण की व्यथा-वेदनाओं को स्वर दिया। 'मुगलों ने सल्तनत बख्श दी' जैसी श्रेष्ठ कहानी रचकर भगवतीचरण वर्मा ने अपना अलग परिचय दिया। उपेन्द्रनाथ अश्क की 'पिंजरा', 'पाषाण', 'मोती', 'मरूस्थल', 'गोखरू', 'खिलौने', 'चट्टान', 'जादूगरणी', 'चित्रकार की मौत' ने काफी वाहवाही बटोरी। रांगेय राघव के 'गदल', अमृतलाल नागर के 'वाटिका', 'अवशेष', 'नवाबी मसनद' और 'तुलाराम शास्त्री' जैसे कहानी-संकलनों तत्कालिन वर्तमान यथार्थ का संतुलित चित्र पेश किया।

युग की कहानियों ने सामाजिक यथार्थ का चित्रण कर प्रगतिवादी विचारों को बल दिया। कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से इस धारा की कहानी ने कथारूप व्यापक और गहरा बनाया। जैनेंद्रकुमार ने मनोवैज्ञानिक कहानी की नींव डाली। 'पाजेब', 'वातायन', 'स्पर्धा', 'फाँसी', 'एक रात', 'दो चिडियाँ', 'जयसंधि', 'जैनेंद्र की श्रेष्ठ कहानियाँ' से सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण एवं विश्लेषण की परम्परा का सूत्रपात हुआ। इसका समर्थन करते हुए अज्ञेय ने 'विपथगा', 'परम्परा', 'कोठरी की बात' शीर्षक कहानी-संग्रहों से अपने पर होनेवाले फ्रायड के यौनवादी प्रभाव को कबूल किया। कुण्ठा और दमित वासनाओं का चित्रण करने का साहस दिखाते हुए इलाचंद्र जोशी ने 'आहुत', 'दिवाली और होली' जैसी कहानी-संग्रहों का लेखन किया। एक तथ्य उल्लेखनीय है कि, इस युग की 'चाँद', 'माया', 'कहानी', 'सरिता' आदि पत्रिकाओं ने हिंदी कहानी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। प्रेमचंदोत्तर युग में महिला कहानीकारों का योगदान भी भूलाया नहीं जा सकता। महादेवी वर्मा, चंद्र किरण सौनरिक्सा, उषादेवी मित्रा, सत्यवती मलिक, शिवरानी देवी ऐसे कुछ नाम हैं कि उनके उल्लेख के अलावा इस युग का लेखा-जोखा अधूरा ही रहेगा। प्रेमचंदोत्तर युग में हिंदी कहानी बहुमुखी बनी, शिल्प और शैली के नए आयाम खुले। कहानी में मनुष्य के बाह्य चित्रण के साथ भीतर झाँकने की आवश्यकता का एहसास इस युग की बडी देन समझी जानी चाहिए। हिंदी कहानी के विकास में यह युग स्मरणीय मानना होगा।

स्वातंत्र्योत्तर-युगीन अर्थात नई कहानी –

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी में नई कहानी का आंदोलन चला। नई कहानी की सबसे बडी विशेषता यह रही कि उसने कहानी के पारंपारिक ढाँचे ने नकार कर कहानी को एक नया जामा पहनाया। कथानक और पारंपारिक रूप का अस्वीकार कर इस कहानी ने नग्न यथार्थवाद की हिमायत की। अश्लिल, आँचलिक और घोर व्यक्तिगत कहानी का दौर लाया। प्रतीकों को असाधारण महत्व प्राप्त हुआ। पाश्चात्य प्रभाव की चपेट में आकर हिंदी कहानी एक तरह से नए रूप में सामने आई। मोहन राकेश, राजेंद्र यादव तथा कमलेश्वर

को नई कहानी के उद्गाता माना जाता है। इस युग के कथाकारों का दृष्टिकोण अति यथार्थवादी रहा। नई कहानी की एक और धारा इसी युग में पनप उठी, जो आँचलिक ठहरी। रेणु की 'ठुमरी' की कहानियों ने इसका प्रणयन किया। इसी राह से चलते हुए राजेंद्र अवस्थी, मार्कण्डेय तथा शिवप्रसाद सिंह ने भी अपनी रचनाएँ की। इन कहानियों ने ग्रामीण परिवेश का न सिर्फ चित्रण किया, अपितु वहाँ की अप्रगति की ओर इशारा कर गांधी जी के सपनों के भारतवर्ष की याद दिलाकर हमें अंतर्मुख किया। इसके साथ ही पत्र-पत्रिकाओं ने भी नई कहानी के विकास में महत्वपूर्ण योगादन दिया, जैसे- 'ज्योत्स्ना', 'आजकल', 'धर्मयुग', 'कल्पना', 'सारिका', 'कहानी' आदि।

साठोत्तरी कहानी –

वस्तुत: सन साठ के बाद हिंदी कहानी में अनेक प्रयोग होने लगे। अचेतन, सचेतन, समान्तर, सक्रिय, जनवादी जैसे प्रकारों की कहानियाँ इसी काल में लिखी गई। प्रणेताओं की अधिकता के कारण इन कहानियों को उत्तराधिकारी नहीं मिल पाए। परिणामस्वरूप वे अल्पकालिक सिद्ध हुए। परंतु कहानी लेखन निरंतर बढता गया। कहानी लेखन में अनेक प्रवाह आए जैसे सचेतन कहानी।

साठोत्तर कालीन कहानी आंदोलन में एक आंदोलन अचेतन कहानी का है। इसे अकहानी भी कहा गया है। फ्रान्स में उस समय प्रचलित 'Anti Story Movement' से प्रेरित होकर अकहानी का अविर्भाव हुआ। अकहानीकार बौद्धिकता के आग्रही थे। उससे कहानी में घोर वैयक्तिकता का अविर्भाव हुआ। रचनाओं में कथाहीनता की प्रवृत्ति बलवत्तर हुई। अकहानी एक तरह से व्यवस्था के प्रति आक्रोश का रूप ग्रहण कर गई। कहानी में यौन विकृति-चित्रण से घिनौनापन आ गया। ज्ञानरंजन, निर्मल वर्मा, मन्नू भंडारी, दूधनाथ सिंह, रवींद्र कालिया, काशिनाथ सिंह, श्रीकांत वर्मा, गंगा प्रसाद विमल की इस दौर की कहानियों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि अब कहानी में सृजन की जगह यांत्रिकता ने ले रखी है। अकेलापन, अजनबीपन, खालीपन आदि से कहानी घिर गई। मानवीय संबंधों के ऱ्हास ने कहानी रचना के मक्सद के ही सामने प्रश्नचिह-सा लगा दिया। अस्तित्ववादी कहानियाँ इसकी मिसाल बनीं।

सचेतन कहानी –

सचेतन कहानी का निर्माण अचेतन कहानी की प्रतिक्रिया के स्वरूप हुआ। यौन विकृति, कुत्सा, कला, पराङमुखता आदि की जगह आस्था और संघर्ष की स्थापना ने ली। व्यक्ति-चेतना की जगह समूह-चेतना का उदय आशा की किरण बन कर उभरा। कथा युक्त रचना का पुनर्जन्म हुआ। इस समय डॉ. दूधनाथ सिंह ने 'सचेतन कहानी विशेषांक' प्रकाशित किया। इससे कहानी के नाम पर मुहर लग गई। महीप सिंह, सुरेंद्र अरोडा, मनहर चौहान आदि कहानीकारों की कहानियों ने जीवन के विभिन्न संदर्भो को बटोरकर समसामयिक बदलते परिवेश को चित्रित किया। भाषा का सहज बनना इसका महत्वपूर्ण योगदान समझा गया। कहानी में आई जड़ता की जगह सरलता, सहजता, सुबोधता ने ली। जगदीश चतुर्वेदी, वेद राही, सुखबीर, कुलदीप बग्गा, राजी सेठ, हिमांशु जोशी जैसे नए कहानीकारों ने इस संदर्भ में सकारात्मक एवं सार्थक प्रयास किए।

समान्तर कहानी –

समान्तर कहानी भी कहानी परिवर्तन हेतु एक आंदोलन रहा। इसका अविर्भाव भी कहानी की प्रतिक्रिया में हुआ। अमूर्त बिम्बों की जगह जिंदगी को रू-ब-रू करने के उद्देश्य से स्थापित इस कहानी आंदोलन ने 'समान्तर' (1972) विशेषांक का प्रकाशन कर ड़ाला। कमलेश्वर इसके संपादक रहे। वही इसके कर्णधार थे। साथ ही भीष्म साहनी, आलमशहा खान, जितेंद्र भाटिया, गुरूबचन सिंह, कामतानाथ, स्वदेश दीपक, राकेश वत्स, श्रवणकुमार, सुधा अरोडा की कहानियों से समान्तर कहानी आंदोलन को बल मिला। 'सारिका' पत्रिका का भी सहयोग इसे मिला।

सक्रिय कहानी –

सक्रिय कहानी हिंदी कहानी के विकास का प्रमुख पड़ाव बना। राकेश वत्स ने उन दिनों अपनी 'मंच' पत्रिका (1978-79) से सक्रिय कहानी आंदोलन की विधिवत घोषणा की। सक्रिय कहानी ने मानवी संबंधों की पुनर्स्थापना का आग्रह रखकर शोषण विरोधी व्यवस्था की हिमायत की। कुमार संभव, सुरेंद्र मेनन, अब्दुल बिस्मिल्लाह, रमेश बतरा, राकेश वत्स, चित्रा मुद्‌गल, स्वदेश भारती आदि ने इसे बल प्रदान किया।

जनवादी कहानी –

सन 1982 को 'जनवादी लेखक संघ' ने कहानी के इस नए रूप का स्वीकार किया। 'जनवाद' और कुछ न होकर पुराने प्रगतिवाद का ही नया, संशोधित संस्कार था। इसकी आधार-शिला मार्क्सवादी दर्शन ही रही। रमेश उपाध्याय के कहानी-संग्रह 'बदलाव के पहले', 'पैदल अंधेरे में', 'चतुर्दिक', 'राष्ट्रीय राजमार्ग' इस धारा के मुख्य गवाह बने। उदयप्रकाश, मिथिलेश्वर, विजयकान्त, नरेंद्र निर्मोही, दिनेश पालीवाल, नमिता सिंह आदि ने जनवादी कहानियाँ लिखीं। इन पर प्रेमचंद तथा यशपाल जैसे कहानीकारों का प्रभाव रहा है। आठवें दशक का उत्तरार्ध जनवादी कहानी का रहा।

आठवें दशक की कहानी –

इस दशक में निम्नवर्ग तथा निम्न-मध्यवर्ग कथा का केंद्र बनाकर कहानी विकसित होती रही। कहानी में जूझारू मानसिकता आ गई। व्यष्टि और समष्टि दोनों का चित्रण आठवें दशक की कहानी में हुआ। एक तरह से महानगरीय सभ्यता में पिसती मनुष्य की जिंदगी इस दशक की कहानी ने चित्रित की। इस दशक की कहानी ने सामाजिक चेतना को आधार मानकर राजतंत्र, समाजतंत्र के साथ अर्थतंत्र के बढ़ते महत्व की ओर इशारा किया। इस दशक के कहानीकारों में प्रदीप वर्मा, रमेश गुप्ता, मेहरून्निसा परवेज, जवाहर सिंद, रज्जान त्रिवेदी आदि महत्वपूर्ण हैं।

नवें दशक की कहानी –

पीढ़ियों के संघर्ष और अंतराल को नवें दशक की कहानी ने सूक्ष्मता और बहुतायत से चित्रित किया। नारी शिक्षा, नारी चेतना से बदलते नारी-चरित्र का चित्रांकन इस दशक की अपनी विशेषता रही। अन्तर्विरोध और विसंगतियों का पर्दाफाश करने में इस दशक की कहानी नहीं चुकी। स्त्री-पुरूष की स्थिति में भौतिक

उन्नयन और आपसी मनमुटाव की गहराई को एक साथ चित्रित कर नवें दशक की कहानी हमें सही बदलाव का इशारा करती है। दाम्पत्य जीवन का भटकाव इस दशक की कहानी का चिन्ता का विषय बना। विवेकीराय, गिरीराज किशोर, ममता कालिया, देवेंद्र इस्सर, कृष्णा अग्निहोत्री, मंजुल भगत, गोविंद मिश्र की कहानियों को पढ़कर हम इस बात को अनुभव कर सकते हैं कि इस दशक के रचनाकार आते हुए बदलाव के प्रति न सिर्फ सतर्क हैं अपितु सचिंत भी। आधुनिकता का तीव्रबोध इस दशक की कहानियों ने हमें कराया।

बीसवीं सदी के अंतिम दशक की कहानी –

संचार-क्रांति की गति की बदौलत आदमी को इसी दशक ने मोबाईल और पेजर बनाया। फिर अंतर महाजाल (इंटरनेट) ने तो उसे साईबर संस्कृत किया। समाज द्वारा मूल्यों को ताक पर रखा गया। निराशा, व्यंग्य और विद्रोह के त्रिमितीय चक्कर में फँसा मनुष्य-जीवन हिंदी कहानी के सामने एक पहेली बनकर खड़ा हुआ। जितेंद्र भाटिया की 'ग्लोबलायजेशन', जयनंदन की 'विश्व बाजार का ऊँट', 'आई. एस. ओ. - 9000', 'चिअरअप कोलाव्लूम' जैसी रचनाओं में वैश्वीकरण एवं उदारीकरण के परिणामों का सूचक चित्रण है। आर्थिक उदारीकरण के दुष्परिणामों को चित्रित करनेवाली विभांषू दयार की 'ब्लू फिल्म', कृष्णबिहारी की 'दो औरतें' लवलीन की 'चक्रवात' ने आगाह किया। 'हंस' पत्रिका के अघोषित निमंत्रण पर लिखी गई प्रियंवद की 'बूढ़े का उत्सव', मनोज रूपडा की 'खात्मा', जयनंदन की 'छुट्टा सांड़' पढ़कर हमारे ग्लोबल बन जाने का एहसास जरूर होता है। ये कहानियाँ हमारी सायबर कल्चर की ओर इशारा करती हैं। समय का सामाजिक लेखा-जोखा प्रस्तुत करनेवाली कहानियों में उल्लेखनीय हैं - सत्येन कुमार की 'अधूरी चिट्ठी', पंकज बिष्ट की 'मुकाम', गोविंद मिश्र की 'बेहद आदि। स्पष्ट है कि कहानी लेखन की ओर इसकी समृद्धि की दृष्टि से यह दशक निश्चय ही स्मरणीय रहा है।

वर्तमान (इक्कीसवीं) सदी की कहानी –

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक का पूर्वार्ध प्रमुख रूप से विपणन संस्कृति (Marketing Culture) की उथल-पुथल का नजर आता है। अव्यवस्था व्यवस्था का अंग बनी। शिकायती को कटघरे में खड़ा कर दिया गया। जातिगत संकीर्णता अस्मिता की जगह ले ली। नारी-विमर्श, दलित-विमर्श 'अस्मिता' में बदल गई। यहाँ कहानीकार उपरी 'शायनिंग' के उस पार 'आत्मा की आवाज' सुनने के लिए बेताब दिखाई देता है। प्रथम दशक के परिवेश ने हिंदी कहानी के लिए अनेक विषय प्रदान किए, जिनका प्रतिबिंब हम आज की राजेंद्र यादव का 'दो दिवंगत', संजीव की 'ब्लैक होल', महेश दर्पण की 'वर्तमान भविष्य', मृदुला गर्ग की 'हरी बिंदी', मधु कांकरिया का 'बिताते हुए', अब्दुल बिस्मिल्लाह की 'रफ-रफ-मेल', उदयप्रकाश की 'तिरिछ', ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'सलाम', जयप्रकाश कर्दम की 'तलाश', कमल कुमार की 'वैलेंटाईन डे', सूर्यबाला की 'मानुष गंध', मालती जोशी की 'रहिमन धागा प्रेम का', अलका सरावगी की 'दूसरी कहानी', जया जादवानी की 'मुझे ही होना है बार-बार' जैसे संग्रहों में पा सकते हैं। हिंदी कहानी के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान भूला नहीं जा सकता। साथ ही अनुवाद के कारण भी कहानी को समृद्धि

प्राप्त हो चुकी है। अंततः कहना सही होगा कि हिंदी कहानी निरंतर विकास की ओर अग्रेसर है। तत्वतः उसका भविष्य उज्ज्वल है।

4.3 विषय–विवेचन

'कथा मंजरी' कहानी–संग्रह महेन्द्र कुलश्रेष्ठ जी द्वारा संपादित एवं सन 2018 में राजपाल एण्ड सन्ज द्वारा प्रकाशित कुल 12 कहानियों का संकलन है। इस संग्रह में हिंदी कहानी जगत् के प्रतिनिधि कहानीकारों की कहानियों अंतर्भाव किया गया है। कहानी–संग्रह के कुल 12 कहानीकार एवं कहानियाँ इस प्रकार हैं – 1. प्रेमचंद की 'कफन', 2. प्रसाद की 'पुरस्कार', 3. यशपाल की 'सच बोलने की भूल', 4. मोहन राकेश की 'मलबे का मालिक', 5. कमलेश्वर की 'दुःख–भरी दुनिया', 6. निर्मल वर्मा की 'दहलीज', 7. उषा प्रियंवदा की 'वापसी', 8. भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत', 9. ममता कालिया की 'लडकियाँ', 10. महीप सिंह की 'काला बाप गोरा बाप', 11. उदयप्रकाश की 'अपराध' और 12. चित्रा मुदगल की 'लाक्षागृह'। जो निश्चय ही हिंदी कहानी जगत् के महान कहानीकारों की महान एवं अक्षय कहानियाँ हैं। 'कथा मंजरी' में स्थित 12 कहानीकार हिंदी साहित्य जगत् में बेहद महत्वपूर्ण एवं अहम् स्थान रखते हैं, जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से सामाजिक तथ्यों को उघाडते हुए आदर्श नीतिमूल्यों की प्रतिष्ठापना कर एक उचित राह प्रदान की है। इन कहानियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है –

4.3.1 'कफन' – कहानीकार प्रेमचंद का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.1.1 'कफन'– कहानीकार प्रेमचंद का परिचय

मुंशी प्रेमचंद को हिंदी का कथा–सम्राट माना जाता है। प्रेमचंद का जन्म एक साधारण कायस्थ परिवार में बनारस से चार मील दूर 'लमही' नामक गाँव में 31 जुलाई, 1880 ई. को. हुआ। प्रेमचंद का वास्तविक नाम 'धनपतराय' था। प्रेमचंद के ताऊ प्रेमचंद को 'नवाबराय' नाम से पुकारते थे। प्रेमचंद के पिता का नाम अजाबराय श्रीवास्तव था और माता का नाम आनंदी देवी था। पिताजी की आर्थिक स्थिति कमजोर होने से प्रेमचंद की छोटी–सी–छोटी इच्छाएँ अधूरी रही। प्रेमचंद को माँ का अनन्य प्रेम मिला, परंतु दुर्भाग्यवश उनकी सात वर्ष की अबोध अवस्था में ही माँ का देहावसान हो गया। दो साल बाद उनके पिताजी ने दूसरी शादी की। विमाता प्रेमचंद के साथ कठोरता से पेश आती थी। एक मौलवी के पास प्रेमचंद ने उर्दू की शिक्षा ली। जब प्रेमचंद के पिताजी गोरखपुर में रहते थे, तब प्रेमचंद मिशन स्कूल में पढते थे। आर्थिक अभाव ने इस समय प्रेमचंद को त्रस्त किया था। 15 वर्ष की अवस्था में याने 1895 ई. में प्रेमचंद काशी आ गए और अध्ययन करने लगे। इसी समय प्रेमचंद का विवाह हुआ। प्रेमचंद की पत्नी झगडालू थी। प्रेमचंद की पत्नी से नहीं पटी और उन्होंने पत्नी से संबंध–विच्छेद कर लिया। विवाह के बाद एक वर्ष भी नहीं हुआ था कि पिता ने 16 वर्ष के बालक पर पाँच प्राणियों के परिवार का भार लादकर संसार छोड़ दिया। परिवार में विमाता और दो सौतेले भाई भी थे। 1899 ई. में प्रेमचंद को एक पाठशाला में 18 रूपये मासिक वेतन पर अध्यापक की नौकरी मिल गई। इस नौकरी से संतुष्टि होनेपर उन्होंने नियमपूर्वक साहित्य लेखन का कार्य आरंभ किया।

प्रेमचंद ने बनारस के क्वीन्स कलेज से 1904 ई. में मैट्रिक्यूलेशन उत्तीर्ण किया। इसी वर्ष वे अपनी पुरानी नौकरी छोडकर इलाहाबाद के मडल स्कूल में हेडमास्टर हो गए और इसी वर्ष उनकी पहली पत्नी का देहांत हुआ। पढ़ने की लालसा उनके मन में बहुत तीव्र थी पर साधन न होने से वे विवश थे। उन्होंने किसी तरह 'इंटर' और 'बी. ए.' की डिग्री हासिल की। प्रेमचंद ने 1905 ई. में शिवरानी नामक बाल विधवा से दूसरा विवाह किया। शिवरानी देवी हिंदी की अच्छी कहानी लेखिका मानी जाती हैं। शिवरानी देवी ने दो सुधी साहित्यकार श्रीपतराय और अमृतराय हिंदी को दिए। 1905 ई. में प्रेमचंद का कानपुर में तबादला हो गया, वहाँ वे लगभग 3 वर्ष तक रहे। 1908 ई. में वे 'सब डिप्टी इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल' के पद पर नियुक्त हुए। जब उनकी 'सोजेवतन' किताब अंग्रेज सरकार द्वारा जप्त कर ली गई, तब प्रेमचंद ने स्थायी रूप से वे अपने 'नबाबराय' नाम से अपने उपनाम 'प्रेमचंद' के नाम से साहित्य रचना करने लगे। 'जमाना' के संपादक दयानारायण निगम ने उन्हें 'प्रेमचंद' नाम दिया और तब से यही उनका वास्तविक नाम बन गया। 1920 ई. में उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। सरकारी नौकरी के बंधन से मुक्ति पाने के बाद वे अपनी महान कृतियों की सृष्टि में जुट गए। अपनी कृतियों की रचना के साथ-साथ उन्होंने 1923 ई. में 'सरस्वती' प्रेस की स्थापना की। 1928 ई. में वे 'माधुरी' के संपादक हुए। 1920 ई. में उन्होंने स्वतंत्र रूप से 'हंस' का प्रकाशन और संपादन आरंभ किया। इसके साथ उन्होंने 'जागरण' का भी संपादन किया। परंतु इस व्यवसाय में घाटा ही रहा। इसी समय प्रेमचंद को 7-8 सौ रूपये वेतन पर बम्बई की फिल्म कंपनी में बुलावा आ गया। कर्ज चुकाने के लिए प्रेमचंद ने यह नौकरी स्वीकार की, परंतु अधिक दिन तक वहाँ टिक न सके। वे फिल्म लाईन से लौट आए। इस प्रकार अविराम कठिनाईयों से जूझनेवाले, हार और जीत को समभाव से देखनेवाले प्रेमचंद हिंदी साहित्य में एक नया अध्याय छोडकर अंत समय में भी 'हंस' को चलाने की तड़प और चिंता लिए 'मंगलसूत्र' उपन्यास को अधूरा छोडकर 8 अक्तूबर, 1936 को इस दुनिया से परलोक सिधार गए।

कृतित्व –

1. उपन्यास – सेवासदन, वरदान, प्रेमाश्रम, रंगभूमी, कायाकल्प, निर्मला, प्रतिज्ञा, गबन, कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र।
2. कहानी – प्रेम पचीसी, प्रेमकुंज, प्रेम सरोवर, प्रेम पूर्णिमा, प्रेम प्रसून, प्रेम तीर्थ, प्रेम द्वादशी, प्रेरणा, सप्तसरोज, नवनिधि, ग्राम्य जीवन की कहानियाँ, नारी जीवन की कहानियाँ, कफन, अग्नि समाधि, सफर यात्रा, मानसरोवर (आठ भागों में)।
3. निबंध – मेरी पहली रचना, कुछ विचार, मि. शेखसादी, तलवार और त्याग, साहित्य का स्वरूप आदि।
4. नाटक – होनहार बिरवान के चिकने-चिकने पात, कर्बला, प्रेम की वेदी, रूहानी शादी, संग्राम।
5. जीवनी – महात्मा शेखसादी, रामचर्चा, दुर्गादास और विश्व के महापुरूषों की जीवनियाँ।

6. लेख संग्रह - स्वराज्य के फायदे, साहित्य का उद्देश्य, विविध प्रसंग (तीन भागों में)।

7. पत्र-पत्रिकाएँ - हंस, जागरण, माधुरी, मर्यादा आदि।

8. बाल-साहित्य - कुत्ते की कहानियाँ, जंगल की कहानियाँ, तालस्ताय की कहानियाँ, मनमोहक लालची, कलम-तलवार और त्याग (दो भागों में)।

9. अनुवाद - तालस्ताय की कहानियाँ, जर्ज एलियट के 'साइलस मेरीनर' नामक उपन्यास का हिंदी अनुवाद 'सूरदास'। अनतौले फ्रांस के 'थाया' का अनुवाद 'अहंकार'। गाल्सवर्दी के 'सिलवर बक्स' का अनुवाद 'चाँदी की ड़िबिया'। तथा उन्हीं के 'जस्टिस' और 'स्ट्राइक' नामक रचनाओं के हिंदी अनुवाद क्रमश: 'न्याय' और 'हडताल'।

4.3.1.1 'कफन' कहानी का कथानक

'कफन' मुंशी प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इसमें गरीबी और तंगहाली से गुजर रहे निम्न-वर्गीय परिवार की दयनीय दशा का बडा ही मार्मिक चित्रण किया गया है। यह एक यथार्थवादी कहानी है। कहानी के प्रारंभ में जाड़ों की रात में, चमारों के कुनबे में, घीसू और उसका बेटा माधव झोपड़ी के द्वार पर अलाव के सामने बैठकर आलू भूनकर खा रहे हैं। झोपड़ी के अंदर माधव की पत्नी बुधिया प्रसववेदना से पछाड खा रही है, हाथ-पैर पटककर दिल-दहलानेवाला आक्रोश कर रही है। दोनों भी अंदर जाकर उसकी स्थिति को देखना भी नहीं चाहते थे, माधव की चिंता थी की आलू का बडा भाग घीसू हजम न कर पाए और कारण था कि उसकी दशा देखी नहीं जाएगी तो दूसरी ओर ससुर घीसू का कारण ससुर होने की मर्यादा थी। इसलिए दोनों भी तड़प रही, वेदना से ग्रस्त पत्नी और बहू के हाल देखना भी नहीं चाहता थे।

घीसू और माधव दोनों भी असल में कामचोर थे। घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम करता और माधव आधा घंटा काम करता, तो एक घंटे तक चिलम पिता है। इसलिए उन्हें मजदूरी नहीं मिलती है। दो-चार दिन के फाके हो जानेपर ही घीसू पेड़ पर चढ़कर लकडियाँ काटता है और माधव बाजार जाकर उन्हें बेचता है। जब तक पैसे रहते हैं तब तक वे कुछ अन्य काम नहीं करते हैं। उनके घर में कुछ कपड़ों के चिथड़े और मिट्टी के दो-चार बर्तनों के अलावा कुछ भी नहीं होता है। वे कर्ज से लदे हुए हैं। महाजन की गालियों और पिटाई की भी उन्हें चिंता नहीं है। वे बहुत ही दीन हैं, जिनसे कर्ज वसुली की कोई भी आशा नहीं है। फिर भी लोग उनकी हीन-दीन अवस्था पर तरस खाकर उन्हें उधार देते ही रहते हैं। वे दूसरों की खेती से मटर, आलू चुराते हैं और अपना पेट भरते हैं।

माधव की शादी बुधिया से एक साल पहले हो गई और उसके कारण घर में कुछ व्यवस्था आ गई। बुधिया ही दोनों का पेट भरती है और तब से वे दोनों ज्यादा ही अकड़ने लगते हैं। जब उन्हें कोई काम पर बुलाता, तो वे उनसे दुगुनी मजदूरी माँगते हैं। बुधिया जब झोपड़ी में प्रसव वेदना से तड़प रही है और ये दोनों उसके जल्दी मरने की कामना करते हैं, उन्हें आलू खाना, पानी पीना और सोने की ज्यादातर चिंता है। वे आलू खाकर, पानी पीकर वही अलाव के सामने सो जाते हैं। सुबह माधव देखता है कि बुधिया मर चुकी

है। इस बात से दोनों हाय-हाय करके छाती पीटने लगते हैं। पड़ोसी आकर उनकी सात्वंना करने लगते हैं। अब दोनों को लकड़ी और कफन के प्रबंध की चिंता सताने लगती है। वे पहले जमींदार के पास पैसे माँगने जाते हैं, इससे पैसे मिलने पर दिंडोरा पीटकर बनिए और महाजन से भी कुछ-न-कुछ पैस पाते हैं। इस प्रकार एक घंटे में दोनों के पास पाँच रूपए की अच्छी रकम जमा हो जाती है। कहीं से अनाज और लकडियाँ भी मिल जाती हैं। बाद में एक हल्के-से कफन ढूँढने के चक्कर में बाजार में दोनों घूमने रहते हैं। तब दोनों किसी दैवी प्रेरणा से मधुशाला में जा पहुँचते हैं। घीसू शराब की एक बोतल लेता है। कुछ चिखौना और तली हुई मछलियाँ भी लेते हैं। खाने-पीने की धुन में कफन लेने की बात कहीं उड़ जाती है। माधव का सवाल पूरे सामाजिक रीति-रिवाजों के पीछे छुपे घिनौने सच का पर्दाफाश करता है - ''कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते-जी तन ढ़ाँकने को चीथड़ा भी न मिले उसे मरने पर नया कफन चाहिए।'' घीसू भी कहता है कि ''कफन को तो जलना ही है, वह थोड़े ही बहू के साथ जानेवाला है।''

घीसू और माधव दोनों को बुधिया के रात के अंतिम संस्कार की चिंता नहीं है। उन्हें न जवाबदेही का खौफ है, न बदनामी की फिक्र। इन भावनाओं को उन्होंने बहुत पहले ही जीत लिया था। लोग जब पूछेंगे तो क्या जबाब देना चाहिए इसके बारे में भी वे सोचते हैं। तब घीसू कहता है, ''कह देंगे कि रूपये कमर से खिसक गए, बहुत ढूँढ़ा, मिले नहीं। लोगों को विश्वास तो न आएगा, लेकिन फिर वही रूपए देंगे।'' उन्हें लगता है कि वे पाँच रूपए पहले मिल जाते, तो कुछ दवा-दारू कर लेते। बुधिया के प्रति उनके मन में श्रद्धा भाव उत्पन्न होता है। वे सोचते हैं कि बुधिया तो चली गई, पर जाते-जाते अच्छा खाना खिला गई। आज उन्हें जो खाना मिला था, वह उन्हें कभी उम्रभर न मिला था। इसलिए दोनों भी प्रसन्न होकर भगवान से बुधिया को वैकुंठ ले जाने की प्रार्थना करते हैं। उन्हें पूरा विश्वास है कि बुधिया को बहुत अच्छा कफन मिलेगा, जिन लोगों ने पहले पैसे दिए हैं, वे ही फिर से देंगे। पर अब लोग पैसे न देकर कफन ही देंगे।

दोनों भरपेट खाने के साथ भिखारी को बचा अन्न देने के गौरव, आनंद और उल्लास का भी अनुभव कहते हैं। माधव के फिर से बुधिया के वैकुंठ जाने की बात पर घीसू की इस यथार्थ वाणी से प्रेमचंद ने पूरी समाज-व्यवस्था पर करारा तमाचा जड़ा है, ''हाँ बेटा, वैकुंठ में जाएगी। किसी को सताया नहीं, किसी को दबाया नहीं, मरते-मरते हमारी जिंदगी की सबसे बडी लालसा पूरी गई। वह न वैकुंठ में जाएगी, तो ये मोटे-मोटे लोग जाएँगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं और अपने पाप को धोने के लिए गंगा नहाते हैं और मंदिरों में जल चढ़ाते हैं।'' फिर दोनों शराब के नशे में खडे. होकर गाने लगते हैं, ''ठगिनी क्यों नैंना झमकावे! ठगिनी?'' फिर दोनों नाचते हैं, उछल-कूद भी करते हैं, भावविभोर होते हैं, अभिनय भी करते हैं और आखिर नशे से मदमस्त होकर वहीं गिर पडते हैं।

कहानी-कला की दृ ष्टि से 'कफन' एक सफल कहानी है। प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से निम्न-वर्गीय समाज की गरीबी, तंगहाली, विवशता तथा दयनीयता का मार्मिक चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी का प्रारंभ रोचकता के साथ होता है और कहानी उत्सुकता तथा जिज्ञासा की सृष्टि करते हुए आगे बढ़ती है। कहानी के दो मुख्य पात्र घीसू और माधव कथानक को आगे बढाते हैं। प्रेमचंद ने इन दोनों पात्रों का बखूबी मनोविश्लेषण किया है। बुधिया के मृत्यु उपरांत कफन के लिए पैसे जुटाकर दोनों पिता-पुत्र कफन लाने

बाजार जाते हैं। ऐसा लगता है कि कफन लाने के बाद बुधिया की अंत्यविधि के साथ कहानी चरम-सीमा पर पहुँचेगी। परंतु दोनों के मधुशाला में पहुँचने पर पाठक के मन में कहानी का अंतिम परिणाम जानने की उत्सुकता और अधिक बढ़ जाती है। दोनों नशे में बेहोश होकर गिर जाते हैं, यहाँ कहानी तो समाप्त होती है, लेकिन पाठकों के मन में यह जिज्ञासा प्रबल बन कर रह जाती है कि बुधिया के शव का क्या हुआ होगा? और आखिर कफन का प्रबंध कैसे होगा? अंत्यविधि कैसे होगी? इस प्रकार पाठक को सोच-विचार करने के लिए विवश करता कहानी का आकस्मिक अंत कहानी को निखार प्रदान करता है।

4.3.1.2 'कफन' कहानी का चरित्र-चित्रण

'कफन' कहानी में घीसू और माधव दो ही प्रमुख पात्र हैं। बुधिया और जमींदार आदि के प्रसंग कथानक के विकास में सहायक होकर उपस्थित हुए हैं। 'घीसू' और 'माधव' दोनों में भी 'घीसू' ही कहानी के केंद्र में रहता है, जिसके इर्द-गिर्द कहानी घूमती रहती है। इसलिए यहाँ घीसू की चरित्रगत विशेषताओं से परिचित होंगे।

घीसू 60 साल का बुढ़ा है। वह माधव का पिता और बुधिया का ससूर है। उसके पत्नी की मृत्यु हो गई है। वह अपने बेटे माधव और बहू बुधिया के साथ झोपड़ी में रहता है। उसके नौ लड़के थे। उसके घर में दो-चार मिट्टी के बर्तनों के अलावा और कोई संपत्ति नहीं है। वह कर्ज से लदा हुआ है। वह लोगों की गालियाँ, मार भी खा जाता है, पर इसका उसे कोई गम नहीं है। वह अत्यंत दीन है, अत: उससे कर्ज वसुली की जरा भी आशा नहीं की जा सकती है, फिर भी लोग उसपे तरस खाकर कुछ-न-कुछ कर्ज देते ही हैं। वह दूसरों की खेती से मटर, आलू उखाडकर लाता है और भून-भून कर खा लेता है या दस-पाँच ऊख उखाडकर रात को चूसता है। घीसू ने इसी तरह से अपने साठ साल काटे हैं। वह चमार कुनबे का है, जो गाँव में बदनाम है। बेशर्मी, लाचारी और दीनता का अदभुत समन्वय उसके चरित्र की एक अनोखी विशेषता है। घीसू की चरित्रगत विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

1. **आलसी और कामचोर घीसू** - घीसू लालसी एवं कामचोर व्यक्ति है। वह एक दिन काम करनेपर तीन दिन तक आराम करता है। इसलिए उसे कही मजदूरी नहीं मिलती है। घर में मुट्ठीभर भी अनाज मौजूद हो, तो उसके लिए काम करने की कसम थी। जब दो-चार फाके पड़ जाते, तो घीसू पेड पर चढ़कर लकड़ियाँ तोड़ लाता है। पिछले साल माधव की शादी हुई और बुधिया ने सारा घर संभाल लिया तब से तो घीसू और भी आलसी तथा कामचोर बन जाता है। उसे कोई काम पर बुलाता है, तो वह उनसे दुगुनी मजदूरी माँगता है। उसका विश्वास है कि भगवान उसको कहीं-न-कहीं से दे ही देंगे।

2. **भूख एवं गरीबी से लाचार घीसू** - माना कि घीसू के भूख एवं गरीबी के लिए वह खुद स्वयं ही जिम्मेदार है और कुछ समाज-व्यवस्था के परिणाम स्वरूप वह इस दयनीय प्रवृत्ति को होने के लिए विवश है, लेकिन फिर भी भूख और गरीबी की उसकी लाचार भयानक स्थिति कहीं-न-कहीं मन को कचोटती है। प्रसव वेदना से ग्रस्त तड़पती बहू बुधिया मरने को है और ये बाप-बेटे अलाव के सामने से उसकी स्थिति तक देखकर आना नहीं चाहते, क्योंकि भूने हुए आलू का अधिकतर हिस्सा इनमें से कोई एक न खाए। उन्हें

चिंता सताती है कि कहीं बच्चा हो गया तो सोंठ, गुड़, तेल का इंतजाम कैसे होगा, क्योंकि गरीबी इतनी थी कि झोपड़ी में दो-चार मिट्टी के बर्तनों के अलावा कुछ भी नहीं है। शरीर पर ओढ़े कपड़ों के चिथड़े नंगेपन को ढ़ाँकते मात्र हैं। कई दिनों के फाके को घीसू सहने के लिए विवश है। बीस साल पहले ठाकुर की बारात की दावत में भरपेट खाना खाया था और अब बुधिया के मरने के बाद उसके कफन के पैसों से। इस प्रकार घीसू की भूख एवं गरीबी की दयनीय स्थिति पाठक के मन को द्रवीत कर देती है।

3. **घिनौनी मानसिक प्रवृत्ति** - कहानी में घीसू की संवेदनशून्यता बनी हुई है। मरणासन्न बहू की शोचनीय स्थिति में भूने हुए आलू खाने की होड़ तथा पेटभर खाने की बात तथा उनकी चिंता इंसानियत की दृष्टि से घृणा पैदा करती है। चालाकी से कफन के लिए पैसे जमाना और फिर शराब और खाने में उसे उड़ाकर, नाच-झूमकर वहीं पर गिर पड़ना एक प्रकार से घीसू के घिनौनी मानसिक प्रवृत्ति पर प्रकाश ड़ालता है। घीसू बेशर्मी के इस हद से पार है, जहाँ ऐसे करने में उसे न जबाबदेही का खौफ है, न ही बदनामी की फिक्र, क्योंकि उम्र के 60 साल तक वह इसी अभ्यास का आदि है।

4. **चालाक घीसू** - घीसू वृत्ति से एक चालाक इंसान है, इसके उदाहरण कहानी में यत्र-तत्र बिखरे हुए मिलते हैं। वह किसानों से कई ज्यादा विचारवान है। इसलिए किसानों के विचार-शून्य समूह में शामिल नहीं होता। वह बैठकबाजों की कुत्सित मंडली में जा मिलता है। बुधिया के मृत्यु के पश्चात् जब कफन और लकड़ियों की व्यवस्था का प्रश्न उपस्थित होता है, तब घीसू जमींदार के पास जाता है। जमींदार उससे नफरत करते हैं, क्योंकि घीसू बुलाने पर कभी भी काम पर नहीं जाता है, मगर आज खुद को आवश्यकता पड़ने पर जमींदार की खुशामद करने लगता है। घीसू बड़ी चालाकी से जमींदार की खुशामद करके उनसे दो रूपए निकालता है। वह लोगों के सामने जमींदार के नाम का ढिंढ़ोरा पीटता है और चालाकी से बनिए और महाजन से पैसा निकालता है। इस तरह वह एक घंटे में पाँच रूपए की अच्छी रकम जमा कर लेता है। बाजार में कफन ढूँढ़ते हुए वह विचार प्रकट करता है कि कफन तो जलने ही वाला है, वह थोडे. ही बुधिया के साथ जानेवाला है, कैसा रिवाज है। यहाँ दैवी प्रेरणा से मधुशाला में पहुँच जाता है। वह जानता है जमाना रिवाजों और दस्तूरों को निभाने के लिए विवश है, इसलिए कफन के सारे पैसे उड़ाने के बाद भी उसे यह यकीन होता है कि बुधिया को कफन अवश्य मिलेगा।

5. **दार्शनिक घीसू** - कहानी में कई स्थानों पर घीसू के संवाद उसके घोर दार्शनिक होने को ज्ञात कराते हैं। घीसू का इतना दार्शनिक को जाना, जो असल जिंदगी में बिल्कुल निठल्ला और अविचारी है, उसका शराब पीने के उपरांत दार्शनिक स्वभाव का दर्शन, शायद, शराब के नशे के कारण हो। बहरलाल कफन के पैसे को खाने-पीने में उड़ाते हुए घीसू दार्शनिक के भाँति बोलता है, ''हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है। तो क्या उसे पुन्न न होगा?'' यहाँ घीसू की दयनीय मानसिकता उजागर होती है, क्योंकि बुधिया के मरने से ही उनके भरपेट खाने-पीने का प्रबंध हो चुका है। भरपेट खाने-पीने के बाद बचा हुआ खाना भिखारी को देने में गौरव, आनंद और उत्साह का भी अनुभव वह करता है। वहाँ भिखारी को बोलते समय भी तीव्र व्यंग्य घीसू द्वारा क्रिया जाता है, जिसमें घृणा के भाव अभिव्यंजित हैं, ''बड़ी गाढ़ी कमाई के पैसे हैं।'' याने बुधिया की जान जाने के बाद कफन खरीदने के लिए लोगों से जुटे पैसे।

बुधिया के वैकुंठ जाने की बात पर समूची समाज-व्यवस्था पर करारा प्रहार करता हुआ घीसू कहता है, ''....वह न वैकुंठ जाएगी, तो क्या वे मोटे-मोटे लोग जाएँगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं और अपने पाप को धोने के लिए गंगा नहाते हैं और मंदिरों में जल चढ़ाते हैं।'' साथ ही नवीन शाश्वत सत्य को उद्घाटित करते हुए बुधिया की मृत्युपर घीसू कहता है, ''क्यों रोता है बेटा, खुश हो कि वह मायाजाल से मुक्त से गई, जंजाल से छूट गई। बड़ी भाग्यवान थी, जो इतनी जल्द मायामोह के बंधन तोड़ दिया।''

इस प्रकार घीसू के चरित्र में आलसी कामचोर तथा चालाक प्रवृत्ति, भूख और गरीबी की समस्या तथा घिनौनी मानसिक प्रवृत्ति के दर्शन जरूर होते हैं, लेकिन कहीं-न-कहीं उसकी इस दशा के लिए क्रूर सामाजिक व्यवस्था एवं नीतियाँ जिम्मेदार हैं। एक तरह से वह इस व्यवस्था के खिलाफ अपनी वृत्ति से विद्रोह कर रहा है, बदला ले रहा है। अत: समाज-व्यवस्था द्वारा शोषित घीसू के यथार्थ चरित्र को प्रेमचंद ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से उद्घाटित किया है।

4.3.2 'पुरस्कार'– कहानीकार जयशंकर प्रसाद का परिचय, कथानक एवं चरित्र-चित्रण

4.3.2.1 'पुरस्कार' – कहानीकार जयशंकर प्रसाद का परिचय

हिंदी साहित्य-संसार में अपने अनूठी शैली द्वारा युगदृष्टा और युगद्रष्टा रहे छायावादी काव्यधारा के प्रवर्तक जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी, 1889 में वाराणसी स्थित एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उनकी प्राथमिक शिक्षा घर पर ही शुरू हुई थी और कवींस कालेज वाराणसी में उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करनी शुरू की थी, किंतु माता-पिता और बड़े भाई की असमय पर हुई मृत्यु के कारण उन्हें अपनी शिक्षा बीच में ही छोड़कर परंपरागत व्यवसाय संभालते हुए दिनभर दुकान में बैठना पड़ता था। प्रसाद जी ने प्राचीन, ऐतिहासिक और सांस् तिक या दार्शनिक स्त्रोतों से प्रेरणा ग्रहण कर अपना रचना-संसार निर्माण किया है। संस्कृत भाषा पर उनका अधिकार था। इसके अतिरिक्त हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, बंगाली आदि अन्य भाषाओं के भी वे ज्ञाता थे। कोमल प्रवृत्ति के प्रसाद जी ने अपने निजी जीवन में अत्याधिक दु:ख सहन किए। एक ओर माता-पिता, भाई के साथ-साथ क्रमश: पहली और फिर दूसरी पत्नी की हुई मृत्यु ने उनके जीवन में दु:ख की श्रृंखलाएँ निर्माण की तो दूसरी ओर परंपरागत व्यवसाय ठीक तरह से न चलने के कारण उन्हें ऋण-ग्रस्त होना पड़ा। अपने निजी जीवन में निर्माण हुए दु:ख, दर्द और अभावग्रस्तता पर उन्होंने अपने कोमल, करूणामय, भावुक तथा सौंदर्यनिष्ठ स्वच्छंदी स्वभाव के बल पर विजय प्राप्त कर अपनी रचनाओं में सौंदर्य और प्रेम की व्यंजना की है।

प्राचीन भारत के गौरवपूर्ण इतिहास का, संस्कृति का, साथ ही साथ भारतीय दर्शन का सूक्ष्मता से अध्ययन करनेवाले प्रसाद जी के व्यक्तित्व पर बौद्ध दर्शन का अत्याधिक प्रभाव था। इसी प्रभाव के अनुरूप उन्होंने अपनी रचनाओं में बौद्धकालीन घटनाओं, चरित्रों को आधारभूमि के रूप में अपनाकर गौरवपूर्ण भारतीय इतिहास की टूटी हुई कड़ियों को वर्तमान युग से जोड़ा है। बौद्ध-दर्शन की करूणा, शांति जैसी आचार-विचारधाराओं की प्रतिष्ठापना उन्होंने अपनी रचनाओं में की है। जिसका मूल उद्देश्य विश्व-मानवता और विश्व-मैत्री है। अपनी रचनाओं में उन्होंने पूरी मानवता का विराट दर्शन कराया है। प्रसाद जी ने अपने

कुल 48 वर्ष के अल्पकालीन जीवन में मानव मंगल के उच्चतर संदेश को अपने साहित्य संसार के माध्यम से सम्यकवाणी देने का प्रयास किया है। उनका देहांत 14 जनवरी, 1937 में हुआ।

तित्व –

1. काव्य – 'कानन', 'कुसुम', 'करूणालय', 'प्रेम-पथिक', 'महाराणा का महत्व', 'झरना', 'आँसू', 'लहर' और 'कामायनी'।
2. नाटक – 'कामना', 'विशाख', 'एक घूँट', 'अजातशत्रु', 'जनमेजय का नागयज्ञ', 'राज्यश्री', 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त' और 'ध्रुवस्वामिनी'।
3. उपन्यास – 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' (अधूरा)।
4. कहानी-संग्रह – 'छाया', 'आँधी', 'प्रतिध्वनि', 'इंद्रजाल' और 'आकाशदीप'।
5. निबंध-संग्रह – 'काव्य और कला' तथा अन्य निबंध।
6. प्रसाद संगीत – 'नाटकों में प्रयुक्त गीतों का एकत्र संकलन'।
7. विविध – 'चित्राधार'।

4.3.2.2 'पुरस्कार' कहानी का कथानक

प्रसाद जी की यह कहानी बौद्धयुगीन भारतीय राजनीतिक स्थिति की पहचान करानेवाली प्रमुख ऐतिहासिक कहानी है। बौद्धकालीन कोशल जनपद की कृषक कन्या मधुलिका और मगध जनपद के राजकुमार अरूण का प्रेम-प्रणय इस कहानी का कथ्य विषय है। व्यक्ति-प्रेम से अधिक राष्ट्र-प्रेम का गौरव करनेवाली यह कथा कोशल जनपद की राजधानी श्रावस्ती में घटती है। कथानक के अनुसार कोशल जनपद में हर साल कृषि महोत्सव संपन्न होता है। यह महोत्सव परंपरा से चला आ रहा है। इसमें राष्ट्रीय नियम के अनुसार राज्य में रहनेवाले किसी भी किसान का अच्छा खेत पुरस्कार-स्वरूप चुन लिया जाता है और स्वयं राजा उस चुने हुए खेत पर एक दिन के लिए किसान बनकर हल चलाता है, बीज बोता है। उस दिन कृषक महोत्सव संपन्न होता है, सारे नगरवासी सहित पड़ोस के राजा और राजकुमार भी इसमें सम्मिलित होते हैं। इसके बदले में उस किसान को, जिसका खेत पुरस्कार के लिए चुना जाता है, उसे भू-संपत्ति के चौगुना मूल्य बड़े ही अनुग्रह-पूर्वक उसी समय दिया जाता है, जब राजा बीज बोकर उत्सव मनाते हैं। इस साल मधुलिका का खेत कृषि उत्सव के लिए चुना गया है। यह मधुलिका वीर सिंह मित्र की कन्या है, जिन्होंने एक बार अपनी वीरता से कोशल राज्य की रक्षा की थी। मधुलिका का खेत पुरस्कार के स्वरूप चुनने के कारण कृषक बने महाराज को बीज देने का सम्मान उसी को मिलता है। कृषक बने महाराज द्वारा बीज बोने का प्रधान कार्य संपन्न होने पर मधुलिका को उसके खेत का चौगुना मूल्य सुवर्ण मुद्राओं से भरा थाल अत्यंत अनुग्रह से दिया जाता है, किंतु मधुलिका उन सारी सुवर्ण मुद्राओं को महाराज पर न्यौछावर करते हुए बिखेर देती है। मधुलिका के इस व्यवहार से राजा सहित सारे उपस्थित जन अचम्बित हो उठते हैं। इस पर

वह बड़े ही सविनय भाव से यह बता देती है कि यह भूमि मेरे पितृ पितामहों की है, इसे बेचना अपराध है, इसका मूल्य स्वीकारना मेरे सामर्थ्य के बाहर है।

इस कृषक महोत्सव में मगध का राजकुमार अरूण भी उपस्थित होता है, जो मधुलिका के भोले सौंदर्य के प्रति अभिभूत होता है। महोत्सव के दूसरे दिन अपनी भूमि छिनने के कारण दु:ख से विकल हुई मधुलिका के सामने वह अपना प्रेम-प्रस्ताव रखता है। किंतु कृषक बालिका रही मधुलिका उसके प्रेम-प्रस्ताव का स्वीकार न करके इसे अपना ही अपमान समझकर अरूण को दुत्कारती है, चोट खाया हुआ अरूण चला जाता है किंतु अरूण का अपमान करनेवाली मधुलिका स्वयं भी आहत होती है।

मधुलिका का खेत पुरस्कार-स्वरूप चुने जाने से अब वह एक ओर खेतीहीन बन जाती है, तो दूसरी ओर राजा द्वारा दिया जानेवाला प्रतिदान न स्वीकार कर उसे गरीबी और विपत्तियों से जूझना पड़ता है। अब वह मधुक वृक्ष के नीचे एक छोटी-सी फूस की झोपड़ी बनाकर उसमें रहती है। दूसरों की खेती में कठोर परिश्रम करके रूखा-सूखा खाकर वह अपना गुजारा करती है। इसी अभावग्रस्त अवस्था में दिन, सप्ताह, महीने, वर्ष बीतते हैं। ऐसे ही शीतकाल की एक रात मधुलिका अपनी झोपड़ी में बिते हुए दिनों का स्मरण करती है और अचानक उसे अरूण द्वारा रखे गए प्रेम प्रस्ताव की याद आती है। उसी समय मगध से निर्वासित हुआ अरूण संयोगवश मधुलिका के ही द्वार पर आश्रय की खोज में आ पहुँचता है। यह पुनर्भेट मधुलिका और अरूण दोनों के लिए एक-दूसरे का साथी बनने की प्रेरणा देती है। दोनों के बीच प्रेम पनपता है और अपने प्रेम में आहत हुई मधुलिका का उपयोग अरूण अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा पूरी करने के लिए करता है। वह मधुलिका को उसके खेत के बदले श्रावस्ती दुर्ग की समीपवाली जंगली जमीन माँगने के लिए कहता है। अरूण के प्रस्तावानुसार मधुलिका महाराज से भेंट कर जंगल से व्याप्त श्रावस्ती दुर्ग के समीप जमीन प्राप्त करती है। इसी जमीन पर अरूण अपने एक सौ सैनिकों को जमा करके दुर्ग पर आक्रमण करने की योजना बनाता है। मधुलिका को महारानी बनाने का विश्वास दिखानेवाले अरूण को अपने बाहुबल पर गर्व है, किंतु दुर्ग पर आक्रमण करने की उसकी योजना सुनकर मधुलिका बेचैन-सी हो उठती है। उसके मन में एक ओर अपना निजी प्रेम है, जिसमें उसने अपने-आप को पूरी तरह से न्यौछावर कर दिया है, तो दूसरी ओर राष्ट्र के प्रति रहा अपना कर्तव्य। मधुलिका के मन में उत्पन्न हुए इसी अंतर्द्वंद्व के बीच उसे अपने पिता की याद भी आती है। इसके परिणामस्वरूप मधुलिका के मन में स्थित व्यक्ति-प्रेम, निजी-प्रेम पर राष्ट्र-प्रेम हावी हो जाता है और वह अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्रेमी अरूण द्वारा रचे गए षड्.यंत्र की जानकारी सेनापती को देती है। जानकारी के अनुसार सेनापती अरूण को बंदी बनाकर महाराज के सामने प्रस्तुत करता है। सभा मंड़प में उपस्थित सारे नगरवासी अपने शत्रु अरूण को प्राणदंड़ सजा की माँग करते हैं, महाराज भी उसे प्राणदंड़ की सजा सुनाते हैं। उसी समय अपने पिता की तरह फिर इक बार अपने दुर्ग की रक्षा करनेवाली मधुलिका को महाराज पुरस्कार माँगने का आग्रह करते हैं। किंतु मधुलिका के मन में अरूण के प्रति रहे चिरकाल समर्पित प्रेम भाव से वह अपने लिए भी प्राणदंड़ का पुरस्कार माँगती हुई अपने व्यक्तिगत निस्सीम प्रेमभाव को व्यक्त करने हेतु बंदी किए गए अरूण के पास जाकर खड़ी होती है। जहाँ कहानी का कथानक समाप्त होता है।

प्रसाद जी की सभी कहानियाँ पुरानी परिपाटी से हटकर नए तंत्रो द्वारा प्रस्तुत हुई हैं। उन्होंने प्रस्तुत लंबी कहानी को कुल चार दृश्यों में विभाजित किया है। चरित्र-प्रधान कहानी होने से चारों दृश्यों में कथानक की गतिशीलता के साथ-साथ चरित्रों की चारित्रिक विशेषताएँ विकसित होती हुई प्रखरता से उभरकर व्यक्त होती हैं। कथानक की दृष्टि से देखे तो इसका प्रारंभ, मध्य, चरमबिंदु और अंत स्पष्ट है। रोचक वातावरण में चरित्रों का परिचय कराते हुए कहानी का कथ्य प्रारंभ से मध्य और चरमबिंदु की ओर विकसित होता है। राष्ट्र के विरूध्द शत्रु बनकर आक्रमण करने की योजना बनानेवाले अरूण की जानकारी मधुलिका सेनापती को देती है। इसी रहस्यात्मकता में कहानी का परमबिंदु और अंत एकसाथ उभरकर सामने आते हैं। प्रसाद जी ने अपनी अन्य कहानियों के समान ही इस कहानी का अंत भी बड़ी कुशलता से किया है। मधुलिका का आंतरिक द्वंद्व राष्ट्र-प्रेम के प्रति झुकता है और उसकी जानकारी नुसार बंदी बना लिए अरूण को प्राणदंड़ की सजा होती है। इसपर मधुलिका भी अपने लिए प्राणदंड़ पुरस्कार माँगती है। किंतु उसकी माँग के अनुसार उसे वह सजा मिली या नहीं इस बात पर कहानी के अंत में प्रकाश नहीं पड़ता। जिससे पाठक के ह्रदय में कहानी के अंत के बाद भी काफी देर तक मधुलिका का चरित्र रहता है। इसप्रकार इस कहानी का प्रारंभ जितना प्रभावात्मक हुआ है, उसका अंत भी उतना ही उत्सुकतापूर्ण, भावपूर्ण, कुछ अंश तक नाटकीय किंतु बड़ा ही प्रशंसनीय हुआ है।

4.3.2.3 'पुरस्कार' कहानी का चरित्र-चित्रण

अपनी हर कहानी के हर चरित्र के व्यक्तित्व का विकास उसके आत्मचिंतन द्वारा ही विकसित करना प्रसाद जी की कुशलता है। इसका प्रमाण प्रस्तुत कहानी 'पुरस्कार' में मिलता है। इस कहानी में कुल छ: पात्र रेखांकित हैं, जिनमें से केवल दो ही प्रमुख पात्र हैं - कहानी की नायिका मधुलिका और नायक अरूण। इनके अतिरिक्त महाराज, सेनापती, प्रतिहारी और अग्निसेन नामक चार पात्र अंकित हैं। मगर कथानक की दृष्टि से गौण पात्र हैं। अत: प्रधान कथानक की दृष्टि से इसमें केवल दो ही पात्र महत्वपूर्ण हैं, इसमें से कहानी की प्रमुख पात्र एवं नायिका मधुलिका का सामान्य परिचय निम्नवत है -

'मधुलिका' पुरस्कार कहानी की प्रधान चरित्र एवं कहानी की नायिका है। वह कोशल राज्य के अन्यतम वीर सिंह मित्र की एकमात्र कन्या है। वीर सिंह मित्र जिन्होंने कोशल और मगध राज्य के बीच हुए युद्‌ध में अपने शौर्य के बल पर कोशल की लाज रखी थी, ऐसे श्रेष्ठ वीरपिता की वह एकमात्र वीर पुत्री थी। अपने पिता के शौर्य, वीरता, धैर्य जैसे पितृगुण मधुलिका में भी विद्‌यमान हैं। अपने देश की सुरक्षा के खातिर अपना तन-मन न्यौछावर करने की कर्तव्यमय भावना रखना, आवश्यकता पड़ने पर प्रासंगिकता से अपनी जिम्मेदारी निभाना, देशप्रेम के खातिर अपना निजी स्वार्थ, सुख त्यागना आदि देशप्रेमी पिता के गुण अपने-आप ही मधुलिका में उतरते हुए नजर आते हैं। कौशेयवसन परिधान करके वह अपने ही खेत में एक दिन के लिए कृषक बनकर हल चलानेवाले महाराज को लज्जा और सम्मान से युक्त मुस्कुराहट के साथ बीज देने का काम करती है। कृषक बालिका होने से वह स्वाभिमानी और स्पष्टवादी है। अपने इन्हीं निजी गुणों के कारण वह कृषि महोत्सव के लिए राजा द्वारा उसका खेत चुनने पर राष्ट्र-नियम का स्वाभिमान से सम्मान करती है, किंतु उस खेत का प्रतिदान वह स्वीकारती नहीं। वह महाराज को बड़ी नम्रता से, किंतु पूरी स्पष्टता

से पितृ–पितामहों की भूमि बेचना अपराध कहती है। इतनी ही स्पष्टता से वह मगध राजकुमार अरूण द्वारा प्रस्तुत प्रेम–भावना का अस्वीकार करती है। मधुलिका इतनी स्वाभिमानी है कि वह प्रतिदान का स्वीकार नहीं करती।

खेतीहीन होने से वह अभावग्रस्त होती है। इससे निर्माण हुई स्थिति से वह खुद संघर्ष करती है। अपने लिए फूस की झोपड़ी बनाती है और दूसरे कृषकों के खेत में काम करके अपनी उपजीविका चलाती है। इन दिनों मधुलिका का चरित्र एक स्वाभिमानी, स्वावलंबी, परिश्रमी, स्पष्टवादी, श्रमिक तथा कृषक बालिका आदि गुणों से विकसित होता है। उसके चरित्र में बदलाव तब आता है, जब मगध का राजकुमार निर्वासित होकर आश्रय की तलाश में दुबारा उसके सामने खड़ा होता है। अब मधुलिका का चरित्र एक प्रेमिका के रूप में विकसित होता है। प्रेमी अरूण द्वारा कही गई सारी बातों पर विश्वास रखकर मधुलिका सच्ची प्रेमिका बनने का प्रयास करती है। वह अपने–आप को अरूण के प्रति न्यौछावर कर देती है। इतना ही नहीं वह अपने प्रेमीभाव में इतनी प्रामाणिकता रखती है कि अरूण द्वारा रचे गए षड्यंत्र में वह राष्ट्र–द्रोह जैसा दुष् त्य करने के लिए भी उद्विग्न होती है। किंतु जब उसे सही ज्ञान होता है, तब इसमें स्थित प्रेमिका के स्थान पर एक सच्ची राष्ट्रप्रेमी, वीरप्रेमी की चारित्रिक विशेषता अपने ही प्रेमी के विरोध में खड़ी होने के लिए आंतरिक शक्ति प्रदान करती है। किंतु महाराज द्वारा अपने प्रेमी को दी गई प्राणदंड़ की सजा सुनकर फिर उसके मन में अपने निजी प्रेम की भावना विकसित होती है और वह अपने लिए भी प्राणदंड़ ही माँगती है। अगर वह चाहती तो महाराज से अपने प्रेमी अरूण की प्राणदंड़ की सजा को माफ भी करवा सकती थी, किंतु उसने वैसा नहीं किया। यहाँ मधुलिका के चरित्र में अंतर्द्वंद्व की विशेषता अधिक मात्रा में उभरी है। राष्ट्र–प्रेम या निजी–प्रेम इन दोनों मानसिक भावनाओं के बीच मधुलिका पूरी सावधानी के साथ समय–समय पर अपना निर्णय बदल लेती है। जब राष्ट्र पर संकट आता है, तब वह एक सच्चे देश प्रेमी के समान अपना निजी प्रेम राष्ट्र के खातिर दफना देती है और राष्ट्र सुरक्षित होने को बाद जब अपने प्रेमी को प्राणदंड़ की सजा होती है, तब अपने निजी प्रेमभाव–स्वरूप अपने प्रेमी के साथ मरने की इच्छा व्यक्त करती है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में मधुलिका का चरित्र प्रधान होने के कारण विविध चारित्रिक विशेषताओं से परिपूर्ण दिखाई देता है।

4.3.3 'सच बोलने की भूल' – कहानीकार यशपाल का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.3.1 'सच बोलने की भूल' – कहानीकार यशपाल का परिचय

हिंदी कथाकारों में प्रेमचंद के बाद उनकी परंपरा का अनुसरण करनेवालों में यशपाल प्रमुख हैं। उनका जन्म पंजाब में फिरोजपुर छावणी में सन 1903 ई. में हुआ। यशपाल की माँ हिंदी प्रेमी थीं। उन्होंने यशपाल को बचपन में ही हिंदी की शिक्षा दी थी। प्रारंभिक शिक्षा के लिए यशपाल को सात वर्ष तक गुरूकुल कांगडी में रखा गया। उसके बाद उनकी सारी शिक्षा नेशनल कलेज लाहोर में हुई। यशपाल के व्यक्तित्व में जीवन की विविधता और गहन अनुभव समाहित है। उन्होंने देश की आजादी के लिए एक क्रांतिकारी का बाना धारण किया। शिक्षा प्राप्त करने समय जब आप भगतसिंग और सुखदेव के संपर्क में आए तब से वे

स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने लगे। भगतसिंग और चंद्रशेखर आजाद के वे अनन्य सहयोगी रहे। क्रांतिकारी आंदोलन के संपर्क में आने के कारण उन्हें अनेक वर्षों तक जेल की भीषण यातनाएँ भोगनी पडीं। यशपाल का विवाह लाहौर सैंट्रल जेल में 7 अगस्त 1936 को प्रकाशवती के साथ हो गया। प्रकाशवती ने उन्हें जेल से छुड़ाने के लिए काफी मेहनत की और मार्च 1938 में यशपाल को जेल से मुक्ति दिलवाई। 'विप्लव' की सफलता हेतु उनकी पत्नी प्रकाशवती जी की ऐतिहासिक भूमिका रही है। जेल से छूटने के बाद उन्होंने सबसे पहले 'पिंजडे की उड़ान' नाम से अपनी कहानियों का एक संग्रह प्रकाशित किया और तब से उन्होंने अपना सारा जीवन साहित्य को अर्पित कर दिया। अनेक विधाओं में साहित्य की रचना करके यशपाल हिंदी के कथाकारों में चोटी के कथाकार बन गए।

जेल से छूटने के बाद यशपाल जी कम्युनिष्ट पार्टी के एक सक्रिय कार्यकर्ता और समर्थक रहे। अपने राजनीतिक क्रिया-कलापों के साथ-साथ उन्होंने अपने सहित्य-सृजन की गति को भी अबाध रखा। अनेक उपन्यासों और कहानियों का सृजन करके उन्होंने हिंदी सहित्य को समृद्ध बनाया। 'विप्लव' नामक मासिक पत्र प्रकाशित कर उन्होंने अपनी विचारधारा का प्रचार-प्रसार किया। यशपाल प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार थे। मार्क्सवादी विचार-दर्शन से प्रभावित होने के कारण सामाजिक प्रगति और जीवन संघर्ष में उनकी अटूट आस्था थी। सामाजिक समस्याओं के प्रति आपकी दृष्टि यथार्थवादी रही है। आपके इस समष्टि-चिंतन का विशिष्ट एवं यथार्थवादी रूप आपकी कहानी-कला के वस्तुपक्ष तथा शिल्पपक्ष को रूपायित करता है। आपकी अधिकांश कहानियों का उद्देश्य सामाजिक भावना से युक्त है। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, शोषण, अंधविश्वास आदि के विरूद्ध जीवनभर प्रभावशाली संघर्ष किया। भारतीय जनमानस पर यशपाल के साहित्य और विचारों की प्रभावशाली छाप रही है।

कृतित्व –

1. **उपन्यास –** 'दादा कामरेड', 'पार्टी कामरेड', 'देशद्रोही', 'दिव्या', 'मनुष्य के रूप', 'अमिता', 'झूठा सच', 'बारह घण्टे', 'अप्सरा का शाप', 'क्यों? फँसे?', 'मेरी तेरी उसकी बात'। अनुदित – 'पक्का कदम', 'जुलैखा', 'फसल', 'जनानी डोढ़ी', 'चलनी में अमृत'।
2. **कहानी-संग्रह** – 'पिंजडे की उड़ान', 'वो दुनिया', 'तर्क का तुफान', 'ज्ञानदान', 'अभिशप्त', 'भस्मावृत्त चिंगारी', 'फूलों का कुर्ता', 'कर्म युद्ध', 'उत्तराधिकारी', 'चित्र का शीर्षक', 'तुमने क्यों कहा था मैं सुंदर हूँ?', 'उत्तमी की माँ', 'ओ भैरवी', 'सच बोलने की भूल', 'खच्चर और आदमी', 'भूख के तीन दिन', 'लैम्प शैड'।
3. **निबंध** – 'न्याय का संघर्ष', 'मार्क्सवाद', 'गांधीवाद की शवपरीक्षा', 'चक्कर क्लब', 'बात-बात में बात', 'रामराज्य की कथा', 'देखा सोचा समझा', 'जग का मुजरा', 'बीबीजी कहती हैं मेरा चेहरा रोबीला है', 'मैं क्यों लिखता हूँ'।
4. **आत्मकथा** – 'सिंहावलोकन भाग – 1, 2, 3, 4'।

5. **यात्रासाहित्य** – 'नशे-नशे की बात', 'रूप की परख', 'गुड बाई दर्दे दिल'।

4.3.3.2 'सच बोलने की भूल' कहानी का कथानक

यशपाल जन-जीवन के सशक्त कहानीकार हैं। सामाजिक जीवन के विविध पहलुओं यथा प्रेम, पाखण्ड, शोषण, वर्गभेद, बुर्जुआ समाज की स्वार्थान्धता, संकीर्णता एवं मध्यम वर्ग की विवशता, आर्थिक विषमता आदि का आपने व्यंग्यपूर्ण मार्मिक चित्रण किया है। यशपाल की प्रस्तुत कहानी 'सच बोलने की भूल' में साधारण मनुष्य की मनोदशा यथा भय, आतंक, कौतूहल आदि का बड़ा ही यथार्थ चित्रण हुआ है। प्रस्तुत कहानी मानवीय मनोविज्ञान की अद्भुत कहानी है।

प्रस्तुत कहानी के आरंभ में कहानी-लेखक यशपाल शरद के आरम्भ में स्वास्थ्य सुधार के लिए दफ्तर से दो मास की छुट्टी लेकर पहाड़ी प्रदेश में अपनी पत्नी और सात वर्ष की बेटी के साथ चले जाते हैं। उस प्रदेश में बहुत छोटे-छोटे पड़ाव होने के कारण एक खच्चर किराए पर लेकर सामान खच्चर पर लाद लेते हैं और तीनों हंसते-बोलते, पड़ाव-पड़ाव पैदल यात्रा करते हैं। रात पड़ाव की किसी दुकान पर या डाक-बंगले में बिता देते हैं। कोई स्थान अधिक सुहावना लग जाता तो वहाँ दो रात ठहर जाते हैं। एक पहाड़ी पर वे तीनों डाक बंगले में ठहरते हैं। वह बंगला छोटी-सी पहाड़ी के पूर्वी आँचल में स्थित है। बंगले का चौकीदार सूर्यास्त का दृश्य जरूर देखने की नसीहत देता है और पहाड़ी पर जाने का रास्ता भी बता देता है। लेखक की पत्नी सुबह आठ मील पैदल चल चुकी है। उसे संध्या फिर पैदल तीन मील चढ़ाई पर जाने और लौटने का उत्साह अनुभव न हुआ, परन्तु बेटी साथ चलने के लिए मचल उठती है। चौकीदार से पूछने पर चौकीदार आश्वासन देता है – लगभग डेढ़ मील सीधी सड़क है और फिर पहाड़ी पर अच्छी साफ पगडंडी है। जंगली जानवर इधर नहीं हैं। सूर्यास्त के बाद कभी-कभी छोटी जाति के भेड़िए जंगल से निकल आते हैं लेकिन भेड़िए भेड़-बकरी के मेमने या मुर्गियाँ उठा ले जाते हैं, आदमियों के समीप नहीं आते।

लेखक किसी खतरे के न होने से आश्वासित होकर बेटी के साथ सूर्यास्त से तीन घंटे पूर्व ही चोटी की ओर चल पड़ते हैं। सावधानी के लिए लेखक ने टार्च साथ ले लेते हैं। पहाड़ी तक डेढ़ मील रास्ता बहुत सीधा-साफ था। चढ़ाई भी अधिक नहीं थी। पगडंडी से चोटी तक चढ़ने में भी कुछ कठिनाई नहीं हुई। पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर उन्हें पश्चिम की ओर बर्फानी पहाड़ों की श्रृंखलाएं फैली हुई दिखाई देती हैं, जहाँ का दृश्य बेहद अद्भुत था और जिससे बच्ची उल्लास से किलक-किलक उठती है। सूर्यास्त के दृश्य का सम्मोहन बहुत प्रबल था, परन्तु ध्यान भी था-रास्ता दिखाई देने योग्य प्रकाश में ही डाक बंगले को जाती जंगलाती सड़क पर पहुंच जाना उचित है। बच्ची सूर्यास्त के उस अद्भुत दृश्य को विस्मय से मुंह खोले देखती ही रहती है। कई बार लेखक के दुलार से समझाने पर भी वह पूरे सूर्य के पहाड़ी की ओट में हो जाने से पहले लौटने के लिए तैयार नहीं होती है। सहसा सूर्यास्त होने पर भी पहाड़ी की चोटी पर अब भी प्रकाश था पर वे दोनों ज्यों-ज्यों पूर्व की ओर नीचे उतरते हैं, अंधेरा घना होता जाता है और फिर घने अंधेरे में लेखक और उनकी बेटी दोनों जंगल में भटक जाते हैं।

टार्च की सहायता से लेखक आगे बढ़ने लगते हैं, परंतु घने जंगल और घने अंधेरे तथा बढ़ने वाली सर्दी के कारण लेखक सहसा घबरा जाते हैं। वे अनजाने जंगल के घने अंधेरे में ढ़ाई घंटे तक चलते रहते हैं। बच्ची को कहानी सुनाकर बहलाना अब सम्भव न हो पाता है। वह जंगल में भटक जाने के भय से माँ को याद कर ठुसक-ठुसक कर रोने लगती है। बंगले में अकेली, घबराती पत्नी के विचार ने लेखक और भी व्याकुल हो जाते हैं। जंगल में वृक्ष के नीचे रात काट लेना भी सम्भव नहीं होता है। वे रात के दस बजे जंगल से निकल कर खेतों में पहुंचते हैं। कुछ खेत पार करने पर उन्हें कुछ दूरी पर एक झोपड़ी दिखाई देती है।

लेखक उस झोपड़ी के पास पहुँच जाते हैं और झोपडीवालों को जगाकर ड़ाक बंगले तक पहुँचाने की बहुत गिड़गिड़ा कर बिनती करते हैं। झोपड़ी के किसान को लगता है कि यह कोई शहर से आया चोर होगा और वह डाँटकर लेखक को भगाने का प्रयास करता है। परन्तु जैसे-तैसे किसान की स्त्री के मन में दया उत्पन्न होती है और वह किसान को दरवाजा खोलकर उन्हें अंदर लेने को कहती है। किसान की स्त्री लेखक और उनकी बेटी को ऊपर के तल्ले में जगह देती है और किसान और उसकी स्त्री नीचे फूस ड़ालकर रात गुजारने का निश्चय करते हैं। घर में आटा नहीं था, इसलिए किसान की स्त्री बच्ची के लिए गुड़ का एक टुकडा और एक लोटा जल खाट के समीप रखती है। बच्ची के गले में मोतियों की कंठी देखकर स्त्री को अपने बच्चों की याद आती है। उसकी लड़की की शादी हो गई है और लड़के को शहर का चस्का लगा है, दो बरस से उसका कोई पता नहीं है। लड़का जहाँ भी हो, लोग उसे भी शरण दे, ऐसी प्रार्थना वह भावुक होकर देवी माँ से करती है। बच्ची थोड़ा गुड़ खाकर और जल पीकर तुरन्त सो जाती है। लेखक को अपनी असुविधा की चिन्ता से अधिक चिन्ता होती है, डाक बंगले में उनकी प्रतीक्षा में असहाय पत्नी की। उन दोनों के न लौट सकने के कारण वह कैसे बिलख रही होगी। कहीं यही न सोच बैठी हो कि वे दोनों भेड़िया या आतताइयों के हाथ पड़ गए हैं और उन्हें खोजने के लिए डाक-बंगले के चपरासी को लेकर चोटी की ओर न चल पड़ी हो।

पौ फटती-सी जान पड़नेपर, जरा उजाला और हो जाए फिर यहाँ से चल निकलने की बात लेखक सोचते लगते हैं। एक झपकी और ले लेना चाहता हैं कि नीचे से दबी-दबी फुसफुसाहट सुनाई देती है। स्त्री धीमे स्वर में किसान से कह रही होती है, ''आह! संभल कर, आहट न करो। गर्दन ऐसे दबा लेना कि आवाज न निकले। चीख न पड़े। छुरा ताक में है।'' स्त्री-पुरुष का परामर्श सुन कर लेखक के रोम-रोम से पसीना छूट जाता है। हत्यारों से शरण माँग कर उनके पिंजड़े में बन्द होने का एहसास उसे होता है। वे सोचते हैं कि खुद ही पुकार कर कह दे कि उनके पास जो कुछ है ले लो, लड़की के गले की कंठी ले लो और उनकी जान बक्शो। फिर मर्द की आवाज सुनाई देती है, ''बेचारी को रहने दूँ, मन नहीं करता!'' फिर स्त्री बोलती है, ''उंह, मन न करने की क्या बात है! उसे रहने देकर क्या होगा! कहां बचाते-छिपाते फिरोगे?'' यह सुनने पर तो लेखक आतंक से नींद में बेसुध बच्ची को बाँहों में ले लेते हैं। भय की उत्तेजना से उनका हृदय धक-धक करता है। फिर वे सोचते हैं कि उन्हें स्वयं ही पुकार कर, गिड़गिड़ा कर प्राण-रक्षा के लिए प्रार्थना करें, परन्तु गले से आवाज नहीं फूटती है। उनके मन में यह भी खयाल आता है कि यदि वे जान लेंगे

कि उन्होंने किसान और स्त्री की बात सुन ली है तो कभी छोड़ेंगे ही नहीं। परंतु थोड़ी देर बाद का दोनों का संवाद सुनकर लेखक को पता चलता है कि यह तो मुर्गी के काटे जाने की मंत्रणा थी। लेखक को स्त्री का स्वर फिर सुनाई देता है, ''मुर्गी के लिए इतना क्यों बिगड़ रहे हो? शहर के बड़े लोगों की बड़ी बातें होती हैं। खातिर से खुश हो जाएं तो बख्शीश में जो चाहें दे जाएं। मामूली आदमी नहीं हैं। लड़की के गले में मोतियों की कंठी नहीं देखी?''

लेखक को अब दूसरी चिंता सताने लगती है, क्योंकि उस समय उनकी जेब में केवल ढाई रुपए थे। लड़की के गले में कंठी नकली मोतियों की, रुपए सवा की होती है। वे सोचते हैं कि दिए के उजाले में वे देहाती कंठी को परख नहीं सकेंगे। कुछ बताए बिना चुपचाप ही कंठी दे दी जाए और बाद में चालीस-पचास रुपए मनीआर्डर से भेज दिया जाए। इतने में किसान पुराने अखबार में लिपटी एक बड़ी-सी पुड़िया लेकर आता है। किसान की बातों से उसकी दयनीय स्थिति ज्ञात होती है। वह लेखक से कहता है, ''यह लो, यह तुम्हारे ही भाग्य के थे। घर में आटा नहीं था, जो दो रोटी बना देते। इसीलिए तो मैं तुम्हें रात में हाँके दे रहा था पर घरवाली को बच्ची पर तरस आ गया। खेती के लिए जमीन ही कितनी है। अंडे बेच कर ही गुजारा करते हैं। बरसात के अन्त में पापी पड़ोसी लोगों की मुर्गियों में बीमारी फैली तो हमारी मुर्गियाँ भी मर गईं। मुर्गियाँ बचाने के लिए सभी कुछ किया....पर उनका काल आ गया था, बची नहीं। हाँ, यह मुर्गा बड़े जीवट का था। बीमारी झेल कर भी बच गया था। उसके लिए तुम आ गए। एक छोटी-सी मुर्गी काल की आंख से बच कर छिप रही थी, वह बच्ची के लिए हो जाएगी। इस समय तुम्हारा काम चले, हमारा देखा जाएगा!'' किसान और उसकी स्त्री बहुत आशा से उनकी खातिर करते हैं। अपना अन्तिम मुर्गा, चूजा भी उनके लिए काट देते हैं।

पेट भर नाश्ता करने के बाद लेखक ने संकोच के साथ इस समय उनकी जेब में केवल ढ़ाई रूपए होने के कारण वे मनीऑर्डर से पैसे भेजने का आश्वासन देकर बच्ची के गले की कंठी उतार कर दे देते हैं। स्त्री कंठी हाथ में लेकर प्रसन्नता से किलक उठती है और उसे मठ में चढ़ाकर मानता माँगने की इच्छा व्यक्त करती है ताकि उनकी मुर्गियों पर देवताओं की कोप-दृष्टि कभी न हो। तब किसान की स्त्री की सरलता लेखक के मन को छू जाती है और वे न रह कर से कह देते हैं, ''तुम्हें धोखा नहीं देना चाहता, कंठी के मोती नकली हैं।'' यह सुनकर स्त्री कंठी उनकी ओर फेंक देती है। घृणा और झुंझलाहट से उंगलियाँ छिटका कर लेखक से बोलती है, ''रखो, इसे तुम्हीं रखो। शहर के लोगों से धोखे के सिवा और मिलेगा क्या?'' किसान भी ठगे जाने से क्रुद्ध हो जाता है और वह डाक-बंगले का रास्ता बताने के लिए उनके साथ नहीं जाता है। लेखक राह पूछ-पूछ कर बंगले पर पहुँच जाते हैं।

डाक-बंगले पर पहुँचने के बाद लेखक की पत्नी डाक-बंगले के सामने अस्त-व्यस्त और विक्षिप्त की तरह धरती पर बैठी हुई दिखाई देती है। वह बच्ची को कलेजे पर दबा कर चीखकर रोती है और फिर लेखक से चिपट-चिपट कर रोती रहती है। पत्नी के संभल जाने पर लेखक उसे रात के अनुभव सुनाते हैं। रात उनके और बच्ची के असहाय अवस्था में गला काट दिए जाने के काल्पनिक भय में पसीना-पसीना होकर काँपने की बात सुनकर पत्नी भी भय प्रकट करती है। लेखक पत्नी को बच्ची की कंठी के लिए किसान स्त्री के

लोभ और कंठी के विषय में सच्चाई जान कर उनके खिन्न हो जाने की बात भी बता देते हैं। सच्चाई बताने के लिए पत्नी उनको उलाहना देती है। लेखक अपने दोनों भूलों के लिए लज्जा का अनुभव करते हैं, एक तो गला काटे जाने की काल्पनिक भय में पसीना-पसीना हो जाने की भूल के लिए और दूसरी कंठी के बारे में सच बोल देने की भूल के लिए!

इस प्रकार लेखक ने यहाँ वर्गीय विषमता का बड़ा ही मार्मिक चित्र उपस्थित किया है। लेखक जैसे शहरी लोग और उच्च वर्गीय लोगों के पास आर्थिक संपन्नता है, वे छुट्टी लेकर आराम से सैर सपाटे कर सकते हैं और दूसरी ओर देहातियों को दिन भर कष्ट करने पर भी दो वक्त की रोटी तक नहीं मिलती है। साथ ही लेखक ने यह भी स्पष्ट किया है कि शहरी लोग देहातियों को बार-बार धोखा देते हैं। देहाती लोग अंधश्रद्धा के चपेट में आ जाते हैं। कभी-कभी झूठ बोलना अधिक सुविधाजनक होता है, पर सच तो सच ही होता है। न चाहते हुए भी बाहर आ ही जाता है। सच या झूठ बोलने की अजीब कश्मकश को कहानी बेहद रोचक तरीके से बयान करती है। इस प्रकार यात्रा-वर्णन शैली में लिखी हुई यह कहानी साधारण मनुष्य की मनोदशा का बड़ा ही मार्मिक एवं यथार्थ चित्रण करती है।

4.3.3.3 **'सच बोलने की भूल' कहानी का चरित्र-चित्रण**

प्रस्तुत कहानी चरित्र-प्रधान है। इसमें अर्थसंपन्न शहरी और अर्थहीन देहाती पात्रों की मनोदशा का बेहद यथार्थ और मार्मिक चित्रण किया गया है। यात्रा-वर्णन शैली में लिखी हुई इस कहानी के केंद्र में खुद लेखक हैं, जो खुद कहानी को बयान करते हैं। कहानी के मुख्य पात्रों में लेखक, किसान तथा किसान की स्त्री मुख्य रूप से उभरकर सामने आते हैं, तो अन्य गौण पात्रों में लेखक की पत्नी, बेटी तथा डाक-बंगले का चौकीदार आते हैं।

लेखक घुमक्कड़ प्रवृत्ति के होने के कारण स्वास्थ्य सुधार हेतु दफ्तर से दो महीनों की छुट्टी लेकर पहाड़ी प्रदेश में घूमने जाते हैं। पूरी कहानी में प्रकृति-सौंदर्य के प्रति उनका आकर्षण भी झलक उठता है। इसीलिए तो चौकीदार के कहने पर पहाड़ी पर सूर्यास्त का अद्भुत नजारा देखने वे जाते हैं। जब देर होने से घनी रात में जंगल में वे राह भटक जाते हैं, तब अपने साथ अपनी सात साल की बच्ची के होने के खयाल से वे बेहद घबरा जाते हैं। झोपड़ी के किसान परिवार से वे गिडगिड़ाकर मदत की प्रार्थना करते हैं। आसरा पाने पर देहाती हीन-दीन जीवन की उस झोपड़े की बदबू और मैले बिस्तर से उनका दम घूटता है। जैसे-तैसे एक रात गुजारने की ही बात थी, पर सुबह किसान और उसकी स्त्री की धीमे स्वर में गला काटे जाने की बात को लेकर काल्पनिक भय की उत्तेजना से उनका हृदय धक-धक करता है। किसान की झोपड़ी में खाने के लाले पड़ने के बावजूद वे बच्ची के गले की कंठी और कुछ-न-कुछ तो हासिल होगी ही, इस आशा से लेखक और उनके बेटी की खातिरदारी करते हैं। इसपर लेखक खुद को बेहद लज्जित महसूस करते हैं कि कंठी तो मामूली है और जेब में ज्यादा पैसे नहीं। कंठी के बारे मे सच बताए की नहीं इस बारे में भी वे दुविधा में फँस जाते हैं। लेकिन जब स्त्री कंठी को मठ में चढ़ाकर मानता माँगने की इच्छा व्यक्त करती है ताकि उनकी मुर्गियों पर देवताओं की कोप-दृष्टि कभी न हो। तब किसान की स्त्री की सरलता को देख

लेखक कंठी के बारे में सच्चाई बताते हैं। लेकिन इस सच बोलने की भूल से वे किसान और उसकी स्त्री के घृणा के पात्र बन जाते हैं। अपनी दयनीय अवस्था के प्रति लज्जा, बच्ची के साथ शिकंजे में फँसे जाने से भय की अनुभूति और अपनी पत्नी एवं बच्ची की चिंता आदि मानव मन की यथार्थ मनोदशा का चित्रण लेखक के चरित्र में अभिव्यक्त होता है।

कहानी के अन्य दो मुख्य पात्रों में किसान और किसान की स्त्री इन दोनों का अंतर्भाव होता है। देहात में आम किसान के रोजमर्रा व्यथित जीवन की दासताँ का प्रतिनिधित्व इस कहानी के किसान की व्यथा करती है। जमीन कम है, कष्ट ज्यादा है, प्रकृति के प्रकोप के भागीदार भी ज्यादातर यही होते हैं, झोपड़ी में खाने के लाले पड़े हुए हैं, हालात से मजबूर अंधश्रद्धा का दामन पकड़े हुए हैं और दूर कहीं विराने जंगल में जीवन बसर करने के लिए मजबूर इस किसान परिवार की व्यथा-कथा कहानी बखूबी बयान करती है। इस कहानी का किसान तो लेखक और उसकी बच्ची को पहले ही पनाह नहीं देना चाहता है, क्योंकि उसके पास शहरवालों के लिए न रहने की जगह है, न की खाने के लिए भोजन। अपनी स्त्री के लालच के कारण वह भी उन्हें पनाह देता है और खुद की पर्वाह न करते हुए उन्हें भरपेट खिलाता है।

किसान का बेटा भी शहर में जाकर बस गया है, जिसका कुछ अता-पता नहीं। वे दोनों किसान पति-पत्नी अकेले दयनीय जीवन जीने के लिए विवश हैं। पर जब लेखक के माध्यम से शहरी लोगों द्वारा ठगे जाने की बात सामने आती है, तब वह भी क्रुद्ध हो उठता है और उन्हें डाक-बंगले तक छोड़ने भी नहीं जाता है। किसान की स्त्री लालची जरूर है, क्योंकि वह किसान के विरोध के बावजूद बच्ची के गले की कंठी देखकर ही इनसे कुछ-न-कुछ हासिल होने की आशा संजोए लेखक की मदद करती है। मन में लालच जरूर पालते हुए, लेकिन फिर भी अपनी-ही स्थिति बेहद दीन होने के बावजूद भी वह लेखक और उनकी बेटी को खाना खिलाती है। उसे तो बस उस कंठी का लालच था, जिसे मठ में चढ़ाकर वह मानता माँगना चाहती थी ताकि उनकी मुर्गियों पर देवताओं की कोप-दृष्टि कभी न हो। लेकिन फिर अपेक्षाभंग एवं धोखे की स्थिति में लेखक एवं पूरे शहरवालों से घृणा करती है।

4.3.4 'मलबे का मालिक' – कहानीकार मोहन राकेश का परिचय, कथानक एवं चरित्र-चित्रण

4.3.4.1 'मलबे का मालिक' – कहानीकार मोहन राकेश का परिचय

मोहन राकेश का जन्म 8 फरवरी 1925 ई. को जालंधर में हुआ। पंजाब में ही उनकी संपूर्ण शिक्षा हुई। इनके पिता वकील होते हुए भी बहुत साहित्यानुरागी थे। इसलिए राकेश जी को बचपन से ही घर में पर्याप्त साहित्यिक वातावरण प्राप्त हुआ। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय में एम. ए. तक की शिक्षा प्राप्त की और अध्यापक के रूप में अपना जीवन प्रारंभ किया। वे प्रारंभ में डी. ए. बी. कलेज, जालंधर में हिंदी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य करते रहें। उन्होंने क्रमश: जालंधर, शिमला और दिल्ली में थोडे-थोडे दिन तक कार्य किया। उन्होंने साहित्य-सेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना दिया।

मोहन राकेश हिंदी साहित्य के महान साहित्यकार हैं। बचपन से ही उनकी साहित्य की ओर रूचि रही है। वे अमृतसर से लेकर, बम्बई, शिमला आदि में भ्रमण करते हुए कहानियों की रचना करते रहे। भ्रमण

करने में राकेश जी की इतनी आधिक रूचि भी कि उनको 'डाक बंगले का कहानीकार' कहा जाता था। इस व्यापक भ्रमण के कारण उनकी कहानियों में जीवन के विविध और व्यापक विषय दिखाई देते हैं। कहानी लेखक के अतिरिक्त आप उपन्यासकार और नाटककार भी हैं। मोहन राकेश उन कथाकारों में से एक प्रमुख कथाकार हैं, जिन्होंने कहानी को एक गहराई और गरिमा प्रदान की है। राकेश जी स्वतंत्र प्रवृत्ति के और स्वाभीमानी व्यक्ति थे। इसलिए व्यवस्था के कठोर अनुशासन को वे खटकते रहते थे। यही कारण था कि जीवन में उन्होंने अनेक नौकरियाँ भी छोड़ीं। उन्होंने थोडे. दिनों तक 'सारिका' और 'नई कहानी' का संपादन कार्य भी किया। इस तरह जीवन के अंतिम दिनों तक वे व्यवस्था के अंतर्द्वंद्व और टकराहट के भीतर जीते रहे। उन्होंने अपनी रचनाओं में ज्यादातर शहरी मध्यमवर्गीय लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं का चित्रण किया है। उनकी अनेक कहानियों पर फिल्में बनी हैं। 'आषाढ का एक दिन' और 'आधे अधूरे' नाटकों का मंचन आज भी लोगों के मन-मस्तिष्क को झकझोर रहा है। इन दो नाटकों को क्लासिक का दर्जा हासिल है। उन्होंने हिंदी नाटक-कला को रंगमंचीय श्रेष्ठता और नई पहचान दी। वे उच्च कोटि के निबंधकार भी हैं। उन्होंने अपने निबंधों को आज के संदर्भो के साथ जोड़ दिया है। ऐसे महान साहित्यकार का 2 अगस्त, 1972 को स्वर्गवास हुआ।

कृतित्व -

1. उपन्यास - 'अंधेरे बंद कमरे', 'अंतराल', 'न आनेवाला कल'।
2. कहानी संग्रह - 'क्वार्टर तथा अन्य कहानियाँ', 'पहचान तथा अन्य कहानियाँ', 'नए बादल', 'मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ'।
3. नाटक - 'आषाढ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस', 'आधे-अधूरे', 'अंड़े के छिलके' (एकांकी-संकलन)।
4. डायरी - 'मोहन राकेश की डायरी'।
5. यात्रा-वृत्तांत - 'आखरी चट्टान तक'।
6. निबंध-संग्रह - 'परिवेश'।
7. अनुवाद - 'मृच्छकटिक', 'शाकुंतलम्'।
8. संपादन - 'सारिका', 'नई कहानी'।
9. अन्य - 'ड. काला कपोला से बातचीत', 'फाँसी का औचित्य'।
10. बाल साहित्य - 'गिरगिट का सपना'।

4.3.4.2 'मलबे का मालिक' कहानी का कथानक

'मलबे का मालिक' मोहन राकेश की एक प्रसिद्ध एवं अति चर्चित कहानी है। यह कहानी सन 1956 ई. में प्रकाशित हुई थी, जो 'नए बादल' कहानी-संग्रह में संकलित है। जात-पाँत एवं धर्म-सम्प्रदाय के नाम पर किए गए भारत-विभाजन पर गहरा व्यंग्य इस कहानी में परिलक्षित होता है। यह कहानी भारत-पाक विभाजन के परिणामस्वरूप उत्पन्न वैमनस्य का चित्रण करती है। देश-विभाजन पर हिंदी ही नहीं, संभवत: अन्य भारतीय भाषाओं में लिखी गई कहानियों में भी यह सर्वश्रेष्ठ कहानी है। कथानक या कथावस्तु ही किसी कहानी का आधार-स्तंभ होता है। कहानी का संपूर्ण ढ़ाँचा उसी कथानक पर खड़ा होता है। कथानक में मौलिकता, रोचकता, प्रवाहमयता, जिज्ञासा, विश्वसनीयता आदि गुण अपेक्षित हैं।

'मलबे का मालिक' कहानी का कथानक भारत-विभाजन और साम्प्रदायिकता के कारण हुई विनाशलीला पर आधारित है। कहानी में वृद्ध मुसलमान गनी मियाँ की आत्मपीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है। जब भारत स्वतंत्र हुआ तब अब्दुल गनी का परिवार अमृतसर के बांसा बाजार में रहता था। वह देश के विभाजन से कुछ माह पूर्व लाहौर चला गया था। परंतु उसका बेटा चिरागदीन, पुत्रवधू जुबैदा तथा उनकी दोनों लड़कियाँ किश्वर और सुल्ताना उसके कहने के बावजूद भी नहीं जाते हैं। उन्हें अपने नए मकान का मोह था, जो उन्होंने बड़े चाव से बनाया था। दूसरा, उन्हें रक्खा पहलवान का भरोसा था, जिसके उनके परिवार के साथ बड़े मधुर संबंध थे। कतु विभाजन के साथ ही एक ऐसी विषैली हवा चली कि मानव-मानव का दुश्मन बन गया।

रक्खे पहलवान ने मकान के लालच में चिराग, उसकी पत्नी और बेटियों की हत्या कर दी। लोगों ने घर के सामान को लूट लिया। फिर किसी ने उसमें आग लगा दी। अब केवल वहाँ मकान का मलबा ही शेष रह गया। रक्खा पहलवान उस मलबे का मालिक बन बैठा। साढ़े सात वर्ष बाद हकी का मैच देखने के लिए लाहौर से अनेक मुसलमान अमृतसर आए थे। उनमें चिरागदीन का पिता अब्दुल गनी भी आया था। हॉकी मैच के बहाने वह अपने घर को देखने आया था। अब्दुल गनी जब बाजार बांसा के उस वीरान बाजार में आता है और वहाँ की नई और जली हुई इमारतों को देखकर जैसे भूल-भूलैया में पड़ जाता है। इतने वर्षो बाद भी लोगों के मन से विद्वेष की भावना पूरी तरह कम न हुई थी। गनी मियाँ के सामने एक रोते हुए बच्चे को देखकर एक लड़की ने जो कुछ कहा उससे उसके मन में बैठी भावना का पता चलता है, ''चुपकर मेरा वीर! रोएगा तो तुझे वह मुसलमान पकड़कर ले जाएगा।'' गनी का पुत्र चिरागदीन इसी मुहल्ले का दर्जी था। मनोरी नाम का एक युवक गनी मियाँ को पहचान लेता है और गनी के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए उसे मलबे में बदल चुके उसके मकान को दिखाता है। मोहल्ले का कोई आदमी उसे नहीं बताता कि उसके बेटे और उसके परिवार को मकान हड़पने के लिए रक्खे पहलवान ने मार दिया था। रक्खा पहलवान अब्दुल गनी के घर के मलबे को अपनी जागीर समझता आ रहा था। गनी जब अपनी बाँहें फैलाए रक्खे पहलवान से मिलने को आतुर होता है, तो संवेदनशून्य रक्खे पहलवान पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देख गनी की बाँहें उसी तरह रह जाती हैं। वह अपने पुत्र और परिवार के कातिल को अपना मित्र समझकर दुआएँ देकर वापस चला जाता है।

कथानक संक्षिप्त है, जिसे क्रमबद्ध घटनाक्रम से उचित विस्तार प्रदान किया गया है। कथानक में मौलिकता, रोचकता, विश्वसनीयता, प्रवाहमयता, उत्सुकता आदि गुण मिलते हैं। कहानी का आरंभ, मध्य और अंत प्रभावशाली है। कहानी का अंत नई कहानी के अनुरूप है, जो पाठक के समक्ष अनेक प्रश्नों को छोड़ जाता है। अत: कथानक की दृष्टि से 'मलबे का मालिक' एक सफल कहानी कही जा सकती है। जहाँ तक शैली का प्रश्न है, 'मलबे का मालिक' कहानी वर्णनात्मक एवं मनोविश्लेषणात्मक शैली में लिखी गई है। कुछ स्थानों पर संवादात्मक शैली का प्रयोग भी हुआ है। कहानी में मूलत: घटनाओं की प्रधानता है किंतु उनका मार्मिक उल्लेख एवं सांवेदनिक वर्णन होने से कहीं भी घटनाओं का विवरण जैसा नहीं लगता, यह कहानी की विशेष सफलता है।

4.3.4.3 'मलबे का मालिक' कहानी का चरित्र-चित्रण

पात्र एवं चरित्र-चित्रण कहानी का दूसरा प्रमुख तत्व होता है। मलबे का मालिक कहानी में पात्रों की संख्या कम है। कहानी में अब्दुल गनी, रक्खा पहलवान मुख्य पात्र हैं। मनोरी और लच्छा गौण पात्र हैं। सभी पात्रों विशेषत: गनी मियाँ और रक्खे पहलवान की मनोदशा को अति सूक्ष्मता से अभिव्यंजित किया गया है। कहानीकार ने रक्खे पहलवान के माध्यम से साम्प्रदायिकता के जहर को तथा अब्दुल गनी के माध्यम से मानवीय उदारता को प्रकट किया है। अब्दुल गनी का पूरा परिवार समाप्त हो गया है। उसका रोम-रोम अपने परिवार के लिए रो रहा है। अब वह अपने घर के मलबे का भी मालिक नहीं, बल्कि कोई दूसरा ही (रक्खा पहलवान) अपने-आप को उस मलबे का मालिक समझता है। जिस पर विश्वास हो, वही जब विश्वासघात करे, धोखा दे दे तो कोई कैसे अपने-आपको सुरक्षित रख सकता है? ऐसे समाज-विरोधी तत्वों को दंगे आदि द्वारा एक सशक्त माध्यम प्राप्त हो जाता है, अपने स्वार्थो की पूर्ति करने के लिए। ये ही तत्व दंगा भी करवाते हैं। दंगे के मूल में व्यक्ति की घोर स्वार्थपरता ही है, जहाँ वह अपने निहित स्वार्थ के कारण दूसरे के जीवन को तुच्छ समझता है और दंगे के बहाने अपने षड्.यंत्र में लिप्त होता है। इस कहानी का मूल स्वर भी यही है, जिसे रक्खे पहलवान के चरित्र में देखा जा सकता है।

प्रस्तुत कहानी के अंत में कुत्ते का रक्खे पहलवान की ओर मुँह करके बारम्बार गुर्राकर भौंकना हत्यारे एवं अपराधी की ओर स्पष्ट संकेत है। लेकिन कहानी के अंत में फिर भी गनी मियाँ दूसरों के लिए अल्लाह से दुआ माँगता है - ''अल्लाह तुम लोगों को सेहतमंद रखे! जीते रहो और खुशियाँ देखो।'' मनोरी और लच्छा भी कहानी को आगे बढ़ाते हैं। कुत्ता, कौआ और केचुआ प्रतीकात्मक पात्र हैं।

4.3.5 'दु:ख-भरी दुनिया' - कहानीकार कमलेश्वर का परिचय, कथानक एवं चरित्र-चित्रण

4.3.5.1 'दु:ख-भरी दुनिया' - कहानीकार कमलेश्वर का परिचय

कमलेश्वर 'नई कहानी' आंदोलन के अग्रणी रचनाकार तथा 'समान्तर कहानी' के प्रतिष्ठित लेखक हैं। उनका जन्म 6 फरवरी, 1932 को मैनपुरी जिले में हुआ। उनकी उच्च शिक्षा इलाहाबाद में हुई। वे स्वभाव से अत्यंत संवेदनशील, भाव-प्रवण और गंभीर हैं। संवेदनशीलता, भावप्रवणता, सूक्ष्म निरीक्षणशक्ति और प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण वे एक सशक्त लेखक बन चुके हैं। वे हिंदी के ख्यातनाम कहानीकार हैं।

उन्होंने लेखन के साथ-साथ संपादन क्षेत्र में भी सफलता पाई है। उन्होंने 'सारिका' में 'आम आदमी के आस-पास की कहानियाँ' शीर्षक से एक शृंखला शुरू की थी। फिल्म और टेलीविजन ने उनको अधिक लोकप्रिय बनाया। साधारण-सी-साधारण घटना को लेकर अच्छी से अच्छी कहानी गढ़ना इनकी विशेषता है। कस्बाई जीवन की नन्हीं-सी घटनाओं, धूलभरी सडकों और अंधकारमय गलियों में भटकते हुए भूखे, नंगे, बच्चों-बूढ़ों के चरित्रों से उनकी कहानियाँ भरी हुई हैं।

कथा-भूमि को विस्तार और भाषा को नया संस्कार देने में कमलेश्वर का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। परिवेश-बोध, सामाजिक संदर्भ, यथार्थ तथा कहानी के रूप और शिल्प के प्रति सदैव जागरूक रहकर वे कथा-लेखन करते हैं। इसलिए स्वातंत्र्योत्तर काल में हिंदी कथा साहित्य क्षेत्र के वे ख्यातिप्राप्त कहानीकार रहे हैं। सांप्रदायिकता, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और जर्जर अर्थव्यवस्था के खिलाफ कलमेश्वर की लेखनी आग उगलती है। उनकी कहानियों में नवमूल्यों का आग्रह पाया जाता है।

कृतित्व –

1. उपन्यास - 'वही बात', 'आगामी अतीत', 'एक सडक सत्तावन गलियाँ', 'ड़ाक बंगला', 'समुद्र में खोया आदमी', 'काली आँधी', 'कितने पाकिस्तान'।
2. कहानी-संग्रह - 'राजा निरबंसिया', 'बयान', 'मांस का दरिया', 'जिंदा मुर्दे', 'खोई हुई दिशाएँ'।

4.3.5.2 'दु:ख-भरी दुनिया' कहानी का कथानक

'दु:ख-भरी दुनिया' कहानी कमलेश्वर की सन 1962 में प्रकाशित एक महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी का कथानक बेहद संक्षिप्त है, लेकिन मध्यमवर्गीय सामान्य जनजीवन के रोजमर्रा जीवन के एक यथार्थ आयाम को प्रस्तुत करता है। कमलेश्वर की यह बेहद चर्चित कहानी किसी परिवार विशेष की कहानी नहीं है, अपितु सारे मध्य वर्ग का ही आईना है। कथानक के प्रारंभ में ही उत्कंठा जागृत हो उठती है कि एक उदास शहर जिसमें स्कूल, रेलवे-स्टेशन और अस्पताल हैं और इस शहर के एक मुहल्ले के एक गली के मकान से कोई बच्चा सोते-सोते सिसक रहा है, रात के दो बजे दूध का प्याला लिए कोई माँ उसके सिरहाने बैठी है और फिर तमाम फाईलें तथा लाल-नीली पेन्सिलें सिरहाने बिखरी अवस्था में कोई बाप सोया हुआ है। प्रस्तुत कहानी में बिहारी बाबू जो अपनी नौकरी से बिल्कुल संतुष्ट नहीं है, अपने बच्चों के खुशहाली भरे भविष्य की कामना हरदम करते हैं और फिर इस कामना-पूर्ति के लिए पढ़ाई को लेकर हरदम घर का वातावरण तंग रहता है। बिहारी बाबू बिजली-कंपनी में क्लर्क हैं। उनके सिरहाने कई फाईलें, लाल-नीली पेन्सिलें और लाईनें खींचने वाला रूल हैं। उनकी बीवी विमला अपने छोटे दीपू के सिरहाने दूध का प्याला लिए बैठी है और दीपू सोते-सोते सिसक रहा है। इस दृश्य से फिर कहानी फ्लैशबैक में यानी इसी सर्द रात में से पीछली शाम में जाती है।

बिहारी बाबू की पत्नी का नाम विमला है, जो हरदम अपने पति के ड़र से सहमी-सहमी रहती है। इन दोनों को चार बच्चे हैं, जो मध्यमवर्गीय आर्थिक तंग माहौल से गुजरते दिखाई देते हैं। इन चारों में से सबसे

बड़ा लड़का दीपू है, जिसपर बिहारी बाबू की आशाएँ लगी हुई हैं कि वह अपने जैसा कष्टप्रद जीवन न जीते हुए इंजिनियर बनकर आराम और सभी सुविधाओं से युक्त खुशहाल जीवन जिए। और इसीलिए हरवक्त वे दीपू के पीछे पढ़ाई को लेकर सख्ती बरतते हुए लगे रहते हैं।

शाम को किताबें लाने के लिए वे दीपू को पुकारते हैं। जैसे ही बिहारी बाबू की आवाज सुनाई देती है, घर में सन्नाटा छा जाता है। बच्चों का खेलना बंद हो जाता है, पता नहीं उन्हें भी कब पुकारा जाए और रसोई में काम करती विमला का दिल धड़कने लगता है। दीपू उनकी आवाज से घबरा जाता है। उसे किताबें नहीं मिलती है। इतने में फिर से आवाज लगाने पर जैसे-तैसे दीपू किताबें जमा करके उनके सामने पहुँचता है और पढ़ाई शुरू होती है। पाँच में से दो सवाल गलत आने से वे उसपर झुंझला उठते हैं और कान के नीचे एक जोरदार थप्पड़ जड़ते हैं, जिससे की आठ साल के मासूम दीपू की हालत बहुत बुरी हो जाती है। सख्ती से कापी दिखलाने के लिए कहने पर वे जवाब गलत होने को लेकर उसे ड़ाँटते रहते हैं। विमला रसोईघर से निकलकर दरवाजे के पास ठिठक जाती है और बाप-बेटे को देखती है, दुनिया की मार से पिटा हुआ एक बाप और बाप की मार से काँपता हुआ एक बेटा। कहानीकार ने इस प्रसंग का बेहद सुंदर चित्र खींचा है।

बिहारी बाबू को ड्राइंग से चिढ़ है। उनकी आँखों में उनके इंजिनियर अफसर बसे हुए हैं, जो कारों में आते-जाते हैं, जिनके नौकर दोपहर का खाना लेकर आते हैं, जिनकी बीवियाँ उन्हें सुबह दफ्तर छोड़ने और शाम को लेने आती हैं। और एक वे हैं कि सुबह आठ बजे खाने का डिब्बा लेकर कम्पनी की ओर चल देते हैं और शाम सात बजे फाइलों का पुलिन्दा दबाकर लौटते हैं। अपनी रोजमर्रा आर्थिक स्थिति का उन्हें हरदम अफसोस रहता था। इसीलिए वे अपनी पत्नी से दीपू को इंजिनियर बनाने की दिली ख्याईश जाहीर करते हैं। घर की आर्थिक स्थिति बिल्कुल अच्छी नहीं है और यह बात विमला की फटी हुई साडी और जाड़े के दिनों में बच्चों के लिए रजाई के न होने से तथा घर के पूरे परिवेश में बच्चों के क्रिया-कलाप के चित्रण से स्पष्ट रूप से जाहीर होती है।

बिहारी बाबू को हर क्षण यही लगता है कि उनकी दु:ख-भरी दुनिया से उबरने का एक ही रास्ता है, दीपू का इंजीनियर बनना, इसलिए कि उस पेशे में इज्जत है, पैसा है, जिंदगी के आराम है। लेकिन आठ बरस का छोटा दीपू नीलम देश की परियाँ एवं राजकुमार की कल्पना में खोया रहता है। यहाँ कहानीकार ने छोटे बच्चे की कोमलतम भावनाओं का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिकता से चित्रण किया है। स्कूल जाने की कोई जल्दी दीपू को नहीं होती। वह रोज-रोज अचरज-भरी आँखों से दुकानों की चीजों को देखता है। शीशे की अलमारियों के पास रूककर वह हर चीज को गौर से देखता है। रंगीन कपड़ों को...खेल के सामान को...होटल में आते-जाते लोगों को और सिनेमा के पोस्टरों को, कण्डक्टर के पैसे रखनेवाले बैग को, ऊनी कोट पर लगाए पीतल के बिल्ले को और रंगीन दुनिया की बहुत सारी बातों की ओर आकर्षित होता है।

और फिर शाम बिहारी बाबू दीपू को पढ़ाई के लिए बुलाते हैं। दो सवाल गलत होने से उसके कान के नीचे थप्पड जड़ते हैं। अठारह सत्ते कितने? पूछकर और एक तमाचा उसकी कनपटी पर जड़ते हैं और उसकी कोमल हाथों पर रूलें पड़ती जाती हैं, उसकी आँखों से आँसू ढ़रकते हैं और सिसकियाँ रूक नहीं

पाती हैं। और आठ-दस थप्पड़ पड़ने पर दीपू बेहाल होकर गिर पड़ता है। बेहद सर्दी की उस रात में दीपू बिना खाए ही सो जाता है। सोते-सोते ही उसकी सिसकियाँ आती रहती हैं। रात दो बजे विमला एक प्याला दूध गरम करके दीपू को उठाकर दीवार के सहारे टिकाकर उसे दूध पीने को कहती है। और नींद में दीपू बुदबुदाने लगता है, ''अठारह छक्के एक सौ आठ...अठारह सत्ते...अठारह सत्ते...'' और सिसकी लेकर फिर से रो पड़ता है। प्रस्तुत कहानी मध्यमवर्गीय आम समाज में स्थित आर्थिक विपन्नता, स्थिति सुधार हेतु अपनी आकांक्षाओं को पाले माँ-बाप की बच्चों पर की जानेवाली, दिल दहला देनेवाली पढ़ाई की सख्ती का बेहद मनोवैज्ञानिक तथा मार्मिक चित्रण करती है और साथ हीं पूरे मध्यमवर्गीय समाज की मनोदशा का प्रतिनिधित्व करती है।

4.3.5.3 'दु:ख-भरी दुनिया' कहानी का चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत कहानी में बिहारी बाबू और उनका आठ बरस का बेटा दीपू ये दो पात्र मुख्य हैं और बिहारी बाबू की पत्नी विमला और उसके अन्य बच्चें गौण पात्रों में आ जाते हैं। प्रस्तुत कहानी में बिहारी बाबू जो अपनी नौकरी से बिल्कुल संतुष्ट नहीं है, अपने बच्चों के खुशहाली भरे भविष्य की कामना हरदम करते हैं और फिर इस कामना-पूर्ति के लिए पढ़ाई को लेकर हरदम घर का वातावरण तंग रहता है। इन चारों में से सबसे बड़ा लड़का दीपू है, जिसपर बिहारी बाबू की आशाएँ लगी हुई हैं कि वह अपने जैसा कष्टप्रद जीवन न जीते हुए इंजिनियर बनकर आराम और सभी सुविधाओं से युक्त खुशहाल जीवन जिए। और इसीलिए हरवक्त वे दीपू के पीछे पढ़ाई को लेकर सक्ती बरतते हुए लगे रहते हैं। जैसे ही बिहारी बाबू की आवाज सुनाई देती है, घर में सन्नाटा छा जाता है। बच्चों का खेलना बंद हो जाता है, पता नहीं उन्हें भी कब पुकारा जाए और रसोई में काम करती विमला का दिल धड़कने लगता है।

बिहारी बाबू बिजली-कंपनी में क्लर्क हैं। उनकी आँखों में उनके इंजिनियर अफसर बसे हुए हैं, जो कारों में आते-जाते हैं, जिनके नौकर दोपहर का खाना लेकर आते हैं, जिनकी बीवियाँ उन्हें सुबह दफ्तर छोड़ने और शाम को लेने आती हैं। और एक वे हैं कि सुबह आठ बजे खाने का डिब्बा लेकर कम्पनी की ओर चल देते हैं और शाम सात बजे फाइलों का पुलिन्दा दबाकर लौटते हैं। हर रात उनके सिरहाने कई फाईलें, लाल-नीली पेन्सिलें और लाईनें खींचने वाला रूल होता है। अपनी रोजमर्रा स्थिति का उन्हें हरदम अफसोस रहता था। इसीलिए वे अपनी पत्नी से दीपू को इंजिनियर बनाने की दिली ख्याईश जाहीर करते हैं। बिहारी बाबू को हर क्षण यही लगता है कि उनकी दु:ख-भरी दुनिया से उबरने का एक ही रास्ता है, दीपू का इंजीनियर बनना, इसलिए कि उस पेशे में इज्जत है, पैसा है, जिंदगी के आराम है। लेकिन आठ बरस का छोटा दीपू नीलम देश की परियाँ एवं राजकुमार की कल्पना में खोया रहता है।

शाम बिहारी बाबू दीपू को पढ़ाई के लिए बुलाते हैं। पाँच में से दो सवाल गलत आने से वे उसपर झुंझला उठते हैं और कान के नीचे एक जोरदार थप्पड़ जड़ते हैं, जिससे की आठ साल के मासूम दीपू की हालत बहुत बुरी हो जाती है। अठारह सत्ते कितने? पूछकर और एक तमाचा उसकी कनपटी पर जड़ते हैं और उसकी कोमल हाथों पर रूलें पड़ती जाती हैं, उसकी आँखों से आँसू ढ़रकते हैं और सिसकियाँ रूक

नहीं पाती हैं। और आठ-दस थप्पड़ पड़ने पर दीपू बेहाल होकर गिर पड़ता है। विमला के ''अब क्या मार ही ड़ालोगे?'' कहने पर वे कहते हैं, ''मरे तो मर जाए... कोई उम्मीद न रह जाए तो अच्छा है।'' इतनी हद तक उनकी उम्मीद उनकी भावनाओं पर हावी होती है और मासूम दीपू इस सख्ती को सहने के लिए विवश हो जाता है।

बिहारी बाबू और विमला के चार बच्चों में से सबसे बड़ा लड़का दीपू है, जिसपर बिहारी बाबू की आशाएँ लगी हुई हैं कि वह अपने जैसा कष्टप्रद जीवन न जीते हुए इंजिनियर बनकर आराम और सभी सुविधाओं से युक्त खुशहाल जीवन जिए। उन्हें हर क्षण यही लगता है कि उनकी दु:ख-भरी दुनिया से उबरने का एक ही रास्ता है, दीपू का इंजिनियर बनना और इसीलिए हरवक्त वे दीपू के पीछे पढ़ाई को लेकर सक्ती बरतते हुए लगे रहते हैं। बिहारी बाबू को हमेशा शक लगा रहता है कि दीपू कहीं ड्राइंग में अपना वक्त न गवा रहा हो। उन्हें ड्राइंग से चिढ़ है और इसके लिए वे हमेशा उसपर झुंझलाते रहते हैं। लेकिन आठ बरस का छोटा दीपू नीलम देश की परियाँ एवं राजकुमार की कल्पना में खोया रहता है। वह अपनी एक अलग ही दुनिया में जो कभी उसे नसीब न हुआ विचरन करता रहता है। स्कूल जाने की कोई जल्दी दीपू को नहीं होती। वह रोज-रोज अचरज-भरी आँखों से दुकानों की चीजों को देखता है। शीशे की अलमारियों के पास रूककर वह हर चीज को गौर से देखता है। रंगीन कपड़ों को...खेल के सामान को...होटल में आते-जाते लोगों को और सिनेमा के पोस्टरों को, कण्डक्टर के पैसे रखनेवाले बैग को, ऊनी कोट पर लगाए पीतल के बिल्ले को और रंगीन दुनिया की बहुत सारी बातों की ओर आकर्षित होता है।

शाम बिहारी बाबू दीपू को जब पढ़ाई के लिए बुलाते हैं, तब पढ़ाई की गलतियों एवं ध्यान न होने के कारण उसकी कोमल हाथों पर रूलें पड़ती जाती हैं, उसकी आँखों से आँसू ढ़रकते हैं और सिसकियाँ रूक नहीं पाती हैं। और आठ-दस थप्पड़ पड़ने पर दीपू बेहाल होकर गिर पड़ता है। बेहद सर्दी की उस रात में दीपू बिना खाए ही सो जाता है। रात दो बजे विमला एक प्याला दूध गरम करके दीपू को उठाकर दूध पीने को कहती है और नींद में दीपू पिता के उसी आतंकित सवाल को बुदबुदाने लगता है और सिसकी लेकर फिर से रो पड़ता है। पिता की तंग आर्थिक स्थिति और अपने से बेहतर जिंदगी की अपने बच्चे से लगी सख्त उम्मीद और चिंता में दीपू का भोला और कोमल बचपन कहीं मुरझाने की कगार पर है और निश्चय ही इस बेहद शोचनीय बिंदु की ओर कहानीकार प्रस्तुत कहानी के माध्यम से ध्यान आकर्षित करते हैं।

4.3.6 'दहलीज' – कहानीकार निर्मल वर्मा का परिचय, कथानक एवं चरित्र-चित्रण

4.3.6.1 'दहलीज' – कहानीकार निर्मल वर्मा का परिचय

3 अप्रैल, 1928 के दिन हिंदी के आधुनिक रचनाकारों में एक सशक्त व्यक्तित्व निर्मल वर्मा का शिमला में जन्म हुआ। ब्रिटिश भारत सरकार के रक्षा विभाग में एक उच्च पदाधिकारी श्री. नंदकुमार वर्मा के घर में पैदा होनेवाले वे पाँचवे संतान थे। हालाँकि वे कहानीकार के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं, लेकिन गद्य की सभी विधाओं में उन्होंने लेखन किया है। निर्मल वर्मा ऐसे रचनाकार हैं, जिन्होंने अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के अतंर्द्वंद्व पर गहनता एवं व्यापकता से विचार किया है।

दिल्ली के सेंट स्टीफंस कलेज से इतिहास में एम. ए. करने के बाद उन्होंने कुछ समय अध्यापन किया। इन्हें वर्ष 1953 से 1972 तक युरोप में सफर करने का अवसर मिला था। इस यात्रा के दौरान उन्होंने लगभग संपूर्ण युरोप की यात्रा करके वहाँ की भिन्न-भिन्न संस्कृतियों का गहराई से अध्ययन किया। सन 1959 में प्राग चेकोस्लोवाकिया के प्राच्य-विद्या संस्थान और चेक लेखक संघ द्वारा इन्हें आमंत्रित किया गया। प्राच्य-विद्या संस्थान में वे सात वर्ष कार्यरत रहें। वहाँ रहते हुए कई चेक कथाओं के अनुवाद किए। सन 1966 से लेकर सन 1972 तक वे लंदन में रहे। इन छह वर्षो में लंदन में रहकर 'टाइम्स अफ इंडिया' के लिए वहाँ की सांस्कृतिक-राजनीतिक समस्याओं पर लेख और रिपोर्ताज लिखे। सन 1972 में वे हिंदुस्तान वापस लौटे। उनकी एक प्रसिद्ध कहानी 'मायादर्पण' पर फिल्म बनी, जिसे 1973 का सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन 1988 में इंग्लैंड के प्रकाशक रीडर्स इंटरनेशनल राइटर्स द्वारा उनकी कहानियों का संग्रह 'द वर्ल्ड पुल्स व्हेयर' प्रकाशित हुआ। इसी समय बीबीसी द्वारा उनपर डाक्युमेंट्री फिल्म भी प्रसारित हुई थी। फेफडे की बीमारी से जुझने के बाद 76 वर्ष की आयु में 26 अक्तूबर, 2005 में दिल्ली में इनका निधन हुआ।

अपनी गंभीर, भावपूर्ण और अवसाद से भरी कहानियों के लिए परिचित निर्मल वर्मा आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित रचनाकार हैं। उनके लेखन की शैली सबसे अलग और सम्पूर्णत: निजी थी। साहित्य एवं शिक्षा क्षेत्र के योगदान के लिए उन्हें पद्मभूषण सम्मान, ज्ञानपीठ सम्मान, मूर्तिदेवी सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार, साधना सम्मान, राम मनोहर लोहिया आत्माभिष्ट सम्मान आदि सम्मानों एवं पुरस्कारों से नवाजा गया है। अपने निधन के समय निर्मल वर्मा भारत सरकार द्वारा औपचारिक रूप से नोबल पुररस्कार के लिए नामित थे।

कृतित्व –

1. उपन्यास – 'वे दिन', 'लाल टीन की छत', 'एक चिथडा सुख', 'रात का रिपोर्टर', 'अन्तिम अरण्य'।
2. कहानी-संग्रह – 'परिंदे', 'जलती झाड़ी', 'पिछली गर्मियों में', 'बीच बहस में', 'मेरी प्रिय कहानियाँ', 'कव्वे और गला पानी', 'प्रतिनिधि कहानियाँ', 'सूखा तथा अन्य कहानिया', 'सम्पूर्ण कहानियाँ'।
3. यात्रा वृतांत – 'चीड़ो पर चाँदनी', 'हर बारिश में'।
4. डायरी– 'धूँध से उठती धून'।
5. नाटक – 'तीन एकांत'।
6. निबंध – 'शब्द और स्मृति', 'कला का जोखिम', 'ढ़लान से उतरते हुए', 'भारत और युरोप: प्रतिश्रुति के क्षेत्र', 'इतिहास स्मृति आकांक्षा', 'शताब्दी के ढ़लते वर्षो में', 'आदि, अन्त और आरम्भ'।
7. अनुवाद – 'कुमिल की कहानियाँ', 'रोमियो, जुलिएट और अंधेरा', 'झोंपडीवाले', 'बाहर और परे', 'बचपन', 'आर यू आर'।

4.3.6.2 'दहलीज' कहानी का कथानक

निर्मल वर्मा की कहानी 'दहलीज' में किशोरावस्था की मस्ती और खिलंदड़ेपन को बड़ी ही बेबाकी से दिखाया गया है। रूनी, जेली और शम्मी इन तीन पात्रों के इर्द-गिर्द कहानी का ताना-बाना बुना गया है। रूनी कहानी की केंद्रित पात्र है, जिसकी बचपन से होते हुए किशोरावस्था की दहलीज पर खड़ी मनोदशा को कहानी बयान करती है। जब व्यक्ति हर ओर से बेफिक्र हो, सिर्फ अपनी ही रौ में जीता है। कहानी की शुरूआत में रूनी फ्लैशबैक में बरसों पहले की जैसी-की-तैसी अनुभूति को लिए बंगले के हर चीज को महसूस करती है। बंगला, लॉन, आकाश का बेहद खुबसूरत वर्णन कहानीकार की अपनी विशेषता बनी हुई है और इसके मध्य हर चीज को पिरोनेवाले चरित्र रूनी की सूक्ष्म संवेदनाओं, उसकी मनोदशा का सुंदर चित्रण कहानी को और भी खास बनाते जाता है। इन्हें हर शनिवार की प्रतीक्षा रहती है, जब शम्मी भाई होस्टल से आते हैं। उनके आने से जेली की आँखों में एक घुली-घुली-सी ज्योति निखर आती है और रूनी उनके आकर्षण से अपने-आप में खोई रहती है। रूनी और जेली के बीच बहुत-से वर्षों का सूना, लंबा फासला है। उस फासले के दूसरे छोर पर जेली है, शम्मी भाई हैं, वह उन दोनों में से किसी को नहीं छू सकती। वे दोनों उससे अलग जीते हैं।

शम्मी भाई जब होस्टल से आते हैं, तो वे सब उस शाम लन के बीचोंबीच कैनवास की पैराशूटनुमा छतरी के नीचे बैठते हैं। ग्रामोफोन पुराने जमाने का है। शम्मी भाई हर रिकार्ड के बाद चाभी देते हैं, जेली सुई बदलती है और रूनी चुपचाप चाय पीती रहती है। जब कभी हवा का कोई तेज झोंका आता है, तो छतरी धीरे-धीरे ड़ोलने लगती है, उसकी छाया चाय के बर्तनों, टीकोजी और जेली के सुनहरी बालों को हल्के-से बुहार जाती है और रूनी को लगता है कि किसी दिन हवा का इतना जबरदस्त झोंका आएगा कि छतरी धड़ाम से नीचे आ गिरेगी और वे तीनों उसके नीचे दब मरेंगे। बचपन से किशोरावस्था की दहलीज पर खड़ी रूनी अपने ही अजीबो-गरीब भाव-भावनाओं में डूबी रहती है, उसका भाव-विश्व ही अलग होता है।

शम्मी भाई जब अपने होस्टल की बातें बताते हैं, तो वह और जेली विस्मय और कौतूहल से टुकुर-टुकुर उनके चेहरे, उनके हिलते हुए होंठों को निहारती है। रिश्ते में शम्मी भाई चाहे उनके कोई न लगते हों किंतु उनसे जान-पहचान इतनी पुरानी है कि अपने-पराए का अंतर कभी उनके बीच आया हो, याद नहीं पड़ता। होस्टल में जाने से पहले जब वह इस शहर में आए थे, तो अब्बा के कहने पर कुछ दिन उन्हीं के घर रहे थे। अब कभी वह शनिवार को उनके घर आते हैं, तो अपने संग जेली के लिए युनिवर्सिटी लायब्रेरी से अंग्रेजी के उपन्यास और अपने मित्रों से माँगकर कुछ रिकार्ड लाना नहीं भूलते। बरसों बाद भी रूनी को शम्मी भाई के दिए हुए अजीब-गरीब नाम याद आते हैं, जैसे उनकी नौकरानी मेहरू के नाम को उन्होंने मेहरुन्निसा बना दिया, उसे रेहाना से रूनी और जेली पहले बेबी, उसके बाद जेली आइसक्रीम और आखरि में सिर्फ जेली और उनके दिए नाम अमर हैं ऐसा उसे लगता है।

यौवन की दहलीज पर खड़ी रूनी शम्मी भाई से बेइंतिहा मुहब्बत करती है, वह हमेशा शम्मी भाई के प्रति की अपनी यौवनसुलभ कोमल भावनाओं में खोई रहती है। उसे जेली पर रोना आता है, गुस्सा आता

है। वह महसूस करती है कि जेली में क्या है कि शम्मी भाई जो उसमें देखते हैं, वह रूनी में नहीं देखते? और जब शम्मी भाई जेली के संग रिकार्ड बजाते हैं, ताश खेलते हैं, (मेज के नीचे अपना पाँव उसके पाँव पर रख देते हैं) तो वह अपने कमरे की खिड़की के परदे के परे चुपचाप उन्हें देखती रहती है। वह अपने-आप को बेहद अकेली महसूस करती है और बेबाकी से मन-ही-मन सोचती है कि उसका भी एक रहस्य है जो ये नहीं जानते, कोई नहीं जानता। वह आँखें मूँदकर सोचती है, वह चाहे तो कभी भी मर सकती हैं, उन तीन पेड़ों के झुरमुट के पीछे, ठंड़ी गीली घास पर, जहाँ से हवा में ड़ोलता हुआ एरियल-पोल दिखाई देता है।

शम्मी भाई जब 'जानती हो इस लिफाफे के अंदर क्या है?' पूछते हुए उसके कंधे पर हाथ रख देते हैं तब रूनी का दिल धौंकनी की तरह धड़कने लगता है। वह सोचती है, शायद शम्मी भाई वही बात कहनेवाले हैं, जिसे वह अकेले में, रात को सोने से पहले कई बार मन-ही-मन सोच चुकी है। शायद इस लिफाफे के भीतर एक पत्र है, जो शम्मी भाई ने चुपके से उसके लिए, केवल उसके लिए लिखा है। उसकी गर्दन के नीचे फ्राक के भीतर से ऊपर उठती हुई कच्ची-सी गोलाइयों में मीठी-मीठी-सी सुइयाँ चुभ रही हैं, मानो शम्मी भाई की आवाज ने उसकी नंगी पसलियों को हौले-से उमेठ दिया हो। उसे लगता है, चाय की केतली की टीकोजी पर जो लाल-नीली मछलियाँ काढ़ी गई हैं, वे अभी उछलकर हवा में तैरने लगेंगी और शम्मी भाई सबकुछ समझ जाएँगे... उनसे कुछ भी न छिपा रहेगा। लेकिन उसकी सारी आशाओं पर पानी फेरते हुए शम्मी भाई उसकी एल्बम के लिए लिफाफे में से टिकट निकालकर मेज पर बिखेर देते हैं। उसे लगता है, जैसे उसके गले में कुछ फँस गया है और उसकी पहली और दूसरी साँस के बीच एक खाली अंधेरी खाई खुलती जा रही है।

जब तीनों वाटर रिजर्वायर तक घूमने चले जाते हैं, तब बीच में ही रूनी अचानक उन दोनों से अलग हो जाती है। शम्मी भाई और जेली को एकांत मिलता है। लेकिन बेर की झाड़ियों के पीछे छिपी हुई रूनी उनको चुपके से देखती रहती है। जेली शम्मी भाई के सामने जो कुछ कहना है, आज ही कहने का अनुरोध रखती है। शम्मी भाई टहनी से धूल कुरेदते हुए धरती पर 'जेली...लव' लिखते हैं। लेकिन जेली ने उन शब्दों को नहीं देखा। बरसों बाद भी जेली को नहीं मालूम कि उस शाम शम्मी भाई ने काँपती टहनी से जेली के पैरों के पास क्या लिख दिया था। लंबे अर्से बाद समय की धूल इन शब्दों पर जम गई है। ...शम्मी भाई, वह और जेली तीनों एक-दूसरे से दूर दुनिया के अलग-अलग कोनों में चले गए हैं, किंतु आज भी रूनी को लगता है कि क्या वह उन दोनों की दुनिया में कभी प्रवेश नहीं कर पाएगी? उस शाम की कसक रूनी के दिल में हमेशा से ही घर कर बैठती है। आज वर्तमान में वह खुद एक दहलीज पर खड़ी महसूस करती है, जिसके पीछे सारा बचपन, सारी कोमलतम संवेदनाएँ, सारी अभिलाशाएँ सदा के लिए छूट गई है। इसलिए वह संयत, निर्विकार भाव से अपने-आप को जैसे मरा हुआ महसूस करती है।

4.3.6.3 'दहलीज' कहानी का चरित्र-चित्रण

'दहलीज' कहानी के केंद्र में रूनी का चरित्र उभरकर सामने आता है। रूनी किशोर उम्र की लड़की है। वह अपने-आप में बेबाकी से खोई रहती है। रूनी उम्र की ऐसी दहलीज पर खड़ी है, जहाँ बचपन पीछे छूट रहा है और आने वाला समय अनेक संकेतों से भरा पड़ा है। रूनी वय:संधि की दहलीज पर खड़ी एक लड़की है। जो अपनी उम्र के हिसाब से अकेली है। साथिन के बतौर उसकी बड़ी बहन जेली है। जो उससे काफी बड़ी है। यहाँ भी बहनों-बहनों के बीच अनेक प्रकार के संदेह हैं, उम्र का अन्तराल है तथा सूनापन भी है। यहाँ रूनी की विडम्बना यह है कि वह अपनी ही बहन के प्रेमी शम्मी भाई से मूक प्रेम करने लगती है। उन्हें मिलते देखती है, उन्हें साथ में घूमते देखती है। जिससे उसका मन भटकता रहता है। वह अपने-आप को बेहद अकेली महसूस करती है और बेबाकी से मन-ही-मन सोचती है कि उसका भी एक रहस्य है जो ये नहीं जानते, कोई नहीं जानता। वह आँखें मूँदकर सोचती है, वह चाहे तो कभी भी मर सकती है, उन तीन पेड़ों के झुरमुट के पीछे, ठंडी गीली घास पर, जहाँ से हवा में ड़ोलता हुआ एरियल-पोल दिखाई देता है।

शम्मी भाई जब 'जानती हो इस लिफाफे के अंदर क्या है?' पूछते हुए उसके कंधे पर हाथ रख देते हैं तब रूनी का दिल धौंकनी की तरह धड़कने लगता है। वह सोचती है, शायद शम्मी भाई वही बात कहनेवाले हैं, जिसे वह अकेले में, रात को सोने से पहले कई बार मन-ही-मन सोच चुकी है। शायद इस लिफाफे के भीतर एक पत्र है, जो शम्मी भाई ने चुपके से उसके लिए, केवल उसके लिए लिखा है। उसकी गर्दन के नीचे फ्राक के भीतर से ऊपर उठती हुई कच्ची-सी गोलाइयों में मीठी-मीठी-सी सुइयाँ चुभ रही हैं, मानो शम्मी भाई की आवाज ने उसकी नंगी पसलियों को हौले-से उमेठ दिया हो। उसे लगता है, चाय की केतली की टीकोजी पर जो लाल-नीली मछलियाँ काढ़ी गई हैं, वे अभी उछलकर हवा में तैरने लगेंगी और शम्मी भाई सबकुछ समझ जाएंगे... उनसे कुछ भी न छिपा रहेगा। लेकिन उसकी सारी आशाओं पर पानी फेरते हुए शम्मी भाई उसकी एल्बम के लिए लिफाफे में से टिकट निकालकर मेज पर बिखेर देते हैं। उसे लगता है, जैसे उसके गले में कुछ फँस गया है और उसकी पहली और दूसरी साँस के बीच एक खाली अंधेरी खाई खुलती जा रही है।

रूनी उम्र की उस रेखा पर खड़ी लड़की है। जहाँ ढ़ेरों सपने होते हैं, सपनीला आकाश होता है, जहाँ वह उमंगों के साथ उड़ना चाहती है। रूनी भी उन्हीं लड़कियों में से एक है। वह घर पर अकेली पड़ गई है। अपने सपनों के साथ उसका कच्चा किशोरमन शम्मी भाई को अपना मान लेता है लेकिन वह तो जेली के कायल है। वह उन दोनों के प्रेम पर आपत्ति जताते हुए महसूस करती है कि जेली में क्या है कि शम्मी भाई जो उसमें देखते हैं और रूनी में नहीं देखते। रूनी को लगता है कि उन दोनों की दुनिया उससे बहुत दूर है, जिसमें वह कभी प्रवेश नहीं कर पाएगी। इस कारण वह दु:खी होती है। उसे लगता है कि अगर वह मर भी जाए तो किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

4.3.7 'वापसी' – कहानीकार उषा प्रियंवदा का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.7.1 'वापसी' – कहानीकार उषा प्रियंवदा का परिचय

हिंदी साहित्य जगत् में उषा प्रियंवदा का नाम सशक्त हिंदी कथाकार के रूप में आदर से लिया जाता है। उनका जन्म 24 दिसम्बर, 1930 को उत्तरप्रदेश के कानपुर में हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा ग्रहण की। अंग्रेजी की अध्येता रहीं उषा जी की लेखनी से हिंदी साहित्य हमेशा समृद्ध होता रहा। तीन साल दिल्ली के लेडी श्रीराम कलेज और इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन के बाद फुलब्राइट स्कालरशिप पर उन्होंने अमरिका प्रस्थान किया, जहाँ ब्लूमिंग्टन, इंडिया में दो वर्ष पोस्ट डाक्टरल अध्ययन किया। विस्कासिन विश्वविद्यालय, मैडिसन में दक्षिण एशियाई विभाग में प्रोफेसर के पद से उन्होंने अवकाश प्राप्त कर साहित्य सेवा में वे जुड़ गईं।

उषा जी की माँ का नाम प्रियंवदा है। उन्होंने सदैव अपने नाम के पीछे सिर्फ अपनी माँ का नाम अंकित किया। शादी के उपरांत भी आपने अपने नाम के पीछे से अपनी माँ का नाम हटने नहीं दिया। उषा जी का विवाह किम से हुआ, जो हवर्ड युनिवर्सिटी में प्रोफेसर थे। वे लंबे समय से अमरिका में रह रही हैं। उन्होंने देश–विदेशों का भ्रमण किया है, किंतु अपनी भारतीय संस्कृति, परंपराओं को नहीं भूल पाईं।

उषा जी ने अपनी रचनाओं में आधुनिक जीवन की ऊब, छटपटाहट, संत्रास और अकेलेपन की स्थिति को अभिव्यक्त किया है। यही कारण है कि इनकी रचनाओं में एक ओर आधुनिकता का प्रबल स्वर मिलता है, तो दूसरी ओर उसमें विचित्र प्रसंगों तथा संवेदनाओं के साथ हर वर्ग का पाठक तादात्म्य का अनुभव करता है। उनके कथा सहित्य में शहरी परिवारों के बडे.ही अनुभूति–प्रवण चित्र हैं और आधुनिक जीवन की उदासी, अकेलेपन, ऊब आदि का अंकन करने में उन्होंने अत्यंत गहरे यथार्थबोध का परिचय दिया है। वे 2007 में केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार से सम्मानित हुई हैं।

तित्व –

1. उपन्यास - 'पचपन खम्भे', 'लाल दीवारें', 'रूकोगी नहीं राधिका', 'शेष कथा', 'अंतर्वशी', 'भया कबीर उदास'।
2. कहानी–संग्रह – 'जिंदगी और गुलाब के फूल', 'एक कोई दूसरा', 'मेरी प्रिय कहानियाँ' 'कितना बडा झूठ', 'शून्य तथा अन्य रचनाएँ'।

4.3.7.2 'वापसी' कहानी का कथानक

उषा प्रियंवदा की 'वापसी' कहानी एक सेवानिवृत्त रेलवे कार्मिक गजाधर बाबू की कहानी है। प्रस्तुत कहानी में रिटायरमैंट के बाद गजाधर बाबू बड़ी बेसब्री से घर लौटने, बीवी–बच्चों के साथ रहने की आकांक्षा करते हैं, पर सालों बाद लौटने पर घरवालों के व्यवहार से बुरी तरह आहत होते हैं। इस असहनीय व्यवहार का उषा जी ने बेहद मार्मिक चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है। कहानी के प्रमुख पात्र गजाधर बाबू की पोस्टिंग आमतौर पर छोटे स्टेशनों पर होती थी, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वे स्टेशन मास्टर पद पर

कार्य करते होंगे। स्टेशन मास्टर का पद ऐसा है, जिसमें रेलवे कार्मिक को छोटे-छोटे स्टेशनों पर ड्यूटी देनी होती है। गजाधर बाबू रेल विभाग में पैंतीस साल तक नौकरी करने के बाद अपने घर लौट रहे हैं। उनकी नौकरी इस तरह की है कि तबादले के उन छोटे-छोटे स्टेशनों पर वे अपने बच्चों की पढ़ाई का उचित प्रबंध नहीं कर सकते थे और न ही वे अपनी पत्नी और बच्चों को अन्य सुविधाएँ प्रदान कर सकते थे। यही सोचकर उन्होंने शहर में एक मकान बनवा लिया था, जहाँ उनकी पत्नी अपने बच्चों के साथ रहती थी।

गजाधर बाबू के कुल चार बच्चे थे - दो बेटे और दो बेटियाँ। एक बेटी और एक बेटे की शादी हो गई थी। बेटी शादी के बाद ससुराल चली गई थी लेकिन बेटा उसी मकान में अपनी माँ, पत्नी और छोटे भाई और बहन के साथ रह रहा था। छोटे भाई-बहन अभी पढ़ रहे थे। गजाधर बाबू सेवानिवृत्ति के पश्चात् लौटकर इसी अपने घर-परिवार में आते हैं। उनमें घर लौटने की खुशी है। अपनी पत्नी का साथ दुबारा पाने की इच्छा है, जिनके साथ बिताए कई सुखद अनुभव उनकी यादों में बसे हैं। पत्नी की सुंदर और स्नेह भरी छवि उनकी स्मृतियों में बनी हुई है। लंबे काल तक अपनी पत्नी और बच्चों से अलग और अकेले रहने से उन्हें मुक्ति मिलनेवाली है, इस बात ने उन्हें खुशी से भर दिया है। हालाँकि उनके मन में इस बात का विषाद भी है कि इतने सालों जिस संसार में रहे वह भी उनसे छूट रहा है। यहाँ उन्हें आदर भी मिला है और स्नेह भी। लेकिन जहाँ वे जा रहे हैं वह उनका अपना घर-संसार है।

गजाधर बाबू को वापस लौटने पर वह दुनिया नहीं मिलती जिसकी कल्पना और उम्मीद उन्होंने की थी। जल्दी ही उन्हें एहसास हो जाता है कि वे अपने ही घर में बिन बुलाए मेहमान की तरह हैं। उनके आने से जैसे घर की बनी बनाई व्यवस्था में व्यवधान पैदा हो गया है। कहानी में कुछ ऐसे प्रसंगों का उल्लेख हैं, जो उन्हें धीरे-धीरे अपने घरवालों से दूर ले जाती है। यहाँ तक कि उन्हें लगता है कि उनकी पत्नी भी अब उनके करीब नहीं रह गई है। वे हर घटना के बाद घर से दूर छोटे स्टेशनों पर बिताई अपनी जिंदगी को याद करने लगते। कहानी की शुरुआत में ही वर्णित एक घटना के उल्लेख से इसे समझा जा सकता है। नौकरी से लौटने के बाद पहली बार गजाधर बाबू की अनुपस्थिति में जब उनके बच्चें चाय पीते हुए हँसी-मजाक कर रहे होते हैं, लेकिन जैसे ही वे उनके बीच जाते हैं, उनको देखकर सब चुप हो जाते हैं। बहू अपने सिर पर पल्लू रखकर चली जाती है। बेटा चाय का आखिरी घूँट भरकर वहाँ से खिसक जाता है। बेटी बसंती पिता के लिए चुपचाप कप में चाय उँडेलती है और कप उनके हाथ में पकड़ा देती है। पिता चाय का घूँट लेते हैं और कहते हैं, 'बिट्टी चाय तो फीकी है'। यह छोटी-सी घटना इस बात को बताती है कि पिता की पसंद-नापसंद के बारे में बच्चों को कोई जानकारी नहीं है। इस बीच पत्नी वहाँ आती है। लेकिन वह अपना ही दुखड़ा रोने लगती है। गजाधर बाबू चाय और नाश्ते का इंतजार करने लगते हैं। उन्हें ऐसा लगने लगता है कि उनकी मौजूदगी ने घर में कोई उत्साह पैदा नहीं किया है। ऐसे समय उन्हें रेलवे स्टेशन के अपने नौकर गनेशी की याद आती है, जो रोज सुबह पैसेंजर आने से पहले गर्मा-गर्म पूरियाँ और जलेबी बनाता था और गजाधर बाबू के तैयार होते ही उनके लिए जलेबियाँ और चाय लाकर रख देता था। चाय भी पूरे ढाई चम्मच चीनी और गाढ़ी मलाई के साथ काँच के गिलास में ऊपर तक लबालब भरी लाजवाब होती थी। पैसेंजर भले ही रानीपुर लेट पहुँचे, गनेशी ने चाय पहुँचाने में कभी देरी नहीं की थी। गजाधर बाबू निश्चय ही अपने घरवालों

से गनेशी से ज्यादा की अपेक्षा करते थे, लेकिन उन्हें गनेशी जैसी सेवा और आदर घर में नहीं मिल रहा था। इसका उन्हें एहसास होने लगा था। बाद की घटनाओं से यह एहसास बढ़ता जाता है। घर में उनके रहने की व्यवस्था कुछ इस तरह की जाती है, जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ अस्थायी प्रबंध कर दिया जाता है। पत्नी बच्चों के बारे में बहुत-सी शिकायतें करती हैं लेकिन जब उन शिकायतों पर वे बच्चों को कुछ कहते हैं, तो न बच्चों को अच्छा लगता है और न ही पत्नी को।

अब अहिस्ता-अहिस्ता अपने प्रति अपनी पत्नी और बच्चों का व्यवहार उन्हें अंदर तक आहत कर देता है। पत्नी की जो सुंदर और स्नेह भरी छवि देखने की उम्मीद उन्होंने की थी, उन्हें लगता है कि वह कहीं खो गई है। अब वही पत्नी जब गाढ़ी नींद में डूबी होती है तो उसका भारी शरीर उन्हें बहुत बेड़ौल और कुरूप लगता है, चेहरा श्रीहीन और रूखा लगता है। गजाधर बाबू का पूरा व्यवहार घर के मुखिया-सा है। इसके लिए वे जो भी प्रयत्न करते हैं वे बच्चों को अपनी जिंदगी में दखल लगते हैं और इस बात को वे किसी न किसी रूप में व्यक्त भी कर देते हैं। इससे गजाधर बाबू और अधिक दुखी हो जाते हैं। उनका अकेलापन और अधिक बढ़ जाता है। लेकिन जब उनकी पत्नी बताती है कि बड़ा बेटा अमर अलग होना चाहता है, तो वे समझ जाते हैं कि इस घर में उनके लिए कोई जगह नहीं है। पिता की गैर मौजूदगी में अमर घर का मालिक बनकर रहता था, बहू को कोई रोक-टोक न थी। अमर के दोस्तों का प्राय: यहीं आ जमा रहता था और अंदर से नाश्ता-चाय तैयार होकर जाता रहता था। बसंती को भी वही अच्छा लगता था। स्पष्ट ही गजाधर बाबू ने जाने-अनजाने घर के अन्य सदस्यों की स्वतंत्रता छीन ली थी। गजाधर बाबू उस घर-परिवार में उनकी पत्नी की तरह अपने को ढ़ाल नहीं सके। वे चाहते थे कि घर के सभी लोग उनकी इच्छा के अनुरूप अपने को ढ़ालें न कि वे खुद उनके अनुकूल अपने को ढ़ाल ले। इस लचीलेपन के न होने के कारण तथा इन सब बातों से क्षुब्ध होकर वे अन्यत्र नौकरी के लिए प्रार्थनापत्र देते हैं तथा नियुक्ति पत्र मिल जाने पर वहाँ से फिर नौकरी के लिए चले जाते हैं। उनकी ऐसी स्थिति में खेद यह भी है कि उनकी पत्नी भी उनके साथ जाने के लिए तैयार नहीं होती।

कहानी के सामान्य प्रसंगों में से ही गजाधर बाबू का अकेलापन बहुत ही तीव्रता से उभरकर आता है। कहानी के केंद्र में गजाधर बाबू होने से कहानी उन्हीं के नजरिए से लिखी गई है। इसलिए शेष पात्रों का पक्ष उन्हीं के नजरिए से सामने आता है और वे सभी किसी न किसी रूप में गजाधर बाबू को घर छोड़ने के लिए मजबूर करते नजर आते हैं। कहानी को तीन भागों में विभाजित करें तो पहले भाग में गजाधर बाबू का रिटायर होकर अपने घर लौटने से संबंधित प्रसंग हैं। यह भाग छोटा है, जिसमें घर-परिवार के बीच लौटने का उल्लास मुख्य रूप से व्यक्त हुआ है। दूसरा भाग जिसमें कहानी का विकास होता है, उसमें गजाधर बाबू का अपने घर-परिवार वालों के साथ रहने से जुड़े प्रसंग हैं। इन प्रसंगों के माध्यम से गजाधर बाबू का अपने ही परिवार से होने वाले मोहभंग का अपेक्षा त विस्तार से वर्णन है। तीसरे भाग में उनका वापस रामजी चिनी मिल लौट जाने का निर्णय और लौटना है, जिस नौकरी पेशे से वे रिटायर होकर आए थे। इस तरह गजाधर बाबू की नौकरी के उपरान्त से पहली वापसी और घर से दूसरी वापसी में कहानी खत्म हो जाती है।

4.3.7.3 'वापसी' कहानी का चरित्र–चित्रण

कहानी में सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरित्र गजाधर बाबू का है। प्रारम्भ में ही वह एक सहृदय एवं स्नेही व्यक्ति के रूप में हमारे सामने आते हैं। घर जाने की खुशी में भी वह एक विषाद का अनुभव करते हैं, जैसे एक परिचित स्नेह, आदरमय, सहज संसार में उनका नाता टूट रहा हो। उनका सेवक गनेशी उनके जाने पर दु:खी होता है, तो वे कहते हैं, ''कभी कुछ जरूरत हो तो लिखना गनेशी, इस अगहन तक बिटिया की शादी कर दो।'' उन्हें अपनी पत्नी और बच्चों से बहुत लगाव था, किन्तु जब वह यह जान लेते हैं कि वह उनके लिए धनोपार्जन के निमित्त मात्र हैं, तो वे चुपचाप उनके जीवन से दूर नौकरी करने चले जाते हैं। पत्नी में सामंजस्य की क्षमता का अभाव नहीं है, किन्तु बच्चों के साथ गृहस्थ में वह रम गई है। पति को उनकी सहानुभूति की कितनी आवश्यकता है, इसका उन्हें जरा–सा भी अहसास नहीं होता है।

नरेन्द्र आधुनिक युग का वह युवक है जो पिता के साथ रहना पसन्द नहीं करता है। वह माँ से कहता है– ''अम्मा तुम बाबूजी से कहती क्यों नहीं? बैठे बिठाये कुछ करते नहीं तो नौकर को ही छुड़ा दिया। अगर बाबूजी यह समझें कि मैं साइकिल पर गेहूँ रखकर आटा पिसाने जाऊँगा, तो मुझसे यह नहीं होगा। बूढ़े आदमी है चुपचाप पड़े रहें। हर चीज में दखल क्यों देते हैं।'' बसन्ती भी पिता के टोकने के कारण उनसे बोलती तक नहीं है। उसे और उसकी भाभी को गजाधर बाबू का नौकर छुड़ाना बहुत बुरा लगता है। गजाधर बाबू के पुन: नौकरी पर चले जाने से सभी बहुत प्रसन्न होते हैं। रिटायरमेंट के बाद गजाधर बाबू बड़ी बेसब्री से घर लौटने, बीवी–बच्चों के साथ रहने की आकांक्षा करते हैं, पर सालों बाद लौटने पर घरवालों के व्यवहार से बुरी तरह आहत होते हैं। गजाधर बाबू की नौकरी के उपरान्त से पहली 'वापसी' और घर से दूसरी 'वापसी' गजाधर बाबू की जीवन–व्यथा को कहानी बेहद निराशा के साथ उजागर करती है।

4.3.8 'चीफ की दावत' – कहानीकार भीष्म साहनी का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.8.1 'चीफ की दावत' – कहानीकार भीष्म साहनी का परिचय

बीसवीं सदी के हिंदी साहित्य को असली विद्वत्ता और साहित्य से समृद्ध करनेवाले रचनाकारों में भीष्म साहनी का नाम अजरामर रहा है। भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त, 1915 को रावलपिंडी (पाकिस्तान) के छाबी मोहल्ले में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम हरबंसलाल था और माता का नाम लक्ष्मी देवी था। वे दोनों धार्मिक प्रवृत्ति के थे। भीष्म साहनी के एक भाई और दो बहनें थीं। भाई का नाम बलराज और बहनों का नाम वीरा और सुमिता था। साहनी जी की आरंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। कुछ दिनों बाद वे अपने भाई के साथ गुरूकुल में जाने लगे, इसके पश्चात स्थानिय आर्य स्कूल में पढ़ने लगे। उन्होंने डी. ए. वी. इंटरमीडिएट कलेज, लाहौर के गर्वमेंट कलेज में उच्च शिक्षा ग्रहण की। साहनी जी ने इंद्रनाथ मदान के निर्देशन में पीएच. डी. की।

भीष्म साहनी का विवाह 1944 ई. में शीला जी से हुआ। उनके लेखन–कार्य में शीला जी का योगदान काफी सराहनीय माना जाता है। साहनी जी को हिंदी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी भीष्म साहनी सामान्य जन–जीवन के आवाज और उनकी

समस्याओं को उठाने का काम बड़ी कुशलता से करते हैं। उनकी मातृभाषा पंजाबी तथा वे अंग्रेजी के प्राध्यापक होने के बावजूद भी उन्होंने अपना साहित्यिक योगदान हिंदी में ही दिया। इस महान साहित्यकार का देहावसान उम्र के 88 वर्ष में 11 जुलाई, 2003 ई. में हुआ।

भीष्म साहनी जी को उनके साहित्य के योगदान के लिए पद्मभूषण पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत नेहरू लैंड़ पुरस्कार, प्रेमचंद पुररस्कार, शलाका सम्मान, मैथिलीशरण सम्मान आदि पुरस्कारों एवं सम्मानों से नवाजा गया है।

कृतित्व –

1. उपन्यास – 'झरोखे', 'कडियाँ', 'तमस', 'वसंती', 'मय्यादास की माड़ी', 'कुंती', 'नीलू निलिमा निलोफर'।
2. कहानी–संग्रह – 'भाग्यरेखा', 'पहला पाठ', 'भटकती राख', 'पटरियाँ', 'वाङ्व', 'शोभा यात्रा', 'निशाचर', 'वाली', 'मेरी प्रिय कहानिया', 'डायन', 'प्रतिनिधि कहानियाँ'।
3. नाटक – 'हानुष', 'कबीरा खडा बाजार में', 'माधवी', 'मुआवजे', 'रंग दे बसन्ती चोला', 'आलमगीर'।
4. निबंध – 'अपनी बात'।
5. अनुवाद – भारत सरकार की ओर से नाटके ां के अनुवाद के रूप में भारतीय तियों का अंग्रेजी अनुवाद किया।
6. संपादन – 'नई कहानी'।
7. जीवनी – 'मेरे भाई बलराज'।
8. बाल–साहित्य – 'गुलेल का खेल', 'वापसी'।
9. साक्षात्कार – 'मेरे साक्षात्कार'।

4.3.8.2 'चीफ की दावत' कहानी का कथानक

प्रस्तुत कहानी 'चीफ की दावत' मध्यम वर्ग की कहानी है, जो अपनी तरक्की, पदोन्नति की संभावनाओं के लिए अपने चीफ की नजरों में अपने जीवन की त्रिमता को प्रस्तुत करना चाहता है। इस कहानी का केन्द्र बिन्दू मिस्टर शामनाथ व उसकी बूढ़ी माँ है। कथा में शामनाथ के माध्यम से शिक्षित पीढ़ी के अशिक्षित आचरण को जीवंतता के साथ पेश किया गया है। कहानी का नायक मध्यवर्गीय परिवार का शामनाथ अपने–आप को आधुनिक बोध से जकड़े हुए है। शामनाथ अपनी हैसियत और परिस्थिति को ध्यान में रखकर जीना कबूल नहीं करता। कहानी के माध्यम से साहनी जी ने मध्यमवर्गीय समाज के खोखलेपन, दिखावटीपन तथा स्वार्थपरता को दर्शाया है। 'चीफ की दावत' एक ऐसी ही कहानी है, जिसमें

स्वार्थी बेटे शामनाथ को अपनी विधवा बूढ़ी माँ का बलिदान नजर ही नहीं आता है। भीष्म साहनी ने शामनाथ के माध्यम से शिक्षित युवा पीढ़ी पर करारा व्यंग्य किया है। आज के शिक्षित युवा वर्ग अपने माता-पिता को बोझ समझते हैं। युवा अपनी सुख-सुविधा के लिए अपने माता-पिता को छोड़ देते हैं। वे यह तक भूल जाते हैं कि आज जिस समाज मे वे रह रहे हैं वह उनकी बदौलत है। अपने बच्चो को काबिल बनाने के लिए माता-पिता अपना सर्वस्व समर्पित कर देते हैं। उनका पूरा जीवन अपने बच्चों की खुशी के लिए, बलिदान में व्यतीत हो जाता है और अंतत: यह बलिदान अबाध रहता है।

शामनाथ दफ्तर में नौकरी करता है। वह धीरे धीरे उच्च पद पाने की महत्वाकांक्षा रखने लगता है। अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वह विदेशी चीफ की खुशामदी करता है। वह चीफ साहब को दावत देता हैं कि खुशामद करने से उसकी पदोन्नति में उनका सहयोग मिलेगा। वह अपनी उन्नति के लिए सब कुछ करने को तैयार है। इसी कारण वे चीफ साहब को अपने घर दावत पर आमंत्रित करता है। शामनाथ घर को खूब सजाता-सँवारता है। कमरे की सफाई, घर के सामान की यथास्थान व्यवस्था, भोजन सामग्री की समय पर तैयारी आदि सब कुछ कर लेता है। अब समस्या यह उत्पन्न होती है कि मकान में सब कुछ नया आधुनिकता से ओत-प्रोत होते हुए भी माँ पुरानी होती है। इस पुरानेपन से छुटकारा पाने का शामनाथ को कोई उपाय नहीं सूझता। कभी वह सोचता है कि माँ को पड़ोसी के घर भेज दिया जाए और कभी कमरे में बन्द कर दिया जाए, वरना कहीं चीफ साहब के सामने न पड़ जाए और उसकी शान में धब्बा लग जाए।

शामनाथ अपनी माँ की अनावश्यक सामान की तरह उपेक्षा करता है। वह अपनी निरक्षर व बूढ़ी माँ को कहीं छुपाना चाहता है। ऐसी स्थिति में उसे अपनी बूढ़ी माँ भी अपनी तरक्की में रुकावट नजर आने लगती है। अन्त में वे यह निर्णय लेता है कि माँ को अच्छे ढ़ंग से पहना-ओढ़ाकर रखा जाए कि संयोगवश चीफ साहब की नजर पड़ भी जाए, तो उनकी स्थिति बिगड़ने न पाए। माँ को बताया जाता है कि उनके आने पर वह कैसे रहेंगी और कैसे बोलेंगी? माँ असमंजस में एक नए घेरे में स्वयं को बंधा अनुभव करने लगती है। शामनाथ अपनी पदोन्नति के लिए अपनी माँ को अकेलेपन का शिकार बना देता है। वह उसके द्वारा किए गए बलिदान को भी नहीं समझता। माँ द्वारा किए गए समर्पण को वह चंद रूपयो में तोलता है। माँ को लेकर किसी प्रकार की जिम्मेदारी को वह नहीं समझता। किन्तु इस स्थिति में भी माँ अपने पुत्र की पदोन्नति के लिए सब कुछ करने को तैयार है।

चीफ साहब के आने पर माँ को छिपा कर रखा जाता है, किन्तु पार्टी का पहला दौर समाप्त होता है और लोग भोजन पर जाने लगते हैं, तो चीफ साहब की दृ ष्टि शामनाथ की माँ पर जाती है। चीफ साहब बड़े फैशनेबल और सम्पन्न अमेरिकन व्यक्ति हैं। वे बड़े प्रेम से मिलकर माँ का आदर करते हैं और उन्हें भारतीय संस्कृति का प्रतीक मानते हैं। वे माँ से लोक-कला के विषय में जानने की इच्छा व्यक्त करते हैं और फिर एक गीत सुनाने का प्रस्ताव रखते हैं। विवशता में माँ उन्हें एक लोकगीत सुनाती हैं। और उनसे लोकगीत सुनकर वे बहुत प्रसन्न होते हैं। वे माँ से लोक-कला का प्रतीक 'फुलकारी' बनाने को कहते हैं। शामनाथ को माँ की विवशता के बावजूद साहब की खुशामदगी करनी ज्यादा आवश्यक जान पड़ती है, क्योंकि वह

सोचता है कि साहब खुश होगें तो उसे तरक्की मिलेगी। और माँ विवश होकर भी फुलकारी बनाने का आश्वासन देती है।

अब पुत्र के सन्तुष्ट होने पर माँ हरिद्वार जाने की इच्छा प्रकट करती है, लेकिन शामनाथ अपने स्वार्थ के लिए उसे रोकता है। पुत्र की पदोन्नति के लिए माँ अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार रहती है। शामनाथ अवसरवादिता एवं स्वार्थपूर्ति की साक्षात मूर्ति है। परन्तु विड़म्बना की बात तो यह है कि जिस माँ को वह अपनी तरक्की में बाधक समझता है, वही माँ उसे तरक्की दिलवाती है। प्रस्तुत कहानी युवा पीढ़ी के यथार्थ तथा बुजुर्गों के प्रति घटती जिम्मेदारियों का अंकन करती है। आधुनिक मानवीय मूल्यों के विघटन, पारिवारिक मूल्यों के प्रति अनास्था तथा बेगानेपन का चित्रण 'चीफ की दावत' में बहुत अच्छी तरह हुआ है।

4.3.8.3 'चीफ की दावत' कहानी का चरित्र–चित्रण

इस कहानी के केन्द्र बिन्दु मिस्टर शामनाथ व उसकी बूढ़ी माँ है। शामनाथ जो अपनी पदोन्नति और भौतिक जीवन के सुख–क्षणों की प्राप्ति के स्वप्नों हेतु आर्थिक लाभ देखता है। उसने यह नहीं जाना की माँ के नि:स्वार्थ प्रेम और भारतीय आदर्श को खोकर हम पश्चिमी सभ्यता के जाल में फँसते जा रहे हैं। भारतीय परिवारों में व्याप्त ऐसी प्रवृत्ति के बहुसंख्यांकों का प्रतिनिधित्व शामनाथ करता है। शामनाथ मध्यवर्गीय समाज का एक स्वार्थी तथा लालची इन्सान है। वह अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए अपनी माता के हृदय पर कुठाराघात करता है। वह पश्चिमी सभ्यता के रंग में इतना रंगा हुआ है कि वह अपनी माँ को काम करने के लिए मजूबर करता है। शामनाथ अपनी पदोन्नति के लिए अपनी माँ को अकेलेपन का शिकार बना देता है। वह उसके द्वारा किए गए बलिदान को भी नहीं समझता। शामनाथ अवसरवादिता व स्वार्थपूर्ति की साक्षात मूर्ति है। परन्तु विड़म्बना की बात तो यह है कि जिस माँ को वह अपनी तरक्की में बाधक समझता था उसी माँ ने उसे तरक्की दिलवाई। शामनाथ के माध्यम से शिक्षित पीढ़ी के अशिक्षित आचरण को जीवंतता के साथ कहानी पेश करती है।

कहानी में शामनाथ की माँ दूसरी मुख्य पात्र है, जो एक सीधी–सादी ग्रामीण घरेलु महिला है। माँ को अपने बेटे का दिखावापन पसंद नहीं है। माँ अपने बेटे से प्रेम करती है, इसलिए बेटे द्वारा उपेक्षापूर्ण व्यवहार करने के बावजूद चुपचाप सहती रहती है। घर–परिवार में माँ की दुर्दशा को कहानी चित्रित करती है। माँ का जीवन वृद्धावस्था की त्रासदियों का सशक्त रेखाचित्र है। कहानी में माँ बिल्कुल अकेली है। वह घर में अकेली है, क्योंकि बेटा और बहू उसे माँ नहीं एक मुसीबत मानते हैं। वह समाज में भी अकेली है, क्योंकि अपना गाँव छोड़े उसे अरसा हो गया है, जिस मुहल्ले में वह रहती है, वहाँ उसकी एक विधवा हम उम्र सहेली तो है, पर बेटे के राज–पाट में माँ को न सहेली के यहाँ जाने और न उसे अपने पास बुलाने की इजाजत है। घर में आनेवाले मेहमानों से तो उसे छिपा कर ही रखा जाता है। माँ हमेशा बेटे से ड़री दुबकी, आतंकित रहती है। माँ गरीबी में आभूषण बेच–बेच कर शामनाथ को शिक्षित करती है और आज पल–पल

आतंकित करने वाले बेटे के लिए भी उज्ज्वल भविष्य और तरक्की की कामना करनेवाली माँ अपनी कमजोर आँखों के बावजूद फुलकारी बनाने को तत्पर है।

4.3.9 'लड़कियाँ' – कहानीकार ममता कालिया का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.9.1 'लड़कियाँ' – कहानीकार ममता कालिया का परिचय

आधुनिक हिंदी साहित्य के जाने–माने महिला साहित्यकारों में ममता कालिया का नाम अग्रणी है। ममता कालिया का जन्म 2 नवम्बर, 1940 को वृंदावन में हुआ। उनके पिता का नाम विद्याभूषण अग्रवाल और माता का नाम इन्दुमति था। उनकी शिक्षा दिल्ली, मुंबई, पुणे, नागपुर और इंदौर में हुई। उन्होंने इंदौर के विक्रम विश्वविद्यालय से बी. ए. की परीक्षा उच्च श्रेणी में तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा के तुरंत बाद उन्होंने दौलतराम महाविद्यालय, दिल्ली में अध्यापन कार्य की शुरूआत की। तत्पश्चात् एस. एन. डी. टी. विश्वविद्यालय, मुंबई के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन का उन्हें अवसर प्राप्त हुआ। सन 1973 में महिला सेवासदन डिग्री कलेज, इलाहाबाद में उन्हें प्रधानाचार्य की नौकरी प्राप्त हुई।

ममता कालिया का विवाह 1964 को दिल्ली के प्रसिद्ध साहित्यकार रवींद्र कालिया के साथ हुआ। उन्हें अनिरूद्ध और प्रबुद्ध ये दो संताने हुई। सेवानिवृत्ति के उपरांत वे निरंतर सृजन कार्य में जुड़कर समाज की सेवा में रत हैं। समाज की जीवंत समस्याओं चित्रण उनकी रचनाओं की विशेषता है। स्त्री जीवन की समस्याओं के साथ मानवीय मूल्यों एवं संवेदनाओं को उन्होंने अपने लेखन में स्थान दिया। समकालीन समाज की संवेदनाओं का लेखा–जोखा उनके साहित्य का केंद्र बिंदु है। युगों–युगों से पीड़ित, शोषित, प्रताड़ित, उपेक्षित, रूढ़ियों के बंधन में बँधे रहनेवाली नारी का यथार्थ एवं सजीव चित्रण उनके रचनाओं की प्रमुख विशेषता रही है। रोजमर्रा के संघर्ष में युद्धरत जीवन की व्यथा पर वे अपने साहित्य में सशक्त टिप्पणियाँ करती हैं। उनकी रचनाओं में प्राप्त उनके विचार आधुनिक समस्याओं से ओत–प्रोत हैं।

सर्वश्रेष्ठ कहानीकार सम्मान, सर्वश्रेष्ठ कहानीकार, यशपाल सम्मान, रचना सम्मान, महादेवी वर्मा अनुशंसा सम्मान, सावित्रीबाई फुले सम्मान, सृजनात्मक लेखन हेतु सम्मान, साहित्य भूषण पुरस्कार आदि पुरस्कारों व सम्मानों की वे अधिकारिणी रही हैं।

कृतित्व –

1. उपन्यास – 'बेघर', 'नरक दर नरक', 'प्रेम कहानी', 'लड़कियाँ', 'एक पत्नी के नोटस', 'दौड़'।
2. कहानी–संग्रह – 'छुटकारा', 'एक अदद औरत', 'सीट नंबर छह', 'प्रतिदिन', 'उसका यौवन', 'जाँच अभी जारी ह', 'बोलनेवाली औरत', 'मुखौटा', 'निर्मोही', 'थिएटर रोड़ के कौवे', 'और पच्चीस साल की लड़की'।
3. कविता–संग्रह – 'खाँटी घरेलु औरत', 'कितने प्रश्न करूँ' (खण्डकाव्य), 'ए ट्रिब्युट टू पापा एण्ड अदर पोएम्स'।

4. नाटक एवं एकांकी-संग्रह – 'आत्मा अठन्नी का नाम है', 'यहाँ रोना मना है', 'आप न बदलेंगे' आदि।

4.3.9.2 'लड़कियाँ' कहानी का कथानक

'लड़कियाँ' ममता कालिया की बेहद चर्चित कहानी है, जिसमें लड़कियों के प्रति समाज के दकियानूसी नजरिए पर तीखा कटाक्ष किया गया है। कहानी में आशा और सुधा को रात को कुछ देर से घर पहुँचने और दुर्घटना से बाल-बाल बचने पर भी घरवालों के असहज आक्रोश और लांछन को झेलना पड़ता है। घर ही नहीं कॉलेज में भी लोगों के कटाक्षों को सहने के बाद वे स्वयं साहस दिखाकर स्थिति को सामान्य बनाने का प्रयास करती हैं। प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने यह संदेश देने का प्रयास किया है कि लड़कियों को दमन के खिलाफ स्वयं आवाज उठानी होगी, तभी वे अपने अस्तित्व को बचा सकेंगी।

कहानी की शुरूआत आशा और सुधा की गाढ़ी मित्रता की किस्सों से होती है। पढ़ाई में सबसे तेज, अपने काम से काम रखती और नारी-अस्मिता से लथपथ आशा और सुधा अपनी ही विशेष दुनिया में खोए रहती हैं। हररोज की तरह एक शाम आशा और सुधा घूमते-घूमते समय की सीमा का उल्लंघन करती हुई दूर तक जाती हैं। जिस अंगार से लालायित हो वे इतनी दूर पहुँचती हैं, वहाँ का नजारा बेहद खौफनाक होता है। वहाँ जमीन पर दहकते अंगारों के एक ढ़ेर, उसके करीब रखा नरमुंड, कुछ लड़कियाँ और मिट्टी के एक पात्र को वे पाती हैं। इस दृष्य को देखकर आतंक से वे दोनों तिलमिला उठती हैं। तभी भयानक मुखाकृति वाला एक तांत्रिक साधु जो बिल्कुल ही निर्वस्त्र था और जिसके एक हाथ में चिलम और दूसरे में तमंचा था, उनके पीछे भागता है। तब गिरती-पड़ती आशा और सुधा बेसुध होकर इस कदर भागती हैं कि दुपट्टे और सलवारों के सीवन के उधेड़नी की भी सुध उनको नहीं रहती है।

जैसे-तैसे घर में आने के बाद आशा और सुधा दोनों के घरों में बवाल मच जाता है। आठ बजने को हुए तो आशा के भाई को सुधा के घर भेजा जाता है। पता चलता है की दोनों ही नहीं लौटी हैं। कुछ देर के इंतजार के बाद दोनों घरों की माताएँ लड़कियों की निर्द्वंदिता पर खिन्न होकर एक-दूसरे पर दोषारोपण करती हैं। आशा के रिश्ते की बात चल रही होती है और लग-भग सबकुछ तय हुआ होता है। पर आशा की आज की स्थिति को कुकृत्य मानकर उसके माता-पिता दोनों ही उसे दोषी मानकर उसपर लांछन लगा देते हैं। और तो और आशा की माँ सुधा पर भी दोषारोपण करती है। सुधा के घर की अवस्था भी कुछ अलग नहीं होती है। आशा की माँ से बहुत कुछ सुनना पड़ने के कारण सुधा की माँ भी सुधा को आड़ेहाथों ले लेती है। वह अपनी कोख तक को कोसती रहती है। उस रात कोई खाना तक नहीं खाता है।

सुबह सुधा के पिता ऐलान करते हैं कि आज से सुधा का कॉलेज जाना बंद। लेकिन हिमाकत से भरी सुधा जबरदस्ती तैयार होकर कॉलेज जाती है, जहाँ उसे आशा पहले से ही क्लास में पहुँची मिलती है। क्लास में दोनों के साथ लड़के शरारत करते हैं। उनको प्रोफेसर की ओर से भी कोई सहायता नहीं मिलती है। इतने में सुधा से गुस्सा सहा नहीं जाता और वह पास बैठे एक सक्रिय लड़के को तड़ातड़ तमाचे जड़ देती है। इससे क्लास में भगदड़ मच जाती है। सुधा की मदद करते हुए आशा देखती है कि प्रोफेसर अपना

रजिस्टर संभाल बिल्ले की तरह दबे पाँव क्लास से जा रहा है। दोनों लड़कियों की अतिरिक्त उत्तेजना, आक्रोश और आक्रामकता को देख लड़के सकपका जाते हैं और लड़कियों के चेहरे तमतमा रहे होते हैं, वे अभी भी हाँफ रही होती हैं। यहाँ कहानी का अंत होता है। प्रस्तुत कहानी में लड़कियों के प्रति परिवार एवं समाज का देखने का भारतीय दकियानूसी दस्तूर और घटिया नजरिया शर्मिंदगी के साथ खुलकर सामने आता है। अनायास हुई एक घटना के लिए, जहाँ आशा और सुधा का कोई कसूर नहीं, परिवार द्वारा उन्हें ही जिम्मेदार ठहरा कर कोसा जाता है। उनके साथ ऐसा बर्ताव क्यों? क्योंकि वे लड़कियाँ हैं इसलिए? और इस परिवार और समाज की सड़ी-गली मान्यताओं का खुलकर विरोध करते हुए उनपर विजय-प्राप्ति का बेहद अनूठा संदेश ममता जी प्रस्तुत कहानी के माध्यम से सामने रखती हैं।

4.3.9.3 'लड़कियाँ' कहानी का चरित्र-चित्रण

'लड़कियाँ' कहानी के मुख्य पात्र आशा और सुधा हैं, तो आशा और सुधा के भाई, आशा और सुधा के माता-पिता, तांत्रिक साधु तथा प्रोफेसर गौण पात्र हैं। आशा और सुधा कहानी के केंद्र में रहकर लड़कियों के प्रति का माता-पिता, परिवारवालों तथा समाज का अन्याय एवं अपमानजनक रवैया, समाज में फैली अंधश्रद्धा तथा लड़कियों के प्रति की समाज की सड़ी-गली मान्यताओं के खिलाफ के विद्रोह को उघाड़कर सामने रखती हैं। लड़कियों की लड़कियाँ होनेपर लगाई गई घर-परिवार की पाबंदियों को इन दो चरित्रों के माध्यम से कहानी बयान करती है, जो समाज में लड़कियों की स्थिति को उजागर करती है।

हररोज की तरह एक शाम आशा और सुधा घूमते-घूमते समय की सीमा का उल्लंघन करती हुई दूर तक जाती हैं। वहाँ एक खौफनाक दृश्य देखकर तांत्रिक साधु के उनके पीछे पड़ने के कारण गिरती-पड़ती आशा और सुधा बेसुध होकर इस कदर भाग आती हैं कि दुपट्टे और सलवारों के सीवन के उधेड़नी की भी सुध उनको नहीं रहती है। जैसे-तैसे घर में आने के बाद आशा और सुधा दोनों के घरों में बवाल मच जाता है। दोनों की स्थिति को कुकृत्य मानकर उसके माता-पिता दोनों ही उन्हें दोषी मानकर लांछन लगाते हैं। सुधा की माँ तो कोख तक को कोसती रहती है। सुबह सुधा के पिता ऐलान करते हैं कि आज से सुधा का कॉलेज जाना बंद। लेकिन हिमाकत से भरी सुधा जबरदस्ती तैयार होकर कॉलेज जाती है, जहाँ आशा पहले से ही क्लास में पहुँची हुई है। क्लास में दोनों के साथ लड़के शरारत करते हैं। उनको प्रोफेसर की ओर से भी कोई सहायता नहीं मिलती है। इतने में सुधा से गुस्सा सहा नहीं जाता और वह पास बैठे एक सक्रिय लड़के को तड़ातड़ तमाचे जड़ देती है। और दोनों लड़कियों की अतिरिक्त उत्तेजना, आक्रोश और आक्रामकता को देख लड़के सकपका जाते हैं और लड़कियों के चेहरे तमतमा रहे होते हैं, वे अभी भी हाँफ रही होती हैं। अत: अनायास हुई एक घटना के लिए, जहाँ आशा और सुधा का कोई कसूर नहीं, परिवार द्वारा उन्हें ही जिम्मेदार ठहरा कर कोसा जाता है। आशा और सुधा द्वारा घर-परिवार और समाज की इस घिनौनि वृत्ति के प्रति विद्रोह, परिवर्तन तथा विजय-प्राप्ति के संदेश को प्रस्तुत करना ही कहानी का लक्ष्य रहा है।

4.3.10 'काला बाप गोरा बाप' – कहानीकार महीप सिंह का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.10.1 'काला बाप गोरा बाप' – कहानीकार महीप सिंह का परिचय

संचेतन कहानी आंदोलन के प्रवर्तक महीप सिंह का जन्म उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले में 15 अगस्त, 1930 में हुआ। उनके पिता कुछ वर्ष पहले ही सराय आलमगीर (जिला गुजरान, पश्चिमी पाकिस्तान) से आकर उन्नाव में बस गए थे। उन्होंने डी. ए. बी. कलेज, कानपुर से हिंदी में एम. ए. और आगरा विश्वविद्‌यालय से पीएच. डी. की। खालसा कलेज, मुम्बई एवं खालसा कलेज, दिल्ली में अध्यापन सहित कन्साई विश्वविद्‌यालय, हीराकाता (जापान) में विजिटिंग प्रोफेसर रहे। उन्होंने कई देशों की साहित्यिक यात्राएँ की। उन्होंने पत्रिका (दूरदर्शन) का अनेक वर्ष संयोजन किया। उनके धारावाहिक 'लोक–लोक की बात' और 'रिश्ते' प्रसारित हुए हैं।

महीप सिंह को 60 के दशक में साहित्य जगत् में संचेतन कहानी के आंदोलन की शुरूआत करने के लिए जाना जाता है। उन्होंने 'संचेतना' पत्रिका का संपादन भी किया। उन्होंने करीब 125 कहानियाँ और कई उपन्यास लिखे। वे शिक्षा मंत्रालय, हिंदी संस्थान, हिंदी व पंजाबी अकादमी, भाषा विभाग (पंजाब) सहित कई संस्थाओं से सम्मानित हुए। उन्हें सन 2009 का 'भारत भारती' सम्मान प्रदान किया गया था।

महीप सिंह की कहानियों का अपना एक व्यक्तित्व है और अपनी शक्तियों और सीमाओं के साथ यह व्यक्तित्व उन्हें समकालीन भीड़ से अलगाता है। उन्होंने नई कहानी और अकहानी की मानव–विरोधी एवं रूग्ण मानसिकतावादी प्रवृत्तियों का विरोध किया और कहानी को जीवन के प्रति स्वस्थ एवं सकारात्मक दृष्टि प्रदान की। यथार्थ दृष्टि की सचेतना, सहजता, सक्रियता, कलात्मक विसंगति आदि दृष्टि से उन्होंने कहानियाँ लिखी। उनकी कहानियों में जीवन–अनुभवों का वैविध्य है, आज के विविध जीवन सत्वों की अनुभूतिमूलक विवृत्तियाँ है। महींप सिंह ने हमेशा महानगरों का जीवन व्यतीत किया, इसलिए महानगरीय जीवन में निर्मित अनिश्चय, बिखराव, संदेह, असुरक्षा, जो आवश्यक तत्व बने थे, उन्हें उन्होंने महूसस किया तथा अपने लेखन द्‌वारा समाज–सम्मुख रखा। महानगरीय समस्याओं के उद्‌घाटन के साथ जीवन जीने के लिए स्वस्थ एवं सक्रिय दृष्टि उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से दी है।

कृतित्व –

1. उपन्यास – 'यह भी नहीं', 'बीच की धूप', 'धूप ढ़लने के बाद'।
2. कहानी संग्रह – 'सुबह के फूल', 'उजाले के उल्लू', 'एक लडकी शोभा', 'मिशन', 'कुछ और कितना', 'कितने संबंध', 'धूप की उँगलियों के निशान', 'चर्चित कहानियाँ', 'मेरी प्रिय कहानियाँ', 'इक्यावन कहानियाँ' आदि।
3. निबंध – 'कुछ सोचा', 'कुछ समझा'।
4. शोध-ग्रंथ – 'गुरू गोविंद सिंह और उनकी हिंदी कविता', 'आदिग्रंथ में संग्रहित संत कवि', 'सिख विचारधारा : गुरूनानक से गुरू ग्रंथ साहब तक'।

5. जीवनी – 'गुरू गोविंद सिंह : जीवनी और आदर्श', 'गुरू तेगबहादुर : जीवन और आदर्श', 'स्वामी विवेकानंद'।

6. बाल-साहित्य – 'न इस तरफ', 'गुरूनानक जीवन प्रसंग', 'एक थी संदूकची'।

7. अन्य – 'संचेतन कहानी : रचना और विचार', 'गुरूनानक और उनका काव्य', 'कविता की भूमिका', 'लेखक और अभिव्यक्ति की स्वाधीनता', 'हिंदी उपन्यास : समकालीन परिदृश्य', 'साहित्य और दलित चेतना', 'जापान साहित्य की झलक', 'आधुनिक उर्दू साहित्य'।

8. संपादन – चार दशकों से 'संचेतना' का संपादन, 'विष्णु प्रभाकर : व्यक्तित्व और साहित्य'।

4.3.10.2 'काला बाप गोरा बाप' कहानी का कथानक

डॉ. महीप सिंह का हिंदी साहित्य में कहानीकार के रूप विशेष स्थान रहा है। उन्होंने 'संचेतन' कहानी के रूप में नई कहानियों को पाठकों के सामने रखा है। उन्हें संचेतन कहानी आंदोलन के प्रवर्तक माना जाता है। उनकी कई कहानियाँ हिंदी कहानी साहित्य में मील का पत्थर साबित हुई हैं, उनमें से ही 'काला बाप गोरा बाप' एक विशेष कहानी है। प्रस्तुत कहानी का केंद्रित आशय तलाकशुदा दाम्पत्य जीवन है। इस कहानी की प्रमुख पात्र जमीला है, जिसकी शादी यूनुस के साथ हुई है और उन्हें दो बेटियाँ भी हैं। फिर भी यूनुस उसे तलाक देता है और सकीना के साथ दूसरी शादी करता है। जमीला अकेली पड़ जाती है, पर वह खुद को अकेला महसूस नहीं होने देती। क्योंकि दो संतानों की जिम्मेदारी उस पर होती है। खुद को नए साँचे में ढ़ालते हुए वह अपना तथा अपनी बेटियों का भी भविष्य सँवारने में जुट जाती है।

दस साल गुजरने के बाद यूनुस अपनी बीवी तथा बेटियों को मिलना चाहता है। इसलिए वह जमीला को पत्र लिखता है। पत्र पढ़ने के बाद जमीला के मन में संदेह तथा मुख पर मंद सी मुस्कान आती है क्योंकि कुछ साल पहले इन दोनों पति-पत्नी का रिश्ता बहुत ही प्यारभरा होता है। पर अब वक्त बहुत बदल चुका है। यूनुस अपनी बेटियों को मिलना चाहता है, पर वे दोनों अब बड़ी हुई हैं। बड़ी बेटी शीरी फिल्मों में काम करती है। फिल्मों में काम करने के कारण उसका पहला नाम भी बदल गया है। कामिनी बोस इस नाम से उसकी एक अलग पहचान बन चुकी है। छोटी बेटी शहनाज अब ग्यारह साल की हो चुकी है, जो सरजू महाराज जी से नृत्य करना सिख रही है। उसने भी दो-चार फिल्मों में काम किया है। लोग उसके बारे यहाँ तक कहते हैं कि यह लड़की तो बहुत चमकेगी और अपना नाम रोशन करेगी। जमीला यूनुस को अपनी बेटियों से मिलने के लिए इंकार नहीं करती, बल्कि उनके बदलते हुए हालातों के बारे में उसे सबकुछ बता देती है। साथ-साथ अपने बारे में उसे यह भी बताती है, जिस जमीला को तुमने असहाय तथा बेसाहारा छोड़ दिया था, वह जमीला जो बुरखे में रहना पसंद करती थी और यूनुस की सारी बातों को मानकर चलती थी, जिसके खुद के कोई विचार नहीं थे, मानो उसका जीवन चार दिवारी के अंदर ही अंदर था। वह जमीला अब स्वतंत्र हो चुकी है। जो खुद के निर्णय स्वयं ले रही है। अनवर के साथ शादी करने के बाद उसके व्यवहार में बदलाव आ चुका है। उसने बुरखे को उतार दिया है। जो कभी दो शब्द भी नहीं बोल पाती थी, वह अब बेझिझक अपनी बातों को स्पष्ट रूप से कहती है। समय-समय पर करारा जवाब भी देती है।

जमीला को यूनुस अपनी बेटियों के साथ जीवन की ठोकरें खाने के लिए छोड़कर चला जाता है। बाद में अनवर जैसा खुबसूरत और नौजवान लड़का उसका हाथ थाम लेता है। वह सोचती है कि अनवर जैसा दिखने में गोरा, खुबसूरत नौजवान मुझ जैसी स्त्री से, जिसकी दो बेटियाँ भी है, उससे शादी क्यों करना चाहता है। जरूर इसमें अनवर का निहित स्वार्थ छिपा होगा, ऐसा उसे लगता है। इसमें अनवर का स्वार्थ यह होता है कि जमीला की दोनों बेटियाँ बहुत ही खुबसूरत होती हैं और वह चाहता है कि उसकी बेटियाँ फिल्मों में काम करें। उनके फिल्मों में काम करने से उसे अच्छे-खासे पैसे भी मिल सकेंगे। पिता के रूप में अनवर जरूर स्वार्थी है, लेकिन वह दोनों बेटियों की हिफाजत भी करता है, उनको शिक्षा के साथ-साथ सफल एवं कामयाब भी बनाता है। शीरी और शहनाज को वह अपनी ही बेटियाँ मानता है और उनसे प्यार भी करता है। दोनों लड़कियाँ भी उसे ही अपना बाप समझती हैं और जमीला को भी वह अपनी पत्नी का स्थान देता है। अनवर और जमीला को पाँच साल का एक बेटा भी है, जिसका नाम अनीस है। यूनुस इन सभी बातों को जानते हुए भी कुछ हफ्ते बाद अपनी बेटियों को मिलने के लिए चला जाता है। जमीला उसे देखकर पाती है कि वह शरीर से थका हुआ है और मन की कमजोरी के कारण उसके मुख पर मानो काली घटाएँ छाई हुई हैं। दस साल बाद यूनुस और जमीला मिलते हैं, पर उनमें अब पहले जैसा कुछ भी नहीं रहा था। मेहमान की तरह यूनुस जमीला के घर रह रहा है। दोनों लड़कियों को यूनुस के अपने पिता होने के बारे में पता नहीं होता है। यूनुस जब शहनाज की किताबों के पन्ने को पलट कर देख रहा होता है तो उसे उसपर गुस्सा आता है, वह उसे बिल्कुल पसंद नहीं करती है। इस बारे में वह जब माँ से कहती है तो वह उसे समझाती है कि मेहमानों से ऐसा नहीं करना चाहिए।

यूनुस जमीला के घर आता है पर उसे ऐसे प्रतीत होता है कि उसका इस घर से कोई वासता ही नहीं है। छोटी बेटी एक दिन उसपर गुस्से से चिल्लाती है तो जमीला शहनाज को कहती है, ''चुप बदतमीज, अपने बाप को ऐसा कहते हुए शर्म नहीं आती?'' अनायास ही जमीला के मुख से यह सारी बाते निकल जाती हैं। 'बाप' यह शब्द मानों घर के चारों कोनों में गुँज रहा होता है। शहनाज इसे बर्दाश्त न कर जोर-जोर से रो पड़ती है। शहनाज को लगता है कि उसके साथ कोई साजिश की गई है, उसमें और उसके भाई-बहनों में अंतर किया हुआ है। शीरी तथा अनवर को गोरा बाप और उसे काला बाप ऐसा क्यों? उसका मन इन बातों को मानने के लिए तैयार नहीं है। यूनुस इन सभी बातों से आचरज में आ जाता है और जमीला इस घटना से आहत हो जाती है। इन परिस्थितियों में यूनुस को यहाँ से जाना ही मुनासिब लगता है और यूनुस ग्वालियर जाने के लिए पंजाब मेल जो तीन बजे छूटती है, उससे जाने की ख्वाईश अदा करता है और जमीला भी अपनी नजरों से उसे सम्मति दे देती है।

4.3.10.3 'काला बाप गोरा बाप' कहानी का चरित्र-चित्रण

'काला बाप गोरा बाप' कहानी के मुख्य पात्र जमीला और यूनुस हैं, तो अन्य गौण पात्रों में शीरी, शहनाज और अनवर आदि का समावेश हैं। जमीला के इर्द-गिर्द कहानी घूमती रहती है, जो यूनुस की पत्नी है और शीरी तथा शहनाज इन दो बेटियों की माँ है। यूनुस के तलाक देने के बाद जमीला अकेली पड़ जाती है, पर वह खुद को अकेला महसूस नहीं होने देती, क्योंकि दो संतानों की जिम्मेदारी उस पर होती है। खुद

को नए साँचे में ढ़ालते हुए वह अपना तथा अपनी बेटियों का भी भविष्य सँवारने में जुट जाती है। अनवर के साथ शादी करने के बाद उसके व्यवहार में बदलाव आ चुका है। जिस जमीला को यूनुस ने असहाय तथा बेसाहारा छोड़ दिया था, वह जमीला जो बुरखे में रहना पसंद करती थी, उसने अब बुरखे को उतार दिया है। जिसके खुद के कोई विचार नहीं थे, मानो उसका जीवन चार दिवारी के अंदर ही अंदर था। वह जमीला अब स्वतंत्र हो चुकी है। जो कभी दो शब्द भी नहीं बोल पाती थी, वह अब बेझिझक अपनी बातों को स्पष्ट रूप से कहती है। जो खुद के निर्णय स्वयं ले रही है।

यूनुस के उसके साथ के इतने कठोर बर्ताव के बावजूद भी वह जब दस साल बाद उसके घर आता है तो वह उसे सम्मान देती है, अपने घर में कुछ दिनों के लिए रख लेती है, उसपर गुस्सा न कर अपनी सारी बदली हुई स्थिति उसे बता देती है और साथ ही बड़े मन से अपनी बेटियों को उसे मिलने भी देती है, लेकिन यूनुस के उनके बाप होने के बारे में नहीं बताती। यूनुस के बारे में उसकी अबकी बेहद दयनीय अवस्था के लिए उसके मन में स्नेह और दया भाव है। छोटी बेटी एक दिन उसपर गुस्से से चिल्लाती है तो जमीला शहनाज को कहती है, ''चुप बदतमीज, अपने बाप को ऐसा कहते हुए शर्म नहीं आती?'' अनायास ही जमीला के मुख से यह सारी बातें निकल जाती हैं। शहनाज को लगता है कि उसके साथ कोई साजिश की गई है, उसमें और उसके भाई-बहनों में अंतर किया हुआ है। शीरी तथा अनवर को गोरा बाप और उसे काला बाप ऐसा क्यों? उसका मन इन बातों को मानने के लिए तैयार नहीं है। यूनुस इन सभी बातों से आचरज में आ जाता है और जमीला इस घटना से आहत हो जाती है। और फिर यूनुस के वहाँ से जाने के फैसले को वह सम्मति दे देती है। कुल मिलाकर जमीला एक अच्छी शख्सियत की परिचायक है। यूनुस के असहाय छोड़ने के बाद अपनी दो बेटियों के लिए वह ताउम्र संघर्षरत रहती है, उन्हें कामयाब बनाती है। यूनुस जब दस साल बाद आता है, तब वह अब भी उससे स्नेह से पेश आती है, उसकी परेशान अवस्था पर उसे तरस आता है, वह अफसोस जताती है। जमीला के रूप में कहानीकार ने एक आदर्श चरित्र को समाज-सम्मुख रखा है।

4.3.11 'अपराध'- कहानीकार उदयप्रकाश का परिचय, कथानक एवं चरित्र-चित्रण

4.3.11.1 'अपराध' - कहानीकार उदयप्रकाश का परिचय

भारत के प्रख्यात कवि, कथाकार, पत्रकार और फिल्मकार उदयप्रकाश का जन्म जनवरी, 1952 ई. में मध्यप्रदेश जिले के सीतापुर गाँव में हुआ था। सीतापुर गाँव छत्तीसगढ जिले का सीमावर्ती गाँव है, जिसमें आदिवासी जनसंख्या बहुलता में पाई जाती है। उदयप्रकाश का जन्म एक सामंतवादी घराने में हुआ। उनके पिता प्रेमकुमार सिंह क्षेत्र के बेहद सम्मानित व्यक्ति थे। उन्होंने प्राथमिक स्तर की शिक्षा सीतापुर में और छठी से आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई अनुपपुर में की। उच्च शिक्षा की पढ़ाई उन्होंने सागर विश्वविद्यालय से की। शिक्षा और ज्ञानप्राप्ति हेतु उन्होंने जे. एन. यू. में पीएच. डी. के लिए प्रवेश लिया। वे हिंदी के साथ-साथ फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेजी आदि भाषाओं में पूर्णाधिकार रखते हैं। सन 1978-80 तक जे. एन. यू. में और 1980-1982 संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश में उन्होंने काम किया। बाद में 'दिनमान', 'द टाईम्स अफ

इंडिया', 'संडे मेल एमीनेन्स' आदि पत्र-पत्रिकाओं में उन्होंने कार्य किया है। उनके योगदान के लिए उन्हें भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार, ओमप्रकाश सम्मान, श्रीकांत वर्मा पुरस्कार, मुक्तिबोध सम्मान, वनमाली पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, पहल सम्मान, द्विजदेव सम्मान, अंतरराष्ट्रीय पुश्किन सम्मान, कृष्ण बलदेव वैद सम्मान, महाराष्ट्र फाउंडेशन पुरस्कार आदि पुरस्कारों एवं सम्मानों से नवाजा गया है।

उदयप्रकाश बहुमुखी प्रतिभा के धनि रहे हैं। वे कवि, कथाकार, पत्रकार, अनुवादक, समीक्षक और फिल्मकार के रूप में चर्चित हैं। वे जनवादी विश्वदृष्टि रखनेवाले साहित्यकार हैं। उन्होंने कविता, कहानी, निबंध, आलोचना, पटकथा-लेखन, निर्देशन और अनुवाद आदि सभी क्षेत्रों में अपने कार्य को सफलता से निभाया है। उनकी कुछ कृतियों के अंग्रेजी, जर्मनी, जापानी एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद भी उपलब्ध हैं। उनकी कई कहानियों के नाट रूपांतर और सफल मंचन हुए हैं। वे हिंदी साहित्य जगत में एक प्रमुख साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। वर्तमान में उदय जी स्वतंत्र रूप से लेखन-कार्य कर रहे हैं।

कृतित्व –

1. कहानी-संग्रह – 'दरयायी घोडा', 'तिरिछ', 'और अंत में प्रार्थना', 'पल जोमरा का स्कूटर', 'पीली छतरीवाली लड़की', 'मेंगो मिल', 'दिल्ली की दीवार', 'अरेवा-परेवा', 'दत्तात्रय के दुख', 'मोहनदास'।
2. कविता-संग्रह – 'सुनो कारीगर', 'अबूतर-कबूतर', 'रात में हारमोनियम', 'एक भाषा हुआ करती है', 'कवि ने कहा'।
3. निबंध – 'ईश्वर की आँख', 'नई सदी का पंचतंत्र'।

4.3.11.2 'अपराध' कहानी का कथानक

'अपराध' उदयप्रकाश की बेहद मार्मिक कहानी है, जहाँ कहानीकार को अपने बचपन का अपराध-बोध वर्तमान में भी खाए जा रहा है और जिसे कभी भी क्षमा नहीं किया जा सकता और जिससे मुक्ति अब असंभव हो चुकी है। यह उनके सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है, जिसमें उन्होंने आत्मकथा के माध्यम से अपना अविस्मरणीय अनुभव पाठकों के सामने रखा है। बचपन में जब कहानीकार को अपने पोलिओ से त्रस्त लेकिन कई विद्याओं में पारंगत, कलाओं में निपुण (उनकी भुजाओं में इतना दम था कि नारियल तथा ईंट के टुकड़े-टुकड़े कर देते थे और पंजे की लड़ाई में वे किसी से हार नहीं पाते थे।) भाई से ईर्ष्या होती है और खड़ब्बल खेल में अपने से छह साल बड़े भाई, जो कहानीकार से बेहद जिम्मेदाराना एवं स्नेह से पेश आते हैं, जो अपने ही खेल में, खेल को जीतने में मशगुल हो जाते हैं, कहानीकार की तरफ उनका ध्यान ही नहीं होता और कहानीकार दुबले-पतले, कमजोर एवं उम्र में कम होने के कारण खेल में अन्य बच्चों का मुकाबला न कर सकने के कारण क्रुद्ध हो जाते हैं, तब कहानीकार ईर्ष्या, उपेक्षा तथा नगण्यता में झुलस जाते हैं। तभी कहानीकार की खड़ब्बल अचानक चट्टान से टकराकर उछल जाती है और सीधे उनके माथे पर आकर लगती है। इससे उनका माथा फूट जाता है और खून बहने लगता है। भाई घबराकर उनके माथे को अपनी हथेली से दबाए रखते हैं ताकि ज्यादा खून का बहाव न हो, उन्हें समझाने की कोशिश करते हैं।

लेकिन कहानीकार उनके भाई को उपेक्षा का दण्ड देने के लिए घर की ओर भागते हैं और माँ को झूठ बोलते हैं कि भाई ने उन्हें खड़ब्बल से मारा है। तब पिताजी भाई को बहुत पीटते हैं। भाई की अवस्था देख कहानीकार सोचते हैं कि सच बताया जाए, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी होती है और वे सच्चाई कहने से ड़रते भी हैं क्योंकि कहीं पिताजी इस बात से उनकी ही पिटाई न शुरू कर दे। ऐसे में कहानीकार जब उनकी ओर देखते हैं तो अपने भाई की आँखें लाल पाते हैं, जिसमें करूणा और कातरता होती है, जैसे वे कहानीकार से याचना कर रहे हों कि वे सच बोल दे। भाई की वे कातर आँखें वर्तमान में भी कहानीकार को कभी-कभी घूरने लगती हैं। कहानीकार की स्मृति में जब भी वे आँखें जाग उठती हैं, उनकी पूरी चेतना ग्लानि, बेचैनी और अपराध-बोध से भर उठती है।

कहानीकार इस अपराध के लिए क्षमा माँगना चाहते हैं, सजा पाना चाहते हैं। लेकिन अब तो माँ और पिताजी भी गुजर गए होते हैं, जिनसे यह बताया जाए कि उस दिन असल में क्या हुआ था। भाई को बताना चाहा, जो क्षमा कर दे लेकिन उन्हें वह घटना याद नहीं होती। लेकिन कहानीकार के सामने अब स्थिति ऐसी उत्पन्न हो जाती है कि उन्हें इस अपराध के लिए कोई क्षमा नहीं कर सकता और जिससे मुक्ति भी अब असंभव हो चुकी है।

4.3.11.3 'अपराध' कहानी का चरित्र-चित्रण

'अपराध' कहानी के मुख्य पात्र कहानीकार उदयप्रकाश स्वयं हैं। इन्हें छोड़ अन्य गौण पात्रों में उनके भाई तथा माता-पिता समाविष्ट हैं। मुख्य पात्र कहानीकार अपने भाई से प्यार करते हैं। पोलिओग्रस्त होने पर भी उनकी शक्तियों से वे परिचित हैं। वे बड़े होने के कारण अपने छोटे भाई के प्रति का उत्तरदायित्व निभाते हुए हमेशा उनका साथ देते हैं। वे कहानीकार के कारण खेल में हारने के बावजूद कभी उनको डाँटते नहीं हैं। भाई हर खेल में अव्वल हैं, इसलिए कहानीकार उनसे ईर्ष्या भाव रखते हैं। कहानीकार किसी भी खेल का हिस्सा नहीं बन पाते हैं, क्योंकि वे उनसे आयु में कम और कमजोर हैं।

खड़ब्बल खेल के समय वे सच्चाई को छुपाकर झूठ बोलते हैं। भाई की उनके कारण होती हुई दयनीय अवस्था को देखने के बावजूद भी कहीं उनकी ही पिटाई न हो इसलिए वे सच्चाई बताने से कतराते हैं। बाद में समय गुजर जाने के बाद वे अपने-आप को कसुरवार ठहराते हुए भाई के साथ जो हुआ इसमें वे अपने-आप को दोषी मानते हैं और यह बात उनको मन-ही-मन ताउम्र कचोटती रहती है। अब क्षमा माँगने एवं सजा भुगतने के बारे में सारे रास्ते बंद हो चुके होते हैं, क्योंकि माता-पिता का देहान्त हो चुका होता है और भाई को यह घटना याद भी नहीं होती है। कहानीकार इस बारे में किसी से माफी भी नहीं माँग सकते हैं और न ही खुद को भी माफ कर सकते हैं। अत: कहानीकार बचपन के अपराध को हरहाल माफी न मिलने के कारण हरदम पछताते रहते हैं और निर्मित अवस्था के लिए अपने-आप को दोषी ठहराते हैं।

4.3.12 'लाक्षागृह' – कहानीकार चित्रा मुद्‌गल का परिचय, कथानक एवं चरित्र–चित्रण

4.3.12.1 'लाक्षागृह'– कहानीकार चित्रा मुद्‌गल का परिचय

सुपरिचित कथाकार चित्रा मुद्‌गल एक प्रतिभासंपन्न तथा बहुचर्चित लेखिका हैं। उनका जन्म 10 दिसम्बर, 1944 को चेन्नई में उन्नाव जिले के निकट 'निहाली खेड़ा' गाँव में हुआ। चित्रा जी के पिता एक कलात्मक मन के व्यक्ति थे, लेकिन उनका स्वभाव हठीला था। माँ अत्यंत सुस्वभावी, पाककला निपुण, सहनशील महिला थी। वह सबकुछ चुपचाप सहती थी। शायद इसी कारण चित्रा के मन में नारी अस्मिता की मूल चेतना पनपी। चित्रा के पिता नेवी में कमांडर के रूप में कार्यरत थे। जिससे उनकी आरंभिक शिक्षा शहर और गाँव में थोड़े व्यवधानों को झेलते हुए हुई। विद्‌यालयीन जीवन में उन्होंने घरवालों के विरोध के बावजूद 'भरतनाटम्' सीख लिया। महाविद्‌यालयीन जीवन की शुरूआत सौमैया कलेज, घटकोपर से हुई। लंबे अरसे बाद उन्होंने एस. एन. डी. टी. महिला महाविद्‌यालय से स्नातक और स्नातकोत्तर की उपाधियाँ प्राप्त की। चित्रा जी का अंतर्जातिय प्रेम विवाह अवध नारायण मुद्गल जी के साथ 1965 में हुआ। राजीव तथा अपर्णा उनकी दो संताने हैं।

प्रखर चेतना की संवादिका चित्रा मुद्गल साठोत्तरी महिला कहानीकारों में बहुचर्चित हैं। सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, दांपत्य जीवन की टूटन आदि सभी समस्याओं का अंकन उनके साहित्य में होता है। नारी चेतना की पक्षधर, सुधारवादी दृष्टिकोण, संघर्षशील तथा आत्माभिमानी, बहुभाषा से रूचि, हँसमुख, आदर्श पत्नी, माता, गृहिणी आदि उनके व्यक्तित्व के कई पहलु हैं। अपने साहित्यिक योगदान के कारण वे साहित्यिक कृति पुरस्कार, बाल साहित्य कृति पुरस्कार, फणीश्वरनाथ रेणु साहित्य पुरस्कार, प्रेक्षा सम्मान, साहित्य सम्मान, अंतरराष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, विदुला सम्मान, वीरसिंह देव सम्मान, व्यास सम्मान, यू. के. कथा सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि पुरस्कारों एवं सम्मानों से सम्मानित हैं।

कृतित्व –

1. उपन्यास – 'एक जमीन अपनी', 'आवा', 'गालिगु'।
2. कहानी–संग्रह – 'जल ठहरा हुआ', 'लाक्षागृह', 'अपनी वापसी', 'इस हमाम में', 'ग्यारह लंबी कहानियाँ', 'जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं', 'चर्चित कहानियाँ', 'मामला आगे बढ़ेगा अभी', 'जिनावर', 'दि हाइना एंड अदर शर्ट स्टोरीज', 'केंचुल', 'भूख', 'लपटें', 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ'।
3. बाल उपन्यास – 'माधवी कन्नगी', 'मणि मेखल', 'जीवक' आदि।
4. बाल कहानी–संग्रह – 'जंगल का सगा', 'देश–देश की लोककथाए', 'सूझ–बूझ दूर के ढ़ोल'।
5. संपादित कहानी–संग्रह – 'असफल दांपत्य की कहानियाँ', 'टूटते परिवारों की कहानियाँ', 'भीगी हुई रेत'।

6. लेख – 'तहखानो में बंद आईनों में अक्स', 'विचार', 'बयान उनकी मुट्ठी में'।

7. अनुवाद – मराठी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषाओं से कई कहानियों, लेखों का अनुवाद।

8. अन्य – दिल्ली दूरदर्शन के लिए फिल्म 'वारिस' का निर्माण।

9. नाट-रूपांतर – 'पंच परमेश्वर तथा अन्य नाटक', 'सदगति तथा अन्य नाटक', 'बूढ़ी काकी तथा अन्य नाटक'।

4.3.12.2 'लाक्षागृह' कहानी का कथानक

चित्रा मुद्‌गल समकालीन कहानी साहित्य की ऐसी विरल प्रतिभा हैं, जिन्होंने विगत चालीस वर्षों में निरन्तर श्रेष्ठ कथा-लेखन किया है। उनकी कहानियों का फलक बहुत व्यापक है। 'लाक्षागृह' कहानी की सुनीता कामकाजी स्त्री है, जो रेलवे विभाग में अच्छे पद पर कार्यरत है। लेकिन उसके जीवन की विडम्बना है कि वह सुन्दर नहीं है। अपनी असुन्दरता के कारण वह कुँवारी रह जाती है तथा उसकी छोटी बहनें परिणय-सूत्र में बँध जाती हैं। पारिवारिक दायित्वों को निभाते-निभाते और असुंदरता के कारण उसकी विवाहयोग्य उम्र निकल जाती है। सुनीता के विवाह के विषय में कई जगह प्रस्ताव भेजे जाते हैं किन्तु वह नापसन्द कर दी जाती है।

मानसिक क्लेशों और लोकापवादों से स्वयं और अपने माता-पिता को मुक्त रखने के लिए वह दकियानूसी समाज-मान्यताओं के परे सोचती है कि वह आत्मनिर्भर है। अपना खुद का एक घर खरीद कर अनाथाश्रम से बेहद बदशक्ल बच्ची को गोद लेगी। स्त्रीत्व के मातृत्व पक्ष से वंचित न रहते हुए वह माँ बनेगी और उस बच्ची को बड़े प्यार से पालेगी-पोसेगी। अपने माता-पिता से भी अपने इस निश्चय को वह बताती है। लेकिन वे शादी के लिए अपाहिज देवेन्द्र का जिक्र कर सुनीता के मन को और अधिक ठेंच पहुँचाते हैं। वैवाहिक जीवन की चाह छोड़ चुकी सुनीता के जीवन में सिन्हा का आगमन होता है, जो उसी के दफ्तर में कार्य करता है।

विवाह जैसा संबंध दो परिवारों के आपसी सहयोग एवं समझ का सूचक होता है। परंतु आज लड़की की नौकरी और अच्छा वेतन ही विशेष मायने रखता है। 'लाक्षगृह' ऐसी ही कथा है, जिसमें लड़की असुंदर होने के बावजूद पसंद कर ली जाती है, क्योंकि वह नौकरी करती है। अपने घर की कमजोर आर्थिक स्थिति के लिए सिन्हा को पैसों की जरूरत ज्यादा होती है और इसलिए असुंदरता को नजरंदाज कर पैसा कमानेवाली सुनीता से वह शादी करना चाहता है। इसलिए स्वामीनाथन और उसके बातचीत के दरमियान स्वामीनाथन के सुनीता के बारे में बेहद अपमानजनक और घृणास्पद बात ''शी लुक्स लाइक पक्का तालीवाला!'' कहने पर भी वह कुछ झिझककर उससे प्रतिवाद करता है, ''छोड़ यार! तालीवाली ही सही। घर की हालत तुझसे छिपी नहीं।'' मतलब यह कि सिन्हा को सुनीता से कोई लगाव नहीं है, लगाव है तो सिर्फ और सिर्फ उसकी नौकरी से और तनख्वाह से। सिन्हा सुनीता के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखता है, जिसे सुनीता सहर्ष स्वीकृति देती है। सुनीता की उससे शादी तय हो जाती है। शादी के तय होते ही सुनीता

सिन्हा के साथ सुनहरे भविष्य की कामना कर संजोए बैंक की जमा-पूँजी थ्री रूम फ्लैट ओनरशीप पर बुक करते हुए खर्च करना शुरू कर देती है। सुनीता की माँ विवाह से पूर्व पैसे के खर्च पर आपत्ति भी उठाती है - ''अभी से ओनरशिप पर मकान बुक करने का क्या तुक? पैसा जोड़कर रखो। पैसा टेंट में हो तो दरवाजे हाथी बांधते समय नहीं लगता।'' माँ की आशंका सच साबित होती है।

वैवाहिक आनन्दमय जीवन क सपने बुनती सुनीता को जब सिन्हा और उसके विवाह की वास्तविकता पता चलती है, तो उसक पैरोंतले जमीन खिसक जाती है। अपने विवाह को लेकर काफी उत्साहित सुनीता को अचानक सिन्हा और स्वामीनाथन की बातचीत से पता चलता है कि उसका तथाकथित सहकर्मी सिन्हा सिर्फ उसकी नौकरी के कारण ही उससे विवाह करना चाहता है। सुनीता को इस सत्य का ज्ञान होता है कि सिन्हा ने सुखद जीवन-यापन की चाह नहीं, बल्कि उससे विवाह का सौदा किया है। सुनीता की विवशता उसका कुरूपपन था। उसने कभी यह नहीं सोचा था कि जिस व्यक्ति से वह ब्याह करने जा रही है, वह उससे नहीं केवल उसकी नौकरी से प्रेम करता है। स्वार्थपरता की आड़ में व्यक्ति इतना आत्मकेन्द्रित हो जाता है कि विवाह जैसे सम्बन्धों को भी वह ताक पर रख देता है। ऑफिस के सहयोगी स्वामीनाथन उसकी असुंदरता से घृणा करते हुए उसको किसी सुन्दर लड़की से विवाह के लिए प्रेरित करते हैं, लेकिन वह पैसे का आकांक्षी उसे यह कहकर शांत कर देता है कि - ''सोच, आठ सौ रुपये महीने कमाने वाली कहाँ मिलेगी? सौदे की कोई शक्ल-सूरत नहीं होती, मेरे यार। मैं जीवन और व्यावहारिकता को एक-दूसरे का पूरक मानता हूँ। नहीं तो देखने में ठीक-ठाक आशा घर चलाने के मामले में अधिक सही लड़की है। मौसी अभी भी चाहती है कि मैं आशा से ब्याह कर लूँ।''

सिन्हा की गंदी मानसिकता से परिचित होकर सुनीता उसके विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा देती है, साथ ही एक पैर से अपाहिज देवेन्द्र से विवाह करने के लिए राजी होती है, जिसे पहले वह अपने पिता के उसके साथ के शादी के सुझाव पर तिरस्कृत कर चुकी है। देवेन्द्र अपनी जीवन-संगिनी से नौकरी नहीं करवाना चाहता है। सिन्हा के बर्ताव से शादी को इन्कार कर सुनीता रेलवे विभाग की नौकरी से इस्तीफा देती है। अब वह देवेन्द्र के साथ शादी के लिए राजी होती है। लेकिन तबतक देवेन्द्र की सगाई हो चुकी होती है और जल्द ही वह वैवाहिक बंधन में बँधनेवाला होता है। स्वार्थांध और लोभी सिन्हा के इरादों पर सुनीता पानी तो फेर देती है, लेकिन स्वयं भी चोटिल हो जाती है। भूमंडलीकृत समाज में स्त्री 'देह' की मानसिकता से ऊभर नहीं पाई है। यदि स्त्री सौंदर्यविहिन हो तो उसके विवाह हेतु उसका कामकाजी होना अनिवार्य विकल्प है। कारण रूप-सौन्दर्य में कुरूप स्त्री नगण्य है, लेकिन स्वावलम्बी होकर बस पैसा कमाने की मशीन बनने की नियति है, ऐसी मानसिकता पुरुष समाज की है। यहाँ चित्रा जी ने कामकाजी स्त्री की दुखती रग को पकड़ा है, जहाँ स्त्री कराहती ही नहीं, बल्कि पुरुष समाज की दी हुई पीड़ा से छटपटाती भी है।

4.3.12.3 'लाक्षागृह' कहानी का चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत कहानी की केंद्र में रही सुनीता के मन की परतों को खोलकर सामने रखते हुए चित्रा जी ने एक नौकरीपेशा असुंदर स्त्री की विवाह की समस्याओं, समाज की मान्यताओं एवं पुरूष वर्ग की स्वार्थी तथा

घटिया नीति का खुलकर पर्दाफाश किया है। सौंदर्यविहिनता के शाप तले तपती, तड़पती सुन्नी के मन की उधेड़बुन को कहानी उजागर करती है। सुनीता आत्मनिर्भर है, इसलिए समाज की शादी के संबंध में दकियानूसी मानसिकता में न अटकते हुए उससे दूर वह अपने एक स्वतंत्र जीवन की अभिलाषा करती है, लेकिन परिवार और समाज है कि उसे उन्हीं बंधनों में बाँधने के लिए तत्पर है। वह सोचती है कि वह आत्मनिर्भर है। अपना खुद का एक घर खरीद कर अनाथाश्रम से बेहद बदशक्ल बच्ची को गोद लेगी। स्त्रीत्व के मातृत्व पक्ष से वंचित न रहते हुए वह माँ बनेगी और उस बच्ची को बड़े प्यार से पालेगी-पोसेगी। अपने माता-पिता से भी अपने इस निश्चय को बताती है। लेकिन वे शादी के लिए अपाहिज देवेन्द्र का जिक्र कर सुनीता के मन को और अधिक ठेंच पहुँचाते हैं। एक पैर से अपाहिज देवेन्द्र, जिसके व्यक्तित्व से उसे घृणा होती है, सुनीता उसके रिश्ते को ठुकराती है।

स्वामीनाथन द्वारा सुनीता के बारे में बेहद अपमानजनक और घृणास्पद बात ''शी लुक्स लाइक पक्का तालीवाला!'' कहने पर और कुछ झिझककर उससे प्रतिवाद करनेवाले अपने होनेवाले पति की इन बातों को सुनकर - ''छोड़ यार! तालीवाली ही सही। घर की हालत तुझसे छिपी नहीं।'' उस स्त्री के दिल पर क्या बीती होगी, इसका अनुमान लगाना हम आम जन-जीवन से परे है, इसका अनुमान भोगे हुए यथार्थ की अनुभूति पाती सुनीता जैसी कई स्त्रियाँ ही केवल लगा सकती हैं। अंत में स्थितियाँ उसे इस कदर विवश कर देती हैं, देवेन्द्र से शादी के लिए सम्मति देने के लिए वह तैयार हो जाती है, जिससे वह घृणा करती है और बावजूद इसके उसके जीवन की विडम्बना यह होती है कि देवेन्द्र की भी शादी तय हुई होती है। स्वार्थांध और लोभी सिन्हा के इरादों पर सुनीता पानी तो फेंर देती है, लेकिन स्वयं भी चोटिल हो जाती है। सिन्हा से धोखा खाकर वह तिलमिला उठती है और शादी को इन्कार कर, जिससे वह शादी करना चाहता है, यानी उसकी नौकरी को भी सुनीता त्याग देती है। अब विवंचना यह हो जाती है कि देवेन्द्र की भी शादी तय हुई होती है। तब अंत में निर्दयी समाज के जुल्म ढ़ालते दायरे में घने अंधियारे में भटकने के लिए विवश, सुनीता जैसी नियति द्वारा छली जानेवाली नौकरीपेशा असुंदर स्त्रियों की दयनीय अवस्था को चित्रा जी ने कहानी के माध्यम से सम्मुख रखते हुए सोचने के लिए बाध्य किया है।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न -

अ) निम्नांकित विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. घीसू और माधव झोपड़ी के द्वार पर अलाव के सामने बैठकर .... भूनकर खा रहे थे।

   अ) मुँगफली   ब) आलू   क) मटर   ड) चने

2. एक घण्टे में घीसू के पास .... रूपये की अच्छी रकम जमा हो गई।

   अ) दस   ब) आठ   क) बीस   ड) पाँच

3. घीसू और माधव किसी दैवी प्रेरणा से एक .... के सामने आ पहुँचे।

अ) मधुशाला ब) मंदिर क) पाठशाला ड) मकान

4. कोशल प्रदेश में .... उत्सव का आयोजन होता है।

अ) कृष्ण ब) राम क) कृषि ड) पितृ

5. कृषि उत्सव के लिए .... की खेती चुन ली गई थी।

अ) मधुलिका ब) मधुरानी क) मधुमती ड) माधवी

6. कोशल के कृषि उत्सव में .... राज्य का राजकुमार उपस्थित था।

अ) मगध ब) कोशल क) श्रावस्ती ड) वाराणसी

7. अरूण .... दुर्ग पर आक्रमण करने की योजना बनाता है।

अ) कोशल ब) श्रावस्ती क) वाराणसी ड) मगध

8. मधुलिका के पिता का नाम .... है।

अ) सिंह मित्र ब) नागसेन क) कर्षमित्र ड) परममित्र

9. राजा की इच्छानुसार मधुलिका अंत में अपने लिए .... पुरस्कार माँगती है।

अ) नौकरी ब) संपत्ति क) खेती ड) प्राणदण्ड़

10. यशपाल ने दफ्तर से .... मास की छुट्टी ली थी।

अ) तीन ब) एक क) दो ड) आधे

11. लेखक बेटी के साथ सूर्यास्त के .... घण्टे पूर्व ही चोटी की ओर चल पड़ते हैं।

अ) तीन ब) चार क) दो ड) पाँच

12. शहर के लोगों से .... के सिवा और मिलेगा क्या?

अ) पैसे ब) धोखे क) गालियों ड) मीठी बोली

13. 'मलबे का मालिक' कहानी के लेखक का नाम .... है।

अ) मोहन राकेश ब) प्रेमचंद क) प्रसाद ड) यशपाल

14. विभाजन के साढ़े .... वर्ष के बाद भारत-पाकिस्तान के बीच हॉकी का मैच खेला जा रहा था।

अ) दस ब) आठ क) सात ड) पाँच

15. गनी मियाँ को उसके घर के मुहल्ले तक .... ले जाता है।

अ) चकोरी ब) मनोरी क) दिलेरी ड) सुमेरी

16. बिहारी बाबू की पत्नी का नाम .... है।

अ) कमला ब) विमला क) सरला ड) विरला

17. बिहारी बाबू के चारों लड़कों में से बड़ा लड़का .... है।

अ) सोनू ब) टिपू क) दीपू ड) पप्पू

18. दिपू की उम्र .... साल है।

अ) दस ब) नौ क) सात ड) आठ

19. पाँच में से .... सवाल गलत आने से बिहारी बाबू दिपू पर गुस्सा करते हैं।

अ) दो ब) तीन क) चार ड) एक

20. बिहारी बाबू चाहते थे कि दिपू .... बने।

अ) डॉक्टर ब) इंजिनियर क) वकील ड) कलेक्टर

21. बिहारी बाबू को .... से चिढ़ है।

अ) ड्राइंग ब) ड्रायविंग क) स्विमिंग ड) रिडिंग

22. रात ....बजे विमला एक प्याला दूध गरम करके दीपू को उठाकर दूध पीने को कहती है।

अ) बारह ब) एक क) दो ड) तीन

23. .... निर्मल वर्मा जी की चर्चित कहानी है।

अ) दहलीज ब) वापसी क) चीफ की दावत ड) अपराध

24. 'दहलीज' कहानी के केंद्र में बचपन से किशोरावस्था की दहलीज पर खड़ी .... का चरित्र उभरकर सामने आता है।

अ) सनी ब) बॉबी क) रूनी ड) मीनी

25. रूनी की बड़ी बहन का नाम .... है।

अ) जीमी ब) जेली क) स्विटी ड) लीली

26. शम्मी भाई हर .... को होस्टल से घर आते हैं।

अ) सोमवार ब) मंगलवार क) रविवार ड) शनिवार

27. गजाधर बाबू रेल विभाग में ....साल तक नौकरी करने के बाद अपने घर लौटते हैं।

अ) पैंतीस ब) सैंतीस क) चालीस ड) तैंतीस

28. गजाधर बाबू को घर में रेलवे स्टेशन के अपने नौकर .... की याद आती है।

अ) मनेशी ब) गनेशी क) धनेशी ड) मंगेशी

29. गजाधर बाबू की गैर मौजूदगी में बेटा .... घर का मालिक बनकर रहता था।

अ) अमर ब) समर क) अरूण ड) सागर

30. .... और उसकी भाभी को गजाधर बाबू का नौकर छुड़ाना बहुत बुरा लगता है।

अ) कौशल्या ब) बसन्ती क) वासन्ती ड) कालिंदी

31. भीष्म साहनी जी ने मिस्टर .... के माध्यम से शिक्षित युवा पीढ़ी के बुजुर्गों के प्रति के बर्ताव पर करारा व्यंग्य किया है।

अ) सोमनाथ ब) गोपीनाथ क) दिनानाथ ड) शामनाथ

32. चीफ साहब माँ से .... बनाने को कहते हैं।

अ) खिलौना ब) फुलकारी क) खाना ड) शाल

33. 'चीफ की दावत' कहानी के कहानीकार .... हैं।

अ) प्रेमचंद ब) प्रसाद क) भीष्म साहनी ड) उषा प्रियंवदा

34. शामनाथ ने अपनी तरक्की के लिए .... का आयोजन किया था।

अ) दावत ब) कीर्तन क) नाच-गाना ड) भजन

35. चीफ की दावत के आयोजन में घर में .... की बाधा थी।

अ) पिता ब) भाई क) माँ ड) चाचा

36. शामनाथ की माँ .... जाना चाहती हैं।

अ) हरिद्वार ब) काशी क) अमरनाथ ड) अयोध्या

37. 'लड़कियाँ' कहानी की आशा और .... में गाढ़ी मित्रता होती है।

अ) सुषमा ब) सुधा क) सुम्मी ड) सोनी

38. भयानक मुखाकृति वाले तांत्रिक साधु के एक हाथ में .... और दूसरे में तमंचा था।

अ) चिलम ब) लाठी क) माला ड) भस्म

39. घटी दुर्घटना के बाद सुधा के .... ऐलान करते हैं कि आज से सुधा का कॉलेज जाना बंद।

अ) चाचा ब) पिता क) भाई ड) नाना

40. क्लास में भगदड़ मचने के बाद आशा देखती है कि .... अपना रजिस्टर संभाल बिल्ले की तरह दबे पाँव क्लास से जा रहा है।

अ) चपरासी ब) पुलिस क) साहुकार ड) प्रोफेसर

41. महीप सिंह जी .... कहानी आंदोलन के प्रवर्तक हैं।

अ) संचेतन ब) अचेतन क) समांतर ड) मार्क्सवादी

42. .... 'काला बाप गोरा बाप' कहानी की प्रमुख पात्र है।

अ) शकीला ब) सकीना क) जमीला ड) समीना

43. जमीला को .... तलाक देता है।

अ) अनीस ब) यूनुस क) अनवर ड) अरबाज

44. तलाक के बाद .... साल गुजरने पर यूनुस अपनी बीवी तथा बेटियों को मिलने आता है।

अ) दस ब) ग्यारह क) बारह ड) तेरह

45. शीरी और .... जमीला की बेटियाँ हैं।

अ) शाहीन ब) शहनाज क) शिरिन ड) परवीन

46. अनवर और जमीला का अनीस यह .... साल का बेटा है।

अ) तीन ब) चार क) पाँच ड) छह

47. यूनुस .... जाने के लिए पंजाब मेल से जाना चाहता है।

अ) इंदौर ब) ग्वालियर क) जबलपुर ड) जालंधर

49. .... उदयप्रकाश की बेहद मार्मिक कहानी है।

अ) अपराध ब) पुरस्कार क) लाक्षागृह ड) सच बोलने की भूल

50. 'अपराध' कहानी में कहानीकार के भाई उनसे .... साल बड़े हैं।

अ) पाँच ब) छह क) सात ड) आठ

51. कहानीकार की .... अचानक चट्टान से टकराकर उछल जाती है और सीधे उनके माथे पर आकर लगती है।

अ) गेंद ब) गिल्ली क) खड़ब्बल ड) चावी

52. कहानीकार अपने भाई को उपेक्षा का दण्ड देने के लिए .... से झूठ बोलते हैं।

अ) माँ ब) पिताजी क) चाचा ड) मामा

53. कहानीकार को उनके .... के लिए कोई क्षमा नहीं कर सकता और जिससे मुक्ति भी असंभव होती है।

अ) रवैये ब) भूल क) बर्ताव ड) अपराध

54. 'लाक्षागृह' कहानी के केंद्र में .... का चरित्र मुख्य रूप से उभरकर सामने आता है।

अ) अनिता ब) सुनीता क) बबीता ड) गीता

55. सुनीता कामकाजी स्त्री है, जो .... विभाग में अच्छे पद पर कार्यरत है।

अ) रेलवे ब) डाक क) दूरदर्शन ड) बीमा

56. असुंदरता के बावजूद केवल उसकी नौकरी के कारण .... सुनीता से शादी करना चाहता है।

अ) बत्रा ब) चढ्ढ़ा क) गोयंका ड) सिन्हा

57. सुनीता की .... विवाह से पूर्व पैसे के खर्च पर आपत्ति उठाती है।

अ) मौसी ब) चाची क) बहन ड) माँ

58. सुनीता के बारे में किए कथन के प्रतिवाद में सिन्हा उसे कहता है, ''सोच, ... सौ रूपये महीने कमाने वाली कहाँ मिलेगी?''

अ) पाँच ब) छह क) सात ड) आठ

59. न चाहते हुए भी आखिर में सुनीता एक पैर से अपाहिज .... से विवाह करने के लिए राजी होती है।

अ) गजेन्द्र ब) महेन्द्र क) देवेन्द्र ड) धमेन्द्र

60. सुनीता सोचती है कि वह अपना खुद का एक घर खरीद कर अनाथाश्रम से बेहद .... बच्ची को गोद लेगी।

अ) बदशक्ल ब) अच्छी क) सुंदर ड) प्यारी

ब) निम्नांकित विकल्पों में से चुनकर उचित मिलान कीजिए।

1.	1) कफन	अ) मोहन राकेश
	2) पुरस्कार	ब) निर्मल वर्मा
	3) सच बोलने की भूल	क) प्रेमचन्द
	4) मलबे का मालिक	ड) यशपाल
	5) दु:ख-भरी दुनिया	इ) जयशंकर प्रसाद
	6) दहलीज	ई) कमलेश्वर
2.	1) ममता कालिया	अ) वापसी
	2) उदयप्रकाश	ब) चीफ की दावत
	3) चित्रा मुद्‌गल	क) लड़कियाँ
	4) भीष्म साहनी	ड) काला बाप गोरा बाप
	5) महीप सिंह	इ) अपराध
	6) उषा प्रियंवदा	ई) लाक्षागृह
3.	1) यशपाल	अ) कफन
	2) अब्दुल गनी	ब) पुरस्कार
	3) बिहारी बाबू	क) सच बोलने की भूल
	4) घीसू	ड) मलबे का मालिक
	5) रूनी	इ) दु:ख-भरी दुनिया
	6) मधुलिका	ई) दहलीज
4.	1) वापसी	अ) आशा और सुधा
	2) चीफ की दावत	ब) उदयप्रकाश
	3) लड़कियाँ	क) गजाधर बाबू
	4) काला बाप गोरा बाप	ड) सुनीता
	5) अपराध	इ) मिस्टर शामनाथ
	6) लाक्षागृह	ई) जमीला

क) निम्नांकित वाक्यों का सही या गलत में चुनाव कीजिए।

1. घीसू और माधव बुधिया के लिए बाजार से कफन खरीदकर लाते हैं।
2. हिंदी के कथासम्राट के रूप में प्रेमचंद जी का नाम बहुत ही आदर से लिया जाता है।
3. व्यक्तिगत प्रेम से बढ़कर राष्ट्रप्रेम के उदात्त आदर्श को 'पुरस्कार' कहानी प्रस्तुत करती है।
4. प्रसाद जी छायावाद के प्रवर्तक के रूप में जाने जाते हैं।
5. यशपाल जी मार्क्सवादी विचारधारा से बेहद प्रभावित महान साहित्यकार हैं।
6. किसान स्त्री को यशपाल बच्ची की कंठी नकली होने के बारे में झूठ बोलते हैं।
7. 'मलबे का मालिक' कहानी का कथानक भारत-विभाजन और साम्प्रदायिकता के कारण हुई विनाशलीला पर आधारित है।
8. बिहारी बाबू चाहते हैं कि दीपू डॉक्टर बने।
9. बिहारी बाबू की आवाज से घर में ड़र से सन्नाटा छा जाता है।
10. शम्मी भाई हर रविवार को होस्टल से रूनी के घर आते हैं।
11. रूनी शम्मी भाई से मूक प्रेम करती है, लेकिन अकेलेपन से त्रस्त वह शम्मी भाई तथा जेली की दुनिया से बेहद दूरी के फासले पर खुद को महसूस करती है।
12. रिटायरमेंट के बाद गजाधर बाबू अपने परिवार में वापस लौटकर बेहद खुशी और स्नेह से रहते हैं।
13. गजाधर बाबू को अपने ही घर में रेलवे स्टेशन के अपने नौकर गनेशी की याद आती है, जो रोज सुबह न भूलते हुए समय पर नाश्ता और चाय लाकर देता था।
14. गजाधर बाबू अपने घर से वापस नौकरी के लिए अपनी पत्नी के साथ चले जाते हैं।
15. शामनाथ अपनी माँ से बेहद प्यार करता है और बड़ी-ही सर्तकता से उसकी देखभाल करता है।
16. भीष्म साहनी ने शामनाथ के माध्यम से शिक्षित युवा पीढ़ी के बुजुर्गों के प्रति के घिनौने बर्ताव पर करारा व्यंग्य किया है।
17. अंत में शामनाथ की माँ चीफ के लिए फुलकारी बनाने से इन्कार कर देती है।
18. 'लड़कियाँ' कहानी में लड़कियों के प्रति समाज के दकियानूसी नजरिए पर तीखा कटाक्ष किया गया है।
19. दुर्घटना से बचने के बाद सुधा पिता के ऐलान के मुताबिक कॉलेज जाना बंद कर देती है।
20. उषा जी आशा और सुधा के माध्यम से लड़कियों, स्त्रियों के प्रति की सारी अपमान और अन्यायजनक समाज-मान्यताओं का तीव्र विरोध कर उनपर कसकर तमाचा जड़ती हैं।

21. महीप सिंह जी को संचेतन कहानी आंदोलन के प्रवर्तक माना जाता है।

22. अनवर के साथ शादी करने के बाद जमीला के व्यवहार में बदलाव आ चुका था।

23. यूनुस जमीला को तलाक देता है और सकीना के साथ दूसरी शादी करता है।

24. अनवर और जमीला को कोई संतान नहीं थी।

25. अंत में यूनुस स्थिति को स्वीकार कर जमीला के घर में रहता है।

26. बचपन में उदयप्रकाश जी के बड़े भाई उनसे बदतमीजी से पेश आते थे और उन्हें मारते थे।

27. उदयप्रकाश उनके भाई को उपेक्षा का दण्ड देने के लिए माँ को झूठ बोलते हैं कि भाई ने उन्हें खड़ब्बल से मारा है।

28. बचपन की गलती के लिए उदयप्रकाश अपने भाई से माफी माँगते हैं, वे उन्हें क्षमा कर देते हैं और उन्हें अपराध-बोध से मुक्ति मिलती है।

29. सुनीता डाक विभाग में अच्छे पद पर कार्यरत है।

30. अंत में न चाहते हुए भी सुनीता देवेन्द्र से शादी करती है।

31. सिन्हा को सुनीता से कोई लगाव नहीं है, लगाव है तो सिर्फ और सिर्फ उसकी नौकरी से और तनख्वाह से।

32. पिता के देवेन्द्र के साथ शादी के सुझाव पर सुनीता उसका तिरस्कार करती है।

33. देवेन्द्र अपनी जीवन-संगिनी से नौकरी करवाना चाहता है।

34. स्वार्थांध और लोभी सिन्हा के इरादों पर सुनीता पानी तो फेर देती है, लेकिन अंत में स्वयं भी चोटिल हो जाती है।

35. सुनीता सोचती है कि वह अपना खुद का एक घर खरीद कर अनाथाश्रम से बेहद बदशक्ल बच्ची को गोद लेगी, लेकिन उसकी यह सोच, सोच ही रह जाती है।

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ –

अलाव – तापने के लिए जलाई हुई आग, कौड़ा, आग का ढ़ेर

कुनबा – परिवार, घराना, बाल-बच्चे, खानदान

दोजख – नरक, जहन्नुम, पेट

ओझा – भूत-प्रेत उतारनेवाला

तसकीन – तसल्ली, दिलासा, संतोष

किफायत – बचत

चिखौना – शराब आदि के साथ चखकर खाया जाने वाला चटपटा पदार्थ, चाट

कुज्जियाँ – छोटी घरिया, मिट्टी का छोटा पात्र

कुल्हड़ – पानी पीने का एक छोटा मिट्टी का पात्र

मटकना – नाज नखरे तथा गर्वपूर्वक अंगों का लचकना, हिलना

कलेजा थाम लेना – मन कठोर करके वेदना को सहना

पछाड़ खाना – अचानक मूर्च्छित होकर गिर पड़ना

मारा-मारा फिरना – बिना काम के इधर-उधर भटकते रहना

चारा न होना – इलाज न होना

बेड़ा पार लगाना – संकट से छुड़ाना, जीवन को पार लगाना

उँगली उठाना – लांछन लगाना, अपमान करना

छाती पीटना – शोक मनाना

हाय-हाय करना – शोक या दु:ख व्यक्त करना

मिट्टी पार लगाना – मृत शरीर की उत्तरक्रिया करना

काले कंबल पर रंग चढ़ाना – ऐसा कठोर दिल व्यक्ति जिसके सामने करूणा अथवा दया का कोई परिणाम निकल न आए, अन्य किसी बात का कोई परिणाम न हो जाए

चट करना – जल्दी से खा जाना

ड़ींग मारना – शेखी करना, हाथ-पाँव पटकना – छटपटाना

चुड़ैल का फिसाद – पिशाचिनी का उपद्रव

लोकगीत संदर्भ – ''ठगिनी क्यों नैना झमकावे! ठगिनी?'' – संत कबीर के पद से यह पंक्ति ली गई है। ठगिनी शब्द माया के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। प्रस्तुत पंक्ति का अर्थ है – ''हे ठगिनी (माया) तू आँखें क्यों चमका रही है?'' माया के कारण हमें असत्य वस्तुएँ सत्य लगती हैं। माया ही के कारण जीव भौतिक जीवन को, संसार को सत्य मानता है। माया जीवन को बार-बार मोहजाल में फँसाती है और सत्य या ईश्वर के रास्ते से जीव को दूर ले जाती है। सत्य को पाने के बाद ही जीव जन्म-मृत्यु, मोह-माया से मुक्त हो जाता है। अत: दार्शनिक, संत, भक्त मनुष्य को उपदेश देते आए हैं कि सांसारिक मोहमाया – जो ठगिनी अर्थात् दूसरे को धोखा देकर उसका धन आदि छीन लेती है – को छोड़ दो और ईश्वर से दिल लगाओ। वरना अंत में जीवन को व्यर्थ गँवाने का दु:ख करना पड़ेगा। बुधिया की मृत्यु पर टिप्पणी करते हुए घीसू

दार्शनिक बनकर कहता है कि वह चली गई। इस संसार रूपी मायाजाल से मुक्त हो गई। तो फिर अब ऐ माया, तू क्यों आँखें मटकाकर-मिचकाकर इस मुक्ति को झुठलाने की कोशिश कर रही है। यहाँ प्रेमचंद जी ने दार्शनिक सिद्धांत पर व्यंग्य कसा है। शराब के नशे में घीसू और माधव नाच के साथ इस चर्चित लोकगीत को गा रहे हैं। इसमें गहरा व्यंग्य है। मानो वे इस सिद्धांत को झुठला रहे हैं। मूल गीत में व्यंग्य-भाव नहीं है। प्रेमचंद जी ने यहाँ इस पंक्ति को व्यंग्य-प्रहार के हेतु प्रस्तुत किया है।

अनमनी - बेचैनी

मधुक - महुए का वृक्ष

अमात्य - मंत्री

अवगुंडन - परदा

मुकुलित - आधी खुली

कलेवर - शरीर

रंध्र - छेद

खील - भुना हुआ धान

वल्गा - लगाम

गड्वर - गुफा

विक्षिप्त - पागल

गोठ - श्राद्ध-कर्म

तुरंग - अश्व, घोडा

प्रकोळ - कमरा

प्रतिहारी - द्वारपाल

बरौनी - आँख की पलक के बाल

पुलकित होना - खुशी से गदगद होना, प्रसन्न होना

दृष्टिपात करना - सरसरी निगाह से देखना, अवलोकन करना

विडम्बना - अपेक्षित और घटित के बीच होने वाली असंगति

उल्काधारी - मशाल हाथ में लेकर चलने वाला

आततायी - दुष्ट और उपद्रवी, अत्याचारी

दस्यु – डाकू, लुटेरा, खल, दुष्ट

असबाब – सामान

श्यामल – साँवला

दोतल्ला – दो खंडवाला (जैसे – दो तल्ला मकान)

क्रुद्ध – जो गुस्से से भरा हो, क्रोधित

खूँखार – हिंसक, अत्यधिक क्रूर, निर्दयी

प्राण सूख जाना – बहुत अधिक डर जाना

गूदड़ – फटा–पुराना कपड़ा

कनस्तर – टीन का बना हुआ चौकोर आकार का एक पात्र, टीन का पीपा

उपालम्भ – शिकायत, निंदा

गुड़हल का फूल – जवाकुसुम, वृक्षों के मालवेसी परिवार से संबंधित एक फूलों वाला पौधा है। मराठी में इसे जास्वंद फूल कहते हैं।

उलाहना – शिकायत, दोष देना

मलबा – गिरे हुए मकान के ईंट–पत्थर आदि

आगन्तुक – अचानक आ जानेवाला

शहतीर – लकड़ी का चीरा हुआ बहुत बड़ा और लंबा लट्ठा जो प्राय: इमारत के काम में आता है।

तकसीम – बँटवारा

बदबख्ती – भाग्य की खराबी, अभागापन

मरदूद – तिरस्कृत, नीच, निकम्मा

कुहासा – कोहरा, ओस

जूता गाँठना – फटा हुआ जूता सीना, नीचा काम करना

उनींदा – जो कुछ–कुछ नींद में हो, नींद से भरा हुआ

किरमिच – एक तरह का बढ़िया और मोटा कपड़ा (जैसे – किरमिच का जूता)

गुलदावदी का पौधा – एक प्रकार का छोटा पौधा, जिसकी लंबी कटावदार पत्तियों में भी उसके फूल की भाँति हलकी भीनी खुशबू होती है। विशेष–कर्तिक अगहन में इसमें कई रंग के छोटे और बड़े फूल लगते हैं,

जो देखने में बहुत सुंदर होते हैं। वर्षा के पानी में यह पेड़ नष्ट हो जाता है, इसलिए लोग इसे गमलों में लगाकर छाया में रखते हैं।

कलछी – लंबी ड़ंड़ी वाला बड़े चम्मच के आकार का एक पात्र जो भोजन चलाने एवं परोसने के काम आता है।

दहलीज – चौखट की नीचे वाली लकड़ी जो जमीन से सटी रहती है, देहरी, सीमा, मर्यादा

झुरमुट – घनी झाड़ियों का समूह

फुनगी – किसी वृक्ष की शाखा या डाल का सबसे ऊपरी छोर वाला हिस्सा, फुनंग

उद्भ्रान्त – भ्रम में पड़ा हुआ

पाखी – पक्षी

विषाद – दुःख, अवसाद, उदासी

अगहन – अग्रहायण या मार्गशीर्ष मास

कुण्ठित – जड़

अर्घ्य – जल, फल–फूल आदि सामग्री जो पूजा में चढ़ाई जाती है।

मठरी – घी आदि में तली हुई मैदे की छोटी बूँदी या टिकिया, एक प्रकार का नमकीन या मीठा खाद्य पदार्थ

चीफ – सबसे ऊपर या बड़ा, प्रमुख, प्रधान, सर्वोच्च

फेहरिस्त – सूची

मुकम्मल – निश्चित

सुभीते – सुचारू

तरक्की – उन्नत दशा प्राप्त करना, बढ़ती, उन्नति

खिदमत – सेवा

गुसलखाना – स्नानागार, नहाने का कमरा

लंडूरा – आवारा, निकम्मा

दस्तकारी – हाथ से बनी कलापूर्ण कृति

फुलकारी – एक प्रकार का कपड़ा जिसमें मामूली मलमल आदि पर रंगीन रेशमी ड़ोरियों से फूल–बूटियाँ आदि काढ़ी हुई होती हैं।

पेशानी – मस्तक, माथा

बाकायदा – नियम से, नियमित

पसीना–पसीना होना – लज्जित होना, शर्मिंदा होना

ठिठोली – किसी की हँसी उड़ाने के लिए कही गई बात, हँसी–मजाक

कलेजा दूना होना – उत्साह और जोश बढ़ना

शैतान की खाला – झगड़ालू औरत

तमंचा – छोटी बंदूक, पिस्तौल

चुडैल – डायन, अत्यंत दुष्ट स्वभाववाली स्त्री।

गुलगपाड़ा – शोरगुल, भागदौड़

घाघ – चालाक एवं धूर्त व्यक्ति

तजुर्बेकार – जिसे तजुरबा हो, अनुभवी, जानकार

रूआँसा होना – जो रोने को हो या देखकर ऐसा लगे कि जो अब रोने वाला हो, दुःखी होना, उदास होना

कौंध – बिजली की चमक, चमक

कातरता – अधीरता, बेचौनी

ग्लानि – खेद, पश्चाताप, शिथिलता

अपराध–बोध – अपराध करने के बाद गलती का अहसास, गलती का अनुभव, अफसोस, पश्चाताप

पसीजना – दया भाव उमड़ना, करुणार्द्र होना, द्रवित होना

शिनाख्त – पहचान

सूँघ–सूँघकर निपटा ड़ालना – बेसब्री से ढूँढ़कर काम को निपटाना

सैलानी – सैर करनेवाला

दाना ड़ालना – लालच दे कर फाँसना

दकियानूसी – जो रुढ़िवादी हो, पुराने खयाल या विचारों का समर्थक, संकीर्ण सोचवाला, अंधविश्वास से युक्त

ऐरा–गैरा–नत्थू–खैरा – महत्वहीन, मामूली या सामान्य व्यक्ति

अनर्गल – निरर्थक

जुम्बिश - गति, हिलना-डुलना, हलचल

भाड़ झोंकना - व्यर्थ समय नष्ट करना, बेकार के काम करना

4.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर -

अ) निम्नांकित विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. ब) आलू	2. ड) पाँच	3. अ) मधुशाला	4. क) कृषि
5. अ) मधुलिका	6. अ) मगध	7. ब) श्रावस्ती	8. अ) सिंह मित्र
9. ड) प्राणदण्ड	10. क) दो	11. अ) तीन	12. ब) धोखे
13. अ) मोहन राकेश	14. क) सात	15. ब) मनोरी	16. ब) विमला
17. क) दीपू	18. ड) आठ	19. अ) दो	20. ब) इंजिनियर
21. अ) ड्राइंग	22. क) दो	23. अ) दहलीज	24. क) रूनी
25. ब) जेली	26. ड) शनिवार	27. अ) पैंतीस	28. ब) गनेशी
29. अ) अमर	30. ब) बसन्ती	31. ड) शामनाथ	32. ब) फुलकारी
33. क) भीष्म साहनी	34. अ) दावत	35. क) माँ	36. अ) हरिद्वार
37. ब) सुधा	38. अ) चिलम	39. ब) पिता	40. ड) प्रोफेसर
41. अ) संचेतन	42. क) जमीला	43. ब) यूनुस	44. अ) दस
45. ब) शहनाज	46. क) पाँच	47. ब) ग्वालियर	48. अ) अपराध
49. ब) छह	50. क) खड़ब्बल	51. अ) माँ	52. ड) अपराध
53. ब) सुनीता	54. अ) रेलवे	55. ड) सिन्हा	56. ड) माँ
57. ड) आठ	58. क) देवेन्द्र	59. अ) बदशक्ल	60. क) साढ़े पाँच सौ

ब) निम्नांकित विकल्पों में से चुनकर उचित मिलान कीजिए।

1.

1) कफन	क) प्रेमचन्द
2) पुरस्कार	इ) जयशंकर प्रसाद
3) सच बोलने की भूल	ड) यशपाल
4) मलबे का मालिक	अ) मोहन राकेश
5) दुःख-भरी दुनिया	ई) कमलेश्वर

	6) दहलीज	ब) निर्मल वर्मा
2.	1) ममता कालिया	क) लड़कियाँ
	2) उदयप्रकाश	इ) अपराध
	3) चित्रा मुद्गल	ई) लाक्षागृह
	4) भीष्म साहनी	ब) चीफ की दावत
	5) महीप सिंह	ड) काला बाप गोरा बाप
	6) उषा प्रियंवदा	अ) वापसी
3.	1) यशपाल	क) सच बोलने की भूल
	2) अब्दुल गनी	ड) मलबे का मालिक
	3) बिहारी बाबू	इ) दुःख-भरी दुनिया
	4) घीसू	अ) कफन
	5) रूनी	ई) दहलीज
	6) मधुलिका	ब) पुरस्कार
4.	1) वापसी	क) गजाधर बाबू
	2) चीफ की दावत	इ) मिस्टर शामनाथ
	3) लड़कियाँ	अ) आशा और सुधा
	4) काला बाप गोरा बाप	ई) जमीला
	5) अपराध	ब) उदयप्रकाश
	6) लाक्षागृह	ड) सुनीता

क) निम्नांकित वाक्यों का सही या गलत में चुनाव कीजिए।

1. गलत	2. सही	3. सही	4. सही
5. सही	6. गलत	7. सही	8. गलत
9. सही	10. गलत	11. सही	12. गलत
13. सही	14. गलत	15. गलत	16. सही
17. गलत	18. सही	19. गलत	20. सही

21. सही	22. सही	23. सही	24. गलत
25. गलत	26. गलत	27. सही	28. गलत
29. गलत	30. गलत	31. सही	32. सही
33. गलत	34. सही	35. सही	

4.7 सारांश –

1. प्रेमचंद जी की 'कफन' कहानी हिंदी कहानी साहित्य में अपना विशेष महत्व रखती है। यह प्रेमचंद जी की श्रेष्ठ कहानियों में से एक तो है ही, पर इस कहानी ने कई कीर्तिमान भी पैदा किए हैं। प्रेमचंद जी के अन्य कहानियों की तरह ही उनकी इस बेहद महत्वपूर्ण कहानी का उद्देश्य भी महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से प्रेमचंद जी ने तत्कालीन समाज-व्यवस्था पर तीव्र प्रहार करते हुए घीसू और माधव जैसे परिवार के माध्यम से इस समय के निम्न वर्ग की दयनीयता का यथार्थ चित्रण किया है, जो पाठक को आज भी सोचने को बाध्य करता है। घीसू और माधव की हीन-दीन अवस्था तथा प्रवृत्ति का कारण तत्कालीन समाज व्यवस्था है, इसीलिए जो ये शोषित, शोषक समाज-व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह करते हैं, प्रतिशोध लेते हैं। शराब के नशे में कई बार उनसे अच्छाई, इंसानियत बाहर आते दिखाई देती हैं। प्रेमचंद जी ने घीसू और माधव द्वारा उस समय के समाज-व्यवस्था की असल सच्चाई को उकेरते हुए, तीव्र व्यंग्य कसते हुए जीवन के यथार्थ दार्शनिक पक्ष को उजागर करने की कोशिश की है।

बुधिया के मरने का इंतजार करते, आलू का लुत्फ उठाते, कफन के लिए बेशर्म होकर गिड़गिड़ाते और उन्हीं कफन के पैसों से शराब और भरपेट खाने का आनंद लेते हुए झूमते-गिरते घीसू और माधव का बेहद मनोवैज्ञानिक एवं यथार्थ चित्रण प्रेमचंद जी ने किया है। घीसू और माधव का संवेदनशून्य, अमानवीय बर्ताव तथा बेशर्म, लाचार और घिनौनी मानसिक प्रवृत्ति का यथार्थ चित्र कहानी में खींचा गया है, जो तत्कालीन समूचे निम्न-वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं और उन्हें इस हीन-दीन स्थिति के लिए प्रवृत्त करनेवाली समाज-व्यवस्था पर कहानी में तीखा व्यंग्य कसा है। पूरी की पूरी कहानी प्रेमचंद की एक श्रेष्ठतम एवं बेहतरीन पेशकश है। सूक्ष्म मनोवैज्ञनिकता से मानव मन की घटनाओं को जिस प्रकार उन्होंने व्यक्त किया है, वह मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के बल पर नहीं बल्कि अपने अनुभवों तथा अनुभूतियों के बल पर और यही उनकी श्रेष्ठता है। यही बात उन्हें सोद्देश्य रचनाकार सिद्ध करती है।

2. जयशंकर प्रसाद जी के संपूर्ण साहित्य संसार का एक मात्र उद्देश्य 'प्राचीन साल के प्रमुख ऐतिहासिक चरित्रों, घटनाओं को, आदर्श सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक मूल्यों को समकालीन संदर्भ के साथ जोड़कर उनका गौरव करना' रहा है। उनका यही उद्देश्य प्रस्तुत कहानी 'पुरस्कार' द्वारा परिलक्षित हुआ है। इस कहानी में भी उद्देश्य-पूर्ति की दृष्टि से प्रसाद जी ने प्राचीन भारत के बौद्धपूर्व में प्रचलित सांस तिक तथा सामाजिक सभ्यता को उजागर किया है। उस समय संपन्न होनेवाले 'कृषि महोत्सव' सामाजिक एकता और सांस्कृतिक सभ्यता के प्रतीक थे। इस कहानी में 'कृषि महोत्सव' का यथार्थ वर्णन करके प्रसाद

जी ने प्राचीन गौरवमई सभ्यता को उजागर किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने मधुलिका के माध्यम से सच्चे राष्ट्र-प्रेम की पहचान कराई है। मानों मधुलिका के माध्यम से प्रसाद जी सभी नागरिकों को यह बताना चाहते हैं कि मधुलिका हर एक के समान को अपने राष्ट्र की सुरक्षा के खातिर अपने निजी प्रेम को मन ही मन में दफना कर शत्रुओं द्वारा किए जानेवाले भयंकर आक्रमण से अपने राष्ट्र के प्रति सजग रहकर तन-मन-धन से अपने-आप को न्यौछावर करने की भावना रखनी चाहिए। वही सच्चा देशप्रेम है, सच्ची राष्ट्र-निष्ठा है, सच्चा देशाभिमान होता है। इसके अतिरिक्त मधुलिका का व्यक्तिगत प्रेम भी पाठकों के सामने प्रेम की एक मिसाल प्रस्तुत करता है। प्रसाद जी ने उसके माध्यम से पवित्र, आदर्श और सात्विक प्रेम की नई व्याख्या प्रस्तुत की है। जिसके अनुसार जब प्रेम और कर्तव्य की कसौटी लगती है, तब इंसान को पहले कर्तव्य के प्रति ईमानदार रहना चाहिए और उसके बाद जब प्रेम की बारी आती है, तो प्रेम भी एकनिष्ठता से करना चाहिए, निभाना चाहिए। अत: प्रस्तुत कहानी के माध्यम से प्रसाद जी ने प्राचीन भारत के आदर्श सांस्कृतिक सभ्यता, सामाजिक एकता को उजागर करना तथा राष्ट्रीय एवं व्यक्तिगत प्रेमभाव में एकनिष्ठ रहना आदि प्रमुख उद्देश्यों की पूर्ति की है।

3. 'सच बोलने की भूल' कहानी में यशपाल जी ने अपनी मनोदशा का यथार्थ एवं मार्मिक चित्रण किया है। पहाड़ी पर अपनी छोटी बच्ची के साथ सूर्यास्त देखने जाना, रास्ता भटकना, किसान के घर का आश्रय, वहाँ अनुभूत ड़र और चिंता, दयनीय अवस्था और सच बोलने के बाद की उनकी प्रतिक्रिया आदि स्थितियों का बेहद मार्मिक चित्र कहानी में खींचा गया है। सच आखिर सच होता है, लेकिन सच बेहद कडुआ भी होता है, कई बार जीवन में सच बोलने के अंजाम को भी भुगतना पड़ता है, जो कि प्रस्तुत कहानी के लेखक ने इस कहानी में भुगता है। लेखक का मानसिक द्वंद्व की सच बोले या ना बोले और फिर सच बोलने के उपरांत की प्रतिक्रिया, अपने परिवार के प्रति की चिंता एवं किसान जीवन की व्यथा-कथा, परिस्थितियों से गुजरते हुए लालच की अधिनता और फिर अंधश्रद्धा में विश्वास, जो उनके जीवन को बदतर से बदतर बना दे, ऐसे अन्यान्य बिंदुओं का चिंतन कहानी का उद्देश्य-पक्ष है। लेखक ने यहाँ वर्गीय विषमता का बड़ा ही मार्मिक चित्र उपस्थित किया है। लेखक जैसे शहरी लोग और उच्च-वर्गीय लोगों के पास आर्थिक संपन्नता है, वे छुट्टी लेकर आराम से सैर-सपाटे कर सकते हैं और दूसरी ओर देहातियों, किसानों को दिन भर कष्ट करने पर भी दो वक्त की रोटी तक नहीं मिलती है। साथ ही लेखक ने यह भी स्पष्ट किया है कि शहरी लोग देहातियों को बार-बार धोखा देते हैं। देहाती लोग अंधश्रद्धा के चपेट में आ जाते हैं। ग्रामीण किसान जीवन तथा शहर के सरकारी नौकर इनके बीच की खाई को प्रस्तुत कहानी के माध्यम से प्रक्षेपित किया गया है।

लेखक की पत्नी उन्हें उलाहना देती हुई कहती है कि उन देहातियों को कण्ठी के बारे में बता खिन्न करने की क्या जरूरत थी? कण्ठी मठ में चढ़ाकर उनकी भावना संतुष्ट हो जाती। लेकिन लेखक से स्त्री के मन की सरलता को देख रहा नहीं जाता और वे सच बोल देते हैं। लेखक अपने दोनों भूलों के लिए लज्जा का अनुभव करते हैं, एक तो गला काटे जाने के काल्पनिक भय में पसीना-पसीना हो जाने की भूल के लिए और दूसरी कंठी के बारे में सच बोल देने की भूल के लिए! निश्चित रूप से लेखक के मानसिक द्वंद्व एवं

विभिन्न स्थितियों में लेखक तथा किसान और उसकी स्त्री की मनोदशा का बेहद यथार्थ और मार्मिक चित्रण प्रस्तुत कहानी की अपनी विशेषता है।

4. 'मलबे का मालिक' कहानी का उद्देश्य भारत-पाक विभाजन के समय हुई सांप्रदायिक हिंसा का मार्मिक चित्रण करना है। लेखक ने आलोच्य कहानी के माध्यम से स्पष्ट किया है कि किस प्रकार 1947 में भारत-पाक विभाजन के समय घृणा और हिंसा की ऐसी आग भड़की जिसने मानव-मानव के संबंधों को जलाकर राख कर दिया। भारत-पाक विभाजन के समय मानवीय संबंधों में जो दरार आई, उसकी भरपाई संभवत: सदियों तक नहीं हो पाएगी।

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से कमजोर होती हमारी सामाजिकता और नागरिकता को कहानीकार ने उद्घाटित किया है। बच्चन सिंह जी के अनुसार '''मलबे का मालिक' कहानी भारत-विभाजन से उत्पन्न परिस्थितियों पर आधारित है। मलबा उन्माद और वहशीपन का प्रभावी प्रतीक है। अनेक स्मृति-बिम्बों में उसका तनाव त्रासद हो उठता है।'' साम्प्रदायिक सोच और उन्माद कैसे हमें, हमारे ही सामाजिक परिवेश और माहौल में निरंतर कमजोर बासिन्दा बनाने का काम कर रहा है, इसका एक सटीक रेखांकन इस कहानी में किया गया है। वस्तुत: खण्डित सामाजिकता और कमजोर नागरिकता-बोध इस कहानी का मूल भाव और संवेदना है। कहानी का तात्कालिक संदर्भ विभाजन के दौर का भारत है, लेकिन साहित्य का प्रभाव क्योंकि किसी काल-विशेष तक ही सीमित नहीं होता है, यह कहानी हमें हमारे आज के विभाजनकारी परिवेश और सामाजिक चिंता के साथ भी जोड़ने का काम करती है। गनी मियाँ और रक्खे पहलवान के माध्यम से उस समय की भीषण स्थिति, सांप्रदायिक विद्वेष और घटना से जुड़ी इंसानी मनोदशा को बेहद असर के साथ पाठकों तक पहुँचाने में कहानी काफी हद तक सफल बन पड़ी है।

5. कमलेश्वर की बेहद चर्चित कहानी 'दु:ख-भरी दुनिया' मध्यमवर्गीय सामान्य जनजीवन के रोजमर्रा जीवन के एक यथार्थ आयाम को प्रस्तुत करती है। कमलेश्वर की यह बेहद चर्चित कहानी किसी परिवार विशेष की कहानी नहीं है, अपितु सारे मध्य वर्ग का ही आईना है। कहानी में बिहारी बाबू जो अपनी नौकरी से बिल्कुल संतुष्ट नहीं हैं, अपने बच्चों के खुशहाली भरे भविष्य की कामना हरदम करते हैं और फिर इस कामना-पूर्ति के लिए पढ़ाई को लेकर हरदम घर का वातावरण तंग रहता है। अपनी रोजमर्रा आर्थिक स्थिति का उन्हें हरदम अफसोस रहता है। इसीलिए वे अपनी पत्नी से दीपू को इंजिनियर बनाने की दिली ख्वाईश जाहीर करते हैं। उन्हें हर क्षण यही लगता है कि उनकी दु:ख-भरी दुनिया से उभरने का एक ही रास्ता है, दीपू का इंजिनियर बनना और इसीलिए हरवक्त वे दीपू के पीछे पढ़ाई को लेकर सख्ती बरतते हुए लगे रहते हैं।

बिहारी बाबू की विवंचनाओं से दूर आठ बरस का कोमल और छोटा दीपू नीलम देश की परियाँ एवं राजकुमार की कल्पना में खोया रहता है। पढ़ाई को लेकर सख्ती बरतते हुए जब दीपू पर लगातार थप्पड जड़े जाते हैं तो वह बेहद सदमें में आ जाता है। प्रस्तुत कहानी मध्यमवर्गीय आम समाज में स्थित आर्थिक विपन्नता, स्थिति सुधार हेतु अपनी आकांक्षाओं को पाले माँ-बाप की बच्चों पर की जानेवाली, दिल दहला

देनेवाली पढ़ाई की सख्ती का बेहद मनोवैज्ञानिक तथा मार्मिक चित्रण करती है और साथ ही पूरे मध्यमवर्गीय समाज की मनोदशा का प्रतिनिधित्व करती है।

6. रूनी 'दहलीज' कहानी की केंद्रित पात्र है, जिसकी बचपन से होते हुए किशोरावस्था की दहलीज पर खड़ी मनोदशा को कहानी बयान करती है। रूनी उम्र की उस रेखा पर खड़ी लड़की है, जहाँ ढ़ेरों सपने होते हैं, सपनीला आकाश होता है, जहाँ वह उमंगों के साथ उड़ना चाहती है। बचपन से पार यौवन के द्वार पर बेबाक ढ़ंग से आचरण करती, प्यार में भटकती, अकेलेपन से त्रस्त, अपनों से ही ईर्ष्या भाव को संजोती और दुनिया से कटती फिरती एक नवयुवा लड़की की बेहद रंगीन छटाओं का बेहतरीन चित्रण वर्मा जी ने कहानी में किया है। इस दुनिया में अपने वजूद के लिए खुद को मरणासन्न अवस्था तक वह महसूस करती है। उसकी बड़ी बहन जेली उससे काफी बड़ी है और दोनों के बीच अनेक प्रकार के संदेह हैं, उम्र का अन्तराल है तथा सूनापन भी है।

यहाँ रूनी की विडम्बना है कि वह अपनी ही बहन के प्रेमी शम्मी भाई से मूक प्रेम करने लगती है, उन्हें मिलते देखती है। उन्हें साथ में घूमते देखती है। अपने सपनों के साथ उसका कच्चा किशोरमन शम्मी भाई को अपना मान लेता है, लेकिन वह तो जेली के प्रति आसक्त होता है। वह उन दोनों के प्रेम पर आपत्ति जताते हुए महसूस करती है कि जो मुझमें नहीं है ऐसा जेली में क्या है कि शम्मी भाई उससे प्यार करते हैं। रूनी को लगता है कि उन दोनों की दुनिया उससे बहुत दूर है, जिसमें वह कभी प्रवेश नहीं कर पाएगी। इस कारण वह दु:खी होती है। मन में ढ़ेरों सपनों को संजोए बचपन से किशोरावस्था की दहलीज पर खड़े, अकेलेपन और प्यार में भटकाव की त्रासदी से अभिशप्त रूनी जैसे चरित्र की मनोदशा के चित्रांकन को समाज-सम्मुख रखते हुए वर्मा जी समाज के इस दहलीज पर खड़े सभी नवयुवकों को एक सीख देना चाहते हैं।

7. उषा प्रियंवदा कृत 'वापसी' कहानी में विघटित होते हुए संयुक्त परिवार की झाँकी प्रस्तुत की गई है। पीढ़ी-संघर्ष एवं नवीन पीढ़ी की हृदयहीनता का चित्रण लेखिका ने सफलतापूर्वक किया है। गजाधर बाबू नई पीढ़ी व पुरानी पीढ़ी के संघर्ष के संदर्भ में विवशतापूर्ण अकेलापन चुनने के लिए बाध्य हैं। पुराने संस्कारों के कारण वे नए के साथ सामंजस्य नहीं कर पाए, यह दृष्टिकोण एकांगी होगा, नए के पास वह सहृदय ही नहीं है जो उन्हें सामंजस्य का अवसर भी प्रदान करता। सेवानिवृत्ति के पश्चात जब घर में रहकर गजाधर बाबू खुशहाली की कामना कर रहे थे, तब गजाधर बाबू को इस बात से और आघात पहुँचता है कि बड़ा बेटा अमर अब अलग होने की सोच रहा है, क्योंकि अब अमर के दोस्तों की महफिल नहीं जम पाती थी। दूसरे दिन जब वे घूमकर आते हैं तो वे देखते हैं कि बैठक से उनकी खाट उठाकर छोटी कोठरी में रख दी गई है। अब गजाधर बाबू को ऐसा एहसास होने लगता है जेसे कि परिवार में उनकी कोई उपयोगिता नहीं है। इस घटना के बाद वे चुपचाप रहने लगते हैं, किन्तु कोई भी उनकी चुप्पी का कारण नहीं पूछता है। उन्हें अब अपनी पत्नी के व्यवहार में भी स्वार्थपरता की बू आने लगती है।

गजाधर बाबू को अब परिवार के हितार्थ किसी कार्य के लिए उत्साह नहीं रहता है। इसी बीच वे एक दिन अपने घरेलू नौकर को काम से हटा देते हैं। इसे सुनकर नरेंद्र आग-बबूला हो जाता है। यह सब देखकर उनका मन विचलित हो उठता है और वे मन ही मन तय करते हैं कि अब उन्हें यहाँ नहीं रहना है। अवकाश प्राप्ति के बाद रामजी मिल वालों ने उन्हें अपनी चीनी की मिल में नौकरी का प्रस्ताव दिया था, लेकिन उन्होंने परिवार के साथ रहने की कल्पना के कारण उसका स्वीकार नहीं किया था। अब वे इस नौकरी के लिए रजामंदी भेज देते हैं। वे पत्नी से कहते हैं कि क्या वह भी उनके साथ चलेगी, परन्तु पत्नी भी उनके साथ चलने से इनकार कर देती है। गजाधर बाबू- पारिवारिक सुख से वंचित और निराश होकर अपने ही घर से चले जाते हैं। उनके चले जाने पर परिवार के सभी लोग प्रसन्न होते हैं और गजाधर बाबू की चारपाई घर से बाहर निकाल देते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि नैतिक आदर्श मूल्यों का सम्प्रेषण एवं संवहन करने वाली पुराणी पीढ़ी को आज की पीढ़ी ने फिर से 'वापसी' के कगार पर ठहरा दिया है, जो निश्चय ही चिंताजनक है। और इस दृष्टि से भविष्य में निर्माण होनेवाली समस्याओं के द्योतन में कहानीकार शत-प्रति-शत खरा उतरते नजर आते हैं। कथावस्तु, चरित्र, वातावरण, उद्देश्य आदि सभी दृष्टियों से यह एक विशिष्ट और प्रभावी कहानी है। अत: यह कहानी पारिवारिक विघटन को प्रस्तुत करने वाली कहानियों में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

8. भीष्म साहनी ने 'चीफ की दावत' में भौतिक चकाचौंध में खोए, मानवी संवेदनाओं से भी बढ़कर आर्थिक संपन्नता के प्रति आकृष्ट, मानवीय नैतिक मूल्यों को तिलांजलि देते हुए स्वार्थांधता में लिप्त, दिखावटी और खोखली जीवन-शैली को ही महान मानकर जीनेवाली आधुनिक पीढ़ी पर तीखा व्यंग्य कसा है। वे सामाजिक यथार्थ से जुड़े हुए कथाकार हैं। उन्होंने शामनाथ के माध्यम से शिक्षित वर्ग के अशिक्षित आचरण को दर्शाया है तथा स्वार्थी बेटे की स्वार्थी भावनाओं को कहानी के माध्यम से उजागर किया है। उन्होने युवा पीढ़ी को यह एहसास दिलाने की कोशिश की है कि हमे रिश्तों की पवित्रता को नहीं भूलना चाहिए। अपने घर में बुजुर्गों के प्रति लगाव रखना चाहिए। युवा यह तक भूल जाते हैं कि आज जिस समाज मे वे रह रहे हैं वह माँ-बाप की बदौलत है। अपने बच्चों को काबिल बनाने के लिए माता-पिता अपना सर्वस्व समर्पित कर देते हैं। उनका पूरा जीवन अपने बच्चों की खुशी के लिए बलिदान में व्यतीत हो जाता है। आधुनिक युग में युवा वर्ग माता-पिता द्वारा किए गए बलिदान को भूल जाते हैं तथा अपनी सफलता को अपनी काबिलियत का नाम देते हैं। यह आधुनिक युग की बहुत बड़ी त्रासदी है कि युवा वर्ग बुजुर्गों के आदर मान-सम्मान को भूल गया है। उन्हे बोझ समझकर नहीं, बल्कि अपनेपन की भावना से रखना चाहिए।

अत: घर के बुजुर्ग सदस्यों को बोझ मानकर की जानेवाली उनकी उपेक्षा तथा उन्हें हीन मान उनके प्रति किए जानेवाले अमानवीय तथा घृणास्पद व्यवहार को प्रस्तुत कहानी के माध्यम से समाज-सम्मुख रख कहानीकार बुजुर्गो के प्रति प्यारभरे और मानवीय व्यवहार की हिमायत करते हैं। आधुनिक समय में मध्यम वर्ग की समस्या है - आर्थिक घुटन, कुण्ठाग्रस्त जीवन शैली, भोग-विलास की तृष्णा और अन्तर्विरोधों से उत्पन्न तनाव और भारतीय संस्कृति और आदर्शों को तोड़कर पाश्चात्य मान्यताओं की ललक। उपरोक्त

परिस्थितियाँ मनुष्य को मानसिक पीड़ा पहुँचाती हैं। ऐसी स्थिति से लोगों को जागरूक करना ही कहानीकार का उद्देश्य है। प्रस्तुत कहानी में शामनाथ का खोखलापन, माँ के प्रति का उसका घटिया बर्ताव और फिर भी उसके कुशल-मंगल की कामना करती माँ की लाचार तथा दयनीय अवस्था का सक्षम एवं संवेदनशील चित्रण कर कहानीकार समाज को चेतीत करना चाहते हैं।

9. 'लड़कियाँ' कहानी में लड़कियों के प्रति परिवार एवं समाज का देखने का भारतीय दकियानूसी दस्तूर और घटिया नजरिया शर्मिंदगी के साथ खुलकर सामने आता है। लड़कियाँ, लड़कियाँ न हुई, वे कोई पूरे परिवार और समाज की लाज-लज्जा, आबरू और शील का ठेका लिए हुए हैं, इन सबके लिए दोषारोपण का भार सहने के लिए बस वही उत्तरदाई हैं। कहानी की आशा और सुधा दोनों लड़कियाँ आठ बजे से पहले घर में वापस आनी चाहिए लेकिन वे केवल एक हादसे से भागकर लौट आई हैं, उनके साथ कुछ नहीं हुआ है और लगातार इस बात को अपने परिवार-जनों के सामने वे गिड़गिड़ाकर बताने की कोशिश करती हैं, किंतु दुपट्टे और सलवारों के सीवन के उधेड़नी की बात को लेकर परिवारवाले इनको और फिर खुद को कोसते रहते हैं। ठीक है कि समाज-मान्यताओं के अनुसार लड़कियों का शील बहुत नाजुक होता है, एक बार कहीं दामन में दाग लग जाए तो वह बिखरकर रह जाता है। पर प्रस्तुत कहानी में आशा और सुधा के साथ ऐसा तो कुछ नहीं होता है। पर फिर भी उनके कितने ही फुहार लगाने के बावजूद भी बगैर सोच-विचार के घर की इज्जत लूट जाने की बात को लेकर दोनों परिवार त्रस्त होते हैं। लेकिन अंत में कहानीकार आशा और सुधा के माध्यम से लड़कियों, स्त्रियों के प्रति की सारी अपमान और अन्यायजनक समाज-मान्यताओं का तीव्र विरोध कर उनपर कसकर तमाचा जड़ती हैं और अपने अस्तित्व के लिए लड़कियों को खुद विरोध में खड़ा होने की नसीहत देती हैं।

10. 'काला बाप गोरा बाप' कहानी तलाकशुदा पती-पत्नि की मानसिक उथल-पुथल को दर्शाती है। जमीला अपने पति यूनुस के उसे त्यागने के बाद अपनी दो लड़कियों के संग समस्याओं से जूझते हुए दिन बिताती है। उसकी दयनीय स्थिति में अनवर दोनों लड़कियों सहित जमीला को अपनाकर उन्हें सब सुख, ऐशोआराम, मान-सम्मान देकर उनके जीवन को खुशियों से भर देता है। दस साल बाद यूनुस जीर्ण-शीर्ण अवस्था में जब जमीला के पास लौटता है, तो वह उस घर में किसी की दया का, किसी की खीज का तो किसी की उपेक्षा का पात्र बनता है। जब उसकी बेटी शहनाज को पता चलता है कि वही उसका बाप है, तो वह इस हकीकत को स्वीकार करने से मना करती है। अत: यूनुस फिर से उनकी जिंदगी से हमेशा के लिए चला जाता है। इस कहानी में एक ओर पति की असहायता उभरी है, तो दूसरी ओर पत्नी की विवशता, खीज, दया, सहानुभूति उभरी है। दोनों के अलगाव के बावजूद भी बचे हुए एक हल्के से रिश्ते पर कहानी प्रकाश ड़ालती है। यूनुस की विवशता, अनवर की अच्छाई और इन दोनों के बीच संघर्षरत रहने के बावजूद भी जमीला के मन की विवंचना, उथल-पुथल और उसके हृदय की संवेदनशीलता को उजागर करना ही कहानी का उद्देश्य बना हुआ है।

11. 'अपराध' उदयप्रकाश की बेहद मार्मिक कहानी है, जहाँ कहानीकार को अपने बचपन का अपराध-बोध वर्तमान में भी खाए जा रहा है और जिसे कभी भी क्षमा नहीं किया जा सकता और जिससे मुक्ति अब

असंभव हो चुकी है। बहुत बार इंसान जीवन के कई पलों में स्थितिवश ईर्ष्या, उपेक्षा आदि भाव से अपराध करता है और फिर ताउम्र उस अपराध-बोध से तड़पता रहता है, जिससे छुटकारा नहीं पाया जा सकता है तथा कभी-कभी तो इस कारणवश जीना भी दुशवार हो जाता है। ईर्ष्या, उपेक्षा तथा नगण्यता के कारण बचपन में कहानीकार खड़ब्बल खेल के प्रसंग में झूठ बोलकर भाई का कोई कसूर न होने के बावजूद उसे पिता जी से पिटवाता है। समय गुजरने के बाद जब क्षमायाचना की गुंजाईश की जाती है तब ना माँ-बाप होते हैं, ना ही भाई को इस किस्से के बारे में कुछ याद होता है। अब कहानीकार की स्थिति बस यही रह जाती है कि अपराध बस अपराध होता है, न अब उसकी कोई क्षमायाचना की जा सकती है और ना ही इससे मुक्ति पाई जा सकती है। बचपन में किए अपराध के अपराध-बोध से ताउम्र त्रस्त कहानीकार की मनोदशा का बेहद मार्मिक चित्रण कहानी करती है।

12. 'लाक्षागृह' कहानी सुनीता के चरित्र के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती हुई उसकी पीड़ा को अभिव्यक्त करती है। आर्थिक रूप से सक्षम होने के प्रयास में व्यक्ति अपने रिश्तों जैसे अमूल्य धरोहर की अहमियत नहीं समझ पाता है। वह उपयोग की वस्तुओं के समान रिश्तों का भी उपयोग करता है और उद्देश्य-प्राप्ति के बाद साँप की केंचुली की तरह उस खोल से बाहर निकल आता है। केवल धन की लालसा जीवन का ध्येय हो जाती है। आज के समाज में धन के महत्व में निरन्तर वृद्धि के कारण समाज के मूल्यों, मान्यताओं, परम्पराओं और सम्बन्धों के समीकरणों में भी बदलाव आ रहा है। मनुष्य की जीवनशैली में अर्थ का ही वर्चस्व है। बदलती परिस्थितियों में आर्थिक सम्पन्नता ही जीवन का मुख्य ध्येय बन गया है। भौतिकवादी चेतना के कारण परम्परागत नैतिक मूल्यों के प्रति अनास्था बढ़ने लगी है। प्रस्तुत कहानी में सिन्हा की गंदी मानसिकता से परिचित होकर सुनीता उसके विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा देती है, साथ ही एक पैर से अपाहिज देवेन्द्र से विवाह करने के लिए राजी होती है, जिसे पहले वह अपने पिता के उसके साथ के शादी के सुझाव पर तिरस्कृत कर चुकी है। लेकिन देवेन्द्र की सगाई हो चुकी होती है और जल्द ही वह वैवाहिक बंधन में बँधनेवाला होता है। स्वार्थांध और लोभी सिन्हा के इरादों पर सुनीता पानी तो फेर देती है, लेकिन स्वयं भी चोटिल हो जाती है। सौंदर्यविहिनता के शाप तले तपती, तड़पती सुन्नी के मन की उधेड़बुन को कहानी उजागर करती है। चित्रा जी ने सुनीता जैसी नियति द्वारा छली जानेवाली नौकरीपेशा असुंदर स्त्रियों की दयनीय अवस्था को प्रस्तुत करते हुए उनके इस अवस्था के लिए जिम्मेदार पूरी सामाजिक-व्यवस्था पर तेज व्यंग्य कसा है, जो निश्चय ही प्रासंगिक है।

4.8 स्वाध्याय –

अ) लघुत्तरी प्रश्न –

1. घीसू का चरित्र-चित्रण कीजिए।
2. 'सच बोलने की भूल' कहानी का सारांश लिखिए।
3. 'गनी मियाँ' का चरित्रांकन कीजिए।

4. ‘दु:ख-भरी दुनिया’ कहानी के आशय को स्पष्ट कीजिए।

5. ‘दहलीज’ पर खड़ी रूनी की मानसिक अवस्था पर प्रकाश ड़ालिए।

6. आशा और सुधा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

7. अपराध-बोध से त्रस्त उदयप्रकाश जी की व्यथा को संक्षिप्त में स्पष्ट कीजिए।

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न -

1. ‘कफन’ कहानी के आशय को स्पष्ट कीजिए।

2. ‘‘पुरस्कार’ उदात्त राष्ट्रप्रेम की भावना का मौलिक दस्तावेज है।’ - स्पष्ट कीजिए।

3. ‘सच बोलने की भूल’ करनेवाले यशपाल जी की मनोदशा का चित्रण कीजिए।

4. ‘देश-विभाजन पर हिंदी ही नहीं, संभवत: अन्य भारतीय भाषाओं में लिखी गई कहानियों में भी ‘मलबे का मालिक’ सर्वश्रेष्ठ कहानी है।’ इस कथन की सार्थकता को बयान कीजिए।

5. ‘दहलीज’ कहानी की कथावस्तु को अपने शब्दों में लिखिए।

6. गजाधर बाबू की जीवन-व्यथा पर प्रकाश ड़ालिए।

7. ‘चीफ की दावत’ कहानी के उद्देश्य-पक्ष का विवेचन कीजिए।

8. ‘काला बाप गोरा बाप’ कहानी की समीक्षा कीजिए।

9. सुनीता के चरित्र के विभिन्न आयामों तथा उसकी पीड़ा को उजागर कीजिए।

4.9 क्षेत्रीय कार्य -

1. ‘कहानी’ विधा के स्वरूप, भेद एवं विकास पर अपने सहपाठियों से चर्चा कीजिए।
2. ‘कथा मंजरी’ के कहानीकारों के समकालीन अन्य कहानीकारों की कहानियों से प्रस्तुत कहानियों की तुलना कीजिए।
3. समकालीन मराठी कहानीकार एवं कहानियों से ‘कथा मंजरी’ के कहानियों की तुलना कीजिए।
4. मराठी में अनूदित ‘अंत्यवस्त्र’ कहानी पढ़िए और उसकी ‘कफन’ के साथ तुलना कीजिए।
5. ‘कथा मंजरी’ की कुछ कहानियों का मराठी अनुवाद कीजिए।
6. ‘कफन’, ‘पुरस्कार’, ‘सच बोलने की भूल’, ‘मलबे का मालिक’, ‘वापसी’, ‘चीफ की दावत’ आदि का अपने सहपाठियों के साथ सफल मंचन की दृष्टि से प्रयास कीजिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए –

1. सिंह, महीप, (1973). मेरी प्रिय कहानियाँ. राजपाल एन्ड सन्ज, दिल्ली.
2. साहनी, भीष्म, (2000). आधार चयन : कहानियाँ. आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा.
3. यशपाल, (2000). यशपाल की सम्पूर्ण कहानियाँ – भाग 1, लोकभारती प्रकाशन.
4. कालिया, ममता, (2017). मेरी प्रिय कहानियाँ. राजपाल एन्ड सन्ज, दिल्ली–110006.
5. मुद्गल, चित्रा, (2019). मेरी प्रिय कहानियाँ. राजपाल एन्ड सन्ज, दिल्ली–110006.
6. वर्मा, निर्मल, (2018). मेरी प्रिय कहानियाँ. राजपाल एन्ड सन्ज, दिल्ली–110006.
7. उदयप्रकाश, (2006). मोहनदास. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
8. 'हंस' पुरस्कृत कहानियाँ, (2020). अक्षर प्रकाशन प्रा. लि., दरियागंज, नई दिल्ली–110002.
9. शर्मा, शंकरलाल, शर्मा, कंचन, (2015). प्रतिनिधि कहानियाँ. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. दरियागंज, नई दिल्ली–110002.
10. शहा, साधना, (2008). हिंदी कहानी : संरचना और संवेदना. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
11. सिंह, पुष्पलाल, (1987). समकालीन हिंदी कहानी. हरियाणा साहित्य अकादमी, चंदीगढ़.
12. लाल, लक्ष्मीनारायण, (2014). आधुनिक हिंदी कहानी. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.

❑❑❑

इकाई–1
धरती धन न अपना (उपन्यास) : जगदीश चन्द्र

अनुक्रम

1.1 उद्‌देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.2.1 'उपन्यास' का स्वरुप

1.2.1 उपन्यास के तत्त्व

1.3 विषय–विवेचन

1.3.1 जगदीश चन्द्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.3.2 'धरती धन न अपना' उपन्यास की कथावस्तु

1.3.3 पात्र एवं चरित्र–चित्रण

1.3.4 'धरती धन न अपना' में चित्रित समस्याएँ

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्‌देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

- साहित्य की विधा 'उपन्यास' से परिचित होंगे।
- जगदीश चन्द्र जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित हो जाएंगे।
- उपन्यासकार के रुप में जगदीश चन्द्र जी को जान सकेंगे।

- 'धरती धन न अपना' उपन्यास की कथावस्तु को समझ सकेंगे।
- सभी प्रधान एवं गौण पात्रों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- इस उपन्यास से तत्कालिन सामाजिक और आर्थिक स्थिति को जान सकेंगे।
- तत्कालिन पूँजीवादी व्यवस्था तथा दलित शोषण से रुबरु होंगे।
- तत्कालिन दलित जीवन की समस्याओं से परिचित होकर दलित जीवन की पीड़ा को महसूस कर सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना:–

उपन्यासकार जगदीश चन्द्र बहुमुखी प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व के धनी थे। श्रेष्ठ उपन्यासकार प्रेमचंद की प्रगतिशील यथार्थवादी कथा परंपरा के समर्थ उत्तराधिकारी के रूप में इनका नाम लिया जाता है। समाज में व्याप्त जातीय बंधन, आर्थिक शोषण, जातीय भेदभाव, छुआ-छूत, राजनीतिक वैषम्य, नारी के प्रति हीन-भावना आदि ने इनके मन में प्रबल आक्रोश पैदा किया।

प्रगतिशील रचनाकार जगदीश चन्द्र ने कहानी, नाटक, उपन्यास आदि साहित्य की विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। जगदीश चन्द्र ने अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा में सबसे अधिक लेखन कार्य किया है। उनके दस उपन्यास प्रकाशित हुए हैं।

जगदीश चन्द्र का प्रस्तुत उपन्यास, लेखन में पहला लेकिन प्रकाशन में दूसरा उपन्यास है। 'धरती धन न अपना' इस उपन्यास का दूसरा खण्ड 'नरककुण्ड में बास' है। तो 'जमीन अपनी तो थी' यह उसका तीसरा खण्ड हैं। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में गाँव से बहिष्कृत बस्ती चमादड़ी में बसनेवाली चमार जाति की पीड़ा व उत्पीड़न को जगदीश चन्द्र ने यर्थाथता के साथ चित्रित किया है।

इस इकाई में जगदीश चन्द्र का जीवन परिचय, उनका व्यक्तित्व और कृतित्व, उनके साहित्य का परिचय, 'धरती धन न अपना' उपन्यास का कथानक एवं दलित पात्रों का चरित्र-चित्रण, दलित जीवन की समस्याएँ, उपन्यास की समीक्षा आदि विषयोंपर प्रकाश ड़ाला गया है।

1.2.1 उपन्यास का स्वरूप :–

उपन्यास में जीवन की सम्पूर्णता का चित्रण होता है। इसमें मानव जीवन से जुडे. विभिन्न प्रसंगों को कथानक का आधार बनाकर उपन्यास की रचना की जाती है। उपन्यास गद्य साहित्य की प्रमुख विधा है। यह 'उप' और 'न्यास' इन दो शब्दों से मिलकर बना है। 'उप' का अर्थ 'समीप' और 'न्यास' का अर्थ 'रखना', अर्थात उपन्यास का अर्थ हुआ 'समीप रखना'। 'उपन्यास' शब्द अंग्रेजी के 'नॉवेल' (Novel) शब्द का पर्यायवाची शब्द है। मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास को मानव जीवन का चित्र कहा है। अर्थात् उपन्यास हमारे जीवन के समीप होता है।

उपन्यास की परिभाषाएँ :–

भारतीय विचारक :–

- **प्रेमचंद :–**

''मानव चरित्र पर प्रकाश ड़ालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूलतत्व है।''

- **डॉ. भगीरथ मिश्र :–**

''युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण झाँकी प्रस्तुत करने वाला गद्य काव्य उपन्यास कहलाता है।''

- **डॉ. श्यामसुन्दर दास :–**

''उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।''

पाश्चात्य विचारक :–

- **राल्फ फॉक्स–**

''उपन्यास केवल काल्पनिक गद्य नहीं है, यह मानव जीवन का गद्य है।''

- **फील्डिंग –**

''उपन्यास एक मनोरंजन पूर्ण गद्य महाकाव्य है।''

- **बेकर –**

''उपन्यास वह रचना है जिसमें किसी कल्पित गद्य कथा के द्वारा मानव जीवन की व्याख्या की गई हो।''

- **प्रिस्टले–**

''उपन्यास गद्य में लिखी कथा है, जिसमें प्रधानत: काल्पनिक पात्र और घटनाएँ रहती हैं। यह जीवन का अत्यन्त विस्तृत और विशद दर्पण है और साहित्य की अन्य विधाओं की तुलना में इसका क्षेत्र व्यापक होता है। उपन्यास को हम ऐसे कथानक के रुप ले सकते हैं, जो सरल और शुद्ध अथवा किसी जीवन दर्शन का माध्यम हो।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कह सकते हैं कि उपन्यास आधुनिक युग का अति समादृत साहित्य रुप है। उपन्यास में उपन्यासकार का निजी जीवन–दर्शन प्रतिबिम्बित होता है। लेखक की जीवन और जगत की अनुभूति जितनी व्यापक और गहरी होगी, उसका औपन्यासिक चित्रण भी उतना ही व्यापक और गम्भीर होगा।

1.2.2 उपन्यास के तत्व :-

मूल्यांकन की दृष्टि से उपन्यास के कुछ तत्व निर्धारित किए गए हैं। तत्वों की दृष्टि से विद्वानों ने उपन्यास के छह तत्व माने हैं -

- कथावस्तु
- पात्र या चरित्र-चित्रण
- कथोपकथन या संवाद योजना
- भाषा-शैली
- देश-काल-वातावरण
- उद्देश्य

1. कथावस्तु :-

उपन्यास की मूल कथा ही कथावस्तु कहलाती है। कथावस्तु उपन्यास का अनिवार्य तत्त्व है। प्रासंगिक कथाएँ मूल कहानी को सुरुचिपूर्ण बनाकर उद्देश्य की ओर ले जाती हैं। कथावस्तु की उदय, विकास और अंत यह तीन अवस्थाएँ होती हैं। उपन्यास में वर्णित घटनाक्रम में एकता और संगठन अनिवार्य है। यदि इनमें से एक को भी अलग किया तो कथा बिखरी-सी प्रतीत होती है। कुछ प्रयोगवादी उपन्यासकार कथानक के घटनाक्रम को अस्वाभाविक मानते हैं। आधुनिक युग में जीवन से संबंधित कथानक को ही अधिकतम महत्त्व दिया जाता है, क्योंकि इस कथानक में हमारे जीवन की स्वाभाविकता रहती है। कथानक का चुनाव इतिहास, पुराण, जीवनी आदि कहीं से भी किया जा सकता है। कथावस्तु में रोचकता, स्वाभाविकता तथा प्रवाहमयता ये गुण होने आवश्यक हैं।

2. पात्र या चरित्र-चित्रण :-

उपन्यास का दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व है पात्र या चरित्र-चित्रण। उपन्यास मानव जीवन से संबंधित होता है, इसलिए इसे मानव चरित्र का चित्र कहा जाता है। कोई भी उपन्यासकार पात्रों के माध्यम से सजीवता, सत्यता और स्वाभाविकता के साथ जीवन के पहलुओं को समाज के समक्ष रखता है।

उपन्यास की कथा और पात्र दोनों एक-दूसरे की सफलता में परस्परपूरक होते हैं। इनका पारस्पारिक संतुलन अनिवार्य हो जाता है। कथावस्तु के अनुसार पात्र का चयन आवश्यक है। इतना ही नहीं बल्कि जिस वर्ग का चरित्र चयन किया जाता है, उसके आंतरिक और बाह्य व्यक्तित्व की सामान्य और सूक्ष्म विशेषताओं को, उसकी वेशभूषा, संवाद और भाषा-शैली आदि को कथावस्तु के अनुरुप होना आवश्यक है। युगीन प्रवृत्ति के अनुसार आदर्शवादी चरित्रोद्घाटन को महत्त्व देकर जीवन की यथार्थता के आधार पर

सामान्य चरित्रों का उद्घाटन होने लगा है। इसके लिए उपन्यासकार को पात्र, घटना और परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करना पड़ता है।

3. कथोपकथन :-

कथोपकथन उपन्यास के तत्वों में तीसरा महत्त्वपूर्ण तत्व है। कथोपकथन से कथानक को गतिशीलता मिलती है तथा चरित्र-चित्रण में भी सहायता मिलती है। अत: कथोपकथन संवाद और पात्र दोनों से संबंधित रहता है। कथोपकथन की भाषा सरल, सहज और प्रवाहमयी हो। चरित्र के अनुरुप भाषा उपन्यास की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। अर्थात् विधान पात्रों के चरित्र, स्वभाव, देश, स्थिति, शिक्षा, अशिक्षा आदि के अनुसार होना चाहिए। उपन्यास की भाषा ऐसी होनी चाहिए, जिससे पाठक उपन्यास का पठन करते समय भाव-बोध में सुगमता रहे।

4. देश-काल-वातावरण :-

पात्रों के चरित्र को पूर्णता और स्वाभाविकता देने के लिए उपन्यासकार को देश-काल-वातावरण का ध्यान रखना आवश्यक है। उपन्यास में वर्णित घटना का समय, तत्कालिन विभिन्न परिस्थितियों का संपूर्ण ज्ञान उपन्यासकार को होना आवश्यक है। पात्रों के व्यक्तित्व का विकास वातावरण के अनुकूल ही होता है। समय के साथ ही परिस्थितियाँ भी बदलती हैं और उसके साथ खान-पान, रहन-सहन तथा अन्य सारी बातें भी। इसलिए पात्रों के चरित्र में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है। इस परिवर्तन के नुसार ही चरित्र का विकास होना चाहिए।

उपन्यास में वातावरण निर्माण भी आवश्यक माना जाता है। इसमें प्राकृतिक परिवेश का विशेष योगदान रहता है। जैसे की बुरे दिनों के प्रतीक-स्वरुप डूबता सूरज बताना या पति की मृत्यु को दर्शाने के लिए चुड़ियाँ तोड़ना आदि।

5. भाषा-शैली :-

उपन्यास के तत्वों में से एक महत्त्वपूर्ण तत्व भाषा-शैली है। संपूर्ण उपन्यास विधा की रचना-शैली एक सी है। उपन्यास में सरस और सरल भाषा-शैली का प्रयोग करना आवश्यक है। उपन्यास के शुरुआती दौर में सभी उपन्यास रूढ़िगत शैली में ही लिखे गए। अधिकांश उपन्यासों में तृतीय पुरुष के रूप में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। उपन्यासों के विकास के साथ प्रयोग शैली में उपन्यास लिखे गए। आधुनिक साहित्य की नव-विधाओं में शैली तत्व का महत्व बढ़ता ही गया। सामान्य रूप से कथा शैली, आत्मकथा शैली, पत्र शैली, डायरी शैली, इसके अतिरिक्त वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, फ्लैशबैक शैली, नाटकीय शैली, लोक-कथात्मक शैली, कथोपथन शैली आदि का प्रयोग आधुनिक युगीन उपन्यासों में किया जाता है।

6. उद्देश्य :-

उपन्यास में उद्देश्य तत्त्व का तात्पर्य जीवन की व्याख्या अथवा आलोचना से ही है। प्राचीन काल में उपन्यास के दो मूल उद्देश्य होते थे - एक उपदेश की वृत्ति, जिसके अंतर्गत नैतिक शिक्षा प्रदान करना था और दूसरा केवल कोरा मनोरंजन, जिसका आधार कौतुहल अथवा कल्पना हुआ करता था। आधुनिक युगीन उपन्यास में जीवन का यथार्थ चित्रण होता है। अत: सभी उपन्यासों में कुछ विशेष विचार, सिद्धान्त स्वत: ही आ जाते हैं।

1.3 विषय-विवेचन :-

1.3.1 जगदीश चन्द्र का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-

इस इकाई के अंतर्गत जगदीश चन्द्र का जीवन परिचय, उनके व्यक्तित्व के पहलु, पारिवारिक स्थिति, रचना-संसार तथा एक संवेदनशील साहित्यकार के रुप में उनके व्यक्तित्व आदि का विस्तार से परिचय प्राप्त करेंगे। साथ ही प्रस्तुत इकाई में 'धरती धन न अपना' उपन्यास की कथावस्तु, प्रधान और गौण पात्रों का चरित्र-चित्रण, दलित समाज की सामाजिक स्थिति, 'चमादड़ी' में रहनेवाले दलितों के विभिन्न पहलुओं का अवलोकन किया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास में पंजाब के होशियारपुर जिले के घोड़ेवाहा गाँव के दलितों की कहानी है। यह उपन्यास काली और ज्ञानो नामक दो मुख्य पात्रों के इर्द-गिर्द ही बुना गया है। जिनके माध्यम से तत्कालिन दलित समाज की सामाजिक स्थिति तथा पूँजीवादी व्यवस्था किस प्रकार दलितों का शोषण करती है, इसका चित्रण किया गया है।

1.3.1.1 जगदीश चन्द्र का जीवन-परिचय :-

उपन्यासकार जगदीश चन्द्र का जन्म 23 नवम्बर, 1930 ई. को पंजाब प्रांत के होशियारपुर जिले के 'घोड़ेवाहा' नामक ग्राम में हुआ। इनका बचपन ननिहाल 'रलह' गाँव में बीता। जहाँ जाति-भेद उच्च कोटि का था। बचपन में लेखक के मन में दलित बस्ती को लेकर कौतुहल था। घर के उच्च वर्गीय माहौल के कारण उनपर दलित बस्ती में जाने पर पाबंदी लगाई गई थी। परंतु जगदीश चन्द्र वहाँ चोरी-छुपे जाते, दलित लड़कों के साथ खेलते, कभी-कभी वहाँ खाना भी खाते थे।

जगदीश चन्द्र के दादा का नाम नारायण था। इनके पिता का नाम करमचन्द्र और माता का नाम प्रीतमदेवी था। इनके परिवार का आर्थिक स्रोत वाणिज्य-व्यापार था। इनके सभी परिवारजन घोर आस्तिक प्रवृत्ति के थे। जगदीश चन्द्र की आयु पाँच वर्ष की थी, तब इनके पिता करमचन्द्र स्वर्गवासी हो गए। पिता का छत्र छिन जाने की पीड़ा तथा अभावग्रस्तता इन्हें बराबर खटकती रही। इनका लालन-पालन इनकी विधवा माता की छत्र-छाया में हुआ।

जगदीश चन्द्र की प्राथमिक शिक्षा रलह तथा दसूहा गाँव में हुई और आगे की स्नातक तक की पढ़ाई होशियारपुर में हुई। इन्होंने जालंधर से अर्थशास्त्र विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। इन्हें सन 1955 ई. में दिल्ली आकाशवाणी 'प्रेस इन्फर्मेशन ब्यूरो' से संबंधित नौकरी मिली। यहाँ से 1957 ई. में श्रीनगर में उनका तबादला हुआ। छह साल के पश्चात् वापस 1962 ई. में वे दिल्ली आ गए। सन 1975 ई. के आपातकाल में 'सेंसर ऑफिसर' के पद पर वे कार्यरत रहे।

जगदीश चन्द्र का विवाह सन 1957 ई. में क्षमा वैद्य जी के साथ हुआ। क्षमा जी हमेशा अपने पति के साथ खड़ी रहीं। उन्होंने अपने पति के लेखन-कार्य के आगे खुद की इच्छाओं को सीमित रखा। इन्हें अनुराग और पराग नाम के दो बेटे तथा आरती नाम की एक बेटी थी। जगदीश चन्द्र के अनेक मित्रों में से घनिष्ठ मित्र सोम आनंद थे, जिनकी प्रेरणा से जगदीश चन्द्र ने लेखन-कार्य आरंभ किया। जगदीश चन्द्र के आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के लेखक, कवि, प्रकाशक तथा राजनीतिक क्षेत्र के बडे-बडे नेताओं के साथ अच्छे संबंध रहे। इनका मित्र-परिवार बहुत ही बड़ा था।

सेवानिवृत्ति के बाद जगदीश चन्द्र परिवार के साथ जालंधर में रहने लगे थे। एक प्रगतिवादी रचनाकार तथा गैर-दलित होकर भी दलित समाज की समस्याओं को उठानेवाले ऐसे महान हस्ति की मृत्यु 10 अप्रैल, 1996 ई. को जालंधर में हुई।

1.3.1.2 जगदीश चन्द्र का व्यक्तित्व :-

जगदीश चन्द्र बहुआयामी थे, उनका मन अहं भाव से परे संवेदनशील था। जगदीश चन्द्र एक सशक्त, निर्भिक एवं साहसी साहित्यकार रहे हैं। उन्होंने कहानी, नाटक, उपन्यास विधा में दलित चेतना को प्रगतिवादी भावधारा की दृष्टि से चित्रांकित किया है। उनका व्यक्तित्व खुले दस्तावेज की तरह था। जगदीश चन्द्र की लेखन-कार्य के अलावा गाना सुनना, फर्निचर बनाना जैसे अन्य कामों में भी रूचि थी। उनके समग्र साहित्य में संवेदनशीलता एवं भावुकता की झलक प्रतिबिंबित होती है। जगदीश चन्द्र के व्यक्तित्व की विशेषताएँ निम्नानुसार प्रस्तुत की हैं -

1.3.1.2.1 संवेदनशील और मिलनसार व्यक्तित्व :-

कोई भी साहित्यकार समाज का एक अंग होता है। एक संवेदनशील रचनाकार ही समाज का यथार्थता के साथ चित्रण कर पाता है। जगदीश चन्द्र अपने परिवेश एवं समाज के प्रति संवेदनशील रहे हैं। पंजाब प्रांत में दलितों पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार तथा शोषण को इन्होंने अपनी आँखों से देखा था। गैर-दलित अर्थात् स्वयं उच्चवर्गीय होने के बावजूद दलित समाज के लिए उनके मन में करुणा थी। दलितों के यथार्थ जीवन, उनकी सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति का चित्रण अपने साहित्य में उन्होंने किया है।

संवेदनशीलता के साथ जगदीश चन्द्र मिलनसार भी थे। जिस कारण वे पत्रकार तथा साक्षात्कारवालों से खुलकर मिलते थे। अपने बेटे के प्रति भी उनके मन में मित्रता के भाव थे। परिणाम-स्वरुप पिता-पुत्र किसी भी विषय पर बातें करते थे। अपने मिलनसार व्यक्तित्व के कारण उनका मित्र-परिवार बहुत बड़ा था।

1.3.1.2.2 लेखन के प्रति निष्ठा :–

अपने लेखन के प्रति जगदीश चन्द्र एकनिष्ठ थे। उन्होंने पंजाब के दलितों की यथार्थ स्थिति का अंकन अपने साहित्य में प्रामाणिकता से किया है। जगदीश चन्द्र ने लेखन और नौकरी को हमेशा अलग–अलग रखा है। वे नौकरी को महज जीविका का साधन मानते थे। इस संदर्भ में स्वयं जगदीश चन्द्र का कहना है, ''मैंने लेखन और नौकरी दोनों को सदा अलग–अलग रखा है।'' इससे जगदीश चन्द्र की अपने लेखन के प्रति निष्ठा दिखाई देती है।

1.3.1.2.3 साहसी :–

ज्गदीश चन्द्र की रूचि साहसी एवं जोखिमभरे कामों में अधिक रहती थी। इसी प्रवृत्ती के कारण बी. बी. सी. और ए. बी. सी. की न्यूज टिमों के साथ वे स्वयं सरहद पर जाते थे। वे अपने पुत्र पराग से कहते हैं, ''जब मुझे जोखिमभरे कामों के लिए निकलने से पहले घर में रोका जाता, मैं कहता – मुझे वही गोली लग सकती है, जो मेरे लिए बनी है।'' इसी साहसी प्रवृत्ति के कारण जगदीश चन्द्र ने एक उच्चवर्गीय होते हुए भी पंजाब प्रांत के तत्कालिन दलितों की यथार्थ स्थिति को अपने साहित्य में चित्रित किया है।

1.3.1.2.4 जाति–भेद विरोधी :–

समाज में स्थित वर्ण–व्यवस्था के कारण जाति–भेद एवं छुआछूत का प्रचलन तत्कालिन काल में बढ़ गया था। पंजाब प्रांत में तो जाति–भेद के कड़े बंधन थे। जगदीश चन्द्र का परिवार सवर्ण उच्चवर्गीय था। बचपन में गाँव के दलित बस्ती में जानेपर उनकी नानी ने उन्हें सख्त हिदायत दी थी। जाति–भेद की समस्या को जगदीश चन्द्र जी ने अपनी आँखों से देखा था। उन्हें जाति के आधार पर किया जा रहा भेदा–भेद मान्य नहीं था। उन्होंने स्वयं की बेटी आरती की शादी इंटरकास्ट लड़के से की थी। उन्होंने तो जाति–भेद का विरोध अपने ही घर से किया है।

1.3.1.2.5 फर्निचर बनाने मे माहिर :–

जगदीश चन्द्र लेखन कार्य के साथ–साथ खाली समय में फर्निचर बनाने के काम में व्यस्त रहते थे। उन्होंने कई चीजें खुद बनाई थी। साथ ही अपने घर के लिए उन्होंने एक बढ़िया स्प्रिंगदार सोफा बनाया था। अत: वे केवल एक रचनाकार ही नहीं, अपितु फर्निचर बनाने में भी माहिर थे।

1.3.1.3 जगदीश चन्द्र का रचना संसार :–

प्रगतिशील साहित्यकार जगदीश चन्द्र ने उर्दू कहानी से अपना लेखन कार्य आरंभ किया। सन 1950 ई. में उनकी पहली कहानी 'पुराने घर' उर्दू में प्रकाशित हुई। जगदीश चन्द्र ने कहानी, नाटक, उपन्यास, रिपोर्ताज विधा में लेखन कार्य किया है। उन्होंने ज्यादातर उपन्यास विधा में ही अपनी लेखनी चलाई है। उनके दस उपन्यास प्रकाशित हैं। उनके 'धरती धन न अपना' उपन्यास को हिंदी का प्रथम दलित उपन्यास माना जाता है। जगदीश चन्द्र जी ने आँचलिकता में प्रगतिवादी चेतना तलाशने का प्रयत्न किया है। साथ ही उन्होंने अपने साहित्य में दलित चेतना को प्रगतिवादी भाव–धारा की दृष्टि से चित्रांकित किया है।

हिंदी के अतिरिक्त उन्होंने उर्दू और पंजाबी में भी लेखन किया है। उनका 'पुराने घर' उर्दू में तो 'उड़ीका' संग्रह पंजाबी में प्रकाशित है। जगदीश चन्द्र अपने जीवन के लगभग चालिस वर्ष से भी अधिक समय तक रचनाकार्य में रत रहें और अपने सृजनकाल में उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण रचनाओं से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। जगदीश चंद्र का रचना-संसार इस प्रकार है -

- **कहानी-संग्रह :-**

पहली रपट (1981)

- **नाटक :-**

नेता का जन्म

- **रिपोर्ताज :-**

आप्रेशन ब्लू स्टार

- **उपन्यास :-**

'यादों के पहाड़' (1966 ई.), 'धरती धन न अपना' (1972 ई.), 'आधा पुल' (1973 ई.), 'कभी न छोड़े खेत' (1976 ई.), 'मुट्ठी भर काँकर' (1976 ई), 'टुण्डा लाट' (1978 ई.), 'घास गोदाम' (1985 ई.), 'नरककुण्ड में बास' (1994 ई.), 'लाट की वापसी' (2000 ई.), 'जमीन अपनी तो थी' (2001 ई.)

जगदीश चन्द्र के उपन्यास-त्रयी का प्रथम उपन्यास 'धरती धन न अपना' है। इसकी अगली दूसरी कड़ी के रूप में 'नरककुण्ड में बास' उपन्यास को माना जाता है। तो अंतिम तीसरी कड़ी 'जमीन अपनी तो थी' है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास रुसी, पंजाबी एवं जर्मन भाषा में अनूदित हुआ है। 'आधा पुल' उपन्यास अंग्रजी में अनूदित हुआ है।

'मुट्ठी भर काँकर' उपन्यास का दूसरा भाग 'घास गोदान' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। 'टुण्डा लाट' का दूसरा तथा अंतिम भाग 'लाट की वापसी' उपन्यास है।

'कभी न छोड़े खेत' का नाट्य रूपांतर समान्त राष्ट्रीय नाट्यविद्यालय रंगमंच की ओर से दिल्ली में सन 1984 ई. और सन 1985 ई. में खेला गया है।

1.3.1.3.1 जगदीश चन्द्र का उपन्यास साहित्य : परिचय

जगदीश चन्द्र जी के दस उपन्यास प्रकाशित हैं। उनका 'धरती धन न अपना' लेखन में पहला उपन्यास है, लेकिन प्रकाशन की दृष्टि से दूसरा। इस उपन्यास का लेखन जगदीश चन्द्र ने मई 1955 में शुरू किया था, परंतु आठ अध्याय के बाद उन्होंने लेखन-कार्य को बीच में ही छोड़ दिया और उनका 'यादों के पहाड़' यह उपन्यास 1966 ई. में प्रकाशित हुआ। अपने दोस्त सोम आनंद के आग्रह पर उन्होंने 'धरती धन न

अपना' का लेखन आठ अध्याय से आगे शुरू किया, जो सन 1972 ई. में प्रकाशित हुआ। अपने उपन्यासों में उन्होंने विविध कथ्यों को उजागर करने का प्रयास किया है।

1.3.1.3.1.1 **यादों के पहाड़** (1966 ई.)

'यादों के पहाड़' उपन्यास जगदीश चन्द्र का प्रथम उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास की रचना बीस अध्यायों में की गई है। यह भावनाप्रधान उपन्यास है। इसमें आधुनिक प्रेम-विषयक रिश्तों को रेखांकित किया गया है। इसमें प्राकृतिक सौंदर्य का यथावत चित्रण हुआ है। उपन्यास का मूल कथ्य जीवन की अधूरी राह है, जो किशोरावस्था की स्मृतियों को प्रकट करता है। उपन्यास की कथा मुख्य पात्र दिनेश और मालती के वाद-संवाद पर आधारित है। नायक दिनेश अपने अतीत की स्मृतियों के सहारे जी रहा है। उपन्यास में असफल प्रेम कहानी, अपरिपक्व प्यार और मानवीय दुर्बलताओं को उजागर किया गया है।

1.3.1.3.1.2 धरती धन न अपना (1972 ई.)

'धरती धन न अपना' उपन्यास के प्रकाशित होते ही जगदीश चन्द्र को सही मायने में लेखक के रुप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। यह समस्याप्रधान उपन्यास है। इसमें सामाजिक दृष्टि से वर्ग-संघर्ष को वर्णित किया है। उपन्यास की कथावस्तु उनचास अध्यायों में विभक्त है। उपन्यास के केंद्र में पंजाबी अंचल में स्थित एक छोटा-सा गाँव 'घोड़ेवाहा' के दलितों के जीवन का चित्रण किया है। उपन्यास समाज के दो वर्गों की जानकारी देता है। एक सवर्ण चौधरी जमींदारों का वर्ग, जो क्रूर, निर्दयी और अत्याचारी हैं। दूसरा वर्ग भूमिहीन गरिबों (चमारों) का है, जो अत्याचार का शिकार होकर पीड़ा सह रहा है।

प्रस्तुत उपन्यास में जगदीश चन्द्र का बचपन जिस गाँव में बीता है, वहाँ की उनकी अनुभूतियों को चित्रित किया गया है। इस उपन्यास के द्वारा दलितों का जीवन, उनकी समस्याएँ, उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति पर प्रकाश ड़ाला गया है। इस उपन्यास के द्वारा दलित चेतना को जगाने का प्रयास जगदीश चन्द्र ने किया है।

1.3.1.3.1.3 आधा पुल (1973 ई.)

भारत-पाकिस्तान युद्ध के विषय को लेकर जगदीश चन्द्र ने 'आधा पुल' उपन्यास की रचना की है। प्रस्तुत कृति को बीस अध्यायों में विभक्त किया गया है। इस उपन्यास की कथावस्तु चरित्र-प्रधान है। जगदीश चन्द्र युद्ध के समय स्वयं अपनी टिम के साथ रणभूमि में जाते थे, जहाँ पर सैनिक परिवेश में रहकर वहाँ की परिस्थिति, क्रिया-कलाप तथा युद्ध की अनुभूतियों को उन्होंने प्रस्तुत किया है। इसमें भारतीय सैनिक एवं अफसरों की वास्तविक जिंदगी पर प्रकाश डाला गया है। जगदीश चन्द्र का 'आधा पुल' राष्ट्रप्रेम से ओत-प्रोत एक यथार्थपरक उपन्यास है। युद्ध के विषय को केंद्र में रखकर उन्होंने सैनिकों के साहस, शौर्य, बलिदान एवं राष्ट्रप्रेम को वर्णित किया है। 'आधा पुल' उपन्यास का अंग्रेजी भाषा में देवदत्त ने सन 1966 में 'ब्रोकेन ब्रिजों' नाम से अनुवाद किया है।

1.3.1.3.1.4 मुट्ठी भर काँकर (1976 ई.)

'मुट्ठी भर काँकर' उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन की स्थिति को वर्णित करता है। उपन्यास की कथावस्तु समस्याप्रधान है। प्रस्तुत कृति को चौबीस अध्यायों में विभक्त किया गया है। आजादी के साथ अंग्रेजों की कूटनीति के कारण देश का विभाजन हो गया। भारत विभाजन से उत्पन्न शरणार्थियों को केंद्र में रखकर विस्थापित पंजाबियों की समस्या तथा किसानों के उजड़ जाने की समस्या को यहाँ उजागर किया है। जिस प्रकार किसी मनुष्य के मकान के बिखर जानेपर उसके हाथ में सिर्फ मुट्ठीभर काँकर ही लगता है, ठीक उसी प्रकार विभाजन की प्रक्रिया से इन शरणार्थियों के जीवन में दुःख, दर्द, पीड़ा और सुख की, अतीत की यादे ही रह जाती हैं।

1.3.1.3.1.5 कभी न छोड़े खेत (1976 ई.)

जगदीश चन्द्र का यह बहुचर्चित उपन्यास है। 'कभी न छोड़े खेत' उपन्यास पच्चीस अध्यायों में विभाजित है। यह एक समस्याप्रधान उपन्यास है। इसमें जाट किसानों के संघर्ष की कहानी है। प्रस्तुत कृति में भारतीय ग्रामीण कृषि-व्यवस्था का चित्रण किया है, जिसपर वर्तमान परिस्थिति का प्रभाव दिखाई देता है। किसानों का जीवन, रहन-सहन, उनके रीति-रिवाज, खान-पान आदि कृषि उत्पादन पर निर्भरित रहता है। प्रस्तुत कथा इतनी मौलिक है कि वर्तमान समय में भी किसानों से जुड़ी ऐसी ही घटनाएँ देखने को, सुनने को मिलती हैं।

1.3.1.3.1.6 टुण्डा लाट (1978 ई.)

प्रस्तुत उपन्यास युद्ध विषयक है। इसकी कथा पंद्रह अध्यायों में विभाजित है। जगदीश चन्द्र ने सेना की कुछ वर्ष तक सेवा की थी, यहाँ प्राप्त अनुभवों को ही 'टुण्डा लाट' में बखूबी से ढ़ाला गया है। प्रस्तुत कृति में सैनिक की प्रेम-कथा को निरूपित किया है। यह चरित्र-प्रधान उपन्यास है। इसमें एक सैनिक, जिसने देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की पर्वा किए बिना रणभूमि में दुश्मन से ड़टकर मुकाबला किया, उसी सैनिक का हाथ कट जानेपर समाज उसे तिरस्कृत करता है। एक सैनिक के जीवन की हताशा, विडम्बना, निराशा, जीवन की असफलता का मार्मिक चित्रण यहाँ किया है।

1.3.1.3.1.7 घास गोदाम (1985 ई.)

'घास गोदाम' यह समस्याप्रधान उपन्यास है। यह उपन्यास पच्चीस अध्यायों में विभक्त है। प्रस्तुत कृति में जगदीश चन्द्र जी ने ग्रामीण तथा शहरी जीवन का चित्रण सहज-सुंदर ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। 'घास गोदाम' यह उपन्यास शहरी परिवेश के घात-प्रतिघात की उपज है, जिसमें दिल्ली महानगर के पड़ोसी गाँवों के जमीनों के अधिग्रहण करने की कथा है। इसमें ग्राम्य-जीवन पर शहरी जीवन का प्रभाव पड़ने से दो संस्कृतियों की टकराहट दिखाई देती है।

1.3.1.3.1.8 नरककुण्ड में बास (1994 ई.)

'धरती धन न अपना' उपन्यास की अगली कड़ी 'नरककुण्ड में बास' है। जगदीश चन्द्र का यह दलित जीवन पर केंद्रीत उपन्यास है। खासकर वे लोग उपन्यास के केंद्र में हैं, जो रोजी-रोटी की खोज में गाँव से भागकर शहर आए हैं। शहरों में आदमी की पहचान उसके मकान से होती है। गरीब आदमी के लिए शहर गाँव के मुकाबले अधिक नरकमय है, इसमें गाँव से शहर आकर इस नरक-सी जिंदगी जीनेवाले लोगों की परिस्थितियों का चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास में नौकरी की तलाश में गाँव से शहर की ओर निकला नायक काली है। नगरों-महानगरों में किसी भी व्यक्ति पर विश्वास नहीं रखा जाता। बल्कि किसी के शिफारिश पत्र या पहचान से व्यक्ति को नौकरी मिलती है। इस प्रकार बदलते मानवीय मूल्यों के कारण समाज में व्यक्ति के स्थान में भी परिवर्तन हो रहा है, इस बात की ओर उपन्यास ध्यान आकृष्ट करता है।

1.3.1.3.1.9 लाट की वापसी (2000 ई.)

'लाट की वापसी' उपन्यास 'टुण्डा लाट' उपन्यास का अगला भाग है। प्रस्तुत उपन्यास का कथानक युद्ध तथा उसके परिणामों पर आधारित है। युद्ध के बाद आजतक किसी को भी सुख-शांति हासिल नहीं हुई है। युद्ध के बाद कॅप्टन सुनील कपूर उँगलियों के कटने से अपने हाथों से बंदूक नहीं उठा पाते। इसके पश्चात् उनका अपना संघर्ष शुरु होता है। प्रस्तुत उपन्यास में एक युद्ध के खत्म होने में दूसरे युद्ध की नींव रखी जाती है, इसका विवरण मिलता है।

1.3.1.3.1.10 जमीन अपनी तो थी (2001 ई.)

जगदीश चद्र के उपन्यास-त्रयी का अंतिम भाग 'जमीन अपनी तो थी' यह उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में काली के शहर आने, उसका पारिवारिक जीवन, उसके बेटे के आय. ए. एस. बनने आदि को वर्णित किया है। काली का बेटा अपने सगे-संबंधियों को भूलता है। काली अपने बेटे के पास जाकर रहने लगता है, किंतु वहाँ के विसंगत माहौल में उसका दम घूटने लगता है। जिससे वह गाँव वापस जाना चाहता है आदि का चित्रण इसमें मिलता है।

1.3.1.3.2 कहानियों का परिचय :-

'पहली रपट' यह जगदीश चन्द्र का एकमात्र कहानी-संग्रह है। जिसमें कुल मिलकर पंद्रह कहानियाँ संग्रहित हैं। इस कहानी-संग्रह में 'पहली रपट' शीर्षक से एक कहानी है, जिसके आधार पर इसका नामकरण किया गया है।

'पहली रपट' कहानी-संग्रह में 'चक्कर', 'पुराने घर', 'तूफान के बाद', 'सब एकाउंटेंट', 'नीति का निर्णय', 'पुच्चु', 'पहलवान', 'आधा तिकट', 'गूंगी', 'शोहरत', 'शाहजी', 'पुराना नाम-नया नाम', 'हवा का झोंका', 'अलग-अलग नम्बर' आदि कहानियों का संकलन किया गया है।

जगदीश चन्द्र के उपन्यासों एवं कहानियों में समकालीन जीवन से गहरी टकराहट और आधुनिकता एवं परम्परा का संघर्ष भी है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा-साहित्य को जिन साहित्यकारों ने समृद्ध किया है, उनमें

जगदीश चन्द्र का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रेमचंद के उपन्यासों की यथार्थवादी धारा में उनका उपन्यास 'धरती धन न अपना' चर्चित रहा है। उनके कथा साहित्य में आजादी के बाद के जीवन यथार्थ के बहुरंगी चित्र उभरकर सामने आए हैं। उन्होंने मानव-जीवन के मूल्यों को नए आयामों पर उतार दिया है।

1.3.1.4 पुरस्कार एवं सम्मान :-

जगदीश चन्द्र जी ने हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में अपना योगदान दिया है। उन्हें विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्हें प्राप्त सम्मान इस प्रकार हैं -

1. गुरु गोविंद सिंह हिंदी पुरस्कार (सन 1972-74)
2. पंजाब सरकार द्वारा साहित्य शिरोमणि पुरस्कार (सन 1981 ई.)
3. साहित्यिक मंच जालंधर द्वारा डॉ. इन्द्रनाथ मदान पुरस्कार

1.3.2 'धरती धन न अपना' उपन्यास की कथावस्तु :-

जगदीश चन्द्र कृत सन 1972 ई. में प्रकाशित 'धरती धन न अपना' लेखन में पहला और प्रकाशन में दूसरा उपन्यास है। यह उपन्यास जगदीश चन्द्र के उपन्यास-त्रयी में से पहला उपन्यास है, जो उनचास अध्यायों में विभाजित है। प्रस्तुत उपन्यास रुसी, पंजाबी एवं जर्मन भाषा में अनुवादित हुआ है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद पंजाब प्रांत के होशियारपुर जिले में स्थित छोटा-सा गाँव घोड़ेवाहा को कथानक का केंद्र बनाया गया है। इस क्षेत्र के दलित जीवन को केंद्र में रखकर इस कृति की रचना की गई है।

'धरती धन न अपना' उपन्यास का आरंभ ही काली के छह वर्ष बाद कानपुर से अपने गाँव घोड़ेवाहा लौटने से होता है। घोडेव़ाहा में काली की एकमात्र रिश्तेदार उसकी चाची प्रतापी है। काली के माता-पिता और चाचा की मृत्यु हो चुकी है। काली के पिता माखा गाँव में अपने जमाने के ख्यातनाम पहलवान थे। काली के माता-पिता तो उसके बचपन में ही चल बसे थे। उसका लालन-पालन उसके चाचा-चाची ने किया था। चाचा के मृत्यु के बाद चाची अकेली काली को पालती है। काली के गाँव से भाग जाने के बाद चाची प्रतापी अकेली ही गाँव में रहती है। चाची के प्रति काली के मन में जो मोहभाव है, इसी कारण वह वापस अपने घोडेव़ाहा गाँव लौट आता है। पौ फटने के समय काली गाँव के पास पहुँचता है। छह साल का लंबा समय बितने पर भी गाँव में कोई बदलाव नहीं हुआ है। गलियों में प्रवेश करते ही कुत्ते भौंक-भौंककर काली का स्वागत करते हैं। जिसे देखकर काली के मन में वहाँ मनुष्यों का अस्तित्व है या नहीं यह प्रश्न उपस्थित होता है। काली घर पर चाची को जीवित पाकर प्रसन्नता से अभिभूत हो उठता है। काली की चाची काली के गाँव लौटने की खबर पूरे मोहल्ले में शक्कर बाँटकर देती है।

काली तथा गाँववालों के बीच छह वर्ष के लंबे समय के कारण दूरी-सी निर्माण हुई है। मोहल्ले की औरतें काली का अजनबीपन दूर करने के लिए उससे हँसी-मजाक करते हुए चाची को साथ लेकर नाच-गाना करती हैं। जिससे काली का अजनबीपन दूर होता जाता है। काली कानपुर में छह साल मजदूरी करके

अपनी कमाई लेकर गाँव लौटा है। इस कारण चमार होने पर भी गाँव में उसके व्यक्तित्व का कुछ प्रभाव दिखाई देता है। इसके चलते छज्जू शाह जैसे कुछ गाँववाले उसे 'बाबू कालीदास' कहते हैं। घोड़ेवाहा गाँव में जमीनों के मालिक मुखिया जमींदार चौधरी हैं। एक दो बनिये दुकानदार और खेतों तथा घरों में काम करनेवाले चमार हैं। चौधरी लोग बात-बात पर चमारों से गाली-गलौच करते, उन्हें पिटते रहते हैं। उपन्यास की शुरुआत में ही चौधरी हरनामसिंह अपने खेत की फसल नष्ट करने के संदेह में जीतू की पिटाई करता है। हकीकत में जीतू निर्दोष है। लेकिन मंगू चमार की बातों से चौधरी जीतू को पिटता ही जाता है। मंगू चमार चौधरी हरनामसिंह का गुलाम बना हुआ है। जबकि मंगू चमार की खुद की बहन ज्ञानो इन चौधरियों के अन्याय का विरोध करती है। इसी कारण काली ज्ञानो की ओर आकर्षित होता है। काली चौधरी का अन्याय देखकर चाची से कहता है, ''अगर जीतू की जगह मैं होता तो चौधरी की बाँह मरोड़ देता।'' जीतू की पिटाई देख उसका खून खौल उठता है। पर अपने-आपको वह चुप रखता है। चमारों के इस मोहल्ले में आज तक एक भी पक्का कोठा नहीं हुआ है। काली अपने कच्चे कोठे को गिराकर पक्का मकान बनवाना चाहता है और इसके बारे में वह छज्जू शाह से सलाह लेने जाता है। छज्जू शाह उसे पक्का मकान बनाने के कई उपाय बताता है। काली के पास पैसा देखकर छज्जू शाह उसके चाचा का लिया उधार तथा उस पर के ब्याज की रकम भी उससे ले लेता है।

काली की इस बात से चमार बिरादरी के लोग जितने प्रसन्न हैं, उतनी ही जलन चौधरियों के मन में पैदा होती है। वह उत्साह से घर की छत खोदता है। काली को पक्का मकान बनवाने में समस्याएँ निर्माण होती है। तो वह छज्जू शाह से ऋण की बात करने चला जाता है, तब छज्जू शाह उसे अपनी असमर्थता दर्शाता है। साथ ही वह काली को इस बात से अवगत कराता है कि जिन घरों में दलित (चमार) लोग रहते हैं, वह जगह गाँव की सांझी जगह 'शामलात' है और इन घरों पर दलितों का बस 'मौरूसी' अधिकार है। तब वह मन से निराश होता है, क्योंकि जिस जगह पर वह मकान बनवाने वाला है, वह जगह ही उसकी नहीं है।

काली पक्का मकान बनवाने में आई विघ्नों को देखकर चाची से कहता है - ''अब मैं इस गाँव में किस मुँह से रहूँगा। सारे गाँव में बात घूम गई है कि मैं पक्का मकान बनवा रहा हूँ। अब कच्चा मकान कोठा खड़ा करुँगा, तो लोग कहेंगे कि मकान गिराया तो इस तेजी से था जैसे इसकी जगह सोने की लंका खड़ी करनी थी...अब ये बातें नहीं सुनी जाएँगी।'' तब ज्ञानो की बातों का काली पर गहरा असर होता है। काली फिर से नई उम्मीद के साथ मकान बनवाने में जुट जाता है। धीरे-धीरे गाँव में काली की प्रतिष्ठा बढ़ती जाती है। साथ ही ज्ञानो और काली के बीच प्रेम-संबंध भी विकसित होता है।

काली चमादड़ी में पहला पक्का मकान बनवाकर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाता है, लेकिन वह इसके सिलसिले में जिस किसी से भी मिलता है - जैसे मिस्त्री सन्तसिंह, मुंशी, छज्जू शाह आदि सब उसके साथ चमार कहकर छुआछूत का व्यवहार करते हैं, जो उसे बहुत चुभता है। मंगू काली के प्रति शत्रुता रखता है, फिर भी चौधरियों द्वारा बार-बार उसे 'कुत्ता-चमार' कहकर पुकारना काली को बुरा लगता है। काली के आत्म-सम्मान की भावना का उसका अपना समाज भी प्रशंसक या समर्थक नहीं है। ज्ञानो, जीतू जैसे कुछ गिने-चुने

दलित साथियों को छोड़कर अधिकतर लोग काली से ईर्ष्या करते हैं। विशेष रुप में ज्ञानो का भाई मंगू हमेशा उससे उलझा रहता है। जिससे एक बार उसकी काली के हाथों से पिटाई होती है।

काली चौधरियों से आत्म-सम्मान की भावना से पेश आता है और अपनी हर बात विनम्रता के साथ उनके सामने रखता है। जो चौधरियों को नहीं भाता, बल्कि चुनौती लगती है। काली समय आने पर चौधरियों से संघर्ष के लिए भी तैयार है, क्योंकि उसका मानना है, ''ड़र-ड़र कर दिन गुजारने से मर जाना अच्छा है।'' काली के पक्का मकान बनवाने में रोज नए विघ्न, मंगू द्वारा काली का पड़ोसी निक्कू की सहायता से निर्माण किए जाते हैं, क्योंकि मंगू चमार चौधरी का गुलाम ही था। उसके लिए जीतू कहता है, ''मंगू एक ऐसा चमार है, जो अवसर मिलते ही अपने ही चमार बिरादरी को तहस-नहस करने में आगे रहता है।'' एक ओर पादरी अचिंतराम चमादड़ी में लोगों की दयनीय स्थिति तथा उच्च जाति के प्रति चमारों पर घृणा का लाभ उठाकर धर्म परिवर्तन करवाता है।

काली अपने पिता माखा की तरह कबड्डी का खिलाड़ी है। वह अपने खेल का जोर लालू पहलवान के अखाड़े में गाँववालों को दिखाता है, लेकिन चौधरी हरनामसिंह का भतीजा 'हरदेव' जान-बूझकर काली से हार जाने पर एड़ी का प्रहार करके काली का कुल्हा तोड़ देता है। लालू पहलवान हरदेव के इस हरकत के लिए उसे फटकारता है, इतना ही नहीं वह काली का इलाज भी करवाता है। काली को चमादड़ी में छोड़ने आने के लिए तैयार हो जाता है, लेकिन काली उसे वहाँ स्थित गन्दगी के कारण उसे आने के लिए मना करता है। तब लालू पहलवान उसे समझाता है कि गन्दगी में भी फूल खिलते हैं, साथ ही बताता है कि काली के पिता और वे दोनों लँगोटिया दोस्त थे। काली को उसके पिता माखा के बारे में बताता है। माखा के बेटे की मदद करना वह अपना धर्म मानता है।

काली की चाची प्रतापी अचानक बिमार होती है। काली उसकी दवा-दारु कराता है, लेकिन मन में स्थित आशंकाओं के कारण झाड़-फूँक भी करवाता है। जिसके कारण चाची का देहांत हो जाता है। चाची का देहांत काली के जीवन में नया मोड़ लाता है। काली का पक्का मकान बनवाने का सपना पूरा नहीं हो पाता। सिर्फ मकान का काम बीच में नहीं छूटता, बल्कि उसकी कमाई के पैसे और चाची द्वारा बनाए गए गहने-रुपये भी शोक जताने आई किसी पड़ोसन द्वारा चुरा लिए जाते हैं। काली अपना सब कुछ लुटाकर घास काटने का काम करता है और फिर लालू पहलवान के यहाँ मजदूरी करने लगता है।

दो दिन के बरसात के चलते चो में बाढ़ का पानी बढ़कर चमादड़ी के कुएँ में गंदा पानी भर जाता है और उसके आस-पास पानी और किचड़ जम जाता है। कुएँ का पानी पिने लायक नहीं रहता है तो सारी स्त्रियाँ पानी के लिए चौधरियों से, पण्डित सन्तराम तथा पादरी से मिन्नते करने लगती हैं। लेकिन किसी के दिल में उनके लिए दया निर्माण नहीं होती। बल्कि पण्डित सन्तराम तो लाठी लेकर पानी लेने आई स्त्रियों के पिछे भागता है, जिससे कुछ स्त्रियाँ गिरती हैं, उनके घडे टूटते हैं। पानी के बिना वे बेबस महसूस करती हैं। बाढ़ का पानी बारिश की वजह से बढ़ता ही जा रहा होता है। परिणाम-स्वरुप पानी चमादड़ी तक आ पहुँचता है। जिससे चौधरी तथा अन्य गाँववाले भी ड़रते हैं। लालू पहलवान के सुझाव से चो में बलि भी

दिया जाता है। फिर भी पानी रूकने का नाम नहीं लेता। तब गाँव को बचाने के लिए चौधरी अपने खेतों का बाँध तुड़वाने की अनुमति देता है। चौधरियों के खेतों का बाँध हरदेव और काली एवं गाँववालों की सहायता से तोड़ा जाता है। जिससे चो का पानी खेतों में जाता है और चो का पानी धिरे-धिरे उतरने लगता है। इस प्रकार चौधरी और दलित मिलकर प्राकृतिक आपदा का सामना करते हैं।

चौधरी चमारों को खेतों के तोड़े गए बाँध बँधवाने के लिए कहते हैं। चौधरियों के खेतों को बचाने के लिए दलित बेगार नहीं करना चाहते। तीन दिन काम करने के बाद भी दिहाड़ी न मिलने पर चौधरी-दलित (चमार) संघर्ष शुरु होता है। इस संघर्ष के चलते चौधरियों द्वारा चमारों का सामाजिक बहिष्कार किया जाता है और चमार भी काम से हड़ताल करते हैं। पादरी दलितों की मदत करना चाहता है, साथ ही वह उनके सामने शर्त भी रखता है कि उन्हें इसके लिए धर्म-परिवर्तन करके येशू की शरण में आना होगा। डॉ. बिशनदास व कामरेड टहलसिंह जैसे कामरेड दलितों की सहायता करने की बजाय सिर्फ उन्हें भाषण देते हैं तथा हड़ताल करने के लिए घोषणा करते हैं। इस संघर्ष में चौधरियों का साथ गाँव के महाशय तीरथराम एवं छज्जू शाह जैसे बनिये देते हैं। छज्जू शाह और महाशय तीरथराम चौधरियों को ताकीद करते है कि चमारों को ऐसा सबक सिखाया जाए कि भविष्य में उनकी ओर आँख उठाकर देखने की कभी हिम्मत न कर सकें। इस वर्ग-संघर्ष के कारण लगभग पंद्रह दिन तक बच्चों को भूख-प्यास से बिलबिलाते देखकर चमारों की हिम्मत जवाब दे देती है। इसलिए दलित हड़ताल से कदम पिछे लेकर चौधरियों की शर्त मान लेने के लिए विवश हो जाते हैं। दोनों पक्ष इस संघर्ष को व्यर्थ समझकर आधे दिन की दिहाड़ी पर समझौता कर लेते हैं।

जगदीश चन्द्र ने काली और ज्ञानो के प्रेम के त्रासद अंत को बहुत मार्मिकता से चित्रित किया है। ज्ञानो और काली के प्रेम-संबंध की बात सारे घोड़ेवाहा गाँव में फैलती है। दोनों पर गाँववाले नजर रखने लगते हैं। प्रेम-संबंध के चलते ज्ञानो गर्भवती हो जाती है। काली के साथ ज्ञानो की शादी समाज को स्वीकार नहीं है। सारा गाँव उनके प्रेम-संबंध की वजह से इन दोनों का दुश्मन होता है। काली ने गाँव में जो अपनी प्रतिष्ठा बनाई थी, वह प्रतिष्ठा खत्म हो जाती है। परिणाम-स्वरुप लालू पहलवान उसे नौकरी से निकाल देता है। ज्ञानो की इस स्थिति में काली सामने आकर उसका हाथ नहीं थामता। उसमें समाज का विरोध करके ज्ञानो को अपनाने की हिम्मत नहीं है। काली पडोस के कस्बे में मजदूरी करने लगता है और वह ज्ञानो को अपने साथ लेकर गाँव से भाग जाना चाहता है। वह पादरी से मिलकर धर्म-परिवर्तन करके ईसाई धर्म के अनुसार ज्ञानो से विवाह करना चाहता है, परंतु इस बात के लिए पादरी तैयार नहीं होता, वह अपनी असमर्थता दर्शाता है। ज्ञानो और काली अपना मिलना-जुलना बंद नहीं करते, तो ज्ञानो की माँ जस्सो और भाई मंगू दोनों मिलकर ज्ञानो को जहर देकर मार ड़ालते हैं। काली इस घटना से ड़र जाता है और फिर से गाँव से भाग जाता है।

इस तरह जगदीश चन्द्र ने प्रस्तुत उपन्यास 'धरती धन न अपना' के आरंभ में छह साल पहले भागे काली के लौटने से सुखद भावना को चित्रित किया है। काली तथा ज्ञानों का प्रेम-संबंध, दलितों के बीच का आपसी द्वेष, ईर्ष्या-भाव, चौधरी-दलितों का संघर्ष, आपसी सुलह, ज्ञानो अर्थात् काली की प्रेमिका की निर्मम हत्या, समाज के ड़र से काली का फिर से गाँव से भाग कर जाने से उपन्यास का अंत किया है।

इसमें पंजाब के प्रांत के भीतरी माहौल से लेकर मुहल्लों के जीवन, रस्म-रिवाजों और संस्कारों आदि का चित्रण जगदीश चन्द्र ने किया है। साथ ही दलितों के सामाजिक, आर्थिक जीवन, उनकी निम्न स्तर स्थिति, जमींदारों द्वारा उनके शोषण-उत्पीड़न की स्थिति, दलित समाज में ही चेतना न होने की स्थिति, शोषक-शोषित संघर्ष आदि का चित्रण किया है, जिसका अंत त्रासद है।

1.3.3 पात्र एवं चरित्र-चित्रण :-

जगदीश चन्द्र द्वारा लिखित 'धरती धन न अपना' उपन्यास में अनेक पात्रों की अवधारणा हुई है। इसमें पात्रों की संख्या विपुल मात्रा में हैं। जमींदार चौधरी, अन्य सवर्ण वर्ग, दलित वर्ग से संबंधित पात्रों की योजना की गई है। पंजाब प्रांत के गाँव के सामाजिक-आर्थिक परिवेश को इसमें समग्रता से प्रस्तुत किया है। गाँव के विभिन्न चरित्रों के घात-प्रतिघात को परस्पर व्यवहार द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में अनेक चरित्रों की योजना है, लेकिन मुख्य रूप से काली और ज्ञानो का चरित्र उभरकर आता है। अन्य चरित्रों में दलित पात्र और सवर्ण पात्र इस प्रकार हैं -

- **दलित पात्र -**

काली की चाची प्रतापी, उसका दोस्त जीतू और जीतू की ताई निहालो, काली के पडोसी - निक्को, प्रीतो, इनका परिवार, प्रीतो की बेटी लच्छो, कन्ता, बसंत, मंगू और नंदसिंह आदि।

- **सवर्ण पात्र -**

चौधरी हरनामसिंह, हरदेव, लालू पहलवान, चौधरी मुंशी, घडम्म चौधरी, छज्जू शाह, डॉ. बिशनदास, कामरेड टहलसिंह, महाशय तीरथराम आदि।

उपर्युक्त पात्रों के माध्यम से 'धरती धन न अपना' उपन्यास की कथावस्तु, संवाद योजना को बड़ी कुशलता से प्रस्तुत करने की भरसक कोशिश की गई है। दलित और सवर्ण पात्रों के माध्यम से जाति-भेद, सांप्रदायिकता तथा छुआछूत का चित्रण करने में जगदीश चन्द्र को सफलता मिली है।

1.3.3.1 प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण :-

'धरती धन न अपना' में उपन्यासकार ने प्रमुख रुप से काली और ज्ञानो का चरित्र-चित्रण किया है। उपन्यास का कथानक आदि से अंत तक इन दोनों के इर्द-गिर्द घूमता है। इस कारण इन दोनों के चरित्र-चित्रण को सामने रखने का प्रयास किया गया है।

1.3.3.1.1 काली :-

काली 'धरती धन न अपना' उपन्यास के केंद्रिय चरित्र का दर्जा रखता है। काली माखा का बेटा है। माखा गाँव में पहलवानी करता था। वह गाँव का इज्जतदार आदमी था, वह शरीफों के लिए शरीफ और बदमाशों में लिए बदमाश था, उससे पुलिस भी दबकर रह जाती थी। काली के बचपन में ही उसका देहांत

हो गया था। पिता की मृत्यु के दो साल बाद ही काली के माँ की प्लेग की बिमारी से मौत हुई थी। जिस वजह से उसका पालन-पोषण उसके चाचा-चाची करते हैं। लेकिन कुछ साल बाद काली के चाचा की भी हैजे की बिमारी से मृत्यु हुई, तो चाची प्रतापी काली को बड़े जतन से गरीबी में भी पालती है।

घर की गरीबी के चलते काली गाँव से भाग कानपुर जाता है। वहाँ मजदूरी करके कुछ रुपये कमाता है। लेकिन कानपुर में उसे अकेलेपन के एहसास से तथा चाची की याद सताने से वह वापस घोडेवाहा गाँव लौटता है, ताकि चाची को कुछ सुख के पल तथा अपना बेटा होने का फर्ज निभा सके। गाँव मे वही पुरानी स्थितियाँ देख काली का मन होता है कि वह उलटे पाँव कानपुर लौट जाए। लेकिन चाची के मोह के कारण वह गाँव में रहने का फैसला करता है।

काली गाँव में पक्का कोठा बनवाने की घोषणा करता है। तो सवर्णो में हलचल-सी पैदा होती है। काली की आर्थिक स्थिति का अच्छा होना भी सब की आँखों में चुभता है। छज्जू शाह से उसे पता चलता है कि जिस जमीन पर चमादड़ी बसी है, वह उनकी अपनी जमीन नहीं है, वह 'शामलात' की अर्थात् गाँव की सांझी जमीन है। इससे काली को यह समझाया जाता है कि उस धरती पर दलितों का कोई अधिकार नहीं है। उन्हें सिर्फ रहने के लिए वह जमीन दी गई है। यहाँ गाँव का मतलब सवर्ण वर्ग से है, जो जमीनों के मालिक हैं और उन्हीं का कानून चलता है। जमीन के बारे में जानकर काली का मन निराशा से भर जाता है। चाची तथा ज्ञानो की बातों से वह अपने मन की निराशा को निकालकर नए हौसले से मकान बनवाने के काम मे लग जाता है।

काली के व्यवहार में मानवीय अस्मिता की पहचान सम्मिलित है। पक्का मकान बनवाने की घोषणा एक सामाजिक क्रांति-सी है, जो अन्य दलितों के मन में भी एक सामान्य मानवीय जीवन जीने की लालसा निर्माण करती है। काली का पक्का मकान बनवाना सामाजिक क्रांति के आगाज का सूचक है। काली के व्यवहार से दलित युवकों में भी मानव सुलभ इच्छाएँ जागृत होती हैं। लालू पहलवान, पादरी अचिंतराम, डॉ. बिशनदास तथा गाँव के कुछ दलित युवक काली के प्रशंसक बनते हैं। काली का आत्म-सम्मान युक्त व्यवहार गाँव के सवर्ण चौधरी हरनामसिंह, हरदेव साथ ही मंगू चमार जैसे चौधरियों के गुलामों को खटकता रहता है। जिस कारण मंगू बार-बार काली से झगड़ा करता है और काली एक बार उसे पिटता भी है।

काली अपने पिता की तरह कबड्डी खेलता है। उसे लालू पहलवान मदत करते हैं। उसने गाँव को लालू पहलवान के अखाड़े में हरदेव से प्रतियोगिता करके अपना जोर दिखाया। जिसमें चौधरी हरनामसिंह का भतीजा हरदेव हारता है, जिस कारण प्रतिशोध में वह अपनी एड़ी मारकर काली का कुल्हा तोड देता है। तो न्यायप्रिय लालू पहलवान हरदेव को फटकारते हैं और काली का इलाज करवाते हैं, साथ ही काली को काम भी देते हैं।

काली में शारीरिक और मानसिक दृढ़ता शामिल है। खेल में, बाढ़ के समय तथा मंगू तथा अन्य के साथ हुए झगड़े के समय उसकी शारीरिक क्षमता का पता चलता है। काली मानसिक रुप से भी दृढ़ व्यक्तित्व रखता है। चौधरी-चमार (दलित) संघर्ष के समय उसके धैर्य और दृढ़ता का परिचय होता है।

काली स्वभाव से आत्म-बलिदानी भी दिखाई देता है। हड़ताल के समय वह खुद भूखा रहता है और पड़ोसी प्रीतो को अपना सारा अनाज दे देता है। चाची प्रतापी के शोक में आई किसी पड़ोसन ने गहने और रुपये आदि चुराने पर भी काली अपना दिल छोटा नहीं करता। लेकिन इससे उसकी पक्का घर बनवाने की इच्छा अधूरी रहती है।

काली जीवन के प्रति लालायित है, उसे अपना जीवन आत्म-सम्मान के साथ जीना है। इसलिए वह 'चमार' कहलाकर बुलाने पर तथा छुआछूत व्यवहार को सहन नहीं कर पाता। मंगू जो काली का विरोधी है, जब चौधरी उसे 'चमार', 'कुत्ता चमार' कहकर गाली देते हैं या उसे अपमानित करते हैं, तो काली का मन तिलमिला उठता है। चौधरियों के सामने जमीन पर बैठने के बजाय वह खड़ा रहकर अपने आत्म-सम्मान को कायम रखता है। चौधरियों के साथ दिहाड़ी के प्रश्न पर काली आगे बढ़कर बेगार का विरोध करता है। इसे भी सामाजिक क्रांति का अगला कदम कह सकते हैं। जिसमें आधे दिन की दिहाड़ी दलितों को हासिल होती है।

काली के व्यक्तित्व के कुछ कमजोर पहलुओं पर भी जगदीश चन्द्र ने प्रकाश ड़ाला है। जिससे उसके चरित्र के दुखांत की ओर इशारा हुआ है।

काली की कमजोर चेतना उसकी चाची प्रतापी के बिमारी के समय सामने आती है। वह डॉ. बिशनदास से दवाई लाता है। दो दिन में चाची की तबीयत ठीक नहीं होती तो वह ओझा के चक्कर में फँसकर रक्खा घेवर को बुलाकर जादू-टोना और झाड़-फूँक करवाता है। परिणाम-स्वरुप चाची की मृत्यु होती है। परंतु काली को इस बात का एहसास नहीं होता। चाची की मृत्यु का कारण वह उसकी बिमारी को ही मानता है।

ज्ञानो का काली से गहरा प्रेम है। सारा गाँव काली और ज्ञानो के प्रेम के खिलाफ है। कोई नहीं चाहता की इन दोनों की शादी हो। ज्ञानो गर्भवती होती है। लेकिन काली यह समझ ही नहीं पाता कि गाँव में रहकर ज्ञानो से उसकी शादी संभव नहीं है। काली की सांस्कृतिक चेतना विकसित रहती तो वह ज्ञानो को लेकर कानपुर भाग सकता था, वहाँ उसकी जान-पहचान थी। वहाँ ज्ञानो के साथ वह आसानी से जीवन बसर कर सकता था। परंतु काली ऐसा नहीं करता। वह ज्ञानो के मुश्किल घड़ी में उसका साथ नहीं दे पाता। समाज के सामने वह कमजोर पड़ता है। ज्ञानो को उसकी माँ जस्सो और भाई मंगू दोनों मिलकर जहर देते हैं, जिससे उसकी मृत्यु होती है। यह देखकर फिर से काली को समाज के ड़र से गाँव छोडकर भाग जाना पड़ता है।

इस प्रकार काली कथानक के अंत में दु:खांत चरित्र के रुप में उभरता है। वह काफी हद तक अपने वर्ग तथा समाज का प्रतिनिधित्व करता है। उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व उसके सकारात्मक पक्ष को प्रकट करता है, यही व्यक्तित्व उसके दु:खांत का कारण भी बनता है। काली का चरित्र जगदीश चन्द्र ने अत्यंत सहानुभूतिपूर्वक अंकित किया है। काली सामाजिक अत्याचार का प्रतीक बनकर सामने आता है। इसी प्रतिरोध में उसके चरित्र की महानता स्पष्ट होती है।

1.3.3.1.2 ज्ञानो :–

ज्ञानो 'धरती धन न अपना' उपन्यास का दूसरा प्रमुख चरित्र है। ज्ञानो जस्सो की बेटी व मंगू की बहन है। ज्ञानो और मंगू बहन-भाई होने के बावजूद एक ही घर में दो विपरित व्यक्तित्व का परिचय देते हैं। मंगू चौधरियों की चापलूसी और गुलामी करता है और ज्ञानो इन चौधरियों का विरोध करनेवाली विद्रोहिणी है। वह किसी प्रकार का अन्याय सहन नहीं करती। इसी स्वभाव के कारण ज्ञानो की ओर काली का मन आकर्षित होता है।

ज्ञानो संवेदनशील और दृढ़ स्वभाव की लड़की है। चौधरी हरनामसिंह के संदेह मात्र से जीतू को पिटे जाने पर ज्ञानो उसकी देखभाल के लिए जाती है। जबकि जीतू को मंगू के कहने पर ही पिटा गया है। इतना ही नहीं मंगू जिसे अपना सबसे बड़ा शत्रू मानता है, वह काली है। ज्ञानो काली और उसकी चाची प्रतापी की हर समय देखभाल करती है। जिस वजह से अपने ही घर में भाई मंगू और अपनी माँ जस्सो के हाथों वह प्राय: हर दिन पिटती है।

ज्ञानो के चरित्र में दृढ़ता बहुत बड़ा गुण है। कई अर्थों मे वह काली से भी अधिक दृढ़ चरित्र है। किसी चौधरी की इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह उसे छेड़े या किसी प्रकार तंग भी करें, जबकि चमारों की लड़कियों को चौधरी अपना चारा ही समझते थे।

काली के पक्का मकान बनवाने की बात से सबसे अधिक खुश ज्ञानो होती है। वह काली को हमेशा इसके लिए प्रोत्साहित करती है। काली जब निराश होता है, तब ज्ञानो का सुदृढ़ व्यक्तित्व ही उसका सहारा बनता है। ज्ञानो का सहारा पाकर काली गाँव में रहकर हर मुश्किल से जूझने का फैसला करता है।

काली को कबड्डी के खेल के समय हरदेव चौधरी चोट पहुँचाता है तो ज्ञानो हर तरह का खतरा मोल लेकर काली से मिलने आती है। इन्हीं मुलाकातों के समय काली और ज्ञानों के बीच शारीरिक संबंध भी बनते हैं। लेकिन ज्ञानो इन संबंधों से खुश नहीं, बल्कि शर्म और ड़र महसूस करती है। इसलिए जब कभी काली इस तरह के संबंध के लिए आग्रहित होता है, तो ज्ञानो उस पर खिझती है। काली और ज्ञानो के प्रेम-संबंध के चलते ज्ञानो गर्भवती होती है। इस स्थिति में उसे काली का साथ नहीं मिलता, वह अकेली रह जाती है। परिणाम-स्वरूप ज्ञानो की गर्भवती होने की स्थिति ही उसकी हत्या का कारण बनती है। स्त्री-पुरुष शारीरिक संबंधों की कीमत हमारे तत्कालिन एवं वर्तमान समाज में स्त्री को कई बार अपने प्राणों की आहुति देकर चुकानी पड़ती है, विशेषकर सामंती मूल्यों की जकड़न वाले समाज में। ज्ञानो भी इस स्थिति का शिकार बनती है।

चौधरी और चमार संघर्ष के समय ज्ञानो पूरे उत्साह में होती है। ज्ञानो एक स्वाभिमानी लड़की है। वह काली का ध्यान रखती है। उसके लिए परिवार से छिपाकर रोटी ला देती है। काली की गलतियों पर वह उसे कड़े शब्दों में उसकी गलती का एहसास समय-समय पर करा देती है। काली द्वारा एक बार अवमानना किए जाने पर वह उसे फटकार भी देती है।

ज्ञानो का दु:खद अंत अत्यंत मार्मिक है। ज्ञानो का विवाह करने में उसकी माँ के प्रयास असफल हो जाते हैं। ज्ञानो और काली का प्रेम-संबंध संपूर्ण गाँव को मालूम होता है। परंतु काली के साथ शादी कराने को उसकी माँ और भाई तैयार नहीं हैं, इतना ही नहीं सारा गाँव इस विवाह को स्वीकार करने को तैयार नहीं है। ज्ञानो का गर्भवति होना, उसकी यह स्थिति उसके लिए अत्यंत विषम परिस्थितियाँ पैदा कर देती है। पादरी भी उनका विवाह करवाने से इंकार कर देता है, हालाँकि वे ईसाई बनने को भी राज़ी हो जाते हैं। इस हालत में वही हो जाता है, जो गाँवों में अक्सर होता है। ज्ञानो की माँ जस्सो उसे संखिए की गोली दे देती है, जो वह नियति समझकर चुपचाप खा लेती है। उस समय पहली बार उसका भाई उसके लिए रोता है और माँ चीखें मारती है।

अत: जगदीश चन्द्र ने 'धरती धन न अपना' में ज्ञानो का चरित्र अत्यंत मार्मिक ढ़ंग से चित्रित किया है। ज्ञानो एक संवेदनशील, स्वाभिमानी, दृढ़, विद्रोहिणी होने के बावजूद भी अपनी मृत्यु को नियति समझकर उसका स्वीकार करती है।

1.3.3.2 अन्य दलित चरित्र :-

जगदीश चन्द्र का 'धरती धन न अपना' उपन्यास दलित जीवन पर केंद्रित उपन्यास है। इसलिए उपन्यास में दलित चरित्र अधिक संख्या में हैं। जिनमें काली की चाची प्रतापी, उसका दोस्त जीतू और जीतू की ताई निहालो, काली के पडोसी-निक्को, प्रीतो, इनका परिवार, जिसमें प्रीतो की बेटी लच्छो जो एक युवा और शोषित भी है, कन्ता, बसंत, मंगू और नंदसिंह आदि चरित्र उपन्यास में अपना अस्तित्व किसी न किसी रूप में दर्ज करवाते हैं।

- **चाची प्रतापी :-**

काली की चाची प्रतापी एक साधारण विधवा एवं दु:ख से पीड़ित स्त्री है। जिसके पास रिश्तों के नाम पर अपना कहलाने वाला सिर्फ उसका भतीजा काली है, जिसे वह अपना बेटा मानती है। उसने जीवन में बहुत गरीबी और अकेलापन भोगा है और काली उसी के खातिर गाँव लौटता है। काली उसके अंतिम दिनों में उसके पास रहकर उसके मन को शांति पहुँचाता है।

- **मंगू :-**

मंगू ज्ञानो का भाई और जस्सो का बेटा है। जो चौधरियों की गुलामी करता है। फिर भी चौधरी उसे 'चमार', 'कुत्ता चमार' कहकर अपमानित करते रहते हैं। उसे डॉ. बिशनदास 'यह चमारों का फिफथ कालमिस्ट है' ऐसा कहता है। मंगू जो अपने वर्ग के हितों के, यहाँ तक कि अपनी बहन के विरुद्ध चौधरियों के हाथों अपना जमीर व मानवीय अस्मिता को बेच चुका है। मंगू का चरित्र नकारात्मक रुप में अतिरंजनापूर्ण दिखाई देता है। अपने अहं के कारण खुद की बहन ज्ञानो को संखिया देकर मारने के बाद उसे पहली बार अपनी बहन के लिए रोता दिखाकर उसमें बची मानवीयता दिखाने का प्रयास जगदीश चन्द्र ने जरुर किया है।

- **नंदसिंह :-**

नंदसिंह अपने आत्म-सम्मान के प्रति सचेत, स्वाभिमानी चरित्र के रुप में अंकित है। वह मजदूरी के लए चौधरी के खेतों मे काम न कर, पुश्तैनी धंधा जूते बनाने-सँवारने का काम करता है। फिर भी बार-बार चौधरियों के द्वारा अपमानित होता रहता है। ईसाई बनकर अपने समुदाय से भी वह कट जाता है। फिर भी उसकी स्थिति वैसे ही बनी रहती है। जाति-व्यवस्था के दंभ से पीड़ित होकर ही वह पहले सिक्ख धर्म को जाति-पाति से ऊपर समझकर सिक्ख बना था, लेकिन उसकी सामाजिक दशा नहीं सुधरी, उसे उसी तरह से अपमानित किया जाता है। नंदसिंह सामंती-व्यवस्था और जाँति-पाति की छुआछूत व्यवस्था से प्रताड़ित है, हालाँकि आर्थिक रूप से वह किसी अन्य पर निर्भर नहीं है। नंदसिंह की अवस्था से दलित वर्ग के जाति-उत्पीड़न की पीड़ा का अनुमान व समकालीन समय में दलित जागरण को सकारात्मक रूप से समझा जा सकता है।

इन चरित्रों के साथ-साथ जीतू और ताई निहालो साधारण दलित चरित्र हैं। प्रीतो और निक्कू का परिवार है, जो काली का पड़ोसी है। निक्कू एक निठल्ला आदमी है, जो दस-ग्यारह बच्चों का बाप है। घर चलाने के लिए उसकी पत्नी प्रीतो काम करती है और उसकी बेटी लच्छो भी कच्ची उम्र में चौधरियों के यहाँ काम पर जाने लगती है और कच्ची उम्र में ही हरदेव के द्वारा यौन शोषण का शिकार होती है। उसकी माँ प्रीतो भी सारी उम्र यौन-शोषण का शिकार होती रही है। दलितों की अधिकांश स्त्रियाँ चौधरियों या अन्य सवर्णों के द्वारा यौन-शोषण का शिकार होती हैं। प्रीतो और लच्छो उनका प्रतिनिधित्व करते नजर आते हैं। लच्छो जैसी अबोध व असहाय लड़की को यौन-शोषण को झेलने के लिए मजबूर किया जाता है। वह इसे नियति समझकर चुप रहती है। यहाँ तक की उसके इस अपमान को उसके माँ-बाप भी चुपचाप सहने में ही अपनी भलाई समझते हैं।

बाबा फत्तो और ताया बसंता इस दलित समुदाय के प्रतिष्ठित बुजुर्ग हैं, जो अपने समाज के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। समय-समय पर उन्हें पंचायत में या चौधरियों से किसी झगड़े या विवाद को हल करने के लिए दलितों की ओर से बात करनी होती है। साथ ही वे अपने दलित बांधवों को मुश्किल घड़ी में सही निर्णय लेने में हमेशा मदत करते रहते हैं। काली के गाँव आने पर और उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व देख कर दलित युवक उसकी ओर नेतृत्व की दृष्टि से देखते हैं, लेकिन चमार-चौधरी संघर्ष का फैसला लेते समय ताया और बसंता से बात करके ही हल होता है।

1.3.3.3 वर्चस्ववादी सवर्ण चरित्र :-

गाँव के जमीनों का मालिक और वर्चस्ववादी वर्ग है - चौधरी वर्ग। जिस वर्ग के चरित्र 'धरती धन न अपना' उपन्यास में शोषक, अमानवीय और क्रूर चरित्रों के रूप में सामने आते हैं। जिसमें हरनामसिंह, उसका भतीजा हरदेव, चौधरी मुंशी, छज्जू शाह, घड्डम चौधरी, लालू पहलवान, डॉ. बिशनदास, कामरेड टहलसिंह आदि का समावेश है।

- **लालू पहलवान :-**

लालू पहलवान एक न्यायप्रिय व्यक्ति हैं, जो अपने मजदूरों के साथ मानवीय व्यवहार करते हैं और दु:ख-तकलीफ के समय उनके घरों में जाने से भी संकोच नहीं करते। काली को चोट पहुँचाने पर वह हरदेव को फटकारते हैं, साथ ही काली का इलाज भी करवाते हैं और उसे काम भी देते हैं। लालू पहलवान अंधविश्वासी भी हैं। जब गाँव में बाढ़ का पानी बढ़ता ही जाता है, तो चो में वह बलि देने का उपाय सुझाते हैं। चौधरी-दलित संघर्ष के समय लालू पहलवान का अपने वर्ग के साथ रहना समाज में वर्गीय स्थिति के प्रभावी होने के यथार्थ को संकेतित करता है।

- **छज्जू शाह :-**

'धरती धन न अपना' उपन्यास के चौधरियों और चमारों के बीच के जो चरित्र हैं, वे अधिक दिलचस्प और जीवंत प्रतीत होते हैं। गाँव का बनिया छज्जू शाह है, जो चौधरियों और दलितों दोनों से मधुर संबंध रखता है और दोनों को ही समान रूप में ब्याज आदि के द्वारा लूटता है। असल में उसका हित चौधरियों-दलितों को लड़वाने में है, इसलिए वह उन्हें लड़वाने के लिए उकसाता है और जब उसके अपने हित की हानी नजर आती है, तो समझौते के लिए दोनों पक्षों को समझाने लगता है। उसके नजरों में पैसा ही सबसे बड़ा है, इसलिए कानपुर से कुछ कमाई करके लौटा काली उसके लिए 'बाबू कालीदास' है और उसकी जेब खाली होते ही वह उसके लिए फिर से 'काली' ही रह जाता है। छज्जू शाह बनिया समुदाय का प्रतिनिधि चरित्र है।

इन चरित्रों के साथ ही घड्डम चौधरी जो उपन्यास में हास्य-व्यंग्य की स्थिति निर्माण करता है। इसके जैसे एक तो हर गाँव में होते ही हैं, ये निठल्ले रहकर बातों की कमाई खाते हैं। इस उपन्यास में घड्डम चौधरी कानून का विशेषज्ञ बनकर गाँव पर अपना आतंक जमाए हुए है और उसी से अपना कमीशन निकाल कर काम चलाता है।

पण्डित सन्तराम, महाशय तीरथराम और पादरी अचिंतराम धार्मिक समुदायों-सनातनी, आर्य समाज, और ईसाई धर्म के प्रतिनिधि चरित्र हैं। तीनों ही अपने व्यवहार में कपटी और पाखंडी हैं। पण्डित सन्तराम दलितों से छुआछूत का व्यवहार करता है, लेकिन जैसे ही दलित स्त्रियों को देखता है उसकी लार टपकती है। महाशय या पादरी भी दलितों के मानवीय दु:खों में कोई सहायता देने को तैयार नहीं है। वह तो अवसर का लाभ उठाकर उनका धर्म-परिवर्तन जरूर करवाना चाहता है। अपने व्यवहार से यह सभी धार्मिक चरित्र अपने खोखलेपन को प्रकट करते नजर आते हैं।

डॉ. बिशनदास और कामरेड टहलसिंह कम्युनिस्टों के व्यंग्य चित्र हैं। डॉ. बिशनदास घोर किताबी कामरेड है। उसकी गाँव में दवाइयों की दुकान है। गाँववाले उसे बहुत बडा 'चाट' समझते हैं। इसकी अनेको बार बोलने की आदत के कारण वह झिडकियाँ भी खाता है। चौधरी-दलित संघर्ष के समय उसका पड़ोसी गाँव के टहलसिंह का व्यंग्य चित्र उभरकर सामने आता है। ये दोनों ही किताबी कामरेड मार्क्स, लेनिन,

एंगेल्स पर बहस करते रहते हैं। दलित मजदूरों के हड़ताल में यह प्रोलतारी, इन्कलाबी स्प्रिट के सपने देखने लगते हैं। काली प्रोलतारी, स्प्रिट के विरूध्द है, जिससे वे मानते हैं कि सारे दलित लोग काम-चोर हैं। हड़ताल के समय दलितों के लिए अनाज का इंतजाम करने के बजाय वे गाँव में जलसे करने के ऐलान करने लगते हैं।

डॉ. बिशनदास और कामरेड टहलसिंह दोनों वास्तव में सुविधाभोगी मध्यवर्गीय चरित्र हैं। जिनका जिंदगी के संघर्षों से कोई लेना-देना नहीं है। इसलिए उनका समूचा व्यवहार उनके वर्गीय चरित्र को ही प्रस्तुत करता है।

1.3.4 'धरती धन न अपना' में चित्रित समस्याएँ :-

जगदीश चन्द्र ने समाज में व्याप्त समस्याओं को अपने अनुभव के आधार पर अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है। जगदीश चन्द्र सामाजिक व्यवस्था से आतंकित जनजीवन तथा उनकी समस्याओं को साहित्य में चित्रित करते हैं। समाज और जीवन से जुड़ी समस्या साहित्यकार की अपनी समस्या बनकर सामने आती है। जगदीश चन्द्र 'धरती धन न अपना' में चित्रित समस्याओं के माध्यम से सदियों से छटपटा रहे दलित वर्ग के दु:ख, दर्द, पीड़ा, घुटन एवं करुणा को दर्शाते हैं।

उपन्यासकार जगदीश चन्द्र ने प्रस्तुत उपन्यास में समाज में व्याप्त प्यार, धर्म-परिवर्तन, नारी-शोषण, धार्मिक अंधविश्वास, सांप्रदायिक समस्याएँ आदि को चित्रित करते हुए सदियों से पीड़ित वर्ग की पीड़ा तथा उत्पीड़न को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित समस्याओं को इस प्रकार पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है -

1.3.4.1 अन्धविश्वास की समस्या :-

भारतीय समाज में लोग अधिकतर अंधविश्वास पर विश्वास करते हैं। उन्हें सही-गलत की पहचान नहीं होती। उपन्यासकार ने 'धरती धन न अपना' में काली के माध्यम से ग्रामीण समुदाय में निहित अन्धविश्वास की भावना को चित्रित किया है। ग्रामीण लोग शारीरिक पीड़ा, दर्द या मानसिक तनाव तथा किसी भी बीमारी में सबसे पहले डॉक्टर के पास जाने के बजाय अंधविश्वासों की ओर बढ़ते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में जब चाची को दवा-दारू से लाभ नहीं होता है, तो काली के मन में ड़र की भावना निर्माण होती है। निहाली और बेबे के बातों में आकर, चाची का इलाज करवाने के लिए काली जादू-टोना कराने के लिए तैयार होता है। झाड़-फूँक और जादू-टोने के लिए मशहूर रक्खे धेवर को वे बुलाते हैं। वह आकर काली के मकान का निरीक्षण करता है और चाची प्रतापी की बीमारी का कारण भूत-प्रेत को घोषित करता हुआ कहता है कि, ''इसमें बसेरा करने से पहले किसी सयाने को बुलाना था? इसलिए प्रेतों का बास हो गया है।'' चाची के अंदर हरवेलसिंह पारिया के भूत का साया है कहकर वह लाल मिर्चो के धुएँ को चाची के नाक के पास ले जाकर सुँघाता है, परिणाम-स्वरूप चाची की खाँसी बढ़ती है, उसे काली पानी देना चाहता है, लेकिन रक्खा उसे पानी भी पिलाने नहीं देता। इन उपायों के चलते चाची की मृत्यु हो जाती

है। लेकिन काली को अपनी इस गलती का एहसास ही नहीं होता, वह तो इसी भ्रम में रहता है कि चाची की मौत बीमारी के कारण हुई है।

बरसात के दिनों चो में पानी बढ़ने से गाँव पर बाढ़ का संकट छा जाता है, जिससे बचने के लिए लालू पहलवान सुझाव देते हुए कहता है कि, ''ख्वाजा पीर को बलि देने से शायद पानी थम जाए।'' इस सुझाव को मानकर गाँववाले चो में एक बकरे की बलि देते हैं। उनकी आशा थी कि इस बलि से पानी का बढ़ना थम जाएगा। परंतु ऐसा नहीं होता, चो का पानी बढ़ता ही जाता है।

प्रस्तुत उपन्यास में सिर्फ दलितों में ही अंधविश्वास होता है ऐसा नहीं, तो सवर्णों में भी अंधविश्वास पनपता है यह वर्णित किया है। साथ ही पण्डित सन्तराम के जैसे पण्डित पुजारी भरे पड़े हैं, जो समय-समय पर अपने नियम बदलते रहते हैं। जिसमें खुद का फायदा हो, वही उनका नियम होता है। जो बडा अधर्मी है। इनके जैसे पुजारियों के कारण ही समाज में वर्तमान समय में उनका कोई मूल्य नहीं रहा।

1.3.4.2 सांप्रदायिक विषमता की समस्या :-

सांप्रदायिक विषमता को भी लेखक ने एक समस्या के रुप में उठाया है। धर्म-परिवर्तन जैसी सांप्रदायिक विषमता व्यक्ति स्वेच्छा से, तो कहीं पर आर्थिक अभावों से टूटकर विवशतावश अपनाता है। धर्म के ठेकेदारों ने दलितों की विवशता का लाभ बड़े पैमाने पर उठाया है। ईसाई और सिक्ख प्रचारकों के धर्मगुरूओं ने धर्म-पविर्तन की दिशा में सक्रियता दिखाई है। किसी एक धर्म के व्यक्ति को बहला-फुसलाकर आर्थिक प्रलोभन देकर उसका धर्म-परिवर्तन किया जाता है। दलितों को बौध्द, ईसाई तथा सिक्ख बनाया जाता है। गाँव के दलित लोग इन धार्मिक, सांप्रदायिक लोगों के बहकावे में आकर अपना धर्म छोड़कर दूसरा धर्म अंगीकार करते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में दलित नंदसिंह आर्थिक अभावों से गुजरकर तथा सवर्ण चौधरियों द्‌वारा प्रताड़ित होकर धर्म-परिवर्तन करता है। चौधरियों के गालियों एवं अपमान से छुटकारा पाने के लिए नंदसिंह धर्म-परिवर्तन करके सिक्ख बनता है, पर यहाँ भी उसे अपने ही सिक्ख लोगों से निराशा हाथ लगती है। सिक्ख सन्तासिंह कहता है कि, ''सिक्ख बन जाने का यह मतलब नहीं कि वह चमार नहीं रहा। धर्म बदलने से जात तो नहीं बदल जाती।'' नन्दसिंह के धर्म-परिवर्तन करने के बावजूद भी उसे चमार, कुत्ता, कमीना कहलाया जाता है। तब इससे पीछा छुड़ाने के लिए नंदसिंह ईसाई धर्म की शरण में जाता है। फिर भी लड़ाई के वक्त घड्‌डम चौधरी उसे कहता है, ''सुन, चमार ईसाई बनने के बाद कुछ फर्क नहीं पड़ा, टट्‌टी-पेशाब पहले की तरह ही करता है या तरीका बदल गया है।'' चमार नंदसिंह द्‌वारा ईसाई बनने पर या सिक्ख बनने पर भी उसे किसी भी तरह से सम्मान नहीं मिलता, बल्कि उसे उसके चमार होने का एहसास बार-बार कराया जाता है। डॉ. बिशनदास नंदसिंह के धर्म-परिवर्तन के बारे में कहता है कि नन्दसिंह ने जो धर्म-परिवर्तन किया है, उसके पीछे अमीर पूँजीपति वर्ग का पाखण्ड है। तो पण्डित सन्तराम नंदसिंह को गालियों के साथ कहता है कि मनुष्य का जन्म पूर्व निश्चित हुआ करता है।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रमुख पात्र काली को भी धर्म-परिवर्तन करने के लिए मजबूर करने का प्रयास किया गया है। पादरी काली की सहायता धर्म-परिवर्तन करने पर करना चाहता है। प्रस्तुत उपन्यास में स्पष्ट दिखाई देता है कि धर्म मात्र आडम्बर और कर्मकाण्डों तक ही सीमित नहीं रह गया है। चौधरी-दलित संघर्ष के समय चौधरियों के बहिष्कार के बाद जब दलित चमार भूखे मरने लगते हैं, तो उन्हें धर्म-परिवर्तन के लिए विवश किया जाता है। पादरी कहता है कि, ''अनाज की बोरियाँ भिजवा दूँ, लेकिन सवाल है रिश्ते का...हमारी भी मजबूरी है...मैं किस रिश्ते से तुम्हारे मोहल्लेवालों की मदद करूँ?'' अर्थात् पादरी मदत के बदले दलित चमारों का धर्म-परिवर्तन करवाना चाहता है।

''धरती धन न अपना'' उपन्यास में जगदीश चन्द्र ने, किसी की मजबूरी, भूख या आर्थिक तंगी आदि का सहारा लेकर मदत करने के बहाने दलितों पर धर्म-परिवर्तन का दबाव बनाया गया है, इसे बखूबी चित्रित किया है।

1.3.4.3 छुआछूत की समस्या :-

'धरती धन न अपना' उपन्यास में बरसात के दिनों में चो में पानी बढ़ने से चमादड़ी के कुएँ में गंदा पानी भर जाता है। तो गाँव के दलितों के सामने पीने के पानी की समस्या निर्माण होती है। उस वक्त वह गाँव के सवर्णों से अर्थात् चौधरियों से, पादरी अचिंतराम, पण्डित सन्तराम आदि सबसे उनके कुँए से पानी लेने की या देने की अनुमति माँगते हैं, लेकिन कोई भी उन्हें पानी नहीं देता। पादरी अचिंतराम पानी देना चाहता है, परंतु उसकी पत्नी कोठी को बाहर से ताला लगाती है और दोनों अंदर बैठते हैं। वह दलित स्त्रियों को गंदा समझती है और अपने पति अचिंतराम से कहती है, ''अब चुपचाप बैठना। ये वैसे ही गन्दे लोग हैं। कीचड़ में से होकर आते हैं। अपने साथ पचास बीमारियाँ भी लाते होंगे।'' पादरी और पादरानी की इस हरकत पर चमादड़ी में बहुत बेचैनी फैल जाती है। परंतु इससे अधिक महत्त्वपूर्ण उनके सामने पानी की समस्या थी, उन्होंने सोचा कि चौधरियों की मिन्नत करके उन्हें बताए कि या तो कुएँ पर चढ़ने दे या अपने-आप पानी भर दें। परंतु चौधरियों का खौफ उनके मन में इस कदर हावी है कि ऐसा कहने का साहस किसी में नहीं होता है।

जोर की वर्षा के बावजूद सारी औरतें पण्डित सन्तराम के पास पानी के लिए मिन्नतें करने पहुँचती हैं। मंदिर के बाहर खडी होकर वह पण्डित को आवाजे देनी लगती हैं। उसके आने पर उसे अपनी समस्या बता देती हैं और उन्हें या प्रकाश घेवर को कुएँ से पानी निकालकर अपने घड़ों में भर देने की मिन्नतें करती हैं, परंतु पण्डित उन दलित औरतों को सिर्फ फटकारता ही नहीं, बल्कि उनके पीछे गालियाँ देता हुआ हाथ में डण्डा लेकर चमादड़ी तक भागता है। इस भागदौड़ में कई औरतों के घड़ें गिरकर टूट जाते हैं। पण्डित की इस हरकत के कारण दलित औरतों के आँखों में क्रोध और बेबसी के आँसू भर आते हैं। अंत में पानी के लिए तरसते चमारों को विवश होकर बरसाती पानी परनालों से भरकर पीना पड़ता है। पण्डित सन्तराम के इस कृत्य से यह साबित हो जाता है कि धर्म भेदभाव और छुआछूत के व्यवहार द्वारा अपना अस्तित्व बनाए रखने की कोशिश ही नहीं करता बल्कि उसमें विश्वास भी करता है। उपन्यासकार जगदीश चन्द्र ने प्रस्तुत

उपन्यास में दलित समाज को पानी के लिए भी कितनी तकलिफ़े उठानी पड़ती हैं, इसका बहुत मार्मिकता से चित्रण कर इस समस्या को पाठकों के सामने उजागर किया है।

1.3.4.4 परिवार विषयक समस्या :–

प्रस्तुत उपन्यास में ज्ञानो काली से प्रेम–संबंध होने के बावजूद समाज की रूढ़िवादिता के सामने अपना जीवन अच्छी तरह से निभाना जानती है। ज्ञानो एक ऐसी नारी है जिसने अपने उपर होनेवाले अन्याय का ड़टकर सामना किया है एवं उपन्यास में उसके साहस का वर्णन मिलता है। वह अपने दृढ़ विश्वास के आगे अपनी माँ और भाई की भावनाओं को कुछ नहीं समझती। ज्ञानो काली के प्रति विशुद्ध भाव का प्रेम रखती है, काली चमार जो उसके ही बिरादरी का है फिर भी इन दोनों के विवाह के खिलाफ सारे गाँववाले हैं। उससे अपने परिवार की इज्जत बचाने के लिए ज्ञानो की माँ और भाई मिलकर उसे जहर देते हैं। काली और ज्ञानो के प्रेम–संबंध का परिणाम दु:खदाई होता है। परंतु उसकी दर्दनाक मृत्यु पाठकों को अधिक प्रभावित करती है। वर्तमान युग में आस–पड़ोस में ज्ञानो जैसी कई निर्भिक, इमानदार युवतियाँ उसकी ऐसी समस्या से जुझती नजर आती हैं। उपन्यासकार ने इस समस्या को पाठकों के सामने रखकर समाज में स्थित रूढ़ियों पर करारा व्यंग कसा है। निक्कू और प्रीतो उनकी बेटी लच्छो का चौधरी हरदेव द्वारा यौन–शोषण होने पर भी परिवार तथा समाज के ड़र के कारण चुप रह जाते हैं।

काली और ज्ञानो का प्रेम–संबंध शादी के मकाम तक पहुँचने से पहले ही मुसीबतों से घिर जाता है। सारा गाँव उनके प्रेम के खिलाफ हो जाता है, तब दोनों को समाज के भय और ग्रामीण मर्यादाएँ तथा अन्य समस्याओं के कारण अलग होना पड़ता है, काली गाँव छोड़कर पड़ोस के गाँव में जाता है। परिणाम–स्वरुप ज्ञानो का विश्वास डगमगा जाता है। कुछ समय पश्चात् काली ज्ञानो से मिलकर अपनी पुरुष प्रधानता दिखाने के लिए उसे अपनी बातों से फुसलाने की कोशिश करता है। परंतु वह ज्ञानो के गर्भवती होने पर उसका साथ नहीं दे पाता। उसमें हिम्मत की कमी दिखाई देती है। परिणाम–स्वरुप काली का प्रेम पाकर भी अन्त में समाज के सामने हार मानकर, मौत को अपनी नियति समझकर, अपनी माँ और भाई द्वारा दिए गए जहर को वह चुपचाप खाती है।

1.3.4.5 प्रेम–विषयक समस्या :–

संसार के सभी रिश्तों में जैसे, माँ–बेटे, भाई–बहन, भाई–भाई, प्रेमी–प्रेमिका में प्रेम–संबंध पाया जाता है। प्रत्येक रिश्ते की बुनियाद प्रेम पर टिकी होती है। प्रेम में अमीर–गरीब, जाति–पाँति, राजा और रंक एवं कोई भी असमानता हो उसका असर प्रेम पर नहीं होता। प्रेम में समस्या उस समय निर्माण होती है, जब प्रेम–संबंध से दो समूह, दो जाति या धर्म के बीच में टकराव हो जाता है।

प्रस्तुत उपन्यास की मूल संवेदना चौधरी–दलित संघर्ष पर आधारित है। फिर भी यहाँ प्रेम प्रेमी–प्रेयसी, माता–पिता, चाचा–चाची आदि रुपों में दिखाई देता है। उपन्यास के आरंभ में ही काली अपनी चाची के मोह के कारण ही छह साल बाद वापस गाँव लौटता है। उसे पता नहीं है कि चाची जिंदा है या मर गई है। जैसे ही अपने मकान में वह चाची को पाता है, वह 'चाची!' कहकर उसके पाँव की ओर झुक जाता है।

चाची भी काली को इतने सालों बाद वापस आया देखकर घर में प्रवेश करते समय दहलीज के दोनों ओर एक-एक बूँद तेल टपकाकर काली को अंदर लेती है। काली को वापस लौटा देखकर उसकी खुशी दोहरी होती है। चाची काली को खाट पर बिठाकर उसे चूमती हुई कहती है, ''मेरा लाल वापस आ गया'' यहाँ चाची का काली के प्रति स्नेह-भाव एवं नारी जीवन की सार्थकता चाची के व्यवहार मे दिखाई देती है। चाची के लिए काली उसके बेटे के समान है। माँ-बेटे का संतान प्रेम कितना सुखदायी होता है इसका उदाहरण काली और उसकी चाची प्रतापी के संबंधो में दिखाई देता है। काली पक्का मकान बनवाने की बात करता है, तो चाची उसे पहले शादी करने के लिए कहती है। चाची हमेशा काली के भलाई के बारे में सोचती है। इन दोनों के संबंधों में माँ-बेटे से भी अधिक प्यार दिखाई देता है। चाची की मृत्यु से काली टूट जाता है। काली अपनी चाची के मृत्यु के बाद अकेला हो जाता है, वह चाची के साथ बिताए दिनों को याद करते रहता है। अपनी चाची की मृत्यु के बाद शमशान में काली की दयनीय स्थिति का चित्रण देखने को मिलता है, वह पागल की तरह चिता की ओर दौड़ता है। चाची के बिना उसे जीवन अधूरा लगता है।

उपन्यासकार ने प्रेम-विषयक संवेदना में स्वच्छंद प्रेम को भी चित्रित किया है। काली और ज्ञानो के प्रेम-संबंध का चित्रण उपन्यासकार ने अत्यंत मार्मिकता से चित्रित किया है। काली ज्ञानो के निर्भिक, विद्रोहिणी रुप की ओर आकर्षित होता है। दोनों के प्रेम-संबंध के चलते ज्ञानो गर्भवती हो जाती है। परंतु समूचा गाँव उनके प्रेम-संबंध के विरोध में होता है। काली उन्हीं की बिरादरी का होने के बावजूद भी ज्ञानो की माँ और भाई, साथ ही चमादड़ी के सभी इस प्रेम-संबंध के खिलाफ होते हैं। तो काली और ज्ञानो गाँव छोड़ने के बारे में सोचते हैं, परंतु कमजोर काली इस विषय में कोई निर्णय नहीं लेता। काली धर्म-परिवर्तन करके उस धर्म की विधि से ज्ञानो से विवाह करना चाहता है, लेकिन यह संभव नहीं हो पाता। काली ज्ञानो का साथ देने में, उसका हाथ थामने में हिम्मत नहीं दिखाता। समाज के ड़र से वह अपने कदम पीछे लेता है। अंत में ज्ञानो की माँ उसे संखियाँ खिलाकर मार ड़ालती है। ज्ञानो इसे अपनी नियति मानती है। एक निश्चल प्रेम सामाजिक बाधाओं के कारण अपना अंतिम साँस लेता है।

1.3.4.6 नारी-शोषण की समस्या :-

प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने नारी-शोषण की समस्या को अंकित किया है। गाँव का दलित समाज पूरी तरह आर्थिक रूप से चौधरियों पर निर्भर होने के कारण दलित औरतों को चौधरियों के यहाँ काम करने के लिए जाना पड़ता है। जहाँ उनका यौन-शोषण होता है। प्रीतो और निक्कू की बेटी लच्छो चौधरी हरदेव द्वारा यौन शोषण की शिकार होती है। परंतु वह इसके बारे में अपने माँ-बाप को बताने पर भी वे चुप्पी साध लेते हैं। इतना ही नहीं दलित स्त्रियों के हँसी-मजाक और झगड़ों से पता चलता है कि कोई दलित स्त्री चौधरियों या सवर्णो के हाथों में सुरक्षित नहीं रहती है। धर्म का ठेकेदार समझनेवाले पण्डित सन्तराम जैसे छुआछूत का पाखंड करनेवाले, दलित स्त्री की देह के लिए हर समय लार टपकाते रहते हैं। अपनी आर्थिक स्थिति के कारण दलित स्त्रियाँ सवर्ण पुरूषों द्वारा यौन-शोषण का शिकार होने से अपने को बचा ही नहीं पाती हैं।

जगदीश चन्द्र के उपन्यास साहित्य में समाज को एक अलग दृष्टिकोण से विवेचित एवं विश्लेषित करने का प्रयास किया है, यह स्पष्टत: देखने को मिलता है। इनमें समाज और जीवन से जुड़ी समस्या उपन्यासकार की अपनी समस्या बनकर सामने आती है। इन्होंने समाज के वैषम्य को बहुत बारीकी से अनुभव किया है और सामाजिक यथार्थ को बहुत नजदिक से जिया भी है। समाज की सबसे बड़ी समस्या वर्गभेद है, इससे जुड़ी अन्य समस्याएँ जैसे व्यक्ति की समस्याएँ, पारिवारिक समस्याएँ एवं अन्य समस्याएँ आदि को प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने यथार्थता के साथ उजागर करने का प्रयास किया है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

अ) निम्नांकित विकल्पों में से उचित विकल चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) जगदीश चन्द्र का जन्म ....गाँव में हुआ।

अ) रलह   ब) घोडेव़ाहा   क) पंजाब   ड) कानपुर

2) जगदीश चन्द्र का जन्म ....को हुआ।

अ) 1930 ई.   ब) 1932 ई.   क) 1931 ई.   ड) 1933 ई.

3) जगदीश चन्द्र की पत्नी का नाम ....था।

अ) क्षमा   ब) विमला   क) कमला   ड) प्रीतमदेवी

4) जगदीश चन्द्र की मृत्यु ....को हुई।

अ) 1996 ई.   ब) 1996 ई.   क) 1996 ई.   ड) 1996 ई.

5) जगदीश चन्द्र का बचपन ....गाँव में बीता।

अ) रलह   ब) घोडेव़ाहा   क) पंजाब   ड) कानपुर

6) 'धरती धन न अपना' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष .... है।

अ) 1973 ई.   ब) 1972 ई.   क) 1962 ई.   ड) 1965 ई.

7) 'धरती धन न अपना' उपन्यास.............अध्यायों में विभक्त है।

अ) 36   ब) 34   क) 48   ड) 49

8) काली.............वर्ष बाद वापस घोड़ेवाहा लौटता है।

अ) चार   ब) पाँच   क) छह   ड) सात

9) काली की चाची .... है।

अ) प्रीतो   ब) प्रतापी   क) निहाली   ड) लच्छो

10) काली के पिता माखा .... थे।

अ) मजदूर   ब) पहलवान   क) आलसी   ड) मुंशी

11) काली का पालन-पोषण ....ने किया है।

अ) चाची प्रतापी ब) ज्ञानो क) प्रीतो ड) निहाली

12) छज्जू शाह काली से ब्याज के.............रुपये लेते हैं।

अ) पच्चीस ब) सौ क) सोलह ड) पचास

13) काली ....की ओर आकर्षित होता है।

अ) निहाली ब) लच्छो क) ज्ञानो ड) जस्सो

14) .... धर्म-परिवर्तन करके ईसाई धर्म का स्वीकार करता है।

अ) जीतू ब) निक्कू क) नंदसिंह ड) हरदेव

15) चौधरी हरनाम सिंह फसल के खराब करने के संदेह पर ....को पीटता है।

अ) काली ब) जीतू क) मंगू ड) दिनू

16) ज्ञानो का भाई मंगू ....की गुलामी करता है।

अ) चमारों ब) दलितों क) चौधरियों ड) मजदूरों

17) चौधरी हरनाम सिंह का भतीजा ....है।

अ) घड़्डम ब) हरदेव क) बलदेवसिंह ड) नंदसिंह

18) कबड्डी के जौहर में काली को ....चोट पहुँचाता है।

अ) मंगू ब) जीतू क) हरदेव ड) लालू पहलवान

19) गाँव में .... की दवाईयों की दुकान है।

अ) डॉ. बिशनदास ब) सन्तसिंह क) अचिंतराम ड) टहल सिंह

20) काली को मनिऑर्डर से .... रुपये मिलते हैं।

अ) पचास ब) अस्सी क) सौ ड) चालीस

ब) निम्नांकित विकल्पों में से चुनकर उचित मिलान कीजिए।

1)

1. माखा का बेटा	क) ज्ञानो
2. चौधरी हरनाम सिंह का भतीजा	ख) प्रतापी
3. काली की चाची	ग) नंदसिंह
4. न्यायप्रिय पहलवान	घ) हरदेव
5. काली की प्रेमिका	च) सन्तराम
6. निक्कू की बेटी	छ) लालू
7. सिक्ख धर्म का स्वीकार करनेवाला	ज) काली

8. घोड़ेवाहा का पण्डित झ) लच्छो

2) 1. छज्जू शाह से काली के चाचा का लिया कर्जा क) अस्सी

2. काली से छज्जू शाह द्वारा लिया गया ब्याज ख) सौ

3. काली को मनिऑर्डर द्वारा मिले रुपये ग) सोलह

क) निम्नांकित वाक्यों का सही या गलत में चुनाव कीजिए।

1. काली दस साल बाद घोड़ेवाहा वापस लौटता है।
2. काली अपने चाची प्रतापी के मोह के कारण वापस गाँव आता है।
3. छज्जू शाह काली से ब्याज के सोलह रुपये लेता है।
4. काली के लच्छो से प्रेम-संबंध हैं।
5. काली चमादड़ी में पहला पक्का मकान बनवाने वाला है।
6. ज्ञानो का भाई जीतू है।
7. चौधरियों के खेत का बांध काली और हरदेव तोड़ते हैं।
8. ज्ञानो और काली के विवाह के लिए समूचा गाँव राजी होता है।

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :-

1) चमादड़ी - चमारों की बस्ती

2) साँकल - दरवाजे की कुंडी

3) दोआब - दो नदियों के बीच की जगह, क्षेत्र

4) पुत्तरा - बेटा

5) चो - नाला या पहाड़ी नदी

6) नीली छतरीवाला - ईश्वर, भगवान

7) तकिया - चौपाल

8) चौगान - एक प्रकार के गेंद-बल्ले का खेल खेलने का मैदान

9) खुश्क - सुखा

10) उपले - कण्डे, जिन्हें गाय या भैंस के गोबर को हाथ से आकार देकर धूप में सुखाया जाता है।

11) छटाँकी पहलवान - दुबला-पतला

12) पोस्त - खाल, त्वचा, पेड़ की छाल

13) खुराक - भोजन, भोजन की एक समय की नियत मात्रा

14) तहबन्द - अधोवस्त्र, अँगोछा, लुंगी

15) ताया - चाचा, स्नेह संबोधन

16) बेगैरत - सम्मानहिन, प्रतिष्ठारहित, बेशर्म

17) मुटियार - कुँवारी लड़की, विवाह के योग्य हो गई लड़की

18) भाग - भाग्य

19) भलमानसी - इन्सानियत, शराफत, सभ्यता, मनुष्यता

20) दरातियाँ- शाखाएँ

21) मुंडेर - दीवार का वह ऊपरी भाग जो ऊपर छत के चारों ओर कुछ उठा होता है

22) ठोस - पक्का

23) रिहायश - रहने के लिए, निवास के लिए

24) शामलात - गाँव के जमींदारों की साँझी ज़मीन

25) मौरूसी - ऐसी भूमी के काबिज जिस पर अधिकार न हो

26) खरमस्तियाँ - दुष्टता, पाजीपन, शरारत

27) क्लेश - झगड़ा

28) स्यापा - रोना-धोना, लड़ाई करना

29) दखना - दक्षिणा

30) नामा - पैसा

31) परजापत - कुम्हार

32) दिहाड़ी - मजदूरी

33) चिक - बाँस या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झँझरीदार परदा

34) तकसीम - बाँटना, वितरण

35) सिक्खया - सम्मति

36) बलूँगड़ा - बिल्ली का बच्चा

37) तरखाना - बढ़ई की दुकान

38) रन - पत्नी

39) सिट्टे - बालियाँ

40) देगचा - पतीला, बटलोई

41) परनाला - छत

42) सेमी - पोषित

43) डंगर - जानवर, पशु

44) घेर - दर्द

45) हनेर - अन्धकार

46) थम्मी - छत को सहारा देनेवाला लकड़ी का खम्भा

47) संखियाँ - जहर

48) हाण-प्रवाण - हम-उम्र

49) वहिशत - स्वर्ग

50) तबका - वर्ग, समूह

51) तरखाना - बढ़ई की दुकान

52) टब्बर - कुटुम्ब, परिवार

53) कुड़माइयाँ - मंगनी, सगाई

54) बिरछ - वृक्ष, पेड़

55) मास मूवमेण्ट - जनता का व्यापक संघर्ष

56) रिफार्मिस्ट - सुधारवादी

57) पोजिशन - स्थिति

58) इम्पिरियलिस्ट- साम्राज्यवादी

59) कैपिटिलिस्ट - पूँजीवादी

मुहावरें :-

1) हँसी से दोहरी होना - बहुत हँसना

2) शर्म से लाल होना - प्रशंसा सुनकर शरमाना

3) तुनक कर बोलना - चिढ़कर बोलना, गुस्से से बोलना

4) चमड़ी उधेड़ना - बहुत पिटाई करना या मारना, कड़ा दंड देना

5) बन्दगी करना - ईश्वर की वंदना करना, सेवा, खिदमत करना

6) चित्त गिरना - पीठ के बल ज़मीन पर आ पड़ना

7) सिर पर खून सवारना - कार्य में लगे रहना, एक ही रट लगाना, धुन सवार होना

8) छाती तनकर खड़ा होना - निर्भय होकर खड़ा होना, घमंड करना

9) निढ़ाल होना - मुर्छा आना, बेहोश होना, बहुत अधिक थक जाना

10) जमीन निगल जाना - लापता हो जाना

11) दहाड़ मारना - चिल्ला-चिल्लाकर रोना

12) कान कतरना - अधिक होशियार होना, सोच-विचार में पड़ना

13) बात ताड़ना - अंदाजे से जान लेना या समझना

14) तेवर बदलना - काम निकल जाने पर बदल जाना

15) टालमटोल करना - बहाना बनाना

16) संजीदा हो जाना - गंभीर होना

17) हाथापाई करना - झगड़ा करना, लड़ाई करना

18) हड्डी-पसली एक कर देना - बहुत मारना, बुरी तरह पीटना

कहावतें :-

1) जिस थाली में खाना, उसी में छेद करना - अपनों के साथ धोखा करना

1.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

अ) निम्नांकित विकल्पों में से उचित विकल चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. ब) घोड़ेवाहा	2. अ) 1930 ई.
3. अ) क्षमा	4. क) 1996 ई.
5. ब) रलह	6. ब) 1972 ई.
7. ड) 49	8. क) छह
9. ब) प्रतापी	10. ब) पहलवान
11. अ) चाची प्रतापी	12. क) सोलह
13. क) ज्ञानो	14. क) नंदसिंह
15. ब) जीतू	16. क) चौधरियों
17. ब) हरदेव	18. क) हरदेव
19. अ) डॉ. बिशनदास	20. ब) अस्सी

ब) निम्नांकित विकल्पों में से चुनकर उचित मिलान कीजिए।

1)	1. माखा का बेटा	ज) काली
	2. चौधरी हरनाम सिंह का भतीजा	घ) हरदेव
	3. काली की चाची	ख) प्रतापी
	4. न्यायप्रिय पहलवान	छ) लालू
	5. काली की प्रेमिका	क) ज्ञानो

6. निक्कू की बेटी — झ) लच्छो

7. सिक्ख धर्म का स्वीकार करनेवाला — ग) नंदसिंह

8. घोड़ेवाहा का पण्डित — च) सन्तराम

2) 1. छज्जू शाह से काली के चाचा का लिया कर्जा — ख) सौ रुपये

2. काली से छज्जू शाह द्वारा लिया गया ब्याज — ग) सोलह रुपये

3. काली को मनिऑर्डर द्वारा मिले रुपये — क) अस्सी रुपये

क) निम्नांकित वाक्यों का सही या गलत में चुनाव कीजिए।

1. गलत	2. सही	3. सही	4. गलत	5. सही
6. गलत	7. सही	8. गलत		

1.7 सारांश :-

1. जगदीश चंद्र एक प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व के धनी थे। वे एक सशक्त, निर्भिक एवं साहसी साहित्यकार रहे हैं। साहित्य की अन्य विधाओं में से सबसे अधिक उपन्यास विधा में उन्होंने लेखन-कार्य किया है। उनके साहित्य में समाज में व्याप्त जातीय बंधन, आर्थिक शोषण, छुआछूत, राजनीतिक वैषम्य, नारी के प्रति की हीन भावना के प्रति आक्रोश दिखाई देता है। उनके दस उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। उसमें से 'जमीन अपनी तो थी' इस उपन्यास का प्रकाशन उनके मरणोपरान्त हुआ है। उन्होंने अपने जीवन की अनुभूतियों के आधार पर उपन्यास के कथ्य का सृजन किया है। जगदीश चन्द्र का 'धरती धन न अपना' उपन्यास, लेखन में पहला और प्रकाशन में दूसरा उपन्यास है। इसका लेखन जगदीश चन्द्र ने मई, १९५५ में शुरु किया था। परंतु आठ अध्याय के बाद लेखन कार्य बीच में ही छोड़ दिया और 'यादों के पहाड़' यह उनका उपन्यास १९६६ ई. में प्रकाशित हुआ। उन्होंने फिर से 'धरती धन न अपना' का लेखन-कार्य शुरु किया, जो १९७२ ई. में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास से ही हिंदी साहित्य में उनकी एक उपन्यासकार के रुप में अलग पहचान बन गई।

2. 'धरती धन न अपना' उपन्यास को हिंदी का बेहद चर्चित उपन्यास माना जाता है। इसमें उपन्यासकार ने आँचलिकता में प्रगतिवादी चेतना को तलाशने का प्रयास किया है। साथ ही अपने साहित्य में दलित चेतना को प्रगतिवादी भाव-धारा की दृष्टि से चित्रांकित किया है। जगदीश चन्द्र के उपन्यास-त्रयी का प्रथम उपन्यास 'धरती धन न अपना' है। इसकी दूसरी कड़ी 'नरककुण्ड में बास' यह उपन्यास है तो अंतिम तीसरी कड़ी 'जमीन अपनी तो थी' यह उपन्यास है।

3. 'धरती धन न अपना' यह एक सफल एवं उत्कृष्ट रचना है। इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने दलित जीवन की पीड़ा एवं उत्पीड़न का यथार्थ चित्रण किया है। प्रस्तुत उपन्यास के जरिए तत्कालिन दलितों के सामाजिक, आर्थिक जीवन तथा उनके पारिवारिक जीवन के साथ-साथ उनके जीवन की समस्याओं का जगदीश चन्द्र ने बारीकी से चित्रण किया है।

4. ‘धरती धन न अपना’ उपन्यास की कथावस्तु का मूल कथ्य चौधरियों और चमादड़ी में रहनेवाले दलित चमारों के संघर्ष का है। इसके कथ्य को दलित चरित्र काली और ज्ञानो दो पात्रों पर केंद्रित किया है। काली जो छह साल बाद चाची के मोह से कानपुर से गाँव लौटा है। काली ने कानपुर में मजदूरी करके कुछ पैसे जोड़े हैं, जिससे वह चमादड़ी में पहला पक्का मकान बनवाने की योजना बनाता है। उसके सामने चौधरी एवं अन्य सवर्णिय अनेक रोड़े ड़ालते हैं। उसे पता चलता है कि चमादड़ी के चमारों के घर जिस जमीन पर खड़े हैं, वह जमीन उन्हें शामलात में मौरुसी के लिए मिली है। दलित चमार जिस घर को अपना मान रहे हैं, उसपर उनका कोई हक ही नहीं है। वह गाँव की साँझी जमीन है। गाँव के जमीन के मालिक तो चौधरी हैं। काली सवर्णो के सामने अपना आत्म-सम्मान कायम रखता है, जो चौधरियों को नागवार गुजरती है।

5. चो में पानी भरने से बाढ़ आनेपर गाँव को बचाने के लिए सभी एक होते हैं। चौधरियों के खेतों के बाँध तुड़वाकर चो के पानी को मोड़ दिया जाता है, जिससे गाँव बचता है। दलितों के द्वारा ही चौधरी अपने खेतों के बाँध बँधवाने लगते हैं, लेकिन उन्हें इसकी दिहाड़ी नहीं दी जाती। इससे चौधरी और दलित (चमार) में संघर्ष शुरु होता है। इस संघर्ष में दलित टिक नहीं पाते, चौधरियों के सामने उन्हें झुकना ही पड़ता है। फिर उनकी आधे दिहाड़ी पर काम करने की शर्त को माना जाता हैं। यहाँ सवर्ण दलितों पर अपना अधिकार जमाते दिखाई देते हैं। दलित अपनी आर्थिक कमजोरी के कारण उनके सामने झुकते रहते हैं।

6. दलित स्त्रियाँ सवर्णो के यहाँ अर्थार्जन के लिए मजदूरी करती हैं, जहाँ उनका यौन-शोषण होता है। लेकिन अपनी आर्थिक और पारिवारिक स्थिति को देखकर वह सहन करती रहती हैं। नारी-शोषण के साथ छुआछूत को भी यहाँ वर्णित किया गया है। छुआछूत के कारण पानी के लिए तरसते हुए चमादड़ी के लोगों को अंत में बरसात के पानी पर निर्भरित होने के लिए मजबूर किया जाता है। जगदीश चन्द्र ने धर्म-परिवर्तन का भी चित्रण किया है, दलितों द्वारा किया धर्म-परिवर्तन सिर्फ नाम के लिए दिखाई देता है, उन्हें उस धर्म का अधिकार या सम्मान प्राप्त नहीं होता, बल्कि उन्हें अपमानित किया जाता है।

8. काली और ज्ञानो के प्रेम-संबंध के त्रासद अंत को चित्रित करते हुए दलितों के बीच में आपसी सामंजस्य, एकता की कमी को उपन्यास में दिखाया गया है। उनमें एक-दूसरे के प्रति जो द्वेष की भावना है उसका सटीक उदाहरण देखने को मिलता है। दलितों को गलती न होने पर भी सवर्णो से गालियाँ और मार के साथ-साथ अपमान ही मिलता है। दलित हर एक चीज के लिए सवर्णो पर निर्भरित दिखाई देते हैं। चौधरी-चमार संघर्ष के समय भी कुछ दलित चौधरियों से मिलते हैं और धर्म के ठेकेदार उन्हें धर्म-परिवर्तन का सुझाव देते दिखाई पड़ते हैं।

9. ‘धरती धन न अपना’ यह एक दलित वर्ग पर आधारित उपन्यास है, इसमें दलित चेतना को जगाने का प्रयास किया है। प्रस्तुत उपन्यास को उनचास अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रारंभ में काली का गाँव वापस आना, चौधरी-चमार संघर्ष, काली और ज्ञानो का प्रेम-संबंध और प्रेम-संबंध के कारण ज्ञानो की दर्दनाक मृत्यु, अंत में काली का फिर से गाँव छोड़कर भाग जाना आदि से संबंधित इसका कथानक रहा है। इसमें दलित जीवन को, उनके घर से मोहल्ले तक के चित्र को बारीकी से वर्णित किया गया है।

1.8 स्वाध्याय :-

अ) लघुत्तरी प्रश्न –

1. 'धरती धन न अपना' उपन्यास की ज्ञानो की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश ड़ालिए।
2. 'काली' का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3. काली और ज्ञानो के प्रेम-संबंध की त्रासदी को विशद कीजिए।
4. 'धरती धन न अपना' में चित्रित सांप्रदायिक विषमता की समस्या को विशद कीजिए।
5. 'धरती धन न अपना' उपन्यास के दलित पात्रों का चित्रण कीजिए।
6. चौधरी-चमार संघर्ष को विशद कीजिए।

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न –

1. जगदीश चंद्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्पष्ट कीजिए।
2. जगदीश चंद्र के साहित्य-सृजन पर प्रकाश डालिए।
3. 'धरती धन न अपना' उपन्यास के नायक काली की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश ड़ालिए।
4. 'धरती धन न अपना' उपन्यास की कथावस्तु का सारांश लिखिए।
5. 'ज्ञानो' की त्रासदी को रेखांकित करते हुए उसका चरित्र-चित्रण कीजिए।
6. 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित समस्याओं को विशद कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य-

1. जगदीश चन्द्र के अन्य उपन्यासों को पढ़िए।
2. जगदीश चन्द्र के समकालीन अन्य उपन्यासकारों के उपन्यासों से प्रस्तुत उपन्यास की तुलना कीजिए।
3. समकालीन मराठी उपन्यासों की 'धरती धन न अपना' उपन्यास से तुलना कीजिए।
4. 'धरती धन न अपना' उपन्यास के कुछ अंश का मराठी में अनुवाद कीजिए।
5. आपके गाँव में या इर्द-गिर्द स्थित दलित वर्ग या दलित व्यक्ति को लेकर लघु उपन्यास को साकार करने का प्रयास कीजिए और साथ ही उसकी विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

1. सिन्हा, सुरेश, हिंदी उपन्यास : उद्भव और विकास. अशोक प्रकाशन, नई सडक, दिल्ली 6 ।
2. डॉ. मिश्र, रामदरश, (2016). हिंदी उपन्यास: एक अंतर्यात्रा. राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि. दरियागंज, नई दिल्ली-110002 ।
3. डॉ. सक्सेना, द्वारिका, हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार ।
4. डॉ. बांदिवडेकर, चंद्रकान्त, उपन्यास : स्थिति और गति ।
5. गोदन - प्रेमचंद
6. फांस - संजीव

❑❑❑

इकाई–2
काला पत्थर (नाटक) – डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र'

अनुक्रम

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

- 2.3.1 डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- 2.3.2 'काला पत्थर' नाटक का परिचय
- 2.3.3 'काला पत्थर' का कथानक
- 2.3.4 'काला पत्थर' के प्रमुख पात्र
- 2.3.5 'काला पत्थर' में चित्रित ग्रामीण जीवन की समस्याएँ
- 2.3.6 'काला पत्थर' में संवाद-योजना
- 2.3.7 'काला पत्थर' का कलापक्ष : रंगमंचीयता और अभिनेयता
- 2.3.8 'काला पत्थर' का उद्देश्य

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्‌देश्य :

विवेच्य इकाई को पढने के बाद आप -

1) डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।

2) 'काला पत्थर' इस नाटक की कथावस्तु की जानकारी मिलेगी।

3) 'काला पत्थर' नाटक के पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं की जानकारी मिलेगी।

4) 'काला पत्थर' नाटक में चित्रित ग्रामीण समस्याओं की जानकारी मिलेगी।

5) 'काला पत्थर' नाटक के कलापक्ष से परिचित होंगे।

6) 'काला पत्थर' नाटक के उद्‌देश्य से परिचित होंगे।

2.2 प्रस्तावना :

हिंदी नाटकों के उद्‌भव एवं विकास में भारतेंदु एवं उनके समकालीन नाटककारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। नाटकों को जनजागरण के साथ रंगमंच से जोड़ने का सर्वप्रथम कार्य भारतेन्दुयुगीन नाटककारों ने ही किया। हिंदी के प्रारंभिक नाटकों में भारतेंदु जी ने देश की सामाजिक समस्याओं को उजागार किया तो जयशंकर प्रसाद जी ने राष्ट्रप्रेम की जाज्वल भावना निर्माण की। देश की आजादी के बाद सामाजिक विकृतियों ने सुराज्य के सपने का मोहभंग किया। मानवीय मूल्यों में आई गिरावट एवं समाजिक विसंगतियों का व्यापक प्रभाव रंगमंच पर पड़ा। जगदीश चंद्र माथुर, मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल ने हिंदी नाट्य-लेखन और रंगमंच को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। समकालीन प्रयोगशील नाटकों एवं उनके व्यापक सामाजिक प्रभाव की दृष्टि से डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' जी का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है। समकालीन युग के बदलते परिवेश एवं मानवी जीवन का यथार्थ अंकन डॉ. शुक्ल के नाटकों में दृष्टिगत होता है। उन्होंने करीब 22 नाटक लिखकर हिंदी के समकालीन नाट्य-साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इस इकाई में हम उनके बहुचर्चित नाटक 'काला पत्थर' का अध्ययन करने वाले हैं।

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का जीवन परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व:

हिंदी नाट्य-साहित्य में एक प्रयोगशील नाटककार के रूप में डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का नाम शीर्षस्थ है। उन्होंने मानवी जीवन की विकृतियों एवं विसंगतियों को नाटकों के द्वारा रंगमंच पर जीवंत किया। मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ आदि राज्यों में उनके नाटकों के मंचन ने उन्हें हिंदी नाट्य-साहित्य जगत में 'प्रयोगशील नाटककार' के नाम से मशहूर किया था। अत: उनके जीवन एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय देखना जरूरी है।

※ जन्म, परिवार एवं बचपन :

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' जी का जन्म 8 फरवरी, 1936 ई. को उत्तर प्रदेश में स्थित उन्नाव जिले के राजपुर गढ़ेवा गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम यज्ञदत्त और माता का नाम जगसेना देवी था। सुरेश जी ढाई वर्ष के थे, तब इनके पिता और उसके चार महीने के बाद माताजी का देहावसान हो गया। बचपन में इनकी परवरीश दादाजी श्री. गोविंद प्रसाद शुक्ल जी ने की। इनका बचपन एक संयुक्त और अभावग्रस्त परिवार में बिता। उन्होंने बचपन से गरीबी को बहुत करीब से देखा था। उनके पिता यज्ञदत्त जी कानपुर में घूम-घूमकर आंगोछा बेचने का काम करते थे। भीषण गर्मी में लू लगने से उनका देहांत हुआ और इस सदमे से चार महीने के अंतराल में माताजी जगसेना देवी का भी निधन हुआ। सुरेश जी का पैतृक घर और निहाल दोनों ओर गरीबी होने के कारण उन्हें बचपन में बहुत-सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। लेकिन उनके दादाजी और दोनों चाचाओं ने बड़े ही स्नेह से इनका लालन-पालन किया। 'चन्द्र' का विवाह 1955 ई. में दुबेपुर (उन्नाव जिला) निवासी श्री गंगा विष्णु त्रिवेदी की पुत्री शीलवती के साथ हुआ। इनके तीन पुत्र हैं। चन्द्र जी की उन्नति में उनकी पत्नी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

※ शिक्षा-दीक्षा :

सुरेश शुक्ल जी की प्रारंभिक शिक्षा उनके दादाजी के अत्यधिक स्नेह के कारण देर से शुरू हुई। प्रारंभिक काल में उनके दादाजी जिन्हें वे 'बाबा' कहकर पुकारते थे, वे घर पर ही बालक सुरेश को थोड़ा-बहुत पढाते थे। लेकिन करीबी रिश्तेदार की सलाह पर उन्हें मगरायट गाँव के प्राथमिक पाठशाला में दाखिल किया गया। यहाँ उन्होंने कक्षा पाँचवीं तक पढाई की और उनके गाँव में ही कक्षा छठी शुरू होने के कारण अपने दादाजी के पास वापस आए। इसके बाद वे मुंबई में अपने फूफाजी के पास अगली पढाई के लिए गए। चाचा कृष्णकुमार शुक्ल की वित्तीय सहायता, चाची सुंदरी देवी के पुत्रवत स्नेह के कारण उन्होंने इंटरमीडिएट तक की शिक्षा प्राप्त की। सुशील जी को आगे की पढाई के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ा। पढाई के दौरान ही इनकी शादी होने के कारण पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वाहन के लिए इन्हें काम भी करना पड़ा। इन्होंने नौकरी करते हुए डी.ए.बी. कॉलेज कानपुर में पढ़ाई की। समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र और हिंदी विषय लेकर उन्होंने बड़ी मेहनत से बी.ए. उत्तीर्ण किया। उसके बाद निरंतर नौकरी करते हुए उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से हिंदी विषय में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। कालांतर में उन्होंने साथ में पी-एच.डी. की उपाधि के लिए सागर विश्वविद्यालय से आचार्य नंददुलारे बाजपेयी के निर्देशन में 'प्रतापनारायण मिश्र : जीवन और साहित्य' इस विषय में पीएच्.डी. उपाधि के लिए शोध-कार्य किया और उनके नाम के साथ डॉक्टर की उपाधि जुड़ गई।

※ आजीविका :

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का जीवन संघर्षों से भरा हुआ था। किशोर अवस्था में ही उन्हें नौकरी करके अपनी पढाई पूरी करनी पड़ी थी। पढाई के दौरान ही इनकी शादी होने कारण पढाई और पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वाहन के लिए उन्हें कानपुर में स्थित उद्योग विभाग में पाँच वर्षों (1956 ई. से 1961

ई.) तक नौकरी करनी पड़ी। इसके बाद उन्होंने बाबू (क्लर्क) की नौकरी की, जिसमें उन्हें प्रतिमाह 85 रुपए का वेतन मिलता था एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्हें सन 1961 में एल.पी.टी.एस. डिग्री कॉलेज, ढाना (सागर) में हिंदी के प्रवक्ता के रूप में नौकरी मिली। सन् 1963 में सी.एम.डी. कॉलेज, बिलासपुर के हिंदी विभाग में व्याख्याता के पद पर इनकी नियुक्ति हुई। इसी महाविद्यालय में उन्होंने कई शोध-कार्य किए, जिन्हें हिंदी की प्रतिष्ठित संस्थानों से पुरस्कृत किया गया। इनके निर्देशन में कई शोध-विद्यार्थियों ने अपना शोध-कार्य पूरा किया। नौकरी के दौरान और अवकाश के बाद वे निरंतर हिंदी साहित्य लेखन से जुड़े रहे।

✻ व्यक्तित्व :

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का व्यक्तित्व बहुआयामी एवं संपन्न था। उनके व्यक्तित्व के सृजनात्मक पक्ष को देखे तो उन्होंने न केवल नाटक बल्कि उपन्यास, कविता, समीक्षा, निबंध, एकांकी आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी प्रतिभा की झलक दिखाई थी। यह उनका बहुआयामी सृजनात्मक व्यक्तित्व था। वे बहुत विनम्र, शालीन, मृदुभाषी एवं संवेदनशील थे। अपने साहित्य सृजन के प्रारंभिक काल में उन्होंने अपने भोगे हुए जीवन को वाणी दी थी, लेकिन यह सजगता बाद में समाज की संवेदना के साथ जुड़ गई। समाज के दु:खों को उन्होंने संवेदना के साथ आत्मसात किया और उन्हें न्याय दिलाने के लिए नाटकों द्वारा प्रबोधन किया। इनकी विचारधारा पर समाजवाद का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगत होता है। समाज के दु:ख के बाद उन्होंने अपना मोर्चा समाज में व्याप्त शोषण एवं भ्रष्टाचार के खिलाफ खोल दिया। वे रूढीवादी परंपरा एवं अंधविश्वास के सख्त विरोधी थे। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से अंधविश्वास के विरोध में आवाज उठाई और मानवीय मूल्यों की हमेशा वकालत की। अपने नाटकों में मानवीय मूल्यों के विघटन के प्रति हमेशा चिंता व्यक्त की है। इसलिए वे हमेशा मानवतावादी विचारों के प्रबल समर्थक रहे हैं।

डॉ. सुशील शुक्ल 'चन्द्र' के बाह्य व्यक्तित्व को देखने पर यह ज्ञात होता है कि इनके व्यक्तित्व में लेखक के साथ आदर्श प्राध्यापक, कुशल और श्रेष्ठ निर्देशक, नाटककार एवं अच्छे संपादक और एक कुशल वक्ता का भी परिचय मिलता है। डॉ. शुक्ल जी अनुशासनप्रिय व्यक्ति है और अपने काम भी अनुशासन से करते हैं। वे वक्त के बड़े पाबंद हैं। वे अपने अध्यापकीय जीवन में एक विद्यार्थी प्रिय प्राध्यापक रहे हैं। स्नातकोत्तर छात्रों को पढ़ाना, पीएच्.डी. के शोध-छात्रों को मार्गदर्शन करना, उनके साथ दिल खोलकर गप्पे हाँकना, साथ-ही सृजनात्मक कार्यों को करते जाना, इन सबके बीच सामंजस्य बैठाना आदि में उनके व्यक्तित्व की कुशलता दिखाई देती है। उन्होंने साहित्य की सेवा रुपए कमाने के लिए नहीं की बल्कि वे इसके जरिए समाज का प्रबोधन करना चाहते थे। साहित्य-सेवा के लिए भी उन्हें बहुत संघर्ष करना पड़ा। प्रकाशकों के तानों के बावजूद भी वे अपने साहित्य-सेवा के कार्य में जुटे रहे। इससे उनके जुझारू व्यक्तित्व की झलक दिखाई देती है। कुल मिलाकर कहे तो इनके साहित्य में नैतिकता, ईमानदारी, रूढी एवं अंधविश्वास का विरोध, मानवतावादी मूल्यों की पैरवी, लोकतंत्र पर विश्वास, सर्वहरा वर्ग के प्रति गहरी संवेदना, राजनीतिक क्षेत्र की विकृतियों पर व्यंग्य, सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार, नाट्य साहित्य में रंगमंच

और विषयों को लेकर प्रयोगशीलता, दृढ संकल्प, आत्मविश्वास का बुलंद स्वर आदि गुण दृष्टिगत होते हैं, जो उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की पहचान हैं।

✻ **पुरस्कार :**

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' जी को उनके बहुमोल साहित्य-सेवा के लिए विविध प्रतिष्ठित संस्थाओं के पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इसमें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 1968 को 'साहात्य सेवा' पुरस्कार दिया गया है। सन 1998 में उत्कल युवा सांस्कृतिक संघ, कटक (उडिसा) द्वारा नाट्य-सेवा के लिए 'नाट्य भूषण' की उपाधि से विभूषित किया है। सन 2000 में 'राष्ट्रीय हिंदी सेवा सहस्त्राब्दी' सम्मान और 2008 ई. को मध्य प्रदेश के साहित्य अकादमी का 'हरिकृष्ण प्रेमी' पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इनके निर्देशन में 40 छात्रों ने पीएच्.डी. की उपाधि हासिल की है।

✻ **मृत्यु :**

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का 16 दिसंबर, 2021 को भोपाल (मध्य प्रदेश) में स्थित निवासस्थान में लंबी बीमारी के चलते निधन हुआ। निधन के समय उनकी आयु 85 वर्ष थी।

✻ **डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का रचना संसार :**

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' हिंदी साहित्य जगत में एक प्रयोगशील नाटककार के रूप में पहचाने जाते थे। लेकिन साहित्य सृजन की दृष्टि से वे बहुआयामी थे। उन्होंने नाटकों के साथ ही उपन्यास, कहानी, कविता, समीक्षा, एकांकी आदि विधाओं में भी अपनी कलम चलाई है। उनके रचना संसार का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

✻ **नाटक :** डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' जी ने 1955 ई. से नाटक लिखना प्रारंभ किया। उन्होंने नारायण प्रसाद 'बेताब' और राधेश्याम कथा-वाचक जी के नाटकों से प्रभावित होकर 'जीवन-चक्र' (1955 ई.) का लेखन किया। उन्होंने अपने जीवन काल में करीब 22 नाटक लिखे, जो इस प्रकार हैं- 1. भूमि की ओर (1976 ई.), 2. आकाश झुक गया (1977), 3. बदलते रूप (तीन पारिवारिक नाटक, 1978 ई.), 4. कुत्ते (1979 ई.), 5. भस्मासुर अभी ज़िंदा है (1980 ई.), 6. समवेत (दो ऐतिहासिक नाटक, 1981 ई.), 7. अक्षयवट (1983 ई.), 8. लड़ाई जारी है (1985 ई.), 9. बात एक हर्ष की (1999 ई.), 10. अर्द्धनारीश्वर (),11. चार अंतरंग (), 12. वतन के ती सिपाही (), 13. कैकेयी ने कहा (),14. दो सामयिक रंग नाटक (), 15. काला पत्थर (2014 ई.) आदि।

✻ **एकांकी-संग्रह :**

डॉ. शुक्ल द्वारा लिखे एकांकी-संग्रह इस प्रकार हैं- 1. प्रत्यावर्तन (दस एकांकी, 1966 ई.), 2. स्वप्न का सत्य (दस एकांकी, 1974 ई.), 3. टूटते हुए (दस एकांकी, 1977 ई.), 4. मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी (पूर्व प्रकाशित बारह एकांकी और दो नए एकांकी, 1994 ई.) आदि।

* **कविता :**

डॉ. शुक्ल जी ने कुछ कविता और खंड-काव्य भी लिखे हैं- 1. द्रोणाचार्य के मुखौटे (56 कविताओं का संग्रह, 1999 ई.), 2. अर्द्धनारीश्वर (काव्य-नाटक), 3. पन्ना (खण्ड-काव्य) 4.नसिकेत (खण्ड-काव्य) और 5. इक्कीसवीं सदी का सूर्य-बिम्ब (काव्य-संग्रह) आदि।

* **उपन्यास :**

डॉ. शुक्ल जी ने अपने जीवन में 'बिन पंख की सारिका' (1972 ई.) नाम का एकमात्र उपन्यास लिखा है।

* **आत्मकथ्य :**

डॉ. शुक्ल जी ने 'कलम साक्षी है' शीर्षक से आत्मकथ्य लिखा है।

* **बाल-साहित्य :**

डॉ. शुक्ल जी ने बाल-साहित्य में भी अपनी कलम चलाई। उन्होंने कहानी और एकांकी इस विधा में बाल-साहित्य का सृजन किया। वह इस प्रकार है-1. नागदेवता की अँगूठी (लोक-कथाएँ, 1981 ई.), 2. गुरुदक्षिणा (बाल एकांकी, 1984 ई.), 3. नींद का चक्कर (बाल एकांकी, 1985 ई.) आदि।

* **शोध-प्रबंध :**

डॉ. शुक्ल जी ने 'प्रताप नारायण मिश्र : जीवन और साहित्य' इस विषय पर अपना पीएच्.डी. का शोध-कार्य किया था, जिसे समीक्षा- ग्रंथ के रूप में प्रकाशित किया है।

* **समीक्षा :**

डॉ. शुक्ल जी ने हिंदी साहित्य के नाटक, कविता आदि साहित्य विधाओं के इतिहास, सृजनात्मक पद्धतियाँ एवं शिल्प को लेकर समीक्षात्मक लेखन भी किया है। उनके समीक्षात्मक ग्रंथ इस प्रकार हैं- 1. नाट्य-चिंतन : नए संदर्भ (1987 ई.), 2. काव्य-चिंतन : विविध संदर्भ (1989 ई.), 3. सर्जना के तेवर (1989 ई.), 4. पं. प्रतापनारायण मिश्र : जीवन और साहित्य (1984 ई.), 5. हिंदी नाटक और नाटककार (1977 ई.), 6. कहानी कला : सिद्धांत और व्यवहार (1974 ई.) आदि।

2.3.2 'काला पत्थर' नाटक का परिचय :

डॉ. सुरेश शुक्ल लिखित 'काला पत्थर' यह लघु नाटक 2014 ई. को अमन प्रकाशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित हुआ है। नाटककार ने दैनिक भास्कर भोपाल के 'मैनेजमेंट फंडा' स्तंभ में प्रकाशित एक लोककथा से प्रभावित होकर 'काला पत्थर' नाटक लिखने की प्रेरणा ग्रहण की थी। यह नाटक अप्रैल 2012 ई. में लिखकर पूरा हुआ था लेकिन किसी कारणवश वह प्रकाशित नहीं हो पाया। बाद में डॉ. शुक्ल ने समसामयिकता के अनुसार इसमें संशोधन करके 2014 ई. में इसे प्रकाशित किया। विवेच्य नाटक पूर्ण रूप

से ग्रामीण परिवेश की समस्याओं को केंद्र में रखकर लिखा गया है। इसमें सूदखोर महाजनों द्वारा किसानों का शोषण और उसके खिलाफ गाँव के कुछ नव-जवान युवकों के विद्रोह को चित्रित किया गया है। अत: 'काला पत्थर' नाटक की नाटक के तत्त्वों के आधार पर विवेचन इस प्रकार है-

2.3.3 'काला पत्थर' नाटक का कथानक:

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' लिखित 'काला पत्थर' यह नाटक पूर्ण रूप से ग्रामीण परिवेश से जुड़ा है। नाटक मूल रूप में चार अंकों और दस दृश्यों का है, लेकिन नाटककार ने इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं किया है। उन्होंने केवल इसे दृश्य परिवर्तन कहकर संकेत दिए हैं। हम यहाँ कथानक समझने की सुविधा के लिए उसे अंकों में विभाजित करते हैं-

पहला अंक : नाटक के पहले अंक में गरीबपुर गाँव के किसान संतोषी के घर में उसकी पत्नी का देहांत हो चुका है। इसके बाद नट और नटी के 'कथा सुनो भाई कथा सुनो, सच्ची सीधी कथा सुनो' का ऐलान करके नाटक की शुरुआत करते हैं। पहले दृश्य में कल्लू सेठ के घर का परिवेश साकार होता है। किसान संतोषी ने अपनी बेटी पुनिया की शादी के लिए महाजन कल्लू सेठ से पाँच हजार खेत गिरवी रखकर लिये थे। लेकिन अकाल के कारण वह अभी तक उसके रूपए लौटा नहीं सका था। बेटी का पति भी शराबी और निकम्मा निकलने के कारण उसकी बेटी भी अब छह माह से ससुराल छोड़कर उसके पास ही रहने आई है। इसी बीच उसकी पत्नी बहुत बीमार होने के कारण उसके इलाज के लिए संतोषी फिर से कल्लू सेठ के पास रुपए माँगने आता है। लेकिन कल्लू सेठ बिना कुछ गिरवी रखे उसे पैसे देने के लिए तैयार नहीं होता। संतोषी का बाल-बाल कर्ज में डूब गया है। वह गिरवी खेत के खाते में और एक हजार रुपए का कर्जा डालने को कहता है तब धूर्त और शोषक महाजन कल्लू सेठ कहता है- ''जमीन पर वैसे ही मूल्य से ज्यादा पैसा चढ गया है। ऊसर की जमीन कौन खरीदेगा?'' (पृ.11) संतोषी की जमीन को बंझर और कर्ज में फँसी जमीन बताकर वह उसे एक हज़ार रुपए नहीं देता और वहाँ से भगा देता है। संतोषी के पत्नी को डॉक्टरी इलाज की जरूरत थी और इलाज के लिए पैसों की जरूरत थी। लेकिन कल्लू सेठ रूपए नहीं देता और इलाज के अभाव में संतोषी के पत्नी की मृत्यु होती है।

दूसरे दृश्य में कल्लू सेठ और उसकी पत्नी विमला का संवाद आता है। किसान संतोषी की पत्नी के इलाज के लिए रुपए न देने के कारण उसे अपने पति पर गुस्सा आता है। वह पति को पूछती है कि दूसरों को लूटकर इतना धन कमाकर क्या करोगे? कल्लू सेठ को छह पुत्रियाँ थी और साठ की उम्र में अभी उसे पुत्र प्राप्ति का मोह था। उसने अपनी चार लड़कियों का विवाह संपत्ति के लालच में उनसे दुगनी उम्र के लड़कों से किया था। इसके कारण तीन बेटियाँ विधवा हो चुकी थी और अपने पिताजी को बददुआएँ देती रहती हैं। एक लड़की ने ससुराल की यातनाओं से तंग आकर खुदकुशी की थी, तो उसकी एक लड़की किसी लड़के के साथ भाग गई थी। एक लड़की घर पर कुँवारी थी। दहेज न देना पड़े इसलिए लालच में कल्लू सेठ ने सभी लड़कियों की जिंदगियाँ बर्बाद करने का आरोप उसकी पत्नी विमला उसपर लगाती है। कल्लू सेठ डायबिटीज का मरीज है। एक बार डाकू ने उसके घर पर डकैती डाली और बहुत सारी संपत्ति लूटकर ले गए। इस

डकैती के दौरान उसकी आँख भी फूट गई थी। पत्नी विमला इसे पाप-कर्मों का फल बताने पर कल्लू सेठ गुस्सा करते हैं और उसे अंदर जाने को कहते हैं।

तिसरे दृश्य में गरीबपुर गाँव के सरपंच जी का प्रवेश होता है। सरपंच जी कल्लू सेठ के पास किसी काम के लिए 10 हजार रुपए का कर्ज लेने आए थे। तब कल्लू सेठ तुरंत अपनी पेटी से रुपए निकालकर सरपंच जी को देता है। कल्लू सेठ राजनीति और प्रशासन के सभी लोगों से अच्छा रिश्ता रखता है, क्योंकि उसके काले कारनामे सामने न आए। सरपंच जी जब उसे कोई काम हो तो बता देना कहते हैं तब कल्लू सेठ पुत्र प्राप्ति के लिए दूसरा विवाह करने की इच्छा जताते हैं। सरपंच को एखाद युवा लड़की तलाशने के लिए कहते हैं। वे इसके लिए जितना भी खर्चा आए करने को तैयार होने की बात कहते हैं। तब सरपंच उसे संतोषी किसान की बेटी पुनिया का रिश्ता सुझाता है। लेकिन जात पंचायत के पास पुनिया के तलाश का मामला चल रहा था। उसका पति दुरजन उसे छोड़ने को तैयार नहीं था। तब सरपंच कहता है- ''पच्चीस हजार रुपये और पूरी जमात को भोज देना होगा, जिससे फिर कोई मुँह न खोल सके। विवाह कराने की मेरी गारंटी।'' (पृ.16) अर्थात् सरपंच जाति पंचायत के पंचों को रिश्वत खिलाकर पुनिया को तलाक दिलायेगा और कल्लू सेठ से रुपए लेकर उससे पुनिया की शादी करने का प्लान बनाता है। सरपंच कल्लू सेठ को संतोषी किसान को उधार रुपए देने की बात कहता है, जिससे पुनिया से शादी करने संतोषी की रजामंदी मिल जाए। यहाँ पर प्रथम अंक समाप्त होता है।

दूसरा अंक : नाटक के दूसरे अंक में फिर से नट और नटी गाना गाते हुए आते हैं, 'कथा सुनो भाई कथा सुनो, सच्ची सीधी कथा सुनो' कहकर संतोषी किसान और उसके परिवार की कथा सुनाते हैं। दूसरे अंक के प्रथम दृश्य में प्रभात आर पुनिया का संवाद है। प्रभात उसकी गाँव का एक युवक था, जो पुनिया से प्रेम करता था। लेकिन वह उनके बिरादरी का न होने के कारण उसकी माँ और पिता उनकी शादी बिरादरी और जाति पंचायत के डर से नहीं कर सके। प्रभात की माँ का देहांत हुआ था और पिता के देहांत के बाद उसकी सौतली माँ और भाईयों से तंग आकर वह गाँव छोड़कर शहर चला गया था। अब बहुत दिनों के बाद वह गाँव वापस आता है, तब उसे पुनिया के जीवन की दुःखद कहानी समझती है। पुनिया बताती है कि उसकी माँ को लकवा मारने के कारण वह छह महीने तक बिस्तर पर पड़ी रही और इलाज के अभाव में उसकी मौत हुई। प्रभात उसके वैवाहिक जीवन की दुर्दशा देखकर कहता है कि, ''मैंने तुमको बहुत समझाया था। मैं केवल दो वर्ष के लिए गौना टालने को कह रहा था। उस समय तुम्हारी उम्र ही क्या थी? केवल पंद्रह साल ही न। इतनी जल्दी क्या थी?'' (पृ.18) लेकिन माता-पिता और जात पंचायत के आगे मजबूर होने की बात पुनिया बताती है। पति दुरजन द्वारा शराब पीकर पीटना, उसके जेवर और बर्तन बेचकर शराब पीना, बेचने के लिए कुछ न रहा तो रुपयों के लिए अपने दोस्तों के पास भेजना, वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर करने पर वहाँ से भागकर माँ-बापू के पास आने की दास्तान पुनिया प्रभात को सुनाती है। जात पंचायत के पास उस राक्षस पति से तलाक के लिए अर्जी करने की बात कहती है। तब प्रभात उससे शादी करने और पिताजी के साथ शहर में बसने की इच्छा व्यक्त करता है। लेकिन पुनिया जाति पंचायत के डर और उनके अंतर जातीय विवाह बिरादरी द्वारा नामंजूर करने के भय से इंकार करती है। वह अब आजीवन प्रभात के प्यार को

दिल में रखकर मेहनत-मजदूरी करके पिताजी की सेवा करने का संकल्प व्यक्त करती है। प्रभात उसे मेहनत-मजदूरी न करने को कहता है और उसका खर्चा हर महीने भेजने की बात कहकर चला जाता है। पुनिया प्रभात को जाता हुआ देख उसके विचारों में खोई रहती है।

दूसरे दृश्य में पिता संतोषी का प्रवेश होता है। विचारों में खोई पुनिया को वे आवाज देते हैं। अपनी बेटी के दु:ख को देखकर वह खुद को मजबूर बताते हुए कहते हैं- ''मैं तुम्हारा दु:ख समझ रहा हूँ। पंचायत वाले भी सब भ्रष्ट हैं। थोड़े से पैसे और शराब की एक बोतल में बिक जाते हैं। मैं क्या करूँ? मेरे पास तो उनको शराब पिलाने के लिए पैसा ही नहीं है। मैं तो अब पूरी तरह टूट गया हूँ बेटी।'' (पृ.20) पुनिया अपने हतबल और टूटे हुए पिताजी को धीरज देती है। उनके सिवाय उसका दुनिया में कोई नहीं होने की बात कहकर खुद को सँभालने को कहती है। इतने में कल्लू सेठ का प्रवेश होता है। कल्लू सेठ पुनिया से शादी करने के इरादे से संतोषी को मनाने के लिए अपना पैंतरा चलाता है। वह संतोषी को डराता है कि खेती पर कर्जा लेकर पाँच वर्ष हुए और इस दौरान कर्जदार पैसों का भुगतान नहीं करता तो उसकी जायदाद मेरी हो जाती है। उसे बेचने का अधिकार मेरा है। इस पर संतोषी उसके सामने गिड़गिडाता है। खेत में अच्छी फसल आने के बाद कर्जा चुकाने की बात करता है। किसान संतोषी को चारों ओर से घेर कर कल्लू सेठ अपना जाल फेंकते हुए कहता है- ''भगवान रूठा नहीं है। तुम चाहो तो मैं कर्ज माफ कर सकता हूँ। तुम अपनी बेटी का विवाह मुझ से कर दो।'' (पृ. 22) तब संतोषी हैरान हो जाता है। पुनिया तो आपके बेटियों की उम्र की होने और उसका तलाक का मामला चलने की बात संतोषी कहता है। पुनिया कल्लू सेठ को अपनी माँ का कातिल कहके उसके साथ कतई शादी न करने का बात कहती है। पाँच सौ रुपए दिए होते तो मेरी माँ बच सकती थी, ऐसे निर्दयी व्यक्ति से विवाह नहीं कर सकती ऐसा कहकर वह कमरे के अंदर चली जाती है। संतोषी कल्लू सेठ से बेटी के बर्ताव के लिए माफी माँगता है। कल्लू सेठ संतोषी को बेटी को समझाने को कहकर चला जाता है। संतोषी अपनी बेटी पुनिया को आश्वस्त करता है कि किसी भी हाल में वह उसकी शादी कल्लू सेठ से नहीं कराएगा।

दूसरे अंक के तीसरे दृश्य में नाटककार शुक्ल जी ने ग्रामीण परिवेश की महाजनों की हड़पनीति, पुलिस प्रशासन की रिश्वतखोरी और भोंदू साधुओं पर अंधविश्वास की समस्याओं को उजागर किया है। इस दृश्य में महाजन कल्लू सेठ के पास गाँव का पलटू नाम का व्यक्ति चांदी की पायल गिरवी रखकर पाँच सौ रुपए उधार माँगने आता है। तब धूर्त महाजन दो हजार रुपए की पायल में बट्टा लगने की बात कहकर इसके केवल तीन सौ रुपए होने की बात कहता है। दोनों के बहस के बाद महाजन कल्लू सेठ एक रुपए पर प्रति माह पाँच पैसे के ब्याज पर पलटू को पाच सौ रुपए देता है। कल्लू सेठ पलटू किसान का अंगूठा बही-खाते में लेता है।

पलूट के जान के बाद वहाँ पुलिस कॉन्स्टेबल का आगमन होता है। वह कल्लू सेठ से दिवाली त्योहार का उपहार लेने दरोगा के कहने पर आया था। कल्लू सेठ भी खुशी-खुशी उसे त्योहारी (उपहार के रुपए) देता है, क्योंकि वह पुलिस के मिलीभगत से ही अपने काले कारनामों को अंजाम देता था। पुलिस के जाने के बाद चिमटा बजाते हुए एक साधु का कल्लू सेठ के घर में आगमन होता है। साधु कल्लू सेठ के घर-परिवार के बारे में कुछ सटीक बातें बताता है, जिससे कल्लू सेठ उसपर अंधविश्वास कर लेता है। साधु सेठ के दूसरे

विवाह और पुत्र के मोह की इच्छा को जानता था। वह कल्लू सेठ पर काली छाया मँडराने का भय दिखाता है। वह इस काली छाया और सुंदर लड़की के साथ दूसरा विवाह होने के लिए उपाय बताता है और इसके लिए इक्कीस सौ रुपये की माँग करता है। तब कंजूष कल्लू सेठ इसमें कुछ कम करने के लिए कहता है तब साधु कहता है– ''नहीं, इससे कम में नहीं होगा। हाँ जूते मार-मारकर भगाने में केवल एक सौ एक रुपये ही खर्च होंगे। चट मँगनी, पट ब्याह। सब कुछ तुरंत हो जायगा।'' (पृ.27) कंजूष सेठ से इक्कीस सौ रुपए अनुष्ठान के नाम पर लेकर कुछ फूल देकर उसे पेटी में रखने को कहता है। फिर वह साधु एक वर्ष के बाद वापस आने का झाँसा देकर तीर्थाटन के लिए चला जाता है। साधु के चले जाने के बाद कल्लू सेठ के घर के सामने अंधा भिखारी और उसकी पत्नी आते हैं। वह खाने के लिए कुछ देने की बात कहने पर कल्लू सेठ उन्हें कामचोर कहकर भगाना चाहता है। लेकिन भिखारी बताता है कि वह इसी गाँव का एक फल विक्रेता था और मोतियाबिन्दु ऑपरेशन गलत होने के कारण उसकी दोनों आँखें चली गई। इस कारण उसपर भिख माँगने की नौबत आई है। लेकिन निर्दयी कल्लू सेठ भिखारी की बातों को बकवास मानकर उन्हें डाँट-फटकार लगाकर जाने को कहता है। यहाँ पर दूसरा अंक समाप्त होता है।

तिसरा अंक : नाटक के तिसरे अंक के पहले दृश्य में गाँव के कुछ युवक प्रभाती गीत गाते हुए मंच पर आते हैं। इन्हें देखकर किसान संतोषी अपनी बेटी पुनिया को कहता है, ''युवकों की इस टोली ने ग्राम-सुधार का बीड़ा उठाया है। भ्रष्टाचार के खिलाफ एकजुट हो रहे हैं। गाँव में पहली बार ऐसी कोई टोली बनी है, पर धनिकों की आँखों में खटक रही है। देखो कहाँ तक सफलता मिलती है?'' (पृ.29-30) इतना कहकर संतोषी चला जाता है और दूसरी ओर से पुनिया का पति शराब के नशे में धुत्त होकर पुनिया के घर में दाखिल होता है। वह पुनिया को जबरदस्ती अपने घर ले जाना चाहता है। इस कारण दोनों में जोरदार बहस होती है। दुरजन कहता है कि मैं किसी हाल में तुम्हें तलाक नहीं दूँगा, तुम पर मेरा अधिकार है। इसपर पुनिया कहती है-''तलाक मिले या न मिले, पर मैं तेरे साथ नहीं रहूँगी। तू पति के नाम पर कलंक है। पति, पत्नी की इज्जत की रक्षा करता है और तू मेरी इज्जत बेचना चाहता है। मुझसे धंधा कराने के लिए विवाह किया है?'' (पृ.30) दुरजन पर और बहुत आरोप-प्रत्यारोप होते हैं। वह पुनिया को घसीटकर ले जाने की धमकी देते हुए पुनिया के घर के सामने आमरण अनशन करने के लिए धरने पर बैठ जाता है। इतने में पुलिस आती है और उसे बिना परमिशन कोई अनशन नहीं कर सकता, ऐसा कहकर उसे डंडे का भय दिखाकर वहाँ से भगाती है। असल में प्रभात ने ही पुलिस को कुछ पैसे देकर दुरजन को वहाँ से भगाने के लिए कहा था।

दूसरे दृश्य में एक साधु बाबा आते हैं और प्रभात के पास भिक्षा माँगते हैं। तब प्रभात उन्हें सेठ-साहूकार लोगों के पास जाने की सलाह देता है। साधु प्रभात के बोलने के ढंग को समझता है और वहाँ से चलता बनता है। इतने में वही अंधा भिखारी और उसकी पत्नी पुनिया के घर के सामने आकर कुछ देने के लिए कहते हैं। तब प्रभात उन्हें जेब से एक रुपया निकालकर भिखारिनी को देता है। फिर पुनिया को वह बताता है कि यह अपने ही गाँव के फल बेचने वाले खान चाचा थे। लेकिन आँख के गलत ऑपरेशन होने के कारण वे अंधे हो गए और उनपर भीख माँगने की नौबत आई।

तिसरे दृश्य में ग्रामवासी-1 और ग्रामवासी-2 के संवाद से अंधविश्वास, नैतिकता का पतन, भ्रष्टाचार, ढोंगी साधू-बाबा, धर्म के नाम पर कर्मकांड, प्रशासन में फैली अव्यवस्था आदि समस्याओं पर नाटककार ने प्रकाश डाला है। ग्रामवासी-2 हाल ही में सत्य साई बाबा के दर्शन करके लौटा है। वहाँ से वह भभूत लेकर आया है, जिसे चाटने से जीवन के सभी दुःख दूर होने की बात करता है। लेकिन ग्रामवासी-1 को इस पर विश्वास नहीं। ग्रामवासी-2 तीर्थयात्रों के लिए साधु का भेस पहनकर बिना रेल का टिकट निकाले घूमते रहता है। ग्रामवासी-1 इस वृत्ति को गलत बताता है तब ग्रामवासी-2 उसे समझाता है-''अरे, इसमें सीधे-टेढे की क्या बात है? मुझे बस साधु का वेश बनाना पड़ता है। सब कुछ मेरे लिए फ्री हो जाता है। जिस मंदिर में जाता हूँ, भोजन भी फ्री मिल जाता है। पैसा मुझे चाहिए नहीं। क्या करूँगा पैसा?'' (पृ.35) वह कहता है कि भारत जैसे निठल्ले देश में ढोंगी साधु-संन्यासियों ने धर्म को व्यवसाय ही बनाया है। वह ग्रामवासी-1 से किसान संतोषी के घर-परिवार का हाल-चाल पूछ लेता है। संतोषी की आर्थिक स्थिति, पत्नी की मौत, बेटी के तलाक की समस्या आदि की जानकारी लेकर वह इसे सेठ कल्लू जैसे लोगों की बेईमानी का परिणाम होने की बात कहता है।

ग्रामवासी-1 उसे बताता है कि गाँव का खोदवा चोर अब आचार्य बन गया है। वाराणसी के किसी सिद्धबाबा से दीक्षा ग्रहण करके खुद का नाम 'शंकरानंद' रखा है। गाँव के ही तालाब के पास एक शिवलिंग लाकर रखा है और अब वह वहाँ मंदिर बनाने की बात कहता रहता है। इसलिए वह अपने चेलों द्वारा गाँव के लोगों से जबरदस्ती चंदा भी वसूल करता है। धर्म को व्यवसाय बनाने के संदर्भ में ग्रामवासी-1 कहता है- ''अब यह धंधा पीढी-दर-पीढी चलता रहेगा। आँख के अंधे, गाँठ के पूरे इसे पूजते रहेंगे। अब तक बाहर स्त्रियों को पटाता था अब मंदिर में पटायेगा। यहाँ धरम के नाम पर सब कुछ चलता है।'' (पृ.37) इसके बाद दोनों राजनीति के पतन और गाँव के पंचायत में पनप रहे भ्रष्टाचार और अव्यवस्था पर बातें करते हैं। गाँव में सड़के बनाने के लिए काले-सफेद पत्थर फैलाए गए हैं, लेकिन उनपर अभी तक मिट्टी नहीं डाली गई है। पंचायते की बैठकें भी यहाँ होती हैं, लेकिन पंचों को इससे कुछ लेना-देना नहीं है। ग्रामवासी-2 बताता है कि आज शाम पंचायत की बैठक होने वाली है, जिसमें पुनिया के तलाक का फैसला सुनाया जाएगा। ग्रामवासी-1 कहता है, युवकों द्वारा ग्राम सुधार समिति स्थापित की गई है, लेकिन उन्हें सही दिशा देना जरूरी है। आज जनता को सही नेतृत्व की जरूरत है। दोनों चर्चा को पूरा करते हैं और शाम बैठक के लिए आने के लिए कहकर दोनों चले जाते हैं। तिसरा अंक यहाँ पर समाप्त होता है।

चौथा अंक : नाटक के चौथे और आखिरी अंक में फिर से नट और नटी का प्रवेश होता है। वे फिर से गाना गाते हुए आते हैं और जाति पंचायत के भ्रष्टाचार, शराबी पंचों, रूढीग्रस्त सरपंच और उनकी शकुनी जैसे चालों की कहानी सुनाते हैं। नाटक के आखिरी अंक में जात पंचायत की बैठक का दृश्य साकार होता है, जिसमें पुनिया, संतोषी, दुरजन, जाति पंचायत के पंच, सरपंच आमने-सामने बैठे हैं। इस बैठक में पुनिया के तलाक पर चर्चा करके फैसला लेना तय किया गया था। सभी गाँव वाले भी जमा हुए हैं। सरपंच सबसे पहले पुनिया को अपना पक्ष रखने को कहते हैं, तो पुनिया शादी के बाद शराबी पति की प्रताड़ना और उसे वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर करने की बात रखते हुए हर हाल में ऐसे शराबी पति के साथ रहने के

लिए तैयार न होने की बात कहती है। इसपर दुरजन अपने ऊपर लगाए सभी आरोप बेबुनियाद होने की बात कहता है। उल्टे अपनी पत्नी पर ही तिरिया चरित्र होने का आरोप लगाता है। लेकिन सरपंच ने पहले ही कल्लू सेठ से रुपए लेकर पुनिया को तलाक देकर उनसे पुनिया की शादी कराने साजिश की थी। इस लिए वह जात पंचायत के कुछ पंचों को शराब की बोतल और कुछ रुपए देकर अपने पक्ष में कर लिया था। इस कारण पंच दुरजन को शराबी घोषित करते हुए पुनिया को तलाक देने के पक्ष में फैसला देते हैं। दुरजन बहुत चिल्लाता है और इसे पक्षपात कहते हुए हंगामा करता है, लेकिन वहाँ सरपंच ने बुलाई पुलिस उसे घसीटकर ले जाती है।

इस मामले के बाद धूर्त और जालसाज सरपंच तत्काल किसान संतोषी और कल्लू सेठ के कर्जे का मामला पंचायत के सामने लाता है। पाँच वर्ष होने के बावजूद किसान संतोषी ने कल्लू सेठ का पाँच हजार रुपए कर्जा और उसके ब्याज के मिलाकर ३० हजार रुपए का भुगतान नहीं किया है। इसलिए अब संतोषी की सारी खेती कल्लू सेठ के नाम की जाए। इसपर किसान संतोषी पंचायत के पंचों के सामने गिड़गिड़ाता है और कुछ दिनों की और मोहलत माँगता है। तब सरपंच कल्लू सेठ की ओर इशारा करते हुए संतोषी को कुछ और समय देने की माँग करता है। सरपंच का इशारा पाते ही कल्लू सेठ कहता है-''मैं एक शर्त पर इसे समय दे सकता हूँ। यह चाहे तो मैं इसका पूरा कर्ज भी माफ कर सकता हूँ। संतोषी अपनी तलाकशुदा लड़की का विवाह मुझसे कर दे।'' (पृ.42) तब ग्रामवासी कल्लू का मजाक उड़ाने लगते हैं। कल्लू सेठ पुत्रप्राप्ति के लिए शादी करने की बात पंचों को बताता है। तब पुनिया किसी भी हाल में इस शादी के लिए तैयार नहीं होती। दोनों पक्षों की बहस को शांत करते हुए चालाक सरपंच फिर से साजिश करते हुए कहता है-''खैर छोड़ो इनकी बात न तुम्हारी रही, न इनकी। मेरी बात ध्यान से सुनो। देखो, ये दो पत्थर मैंने नीचे से उठाये हैं, एक काला और एक सफेद। इन्हें मैं इस झोले में डालता हूँ। पुनिया आँख मूँदकर इसमें से एक पत्थर उठाएगी। यदि सफेद पत्थर निकालोगी तो तुम्हें कल्लू सेठ से विवाह नहीं करना पड़ेगा और तुम्हारे बापू का कर्ज भी माफ हो जाएगा। लेकिन यदि तुमने काला पत्थर निकाला तो तुम्हें सभी के सामने अभी कल्लू सेठ से विवाह करना पड़ेगा और तुम्हारे बापू द्वारा, कल्लू सेठ से लिया गया पूरा कर्ज भी माफ हो जाएगा।''(पृ.43) पुनिया धर्म संकट में फँस जाती है।

चालाक सरपंच ने दोनों ही सूरत में फैसला अपने हक में होने के लिए झोले में पहले से ही एक काला पत्थर रखा था और सबके सामने सफेद और काला पत्थर उठाकर दूसरा भी काला पत्थर डाल देता है। पुनिया को सरपंच पर शक होता है। वह अपने पिता संतोषी के दु:ख को देखकर यह जहर भी पीने के लिए तैयार होती है। चारों ओर से धूर्त पंचों और कल्लू सेठ ने घेरने के कारण उसके पास अन्य कोई उपाय नहीं था। वह थोड़ी देर आँख मूँद कर विचार करती है और झोले से पत्थर उठाने को तैयार होती है। वह आँख बंद करके झोले से एक पत्थर उठाती है और माथे से लगाकर हाथ नीचे लाते हुए जान-बूझकर वह पत्थर बिना किसी को दिखाए नीचे फेंक देती है। जिससे वह पत्थर नीचे पड़े दूसरे पत्थरों में मिल जाता है। इससे फैसला करने में मुश्किल होती है। कल्लू सेठ पुनिया पर जान-बूझकर पत्थर नीचे फेंकने का आरोप लगाता है। तब चालाक सरपंच दोबारा एक काला पत्थर झोले में डालने की बात कहता है तब होशियार पुनिया

कहती है–''खैर कोई बात नहीं। मैं झोले से दूसरा पत्थर निकालती हूँ, यदि वह सफेद होगा तो मैंने पहले काला पत्थर निकाला था और यदि काला निकलेगा तो पहले सफेद निकाला था।''(पृ.46) गाँव के सभी लोग और युवक पुनिया की इस बात का समर्थन करते हैं। इसकारण सरपंच और कल्लू सेठ उनके ही दाँव में उलझकर रह जाते हैं। सरपंच भी गाँव को संगठित होते देख पुनिया की बात मानता है। पुनिया फिर से आँख बंद करके पत्थर निकालती है तो झोले से काला पत्थर निकलता है। वह पूरी सभा को वह पत्थर दिखाती है और कहती है, इसका मतलब मैंने पहले सफेद पत्थर निकाला था। सभी ग्रामवासी कहते हैं हाँ, पहला पत्थर सफेद ही था। सरपंच पुनिया को विजेता घोषित करते हुए कहते हैं–''तुम जीत गयीं। कर्ज और विवाह से मुक्त हो गई। अब पंचायत की कार्रवाई समाप्त की जाती है।''(पृ.47) कल्लू सेठ सरपंच को कोसता रहता है और हाथ कुछ भी न लगने के कारण बहुत गुस्सा होकर निकल जाता है। सरपंच उसे समझाते हैं कि तुम्हारा भाग्य ही आज खराब था। फैसला तुम्हारे ही पक्ष में होना था लेकिन चालाक लड़की ने सारा खेल चौपट कर दिया। किसान संतोषी ईश्वर का धन्यवाद मानते हैं। प्रभात भी पुनिया की होशियारी की दाद देता है और पुनिया शरमा जाती है। दोनों एक–दूसरे की ओर एकटक देखते रहते हैं और नट–नटी फिर से 'देश हमारा, हम हैं उसके, जागो और जगाओ रे' गाते–नाचते आते हैं और यहीं पर नाटक समाप्त होता है।

2.3.4 'काला पत्थर' के प्रमुख पात्र:

'काला पत्थर' यह नाटक गरीबपुर नाम के गाँव की विसंगतियों पर आधारित नाटक है। इस नाटक में प्रमुख सात पात्र हैं। इनमें कल्लू सेठ, संतोषी, दुरजन और प्रभात मुख्य पात्र हैं तो विमला, पलटू, सरपंच सहायक पात्र हैं। नाटक के गौण पात्रों में नट, नटी, सरपंच, पंच–1, पंच–2, पुलिसवाला, ग्रामवासी–1, ग्रामवासी–2, साधु, भिखारी, भिखारिनी, युवक आदि आते हैं। नाटक के प्रमुख एवं सहायक पात्रों का विवेचन इस प्रकार है–

2.3.4.1 कल्लू सेठ :

विवेच्य नाटक में कल्लू सेठ शोषक वर्ग का प्रतिनिधि है। वह गरीबपुर गाँव का महाजन है, जो सूद पर रूपए देने का काम करता है। उसकी आयु ६० वर्ष की है और वह एक आँख से काना और बेहद काले रंग है। उसकी पत्नी का नाम विमला है और उसकी छह: लड़कियाँ हैं। ६० वर्ष की आयु में भी उसे पुत्रप्राप्ति की इच्छा है और इसलिए वह किसी सुंदर युवती से विवाह करने की इच्छा रखता है। निम्नांकित मुद्दों के आधार पर उसकी चारित्रिक विशेषताओं को समझते हैं-

I) निर्दयी और शोषक महाजन :

कल्लू सेठ गरीबपुर गाँव का बहुत ही निर्दयी, लालची और शोषक वृत्ति का महाजन है। वह गाँव के गरीब किसान और बेबस लोगों की लाचारी का लाभ उठाते हुए उन्हें सूद पर रुपए देता है। कर्ज पर ब्याज लगा–लगाकर उनकी जमीन–जायदाद हड़प लेता है। उसने किसान संतोषी की जमीन भी पाँच हजार रुपए के कर्ज के बदले खुद के पास गिरवी रख ली थी। लेकिन अकाल और अन्य समस्याओं के कारण संतोषी पाँच

साल में कर्ज का भुगतान नहीं करता, इसलिए वह कर्ज की रकम ब्याज बढकर ३० हजार रुपए होने की बात कहकर उसकी जमीन हड़पने की साजिश करता है। पलटू किसान की दो हजार रुपए की चांदी की पायल को बट्टा लगने की बात कहकर उसे केवल पाँच सौ रुपए ब्याज पर देता है। कर्ज का भुगतान न होने पर वह लोगों के घरों से बर्तन उठाकर लाता है। हर महीने उसके घर से ट्रक भरके बर्तन शहर में बेचने के लिए चले जाते थे। उसे किसी के प्रति भी दया नहीं आती। वह ढोंगी और पाखंडी साधुओं को दान देता था लेकिन गरीब अपाहिज भिखारियों को एक रुपया भी नहीं देता था।

II) निर्दयी पति और पिता :

कल्लू सेठ एक निर्दयी महाजन ही नहीं तो एक निर्दयी पति और पिता भी था। वह अपनी पत्नी विमला को कीमत नहीं देता था। बात-बात पर उसे जूते से पीटना और गालियाँ देता था। उसे देहज न देना पड़े इसलिए उसने अपनी चार लड़कियों की शादी उनकी आयु से दुगने आयु अर्थात् प्रौढ धनवान लोगों से की थी। उसने अपने लड़कियों की मर्जी जाने बिना केवल रुपयों की लालच में बूढे लोगों से शादी की थी। इससे तीन लड़कियाँ अकाल विधवा बनी और वापस घर पर आई। वह अपने पिता को निर्दयी कहते हुए उनकी जिंदगी बर्बाद करने के लिए रोज कोसती रहती हैं। एक लड़की ने ससुराल वालों की यातनाओं से तंग आकर खुद्कुशी की थी, तो एक लड़की प्रेमी के साथ भाग गई थी। उसकी पत्नी उसे दूसरों की लाचारी का फायदा न उठाने को कहती है, तब वह उसे जूतों से पीटने की धमकी देता है। इस तरह कल्लू सेठ पुत्र मोह में निर्दयता से लड़कियों और पत्नी से घृणा करता है।

III) पुत्र मोह का अभिलाषी :

कल्लू सेठ को छह: लड़कियाँ थीं। उसकी मानसिकता पुरुषवादी एवं वर्चस्ववादी होने के कारण उसे पुत्र की इच्छा थी। वह दकियानुसी परंपरा को मानता था कि पुत्र ही वंश के दीपक होते हैं। वह अपने पिंड दान एवं पितृ ऋण की इच्छा से पुत्र प्राप्ति का मोह रखता है। उसकी उम्र साठ वर्ष की है फिर भी वह पुत्र की प्राप्ति के लिए दूसरी शादी करना चाहता है।

IV) अंधविश्वासी :

कल्लू सेठ पुरानी रूढीग्रस्त परंपरा और धर्म का कर्मकांड माननेवाला व्यक्ति है। एक ओर वह अनाचार करता है और दूसरी ओर भगवान की पूजा करके पुण्य कमाना चाहता है। वह एक पाखंडी साधु द्वारा उसकी दूसरी शादी कराने और पुत्र प्राप्ति के लिए अनुष्ठान करने के झांसे में आकर उसपर विश्वास कर लेता है। वह साधु उससे इक्कीस सौ रुपए एंटकर तीर्थाटन के लिए चला जाता है। इस तरह कल्लू सेठ अंधविश्वासी है।

V) रिश्वत खिलाने वाला :

कल्लू सेठ अपने काले कारनामों को छिपाने के लिए पुलिस और गाँव के जाति पंचायत के पंचों, सरपंच को रिश्वत खिलाता है। साहूकारी करना कानूनन जुर्म होने के बावजूद वह यह धंधा करता है।

इसलिए वह पुलिस को खुश रखने के लिए हर दिवाली को उन्हें 'त्योहारी' (उपहार) देता है। पुनिया से शादी कराने के लिए वह सरपंच और जाति पंचायत के पंचों को शराब और रुपए की रिश्वत देता है।

VI) षड्यंत्रकारी :

कल्लू सेठ बहुत ही शातिर और षड्यंत्रकारी व्यक्ति है। वह पुनिया से शादी कराने के लिए किसान संतोषी की मजबूरी का फायदा उठाने का षड्यंत्र करता है। सरपंच और जाति पंचायत के पंचों को रिश्वत खिलाकर संतोषी पर कर्जा डुबाने का आरोप लगाकर उसे पंचायत में घसीटता है। कर्ज के बदले वह पुनिया से शादी रखने का प्रस्ताव पंचों के सामने रखता है। अर्थात् वह संतोषी से उसकी जमीन के साथ उसकी बेटी पुनिया को भी हथियाना चाहता था। अत: स्पष्ट है कि विवेच्य नाटक के कल्लू सेठ के चरित्र में एक निर्दयी शोषकमहाजन, निर्दयी पति, निर्दयी पिता, अंधविश्वासी, चालाक-धूर्त, लालची, पुत्रमोह की पुरुषी मानसिकता रखनेवाला, षड्यंत्रकारी आदि विशेषताएँ देखने को मिलती हैं।

2.3.4.2 किसान संतोषी :

विवेच्य नाटक में गरीबपुर गाँव में एक शोषित एवं पीड़ित किसान के प्रतिनिधि के रुप में किसान संतोषी का चरित्र सामने आता है। वह 50 वर्ष की आयु का व्यक्ति है। उसकी पत्नी लकवा के कारण बीमार है और बेटी पुनिया शराबी पति से तंग आकर ससुराल से भाग कर छह महीने से मायके में रह रही है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

I) शोषणग्रस्त एवं ऋणग्रस्त किसान :

संतोषी गरीबपुर गाँव का एक गरीब किसान है। उसकी खेती और जमीन-जायदाद महाजन कल्लू सेठ के पास गिरवी पड़ी है। उसने अपने बेटी के विवाह के लिए कल्लू सेठ से खेती गिरवी रखकर पाँच वर्ष पूर्व पाँच हजार रुपए का कर्जा उठाया था। लेकिन अकाल और अन्य समस्याओं के कारण वह कर्जा लौटा नहीं पाता। उसका बाल-बाल कर्ज में डूब चुका है। उसकी पत्नी लकवे से बीमार होने के कारण छह महीने तक बिस्तर पर पड़ी रही। उसे डॉक्टरी इलाज के लिए पैसों की जरूरत थी। संतोषी कल्लू सेठ के पास और एक हजार रुपए का कर्जा लेने जाता है, लेकिन कल्लू सेठ उसे एक रुपए भी नहीं देता। वह बेबस होकर वापस लौटता है और इधर पत्नी की मृत्यु होती है। कल्लू सेठ जालसाजी करके उसकी जमीन हथियाने के लिए सरपंच और जाति पंचायत के लोगों को रिश्वत खिलाता है। इस तरह किसान संतोषी महाजन वर्ग के शोषण के चक्र में पूर्ण रूप से फँसा हुआ नजर आता है।

II) मजबूर पति और पिता :

किसान संतोषी एक मजबूर पति और पिता के रूप में दृष्टिगत होता है। वह अपनी पत्नी और बेटी को कोई सुख नहीं दे पाया था। रूपयों के अभाव के कारण उसके बीमार पत्नी की बिना इलाज के मृत्यु हो जाती है। जाति पंचायत के डर के कारण उसने अपनी बेटी पुनिया की शादी पंद्रह वर्ष की बाल आयु में की थी। बेटी का पति भी शराबी निकलता है और बेटी ससुराल से भागकर मायके वापस आती है। जाति पंचायत के पास बेटी के तलाक का मामला अटका पड़ा है। सभी पंच शराबी और भ्रष्टाचारी होने के कारण

वे बिना रिश्वत के उसकी बेटी को तलाक नहीं दिलवाते हैं। लेकिन संतोषी के पास रूपए नहीं हैं। उसकी बेटी प्रभात नाम के बिरादरी के बाहर के लड़के से प्यार करती थी। संतोषी भी जानता था कि प्रभात एक अच्छा लड़का है, लेकिन जाति पंचायत एवं बिरादरी के लोगों के डर से वह चाहकर भी अपने बेटी की शादी प्रभात से नहीं कर पाता। कर्ज के बदले में कल्लू सेठ जब उसकी बेटी पुनिया से शादी करने की शर्त रखता है तब भी वह खुद को असहाय और मजबूर पाता है। इस तरह विवेच्य नाटक में किसान संतोषी के चरित्र में शोषण ग्रस्त एवं ऋणग्रस्त किसान, लाचार पति, मजबूर पिता की विशेषताएँ दृष्टिगत होती है।

2.3.4.3 पुनिया :

विवेच्य नाटक में पुनिया प्रमुख स्त्री पात्र है। वह गरीबपुर के किसान संतोषी की एकलौती पुत्री है। वह 20 वर्ष आयु की युवती है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

I) बेबस किसान परिवार की बेटी :

पुनिया शोषणग्रस्त एवं ऋणग्रस्त किसान संतोषी की बेटी है। रुपए एवं डॉक्टरी इलाज के अभाव में उसकी माँ की लकवे की बीमारी से मौत हो जाती है। वह मेहनत-मजदूरी करके अपने पिता के खेत का कर्जा चुकाना चाहती है।

II) बाल विवाह :

पुनिया का महज पाँच वर्ष की आयु में गौना तय हुआ था और पंद्रह वर्ष की आयु में उसकी शादी तय की गई थी। उसके माता-पिता ने जाति पंचायत और बिरादरी के डर से उसका बाल विवाह कराया था। पढने-लिखने की उम्र में वह रूढीग्रस्त मानसिकता का शिकार हुई थी।

III) पति से प्रताड़ित:

पुनिया की शादी उसके ही बिरादरी के दुरजन के साथ पंद्रह साल की उम्र की गई थी। लेकिन दुरजन अपने नाम की तरह ही दुर्गुणी था। वह रोज शराब पीकर पुनिया को मारता-पीटता था। शराब पीने के लिए रुपए देने के लिए उसे गाली-गलौच करता था। रुपए न मिलने पर वह उसके जेवर और घर के बर्तन बेचता था। इतना ही नहीं तो बाद में वह शराब और रुपए के लिए अपनी पुनिया को अपने दोस्तों के पास वेश्यावृत्ति के लिए भेजता है। इस तरह पुनिया शादी के बाद अपने शराबी पति से प्रताड़ना सहती है। लेकिन जब उसे वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर किया जाता है तो वह ससुराल से भाग आती है। उसने जात पंचायत के पास तलाक के लिए अर्जी दी है, लेकिन शराबी पति उसे तलाक देने के लिए तैयार नहीं। वह उसे मानसिक रुप से छलता रहता है।

IV) प्रेमिका पुनिया:

विवेच्य नाटक में पुनिया का प्रेमिका रुप भी दिखाई देता है। वह अपने गाँव के ही अपने हम उम्र प्रभात से प्रेम करती थी। लेकिन प्रभात उनकी जाति-बिरादरी का नहीं था। उसके माता-पिता भी प्रभात को एक अच्छा लड़का मानते थे। लेकिन बिरादरी के डर से उससे पुनिया की शादी नहीं हो पाती। जब पुनिया शराबी पति से तंग आकर गाँव वापस आती है तब पाँच वर्षों बाद प्रभात से उसकी मुलाकात होती है।

प्रभात उसे आज भी शादी करने के लिए तैयार था। लेकिन पुनिया, जाति–बिरादरी के लोग उनके अंतर्जातीय विवाह को मंजूर नहीं करेंगे और प्रभात को दंड देने के डर से इंकार करती है। लेकिन उसके मन में आज भी प्रभात के प्रति बहुत प्रेम है। वह आजीवन इस प्रेम को अपने दिल में रखकर जीवन बिताने का संकल्प करती है।

V) पुरुषवादी मानसिकता की शिकार पुनिया:

विवेच्य नाटक में पुनिया पुरुषवादी मानसिकता की शिकार दिखाई देती है। जाति पंचायत के रिश्वतखोर पुरुषवादी मानसिकता के पंचों के डर से उसे बाल विवाह करना पड़ता है। शादी के बाद पुरुषवादी मानसिकता के शराबी और निकम्मे पति दुरजन से प्रताड़ना सहनी पड़ती है। कल्लू सेठ कर्ज के बदले उससे शादी करने की गिद्ध मानसिकता रखता है। सरपंच अपने स्वार्थ के लिए कल्लू सेठ को संतोषी के मजबूरी का फायदा उठाकर उसकी बेटी पुनिया से शादी करने का सुझाव देता है। अंत में भी सरपंच जालसाजी करके काला और सफेद पत्थर उठाने की परीक्षा करके कल्लू सेठ के पक्ष में फैसला देने का पक्षपात करना चाहता है। इस तरह पूरे नाटक में पुनिया पुरुषवादी मानसिकता की शिकार हुई नज़र आती है।

VI) मातृ–पितृ स्नेही बेटी :

विवेच्य नाटक में पुनिया का मातृ–पितृ स्नेही रूप भी दिखाई देता है। वह पढ–लिखकर अपने माता–पिता के सुख के लिए कुछ करने की सोचती थी। लेकिन बिरादरी के विचारों के कारण उसकी कम उम्र में ही शादी होती है और उसका यह सपना टूट जाता है। वह अपनी लकवे की बीमारी से ग्रस्त माँ की छह महीनों तक सेवा करती है। रुपए के अभाव में माँ को डॉक्टरी इलाज न मिलने से उसकी मौत होती है तब वह कल्लू सेठ को निर्दयी कहकर अपना आक्रोश व्यक्त करती है।

संतोषी के सिवाय उसका कोई नहीं है, इसलिए उनको हमेशा अपना खयाल रखने को वह करती हैं। वह जिंदगीभर मेहनत–मजदूरी करके उनकी सेवा करने का संकल्प करती है। अंत में सरपंच और कल्लू सेठ के कर्ज के बदले में शादी करने के प्रस्ताव को भी वह पिता की बेबसी देखकर स्वीकारना तय करती है। बूढे कल्लू सेठ से शादी करने पर उसका जीवन नरक हो जाएगा यह उसे पता था फिर वह पिता के लिए यह त्याग करने को भी तैयार होती है। इससे उसका पितृ वत्सल चरित्र दृष्टिगत होता है ।

VII) स्वाभिमानी एवं होशियार :

विवेच्य नाटक में पुनिया के चरित्र में स्वाभिमानी और चतुर लड़की का गुण दृष्टिगत होता है। जब कल्लू सेठ कर्ज के भुगतान के बदले पुनिया से शादी करने का प्रस्ताव रखती है, तो वह शेरनी की तरह दहाड़ती है। वह हर हाल में कल्लू सेठ से शादी के लिए तैयार न होने की बात स्पष्ट करती है। वह जीवन भर मेहनत–मजदूरी करके कर्ज की पाई–पाई चुकता करने की बात करती है। लेकिन कल्लू सेठ से शादी करने से इंकार करती है। प्रभात द्वारा महीने का खर्चा लेने से भी इंकार करती है। इससे उसकी स्वाभिमानी वृत्ति दिखाई देती है।

नाटक के अंत में वह सरपंच और कल्लू सेठ की जालसाजी को भाँप लेती है और कुछ पल के लिए सोच-विचार करके उनकी परीक्षा देने को तैयार होती है। काला या सफेद पत्थर चुनने की परीक्षा के दौरान वह हाथ-चालाकी करके पहले उठाए पत्थर को नीचे गिराती है। उसे पता था कि सरपंच ने दोनों भी काले पत्थर ही झोले में रखे थे। अब झूले से दूसरा काला पत्थर ही उठाकर वह जनता जनार्दन को दिखाती है। इससे यह स्पष्ट करती है कि गिरा हुआ पत्थर सफेद ही था। इस प्रकार वह 'नहले पे दहला' बनकर अपने बापू के खेती को ऋण मुक्त करती है और बूढे कल्लू सेठ से शादी से भी बचती है। अत: स्पष्ट है कि पुनिया के चरित्र में किसान परिवार की बेटी, पति से प्रताड़ित, बाल विवाह की शिकार, पुरुषी मानसिकता की शिकार, स्वाभिमानी एवं चतुर, मातृ-पितृ स्नेही बेटी आदि गुण दिखाई देते हैं।

2.3.4.4 दुरजन :

विवेच्य नाटक में दुरजन खल पात्र के रूप में दिखाई देता है। वह अपने नाम के अनुसार ही दुर्गुणों से भरा हुआ है। उसकी आयु 25 वर्ष की है और वह नाटक के प्रमुख नारी पात्र पुनिया का पति है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

I) शराबी पति :

विवेच्य नाटक में दुरजन का परिचय पुनिया के शराबी पति के रूप में मिलता है। उसने पुनिया से बाल विवाह किया था। बचपन में ही उन दोनों का गौना तय किया गया था, तब पुनिया मात्र पाँच वर्ष की थी। शादी के बाद जब पुनिया ससुराल जाती है, तब दुरजन का असली चरित्र सामने आता है। वह एक नंबर का पियक्कड़ और शराबी था। वह रोज शराब पीकर आता और पुनिया को मारता-पीटता था। उससे तंग आकर पुनिया मायके आती है और उससे तलाक की अर्जी जाति पंचायत को देती है। लेकिन दुरजन तलाक देने के लिए तैयार नहीं होता। वह पुनिया के घर पर शराब पीकर आकर वापस घर ले जाने के लिए हंगामा करता रहता है।

II) पत्नी को प्रताड़ित करनेवाला अय्याश पति :

दुरजन निकम्मा और अय्याश पति था। वह कोई भी काम नहीं करता था। रोज शराब पीकर घर आता और पुनिया को पीटता था। शराब के लिए रुपए न मिलने पर वह पुनिया के जेवर और घर के बर्तन तक बेच डालता है। बर्तन और जेवर भी जब खत्म होते हैं, तो वह अपनी अय्याशी को पूरा करने के लिए पुनिया का इस्तेमाल करने की सोचता है। वह अपनी पत्नी पुनिया को अपने दोस्तों को सौंप कर उनसे रुपए लेता है। पुनिया को वेश्यावृत्ति करने के लिए मजबूर करता है। लेकिन पुनिया मौका पाकर वहाँ से भागती है और उस राक्षस पति के हाथ से बच जाती है।

III) पुरुषप्रधान मानसिकता का निर्वाह करने वाला पति :

दुरजन ने कभी भी पति होने का कर्तव्य नहीं निभाया। उसने पुनिया को शादी के पहले दिन से ही अपनी जागीर समझकर उसे मारना-पीटना शुरू किया था। पुनिया उसकी ज्यादतियों से तंग आकर मायके

वापस आती है और जात पंचायत में तलाक की अर्जी देती है। तब दुरजन की पुरुषी मानसिकता पर आघात होता है। वह शराब पीकर उसके घर आता है और उससे झगड़ा करता है। वह पुनिया के चरित्र पर आरोप लगाते हुए उसे तिरिया चरित्रवाली कहता है। उसपर केवल उसका अधिकार होने की बात कहकर वह किसी भी हाल में तलाक देने के लिए राजी नहीं होता। एक दिन शराब के नशे में धुत्त होकर पुनिया के घर आता है और उसे जबरदस्ती घसीटते हुए ससुराल ले जाने की धमकी देता है। पुनिया के विरोध को देखकर वह उसके घर के सामने ही आमरण अनशन पर बैठ जाता है। वह पंचायत के सामने भी उसके चरित्र पर आरोप लगाकर खुद को पाक-साफ साबित करने की कोशिश करता है। लेकिन पंच अपनी दूसरी साजिश को अंजाम देने के लिए पुनिया की तलाक की अर्जी मंजूर करते हैं और दुरजन को दोषी मानकर उसे गाँव से भगा देते हैं। अत: स्पष्ट है कि विवेच्य नाटक के दुरजन के चरित्र में शराबी-अय्याश पति, निकम्मा पति, अपनी अय्याशी के लिए पत्नी को गलत काम कराने के लिए मजबूर करना, झूठ बोलना, पत्नी पर झूठे आरोप लगाना, पत्नी को मानसिक एवं शारीरिक रूप से प्रताड़ित करना आदि खल पात्र के चरित्र के सारे गुण दिखाई देते हैं।

2.3.4.5 प्रभात :

विवेच्य नाटक में प्रभात एक समझदार युवक पात्र है। वह गरीबपुर गाँव में ही रहता था। उसकी उम्र 23 वर्ष है। वह संतोषी की बेटी पुनिया से प्रेम करता था। पुनिया की शादी होने और उसके माता-पिता की मृत्यु के बाद वह निराश होकर गाँव छोड़कर चला जाता है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

I) सौतेली माँ-भाइयों से परेशान युवक :

प्रभात गरीबपुर गाँव का ही निवासी था। लेकिन बचपन में ही उसकी माँ का देहांत हुआ था। इस कारण उसके पिताजी ने दूसरी शादी की थी। उसकी सौतेली माँ और भाइयों का उसके साथ अच्छा बर्ताव नहीं था। जब तक पिताजी थे तब तक वह सौतय्या डाह सह रहा था। लेकिन पिताजी की मृत्यु के बाद उसकी सौतेली माँ और भाइयों ने उसे बहुत परेशान करना शुरू किया। इससे तंग आकर उसने अपना गाँव छोड़ा और वह कानपुर में रहकर किसी कंपनी में काम करने लगा।

II) पुनिया का प्रेमी:

प्रभात अपने गाँव की लड़की पुनिया से प्रेम करता था। पुनिया और प्रभात एक ही स्कूल में पढते थे। लेकिन दोनों की जाति-बिरादरी अलग-अलग थी। छोटी उम्र में जब पुनिया की शादी तय हो जाती है तो वह उसे समझाता है कि इतनी कम उम्र में शादी मत करो। दो साल रूककर इंटर की पढाई पूरी करो और उसके बाद शादी कर लेना। लेकिन बिरादरी के लोगों के दबाव में पुनिया की जबरदस्ती शादी की जाती है। प्रभात का पुनिया से शादी करने का सपना टूट जाता है और वह निराश होकर गाँव छोड़ देता है।

III) सच्चा प्रेमी:

प्रभात एक सच्चा प्रेमी है। पाँच वर्ष बाद जब वह गाँव लौटता है तो उसे पुनिया के जीवन की दुर्दशा की जानकारी मिलती है। वह तुरंत उसका हाल-चाल पूछने जाता है। वहाँ पर पुनिया द्वारा उसकी माँ की

मौत, शराबी पति की यातनाएँ, पिता का कर्ज आदि की जानकारी मिलने पर वह बहुत दु:खी हो जाता है। वह पुनिया को उसके होते हुए मेहनत-मजदूरी न करने को कहता है और महीने का खर्चा भेजने की बात करता है। वह पुनिया के हर संकट में मदद करता है। जब उसका पति शराब पीकर हंगामा करने लगता है तो वह पुलिस को कुछ रुपए देकर उसे वहाँ से भगाता है। वह पुनिया को तलाक लेकर उससे शादी करके बापू के साथ शहर आने के लिए कहता है। लेकिन पुनिया जात पंचायत के डर से प्रभात के प्रस्ताव से इंकार करती है। प्रभात उसे उसपर सोच-विचार करने और उसके रजामंदी की प्रतीक्षा करने की बात कहता है।

IV) प्रगतिशील विचारों का युवक :

पूरे नाटक में प्रभात प्रगतिशील विचारों का प्रतिनिधित्व करता है। वह पुनिया को बाल-विवाह करने से रोकता है और पढाई पर ध्यान देने के लिए कहता है। बाल-विवाह करने और पढाई बीच में ही छोड़ने के बुरे परिणामों से उसे अवगत कराता है। जब पुनिया शराबी पति की प्रताड़ना से तंग आकर तलाक की अर्जी देती है। प्रभात को जब यह बात समझती है, तो वह पुनिया के घर को फिर से बसाने के लिए उससे शादी करने के लिए तैयार होता है। पुनिया के इस बार भी इंकार करने से वह गुस्साता नहीं, बल्कि उसके फैसले का सम्मान करता है। वह उसकी हर मुसीबत में मदद करने का संकल्प लेता है। बाल-विवाह का विरोध, महिला शिक्षा का समर्थक, पुनिया का पुनर्विवाह करके नवजीवन देने की सोच रखनेवाला, मददगार दोस्त आदि गुण उसके प्रगतिशील विचारों के परिचायक हैं। अत: स्पष्ट है कि प्रभात के चरित्र में हमें सच्चा प्रेमी, सच्चा दोस्त, प्रगतिवादी युवक आदि सद्-चरित्र के गुण दृष्टिगत होते हैं।

2.3.4.6 विमला :

विवेच्य नाटक में विमला सहायक नारी पात्र है। वह गाँव के महाजन कल्लू सेठ की पत्नी है, जिनकी आयु 55 वर्ष की है। उन्हें छह लड़कियाँ है। कल्लू सेठ की पत्नी विमला का जिक्र नाटक के एक ही दृश्य में आता है। वह एक धर्म परायण गृहिणी है। वह अपने पति कल्लू सेठ के काले कारनामों से परेशान हैं। उसके पति ने लालच से दूसरों की संपत्ति हड़प की है, जो उसे बिलकुल पसंद नहीं है। किसान संतोषी की पत्नी की इलाज के लिए कल्लू सेठ जब रुपए नहीं देता और संतोषी की पत्नी की मौत होती है, तो वह अपने पति को खरी-खोटी सुनाती है। लेकिन कल्लू सेठ की ज्यादतियों और अत्याचार के सामने उसकी कुछ नहीं चलती। कल्लू सेठ उसे गालियाँ देता है और मर्यादा में रहने की नसीहत देता रहता है। वह अपनी बेटियों के जीवन की बर्बादी के लिए अपने पति को जिम्मेदार मानती है। उसके लालच और देहज बचाने के चक्कर में उसकी बेटियों का प्रौढ लोगों से विवाह कराया गया था। जिससे तीन बेटियाँ विधवा हो जाती है। वह पति के पापों का फल बेटियों को भूगतना पड़ने की बात कहती है। वह अपने पति को बुरे काम छोड़कर लोगों को मदद करने की नसीहत देती रहती है। इससे विमला के चरित्र में हमे बेबस माँ, पति की प्रताड़ना सहने वाली पत्नी, धर्म परायण, दयालु आदि गुण दिखाई देते हैं।

2.3.4.7 पलटू :

विवेच्य नाटक में पलटू किसान भी एक सहायक पात्र है, जिसकी उम्र चालीस है। नाटक के एक ही दृश्य में उसका जिक्र आया है। वह कल्लू सेठ के पास रूपयों की जरूरत से चांदी की पायल लेकर जाता है। वह चांदी की पायल दो हजार रुपए की थी, लेकिन कल्लू सेठ धूर्तता करते हुए उसे बट्टा लगने की बात कहकर तीन सौ रुपए देने की बात कहता है। पलटू किसान को पाँच सौ रुपए की जरूरत थी। दोनों में बहस होकर आखिर में चार सौ रुपए पर बात पक्की होती है। लेकिन धूर्त कल्लू सेठ वह चार सौ रुपए भी एक रूपए को प्रति माह पाँच पैसे के दर से ब्याज पर देता है। इस तरह पलटू के द्वारा नाटककार ने ऋणग्रस्त किसान, शोषित किसान की समस्या को उजागर किया है।

2.3.4.8 सरपंच :

विवेच्य उपन्यास में गरीबपुर गाँव का सरपंच भ्रष्ट व्यवस्था एवं भ्रष्ट जनप्रतिनिधि का प्रतीक है। वह अपने निजी स्वार्थ के लिए कल्लू सेठ के काले कारनामों में साथ देता है। कल्लू सेठ से 25 हजार रुपए लेकर ऋणग्रस्त किसान संतोषी की बेटी से पुनिया से शादी करने का सौदा करता है। वह पुनिया के तलाक के लिए जात पंचायत के पंचों को शराब और कुछ रुपयों की रिश्वत देकर अपने पक्ष में फैसला देने के लिए मनाता है। गाँव के विकास कामों के लिए आए सरकारी रुपयों को भी उसने हड़प लिया है। इस कारण गाँव के सड़कों पर केवल पत्थर फैलाए गए हैं अभी तक पक्की सड़क नहीं बनी है। वह पुनिया को कल्लू सेठ से शादी कराने के लिए पत्थर उठाने की परीक्षा में साजिश करते हुए झोले में दोनों पत्थर काले रखता है, ताकि दोनों सूरत में पुनिया हार जाए। लेकिन पुनिया की चतुराई से जब लोगों का समर्थन मिलता है, तो वह जनता के मत का सम्मान रखने का दिखावा करते हुए पुनिया को विजयी घोषित करता है और कल्लू सेठ को भाग्य खराब होने की बात कहते हुए उन्हें भी समझाने की कोशिश करता है। अत: स्पष्ट है कि सरपंच के चरित्र में हमें भ्रष्ट नेता, रिश्वतखोर, जालसाज, रूपयों का लालची, अवसरवादी नेता आदि अवगुण दिखाई देते हैं।

2.3.4.9 गौण पात्र :

नाटककार डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' जी ने ग्रामीण परिवेश की समस्याओं को साकार करने के लिए नाटक में कुछ गौण पात्रों की सृष्टि की है। इसमें नाटक की कथा सुनाने के लिए नट-नटी इन पात्रों की सृष्टि की है। धर्म के नाम पर फैले पाखंड को दिखाने के लिए साधु, खोदवा चोर का आचार्य बनने की बात कही है। पुलिस प्रशासन की रिश्वतखोरी और आतंक दिखाने के लिए पुलिस कॉन्स्टेबल यह गौण पात्र आता है। समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता और चिकित्सा क्षेत्र की लापरवाही को दिखाने के लिए अंधे भिखारी (फल विक्रेता खान चाचा) और उनकी पत्नी इन पात्रों की सृष्टि की है। तो ग्रामीन परिवेश में सुधार की क्रांति और जनता के समर्थन के लिए युवक और ग्रामवासी-1 और ग्रामवासी-2 इन गौण पात्रों की सृष्टि की है।

2.3.5 'काला पत्थर' में चित्रित ग्रामीण जीवन की समस्याएँ:

'काला पत्थर' यह नाटक ग्रामीण जीवन में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों ओर समस्याओं का यथार्थ चित्रण करता है। स्वयं नाटककार डॉ. सुरेश शुक्ल जी ने नाटक की भूमिका में लिखा है कि 'काला पत्थर' नाटक पूरी तरह ग्रामीण समस्याओं पर केंद्रित है। इसमें प्रमुख रूप से सूदखोर महाजन वर्ग द्वारा किसानों का अमानवीय शोषण, गरीब किसानों की ऋणग्रस्तता, प्रशासन का भ्रष्टाचार एवं अव्यवस्था, मानवीय मूल्यों की गिरावट, अंधविश्वास और धर्म के नाम पर पाखंड, स्त्री शोषण, चिकित्सा क्षेत्र की लापरवाही आदि समस्याओं को नाटककार डॉ. शुक्ल ने सजीवता के साथ उजागर किया है। उनका संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है-

I) सूदखोर महाजन वर्ग से किसानों का शोषण :

विवेच्य नाटक में कल्लू सेठ सूदखोर शोषक महाजन वर्ग का प्रतीक है। वह गरीबपुर के गाँव के किसानों की मजबूरी का फायदा उठाते हुए उन्हें ब्याज पर कर्ज देता है। कर्ज का भुगतान न होने पर वह उनकी जमीन-जायदाद, खेती हड़प लेता है। नाटक में किसान संतोषी और पलटू की संपत्ति को कल्लू सेठ हड़पने की कोशिश करता है। किसान संतोषी को पाँच हजार रुपए का कर्ज देता है और पाँच वर्ष के बाद वह रकम तीस हजार होने की बात कहकर वह उसकी जमीन हड़पने के लिए पंचों को रिश्वत खिलाकर पंचायत में घसीटता है। पलटू किसान की दो हजार रुपए की चांदी की पायल पर वह मात्र चार सौ रुपए का कर्ज ब्याज पर देता है और अपने बही खाते में उसका अंगूठा भी लेता है। कल्लू सेठ द्वारा रुपए न देने के कारण संतोषी की पत्नी इलाज के अभाव में मर जाती है। कर्ज के बदले में वह पुनिया से शादी करने की शर्त रखता है। इससे स्पष्ट होता है कि नाटक में शोषक महाजन वर्ग द्वारा किसानों को हर तरह से घेरकर उनका शोषण करने की समस्या दृष्टिगत होती है।

II) किसानों की ऋणग्रस्तता :

विवेच्य नाटक में किसान संतोषी और पलटू के द्वारा किसानों की ऋणग्रस्तता की समस्या को दिखाया है। किसान संतोषी अपनी बेटी पुनिया की शादी के लिए पाँच हजार रुपए का कर्ज लेता है। लेकिन पाँच वर्ष बाद वह कर्जा ब्याज के साथ तीस हजार रुपए होता है। इस कारण महाजन कल्लू सेठ उस जमीन को अपने कब्जे में करता है। किसान संतोष ऋणग्रस्तता से बेबस और लाचार हो जाता है। इस चरित्र से हमें प्रेमचंद के विख्यात उपन्यास 'गोदान' के 'होरी' की याद आती है। नाटककार ने किसानों की ऋणग्रस्तता और अकाल के कारण उसके बढते दुष्परिणामों को उजागर किया है।

III) प्रशासन का भ्रष्टाचार और अव्यवस्था :

विवेच्य नाटक में पुलिस प्रशासन, ग्राम पंचायत और जात पंचायत द्वारा भ्रष्टाचार और अव्यवस्था की समस्या को नाटककार ने उजागर किया है। पुलिस रिश्वत लेकर कल्लू सेठ जैसे महाजनों के काले कारनामों में साथ देती है। कल्लू सेठ गैरकानूनी तरीके से साहूकारी का व्यवसाय करता है और ब्याज के रूप में लोगों के

घर से बर्तन उठाता है। हर महीने वह एक ट्रक बर्तन शहर में जाकर बेचता है। पुलिस को हर दिवाली को 'त्योहारी' (उपहार) देकर अपने काले धंधों को अंजाम देता है। तो दूसरी ओर भ्रष्ट सरपंच द्वारा ग्राम पंचायत की अव्यवस्था को दिखाया है। सरपंच विकास के लिए आए सरकारी अनुदान राशी को हड़पने के कारण ही गाँव की सड़के अभी तक नहीं बनी। वह जाति पंचयात के पंचों को शराब और रुपए की रिश्वत देकर अपने पक्ष में फैसला देने के लिए दबाव बनाता है। अर्थात् जहाँ न्याय मिलने की व्यवस्था बनाई गई है, वहाँ भी गरीब को निष्पक्ष न्याय नहीं मिलता है।

IV) मानवीय मूल्यों में गिरावट :

विवेच्य नाटक में कुछ प्रसंगों द्वारा नाटककार ने ग्रामीण जीवन में ईमानदारी और नैतिकता जैसे मानवीय मूल्यों में गिरावट आने की समस्या को उजागर किया है। कल्लू सेठ किसान संतोषी को उसकी पत्नी के इलाज के लिए रूपए नहीं देता, जिससे इलाज के अभाव में उसकी मौत होती है। वह पाखंडी बाबाओं को खूब दान देता है, लेकिन अपाहिज अंधे लोगों कोई मदद नहीं करता। ग्रामवासी-२ तीर्थाटन के लिए साधु का भेस करके बिना टिकट निकाले रेल से यात्रा करता है। सरपंच अपने स्वार्थ के लिए कल्लू सेठ को किसान संतोषी की बेटी पुनिया से शादी करने की सलाह देकर मामला सेट करने के लिए मोटी रकम लेता है। यह सब बातें ग्रामीण जीवन में मानवीय मूल्यों में आई गिरावट की ओर संकेत करती हैं।

V) धर्म के नाम पर पाखंड और अंधविश्वास :

विवेच्य नाटक में डॉ. सुरेश शुक्ल जी ने अनेक दृश्यों में धर्म के क्षेत्र की कर्मकांड, अंधविश्वास, ढोंगी और पाखंडी साधु आदि समस्याओं को उजागर किया है। नाटक के प्रारंभिक दृश्यों में एक पाखंडी साधु कल्लू सेठ की कमजोरियों को जानकर उसपर काला साया मंडराने का भय दिखाता है। वह काले साये का प्रकोप खत्म करने और उसकी मनोकामना पूरी करने के लिए उससे अनुष्ठान के नाम पर इक्कीस सौ रुपए एंटता है। वह तीर्थस्थल पर जाकर एक्कीस सौ रुपए के अनुष्ठान करने पर काला साया दूर होने के साथ उसका दूसरा विवाह और पुत्र रत्न की प्राप्ति होने की बात कहता है। कल्लू सेठ इसपर अंधविश्वास रखकर उसे इक्कीस सौ रुपए देता है। वह पाखंडी साधु एक वर्ष के बाद फिर से आने की बात कहकर तीर्थस्थल जाने का झांसा देकर चला जाता है।

दूसरे एक उदाहरण में ग्रामवासी-2 साधु के वेश में बिना रेल टिकट निकाले सत्य साई बाबा के दर्शन करके आता है। साधु के वेश में बिना टिकट के ही तीर्थक्षेत्रों का दौरा होने और मुफ्त में रहने-खाने का प्रबंध होने की बात कहता है। सत्य साई बाबा के तीर्थस्थल से लाई भभूत को खाने से मन की हर इच्छा पूरी होने की बात वह ग्रामवासी-1 को बता देता है।

अन्य एक उदाहरण में गाँव का खोदवा चोर आचार्य बन जाता है। वह वाराणसी के किसी सिद्ध साधु से दीक्षा लेकर खुद को 'शंकरानंद' महाराज घोषित करता है। उसने वाराणसी से अपने साथ एक शिवलिंग लाकर गाँव के एक तालाब के किनारे स्थापित किया है और वहाँ पर मंदिर बनाने का संकल्प किया है। उसके गुंडे चेले गाँववालों को डरा-धमकाकर मंदिर बनवाने के नाम पर रंगदारी की तरह चंदा वसूलते हैं।

इस प्रकार डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' जी ने धर्म के क्षेत्र में पनप रही उपरोक्त विकृतियों को नाटक में उजागर किया है।

V) नारी जीवन की समस्या :

विवेच्य नाटक में नारी जीवन की विविध समस्याओं को नाटककार शुक्ल जी ने उजागर किया है। इसमें पहली समस्या बाल-विवाह की है, जिसमें नाटक की नायिका पुनिया का बिरादरी के डर से पाँच वर्ष की आयु में गौना तय किया जाता है और पंद्रह वर्ष की आयु में उसकी शादी की जाती है। दूसरी समस्या है अनमेल विवाह की जिसमें कल्लू सेठ रूपए के लालच में अपनी चार बेटियों का द्विजा विवाह (प्रौढ अनमेल विवाह) करता है। उनके पति उम्र में दूगने होने के कारण वह विधवा हो जाती हैं और वैधव्य जीवन जीने के लिए मजबूर हो जाती हैं। तिसरी समस्या दहेज की हैं जिसमें संतोषी किसान अपनी बेटी की शादी और दहेज का इंतजाम करने के लिए अपना खेत गिरवी रखकर पाँच हजार रुपए कर्ज लेता है। दूसरे एक उदाहरण में दहेज के लिए कल्लू सेठ की एक लड़की को ससुराल में प्रताड़ित किया जाता है, जिससे तंग आकर वह खुदकुशी करती है। चौथी समस्या है घरेलू हिंसा की, जिसमें पुनिया को उसका शराबी पति शराब पीकर रोज शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है। इतना ही नहीं तो बाद में अपनी अय्याशी पूरी करने के लिए वह पत्नी पुनिया को वेश्यावृत्ति करने के लिए मजबूर करता है। घरेलू हिंसा के कारण ही कल्लू सेठ की एक बेटी खुदकुशी कर लेती है। कल्लू सेठ की पत्नी विमला भी घर में पति की शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना का शिकार होती है। पाँचवी समस्या है पुरुषवादी मानसिकता की प्रताड़ना। इसमें पुनिया को पति उसे भोगवस्तु समझकर उसपर अपना अधिकार समझता है। तो कल्लू सेठ और सरपंच जैसे व्यक्ति पुनिया की बेबसी का फायदा उठाने के लिए उसपर गिद्ध नज़र रखते हैं। जात पंचायत के पुरुषवादी मानसिकता रखने वाले पंच भी पुनिया को बाल-विवाह करने के लिए मजबूर करते हैं और बाद में तलाक देने में पक्षपात करते हैं।

VI) चिकित्सा क्षेत्र की लापरवाही :

विवेच्य नाटक में नाटककार डॉ. सुरेश शुक्ल जी ने एक दृश्य में अंधे भिखारी का वर्णन किया है। वह भिखारी गरीबपुर गाँव का ही एक फल विक्रेता था जिसका नाम खान चाचा था। उसकी आँखों में मोतियाबिंदु हुआ था, इसलिए वह सरकारी अस्पताल में उसका ऑपरेशन करता है। लेकिन डॉक्टरों द्वारा ऑपरेशन के समय लापरवाही करने के कारण उनकी दोनों आँखों की रोशनी चली जाती है। इस-कारण उन्हें भिख माँगकर अपना गुजारा करना पड़ता है।

VII) नशाखोरी :

विवेच्य नाटक में शराबी दुरजन द्वारा नशाखोरी की समस्या को उजागर किया गया है। शराब के नशे के कारण परिवार कैसे उदध्वस्त होते हैं, इसकी ओर नाटकाकर ने ध्यान आकर्षित किया है। बिना सोचे-समझे शराबी व्यक्ति से शादी करने पर बेटियों को नरक-यातनाएँ सहनी पड़ती है, इसे भी नाटककार स्पष्ट करता है। दुरजन द्वारा मारपीट, गाली-गलौच करना, उसके जेवर और घर के बर्तन बेचना, पुनिया को

वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर करना, यह सब नशाखोरी का ही दुष्परिणाम होने की बात नाटककार स्पष्ट करते हैं। अत: स्पष्ट है कि नाटककार शुक्ल जी ने 'काला पत्थर' नाटक में ग्रामीण जीवन से जुड़ी उपरोक्त कई महत्त्वपूर्ण समस्याओं को यथार्थता के साथ उजागर किया है।

2.3.6 'काला पत्थर' नाटक की संवाद–योजना :

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' के नाटकों में सशक्त संवाद–योजना एक महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। 'काला पत्थर' नाटक की संवाद योजना को डॉ. शुक्ल के अन्य नाटकों की तरह सफल माना जाता है। ग्रामीण परिवेश और पात्रों के अनुकूल सीधे–साधे, सरल संवादों से नाटक के कथ्य एवं उद्देश्य की स्पष्टता बढी है। विवेच्य नाटक में ग्रामीण परिवेश की विसंगतियों और समस्याओं को पत्तों–रेशोंसहित स्पष्ट करने में संवाद–योजना तत्त्व को सफलता मिली है। विवेच्य नाटक में पात्रानुकूल संवाद, प्रश्नात्मक संवाद, व्यंग्यात्मक संवाद, लाक्षणिक संवाद, छोटे–बड़े संवाद आदि का बखूबी प्रयोग नाटककार ने किया है।

नाटक के प्रारंभिक दृश्य में शोषक वर्ग के प्रतिनिधि कल्लू सेठ महाजन और शोषित वर्ग के प्रतिनिधि किसान संतोषी के संवाद से ग्रामीण परिवेश के किसानों के शोषण की समस्या उजागर हुई है। पहले से ही कल्लू सेठ का ऋणग्रस्त होने वाले किसान संतोषी पत्नी के इलाज के लिए फिर से कर्जा माँगने आया है–

संतोषी : मेरी पत्नी की तबियत बहुत खराब है। उसके इलाज के लिये मुझे एक हजार रुपये की जरूरत है।

कल्लूसेठ : रेहन रखने के लिये क्या लाये हो?

संतोषी : अब तो रेहन रखने के लिये कुछ बचा नहीं है। जेवर, घर, जमीन सभी कुछ तो आपके पास रखा है।

कल्लू सेठ : मैं बिना कुछ रेहन रखे कर्ज नहीं देता। खैरात बाँटने के लिए थोड़े-ही बैठा हूँ। अब मैं और कुछ नहीं दे सकता। (पृ. 11)

स्पष्ट है कि इन संवादों से बेबस किसान, शोषक वृत्ति के महाजन इन पात्रों के अनुकूल संवाद से ग्रामीण परिवेश के किसानों की ऋणग्रस्तता समस्या कीउजागर होती है।

दूसरे एक उदाहरण में महाजन कल्लू सेठ और उसकी पत्नी विमला के संवाद से स्त्री समस्या और महाजन की स्वार्थी वृत्ति एवं पुत्र–मोह की पुरुषीवादी मानसिकता स्पष्ट होती है-

कल्लू सेठ : मुझे एक लड़का चाहिए था।

विमला : क्यों?

कल्लू सेठ : चिमा में आग देने के लिये। वंश आगे चलाने के लिये।

विमला : यह तो लड़कियों से भी हो सकता है।

कल्लू सेठ : लड़कियाँ पराया धन है।

विमला : यह तुम्हारा भ्रम है, पुरानी सोच है। लड़के और लड़की में कोई भेद नहीं है। तुम्हारी इसी मानसिकता ने घर को तबाह कर दिया।

कल्लू सेठ : क्या तबाह कर दिया?

विमला : ''तुमने चार लड़कियों का विवाह द्विजहा लड़कों से किया, जो लड़किया से दूनी उम्र के थे। यही कारण है कि तीन विधवा हुईं, तुम्हारे सिर पर बैठी, तुम्हें कोस रही हैं। चौथी लड़की जब ससुराल के अत्याचार नहीं सह पायी तो आत्महत्या कर ली। एक लड़की कुँवारी ही घर से नहीं भाग गयी। एक लड़की अभी भी कुँवारी बैठी है। दहेज न देना पड़े, इसीलिये तुमने यह जघन्य पाप किया।'' (पृ.12-13)

उपरोक्त पति-पत्नी के पात्रानुकूल एवं प्रश्नात्मक संवाद से अनमेल विवाह और पारिवारिक एवं दाम्पत्य जीवन की समस्या को नाटककार ने सटीकता से स्पष्ट किया है। पात्रानुकूल संवादों में कल्लू सेठ-पलटू किसान, सरपंच-कल्लू सेठ का संवाद, पुलिस-कल्लू सेठ का संवाद, पुनिया-दुरजन का संवाद, साधु-कल्लू सेठ का संवाद, ग्रामवासी 1 और 2 के संवाद आदि महत्त्वपूर्ण हैं। लाक्षणिक संवाद का यह उदाहरण दृष्टव्य है-

सरपंच : जय राम जी की कल्लू सेठ।

कल्लू सेठ : जय रामजी की सरपंच साहब! कैसे इस गरीब के यहाँ आने की कृपा की?

सरपंच : (साश्चर्य) गरीब के यहाँ! यदि आप गरीब हैं तो अमीर कौन हैं? इतने बड़े गाँव में आप ही तो एक महाजन सेठ हैं।

कल्लू सेठ : अब महाजन कहाँ रहे? सारी जमा-पूँजी तो डाकू ले गये। अब तो खर्च चलाना मुश्किल है।

सरपंच : यह तो कहने की बात है। हाथी कितना भी दुबलायेगा तो भैंसे के बराबर तो रह ही जायेगा। आपके पास पैसा है, तभी तो पटवारी से लेकर मंत्री तक को अपनी जेब में रखे हो। मुझसे कुछ छिपा नहीं है।

स्पष्ट है कि उपरोक्त लाक्षणिक संवाद से ग्रामीण परिवेश के धूर्त महाजन के चरित्र के लक्षण दृष्टिगत होते हैं। बहुत होने के बावजूद भी खुद को गरीब बताने का ढोंग दिखाई देता है।

ग्रामीवासी-1 और 2 के व्यंग्यात्मक संवाद के जरिए नाटककार डॉ. शुक्ल जी ने धर्म में पनप रही पाखंडी बाबाओं की वृत्ति पर प्रहार किया है-

ग्रामवासी 1: तीर्थ यात्रा के लिए पैसे कहाँ से जुटाते हो?

ग्रामवासी 2 : तीर्थयात्रा और पैसा! कैसी बात करते हो?

ग्रामवासी 1 : तो क्या पैदल यात्रा करते हो?

ग्रामवासी 2 : पैदल यात्रा ! रेलगाड़ी किसलिये है?

ग्रामवासी 1 : रेल गाड़ी! रेलगाड़ी का भाड़ा कहाँ से जुटाते हो?

ग्रामवासी 2 : यह भेद की बात है मेरे साथ चलो तो सब जान जाओगे। मेरे शिष्य बनो तो तुमको मालामाल कर दूँ।

ग्रामवासी 1 : मैं तो तुमको बड़ा सीधा समझता था।

ग्रामवासी 2 : अरे, इसमें सीधे-टेढे की क्या बात है? मुझे बस साधु का वेश बनाना पड़ता है। सब कुछ मेरे लिये फ्री मिल जाता है। पैसा मुझे चाहिए नहीं। क्या करूँगा पैसा?

इस तरह ग्रामवासी 1 और 2 के संवाद में धर्म में पनप रही ढोंगी-पाखंडी बाबा, धर्म के नाम पर अंधविश्वास आदि समस्याओं को नाटककार ने सटीकता के साथ उजागर किया है। स्पष्ट है कि विवेच्य नाटक की संवाद-योजना ग्रामीण परिवेश और वहाँ की समस्याओं को साकार करने में शत-प्रतिशत सफल हुई है।

2.3.7 'काला पत्थर' नाटक का कलापक्ष : रंगमंचीयता और अभिनेयता

डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' लिखित 'काला पत्थर' नाटक रंगमंच एवं अभिनेयता की दृष्टि से भी बेहद सराहनीय है। नाटक की भूमिका में खुद नाटककार ने जानकारी दी है कि उनके अठहत्तरवीं वर्षगाँठ के अवसर पर म.प्र. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति-भोपाल ने हिंदी भवन के मंच पर 22 मार्च, 2014 को 'काला पत्थर' नाटक का इरफान सौरभ के निर्देशन में मंचन किया था। इसके साथ ही भोपाल की पल्लव नाट्य संस्था ने भी इस नाटक का प्रथम मंचन किया था, जिसे दर्शकों ने बहुत ही सराया था। अत: नाटक का कलापक्ष की दृष्टि से विवेचन इस प्रकार है-

※ 'काला पत्थर' नाटक में रंगमंचीयता:

विवेच्य नाटक ग्रामीण परिवेश की समस्याओं को केंद्र में रखकर लिखा गया है। नाटक में शोषक वर्ग के कल्लू सेठ महाजन और शोषित वर्ग के संतोषी किसान ये दो प्रमुख पात्र हैं, जो उच्च वर्ग और निम्न वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस कारण नाटककार ने रंगमंच की दृष्टि से मंच को दो भागों में विभाजित किया है। एक ओर कल्लू सेठ के मकान का बाहरी कमरा है, तो दूसरी ओर संतोषी किसान के झोपड़ीनुमा कच्चे मकान का बाहरी दरवाजा है। कल्लू सेठ के मकान के दृश्यों को अमीर और साहूकार के जीवन स्तर के अनुसार बनाया है। तो किसान संतोषी की आर्थिक बदहाली के कारण असुविधाजनक माहौल साकार करने के लिए टूटे-फूटे सामान रखा है। ग्रामीण परिवेश में उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग के जीवन स्तर, सामाजिक और आर्थिक विषमता दिखाने के लिए प्रकाश वृत्त के आवर्तनों के संकेत दिए गए हैं। नाटक में आ रहे एक के बाद एक दृश्यों को मंच पर प्रकाश और अंध:कार के माध्यम से दृश्य-परिवर्तन का संकेत दिया गया है।

नाटक में नाटककार ने तीन-चार जगहों पर ही दृश्य-परिवर्तन के संकेत दिए हैं, लेकिन प्रकाश, परिवर्तन के द्वारा दर्शक दृश्य बदलने के संकेतों को समझ जाते हैं।

नाटक में नट-नटी और ग्राम सुधार समिति के युवकों द्वारा गाए गीतों से भी रंगमंच का प्रभाव बढा है। दृश्य-पविर्तन के बाद नट-नटी आकर गीत के माध्यम से कहानी सुनाते हैं, जिससे दर्शक के मन में रंगमंच पर आगे क्या होगा, इसे लेकर कौतुहल बढता है। नट-नटी द्वारा प्रारंभ में गरीबपुर गाँव के एक बदहाल किसान की कहानी सुनाने के गीत के बाद किसान संतोषी के घर के सामने शव और वहाँ पर विलाप से रंगमंच दर्शकों पर अपना प्रभाव छोड़ता है। नट-नटी और युवकों के प्रभात गीतों द्वारा ग्रामीण जीवन की विसंगतियों और नैतिक पतन से जुड़ी अनेक समस्याओं की ओर निर्देश किया गया है। दृश्यों के अनुसार ध्वनि योजना का भी रंगमंच पर प्रयोग किया है। प्रकाश-योजना और ध्वनि-योजना के सम्यक प्रयोग से दृश्यों का प्रभाव बढाया गया है। दृश्यों के अनुसार नेपथ्य में उद्घोष, विलाप का स्वर, समवेत स्वर, दूर से आती गीत की आवाज, चिमटा बजाते हुए साधु का प्रवेश आदि ध्वनि-विषयक निर्देशों से नाटक का तकनीकी पक्ष सबल हुआ है। कुल मिलाकर देखे तो रंगमंच की दृष्टि से 'काला पत्थर' यह नाटक सफल हुआ है।

※ 'काला पत्थर' में अभिनेयता:

'काला पत्थर' नाटक में अभिनेयता के लिए बहुत ज्यादा अवसर है। ग्रामीण परिवेश को साकार करने के लिए पात्रों की अनुकूल वेशभूषा के संकेत नाटक में मिलते हैं। नाटककार शुक्ल जी ने पात्रों के अभिनय मुद्रा के संदर्भ में आवश्यक निर्देश दिए हैं, जिससे नाटक की पूरी परिकल्पना अभिनेता और दर्शकों के मन में साकार हो जाती है। डॉ. शुक्ल जी ने नाट्य-निर्देशन के गहरे अनुभव और रंगमंच की सूक्ष्म जानकारी पर यह काबिलियत प्राप्त की है। उदास-सा, हकबका-कर, साश्चर्य, सोचते हुए, भाव विभोर होकर, एकटक देखते रहना, हड़बड़ा-कर, घबरा-कर, उपेक्षा-से, एकाग्र होकर कुछ सोचती है, आँख बंद करके सोचती है, गला भर आता है, फफकने लगती है, सेठ चौंकता है आदि अभिनय निर्देश पात्रों के लिए सहज अभिनेय ही सिद्ध हुए हैं। इस कारण अभिनेता को अपनी कला प्रदर्शित करने का भरपूर अवसर प्राप्त हुआ है।

नाटक में महाजन कल्लू सेठ, किसान संतोषी, दुरजन यह तीन प्रमुख पात्र हैं, जो अपने-अपने किरदारों को सफलतापूर्वक न्याय देते हैं। महाजन कल्लू सेठ साहूकारों की स्वार्थी, निर्दयी, कंजूष प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है। उसकी वेशभूषा और उसके हुलिए से पाठकों के घृणा मन में पैदा होती है, लेकिन उसके संवाद एवं अभिनय से दर्शक उससे नफरत करते हैं। किसान संतोषी की दयनीयता एवं मजबूरी के प्रति पाठक अपनी संवेदना रखते हैं। तो शराबी दुरजन के अभिनय से दर्शक हँसी और कभी-कभी गुस्से से भर जाते हैं। नाटक की प्रमुख महिला पात्र पुनिया एक बेबस नारी पात्र का अभिनय करती है। लेकिन नाटक में अनेक जगहों पर उसके स्वगत से पाठकों को सरपंच एवं कल्लू सेठ के षड्यंत्र की जानकारी मिलती है। नाटक के प्रारंभ में पुनिया का माँ के शव पर विलाप करना और अंत में पंचायत के सामने पत्थर उठाने के समय स्वगतों से पुनिया का अभिनय पक्ष प्रबल बनता है। नाटक में प्रभात अपने अभिनय के जरिए एक समझदार

और प्रगतिशील विचारों के युवक का परिचय देता है। नट-नटी और युवकों के गीत और मुद्रा अभिनय से नाटक की नाट्यानूभुति प्रबल बनती है। नाटक के कई दृश्यों में एक के बाद एक आई समस्याओं, जैसे धर्म की समस्या में साधु बाबा, आर्थिक विषमता की समस्या में पलटू किसान और भिखारी-भिखारीन, ग्रामवासी 1 और 2 की धर्म के कर्मकांड की समस्या, पंचायत में पुनिया के तलाक के मामले पर बहस आदि प्रसंग अभिनेयता की दृष्टि से बेहद कारगर सिद्ध हुए हैं।

2.3.8 'काला पत्थर' का उद्देश्य:

नाट्य-लेखन एवं उनके मंचन का प्रधान उद्देश्य समाज-प्रबोधन एवं जन-जागरण रहा है। हर नाट्य-कृति इसी उद्देश्य के साथ चलती है। डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' जी के सभी नाटक सोद्देश्य है। 'काला पत्थर' नाटक-लेखन के पीछे ग्रामीण परिवेश में पनप रही विभिन्न सामाजिक विसंगतियों एवं विकृतियों का पर्दापाश करने का प्रधान उद्देश्य रहा है। नाटक के केंद्र में ग्रामीण जीवन से जुड़ी विभिन्न सामाजिक समस्याओं को नाटककार शुक्ल जी ने बड़ी सूक्ष्मता एवं संवेदना के साथ उजागर किया है। विवेच्य नाटक के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य इस प्रकार हैं-

1) ग्रामीण जीवन में पनप रही विसंगतियों एवं विकृत समस्याओं को उजागर करना।
2) सूदखोर महाजन के शोषण के कुचक्र में फँसे किसानों की दुर्दुशा से अवगत कराना।
3) पुरुषवादी मानसिकता और दकियानुसी रूढी-परंपरा के कारण बाल-विवाह, अनमेल-विवाह, दहेज-प्रथा, अंतरजार्तीय विवाह का विरोध जैसी समस्या और उनके दुष्परिणामों से अवगत कराना।
4) ग्रामपंचायत, पुलिस प्रशासन, जात पंचायत में पनप रहे भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और पक्षपाती न्याय से लड़खड़ाती प्रशासन व्यवस्था को स्पष्ट करना।
5) धर्म के नाम पर पनप रहे अंधविश्वास, कर्मकांड, पाखंडी एवं ढोंगी बाबाओं की कुप्रवृत्तियों से पर्दाफाश करना।
6) सरकारी चिकित्सा क्षेत्रों में गरीब मरीजों की शल्यक्रिया में की जाने वाली डॉक्टरों की लापरवाही से आगाह करना।
7) नशाखोरी और पुरुषी मानसिकता के कारण बिखरते परिवार एवं दाम्पत्य जीवन की समस्याओं से परिचित करना।
8) गरीबी, आर्थिक विषमता, अकाल, ऋणग्रस्तता आदि से जूझ रहे किसानों के जीवन से परिचित करना।
9) पुरूषवादी मानसिकता के कारण देहात की नारियों के शोषण को स्पष्ट करना।
10) आजादी के बाद भी कुछ देहाती इलाकों में जाति पंचायत के नाम पर स्त्री-जीवन के साथ खिलवाड़ करने की प्रवृत्ति को उजागर करना।

11) संवेदना, दया, प्रेम, करूणा, भाईचारा, नैतिकता और ईमानदारी जैसे मानवीय मूल्यों में ग्रामीण परिवेश में बड़ी तेजी से आ रही गिरावट को उजागर करना।

12) देश की युवा पीढी को समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के खिलाफ पूरी निष्ठा के साथ खड़ा करने की प्रेरणा निर्माण करना।

2.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) बहुविकल्पी प्रश्न :

1) डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का जन्म 8 फरवरी, ... को राजापुर गढेवा (उ.प्र.) में हुआ।

अ) 1933 ई. ब) 1934 ई. क) 1935 ई. ड) 1936 ई.

2) हिंदी नाट्य-साहित्य में डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' .... नाटककार के रुप में मशहूर हैं।

अ) नरमवादी ब) उग्रतावादी क) प्रयोगशील ड) प्रतीकवादी

3) डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' ने अपने जीवन काल में करीब .... लिखे हैं।

अ) 22 ब) 12 क) 32 ड) 13

4) डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' के एकमात्र उपन्यास का नाम............ है।

अ) हसीनाबाद ब) रेखना मेरी जान

क) बिन पंख की सारिका ड) देवकी

5) डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' के आत्मकथ्य का नाम............ है।

अ) नीड़ का निर्माण ब) कलम साक्षी है

क) कलम का सिपाही ड) मेरा जीवन

6) 'काला पत्थर' यह नाटक .... को प्रकाशित हुआ है।

अ) 2013 ई. ब) 2014 ई. क) 2015 ई. ड) 2016 ई.

7) 'काला पत्थर' नाटक पूरी तरह .... पर केंद्रित है।

अ) ग्रामीण समस्या ब) नारी समस्या क) दलित समस्या ड) आदिवासी समस्या

8) 'काला पत्थर' नाटक का पहला मंचन .... ने किया।

अ) हिंदी नाट्य संस्था ब) मनोयोग नाट्य संस्था

क) पल्लव नाट्य संस्था ड) मनोरंजन नाट्य संस्था

9) 'काला पत्थर' नाटक में महाजन वर्ग का प्रतिनिधि पात्र ....है।

अ) डाबर सेठ ब) बिल्लू सेठ क) कल्लू सेठ ड) राम सेठ

10) 'काला पत्थर' नाटक में शोषित किसान वर्ग का प्रतिनिधि पात्र............ है।

अ) संतोषी ब) माधव क) प्रभात ड) दुरजन

11) 'काला पत्थर' नाटक में प्रमुख नारी पात्र............है।

अ) पुनिया ब) विमला क) कमला ड) सुरेखा

12) 'काला पत्थर' नाटक में पुनिया के प्रेमी का नाम............है।

अ) रमेश ब) दुरजन क) प्रभात ड) राम

13) 'काला पत्थर' नाटक में किसान संतोषी पत्नी के इलाज के लिए कल्लू सेठ से............रुपये का कर्ज माँगता है।

अ) पाँच हजार ब) एक हजार क) दो हजार ड) तीन हजार

14) 'काला पत्थर' नाटक में किसान संतोषी ने बेटी के गौने लिए कल्लू सेठ से .... रुपये का कर्जा लिया था।

अ) एक हजार ब) दस हजार क) पाँच हजार ड) तीन हजार

15) संतोषी किसान की पत्नी को ....बीमारी थी।

अ) डायबिटीज ब) लकवे की क) जोड़ो की ड) पेचीस की

16) पुनिया के शराबी पति का नाम............ है।

अ) दुरजन ब) सज्जन क) दुर्योधन ड) श्रीधन

17) जात पंचायत के पास पुनिया ने .... की अर्जी दे रखी थी।

अ) दहेज प्रताड़ना ब) घरेलू हिंसा क) तलाक ड) बाल विवाह

18) पुनिया को तलाक मिलने के बाद .... पुत्र-प्राप्ति के लिए उससे शादी करना चाहता था।

अ) दुरजन ब) प्रभात क) कल्लू सेठ ड) सरपंच

19) कल्लू सेठ को पुनिया से पुत्रप्राप्ति के लिए दूसरी शादी करने की सलाह............देता है।

अ) सरपंच ब) प्रभात क) संतोषी ड) पलटू

20) पंचायत में पत्थर उठाने की परीक्षा में अंत में पुनिया .... पत्थर उठाकर सभी को दिखाती है।

अ) सफेद　　　ब) काला　　　क) हरा　　　ड) नीला

21) 'काला पत्थर' नाटक में........... गाँव के ग्रामीण समस्याओं का वर्णन आया है।

अ) अमीरपुर　　　ब) बदलापुर　　　क) गरीबपुर　　　ड) कानपुर

22) गरीबपुर का खोदवा चोर वाराणसी से दीक्षा लेकर .... धारण कर साधु बनता है।

अ) शंकरानंद　　　ब) भावानंद　　　क) सूर्यानंद　　　ड) भिमानंद

23) .... को मोतियाबिंदु का ऑपरेशन गलत होने के कारण अंधा होना पड़ता है।

अ) खान चाचा　　　ब) रहीम चाचा　　　क) महेबूब चाचा　　　ड) करीम चाचा

24) कल्लू सेठ की पत्नी का नाम .... है।

अ) विमला　　　ब) कमला　　　क) सरला　　　ड) पुनिया

25) गरीबपुर के शोषण और भ्रष्टाचार के खिलाफ गाँव के युवकों ने .... समिति बनाई है।

अ) जागरण　　　ब) प्रबोधन　　　क) ग्राम सुधार　　　ड) शहर सुधार

ब) उचित मिलान कीजिए :

1) किसान संतोषी	i) फल विक्रेता खान चाचा
2) पुनिया का शराबी पति	ii) पाँच हजार रुपए का कर्जा
3) कल्लू सेठ की पत्नी	iii) प्रभात
4) प्रगतिशील विचारों का युवक	iv) दुरजन
5) अंधा भिखारी	v) विमला

क) सही–गलत :

1) किसान संतोषी ने कल्लू सेठ से तीस हजार रुपए का कर्जा लिया है।
2) पुनिया की शादी उसके प्रेमी प्रभात से होती है।
3) पुनिया का पति शराब पीकर उसे पीटता था।
4) सरपंच कल्लू सेठ को पुनिया से पुत्रप्राप्ति के लिए दूसरी शादी करने सलाह देता है।
5) कल्लू सेठ ने रूपए के लालच में अपने चार लड़कियों की प्रौढ वरों से शादी की थी।
6) कल्लू की पत्नी कल्लू सेठ की तरह निर्दयी और कंजूष थी।
7) गरीबपुर की जात पंचायत के पंच निष्पक्ष न्याय करते थे।

8) काला-सफेद पत्थर चुनने की परीक्षा में पुनिया हार जाती है।

9) खोदवा चोर 'शंकरानंद' नाम धारण करके साधु बन जाता है।

10) किसान संतोषी की पत्नी लकवे की बीमारी से मर जाती है।

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- ✻ पाँव लागी - प्रणाम करना
- ✻ गौना - शादी, विवाह
- ✻ रेहन - गिरवी रखने का सामान
- ✻ ऊसर - बंजर
- ✻ महाजन - साहूकारी का व्यवसाय करने वाला
- ✻ पितर - पूर्वज
- ✻ तिरिया चरित्र - कलंकित या व्याभिचारी चरित्र
- ✻ संकट मोचन - संकट में मदद करने वाला
- ✻ वाजीकरण - वशीकरण
- ✻ गूमड़ - गाँठ
- ✻ मुहावरे: ✻खून चूसना - शोषण करना।, ✻मुँह पर लगाम लगाना - मौन रहना।, ✻पारा भड़कना - क्रोधित होना।, ✻दिमाग चढ जाना - अधिकार दिखाना, ✻भौचक तमाशा देखना- आश्चर्य चकित होकर देखना, ✻ डोरे डालना - मोहजाल में फँसाने का प्रयत्न करना। ✻ त्योहारी लेना- रिश्वत लेना, ✻ काला-चिट्ठा खोलना - पर्दाफाश करना, ✻ पिंड छुड़ाना - मुसीबत से पीछा छुड़ाना।
- ✻ कहावतें :
- ✻ 'सूम का धन तो शैतान ही खाता है'- गलत तरीके से कमाया धन रास नहीं आता।
- ✻ मियाँ की जूती, मियाँ का सर - अपनों के हाथों के किए से लाचार होना।
- ✻ आँख के अंधे गाँठ के पूरे - ऐसा मूर्ख व्यक्ति जो धनवान हो।
- ✻ आगे नाथ, न पीछे पगहा - जब किसी व्यक्ति पर किसी चीज की जिम्मेदारी नहीं होना।
- ✻ साठा सो पाठा - ६० वर्ष की आयु में भी युवा होना।
- ✻ यह मुँह, मसूर की दाल - योग्यता से अधिक पाने की इच्छा करना।
- ✻ देर आये, दुरूस्त आये- औरों से तुलना करके सही समय पर, सही तैयारी के साथ आना।

2.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर:

अ) वस्तुनिष्ठ के उत्तर :

1) 1636 ई.	2) प्रयोगशील	3) 22	4) बिन पंख की सारिका	
5) कलम साक्षी है	6) 2014 ई.	7) ग्रामीण समस्या	8) पल्लव नाट्य संस्था	
9) कल्लू सेठ		10) संतोषी	11) पुनिया	12) प्रभात
13) एक हजार	14) पाँच हजार	15) लकवे की	16) दुरजन	
17) तलाक	18) कल्लू सेठ	19) सरपंच	20) काला	
21) गरीबपुर	22) शंकरानंद	23) खान चाचा	24) विमला	
25) ग्राम सुधार				

ब) उचित मिलान के उत्तर

1) किसान संतोषी : पाँच हजार रुपए का कर्जा

2) पुनिया का शराबी पति : दुरजन

3) कल्लू सेठ की पत्नी : विमला

4) प्रगतिशील विचारों का युवक : प्रभात

5) अंधा भिखारी : फल विक्रेता खान चाचा

2.7 सारांश :

1) हिंदी नाटकों के उद्भव एवं विकास में भारतेंदु एवं उनके समकालीन नाटककारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। नाटकों को जनजागरण के साथ रंगमंच से जोड़ने का सर्वप्रथम कार्य भारतेंदुयुगीन नाटककारों ने ही किया। जगदीश चंद्र माथुर, मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, लक्ष्मीनारायण लाल ने हिंदी नाट्य-लेखन और रंगमंच को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

2) समकालीन प्रयोगशील नाटकों एवं उनके व्यापक सामाजिक प्रभाव की दृष्टि से डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' जी का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है। समकालीन युग के बदलते परिवेश एवं मानवी जीवन का यथार्थ अंकन डॉ. शुक्ल के नाटकों में दृष्टिगत होता है। उन्होंने करीब 22 नाटक लिखकर हिंदी के समकालीन नाट्य-साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

3) डॉ. सुरेश शुकल 'चंद्र' का जन्म 8 फरवरी, 1936 ई. राजापुर गढेवा, उन्नाव (उ.प्र.) में हुआ है। उनके बचपन में ही माता-पिता का स्वर्गवास होने के कारण दादाजी और चाचाओं ने इनका पालन-पोषण किया। बड़े संघर्ष के बाद उन्होंने एम.ए., पीएच्.डी. की पढाई की। महाविद्यालय में स्नातक और

स्नातकोत्तर कक्षाओं के अध्यापन का कार्य किया और साथ-साथ हिंदी साहित्य-लेखन से जुड़े रहे। डॉ. शुक्ल बहुआयामी व्यक्तित्व के थे- एक कुशल प्राध्यापक, कुशल नाटककार, कुशल नाट्य-रंगकर्मी, निर्देशक, कुशल लेखक, कुशल वक्ता, कुशल शोध-निर्देशक, मानवतावादी विचारों के समर्थक आदि उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलु थे। डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' का 16 दिसंबर, 2021 को भोपाल (मध्य प्रदेश) में स्थित निवासस्थान में लंबी बीमारी के चलते निधन हुआ।

4) डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' जी ने 22 नाटकों के साथ एकांकी-संग्रह, उपन्यास, कविता, आत्मकथ्य, शोध एवं समीक्षा, बाल-साहित्य आदि साहित्य विधाओं में अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है। उनकी साहित्य सेवा के लिए उन्हें साहित्य अकादमी, राष्ट्रीय हिंद सेवा सम्मान, नाट्यभूषण आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

5) डॉ. सुरेश शुक्ल लिखित 'काला पत्थर' यह लघु नाटक 2014 ई. को अमन प्रकाशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित हुआ है। नाटककार ने दैनिक भास्कर भोपाल के 'मैनेजमेंट फंडा' स्तंभ में प्रकाशित एक लोककथा से प्रभावित होकर 'काला पत्थर' नाटक लिखने की प्रेरणा ग्रहण की थी। यह नाटक अप्रैल 2012 ई. में लिखकर पूरा हुआ था, लेकिन किसी कारणवश वह प्रकाशित नहीं हो पाया। बाद में डॉ. शुक्ल ने समसामयिकता के अनुसार इसमें संशोधन करके 2014 ई. में इसे प्रकाशित किया। विवेच्य नाटक पूर्ण रूप से ग्रामीण परिवेश की समस्याओं को केंद्र में रखकर लिखा गया है।

6) 'काला पत्थर' यह नाटक गरीबपुर नाम के गाँव की विसंगतियों पर आधारित नाटक है। इस नाटक में प्रमुख सात पात्र है। इनमें कल्लू सेठ, संतोषी, दुरजन और प्रभात मुख्य पात्र हैं तो विमला, पलटू, सरपंच सहायक पात्र हैं। नाटक के गौण पात्रों में नट, नटी, सरपंच, पंच-1, पंच-2, पुलिसवाला, ग्रामवासी-1, ग्रामवासी-2, साधु, भिखारी, भिखारिनी, युवक आदि आते हैं।

7) 'काला पत्थर' यह नाटक ग्रामीण जीवन में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों ओर समस्याओं का यथार्थ चित्रण करता है। इसमें प्रमुख रूप से सूदखोर महाजन वर्ग द्वारा किसानों का अमानवीय शोषण, गरीब किसानों की ऋणग्रस्तता, प्रशासन का भ्रष्टाचार एवं अव्यवस्था, मानवीय मूल्यों की गिरावट, अंधविश्वास और धर्म के नाम पर पाखंड, स्त्री-शोषण, चिकित्सा क्षेत्र की लापरवाही आदि समस्याओं को नाटककार डॉ. शुक्ल ने सजीवता के साथ उजागर किया है।

8) डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' के नाटकों में सशक्त संवाद-योजना एक महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है। 'काला पत्थर' नाटक की संवाद योजना को डॉ. शुक्ल के अन्य नाटकों की तरह सफल माना जाता है। ग्रामीण परिवेश और पात्रों के अनुकूल सीधे-साधे, सरल संवादों से नाटक के कथ्य एवं उद्देश्य की स्पष्टता बढी है। विवेच्य नाटक में ग्रामीण परिवेश की विसंगतियों और समस्याओं को पत्तों-रेशोंसहित स्पष्ट करने में संवाद-योजना तत्त्व को सफलता मिली है। विवेच्य नाटक में पात्रानुकूल संवाद, प्रश्नात्मक संवाद, व्यंग्यात्मक संवाद, लाक्षणिक संवाद, छोटे-बड़े संवाद आदि का बखूबी प्रयोग नाटककार ने किया है।

9) रंगमंचयीता और अभिनेयता की दृष्टि से 'काला पत्थर' नाटक बेहद सफल नाट्य-कृति है। रंगमंच पर अमीर वर्ग और गरीब वर्ग के अनुकूल दो भागों में मंच विभाजित किया गया है। नेपथ्य में दृश्यों के अनुसार समुचित प्रकाश एवं ध्वनि योजना के संमिश्रण से रंगमच पर नाट्यानुकूलता एवं प्रभाव को बढाया गया है। नाटककार ने अभिनय के लिए सूक्ष्म संकेत दिए हैं जिससे कलाकार को अपनी अभिनय-कला दिखाने का पूरा अवसर है। नाटक के विभिन्न दृश्यों में अभिनेयता के लिए बहुत ज्यादा अवसर दिया गया है।

10) 'काला पत्थर' यह नाटक ग्रामीण जीवन की विकृतियाँ, विसंगतियाँ एवं समस्याओं को उजागर करने के उद्देश्य लिखा गया है। ग्रामीण जीवन में किसानों की बदहाली, महाजनों के अत्याचार, बाल-विवाह, दहेज-उत्पीड़न, अनमेल-विवाह, भ्रष्टाचार, धर्म के नाम पर पाखंड, कर्मकांड, अंधविश्वास, आर्थिक एवं सामाजिक विषमता, चिकित्सा क्षेत्र की लापरवाही, प्रशासन-व्यवस्था में भ्रष्टाचार और अव्यवस्था आदि समस्याओं के दुष्परिणामों को दिखाना प्रधान उद्देश्य हैं।

2.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी :

1) 'काला पत्थर' नाटक के किसान संतोषी का चरित्र-चित्रण कीजिए।
2) 'काला पत्थर' नाटक के महाजन कल्लू सेठ का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3) 'काला पत्थर' नाटक की पुनिया का चरित्र-चित्रण कीजिए।
4) 'काला पत्थर' नाटक के प्रभात का चरित्र-चित्रण कीजिए।
5) 'काला पत्थर' नाटक के दुरजन का चरित्र-चित्रण कीजिए।
6) 'काला पत्थर' नाटक की विमला का चरित्र-चित्रण कीजिए।
7) 'काला पत्थर' नाटक में नारी-जीवन की समस्या स्पष्ट कीजिए।
8) 'काला पत्थर' नाटक में किसान-जीवन की समस्या स्पष्ट कीजिए।
9) 'काला पत्थर' नाटक में धर्म के क्षेत्र से जुड़ी समस्या स्पष्ट कीजिए।
10) 'काला पत्थर' नाटक की रंगमंचीय विशेषता स्पष्ट कीजिए।
11) 'काला पत्थर' नाटक की अभिनेयता की विशेषता स्पष्ट कीजिए।
12) 'काला पत्थर' नाटक के उद्देश्य लिखिए।

ब) दीर्घोत्तरी

1) 'काला पत्थर' नाटक पूरी तरह ग्रामीण समस्याओं पर केंद्रित है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।
2) 'काला पत्थर' नाटक के कथ्य एवं शिल्प की समीक्षा कीजिए।

3) 'कल्लू सेठ ग्रामीण जीवन के शोषक महाजन वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

4) 'किसान संतोषी भारत के ऋणग्रस्त किसानों का प्रतिनिधि पात्र है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

5) 'काला पत्थर' नाटक के रंगमंचीयता और अभिनेयता इन कला-तत्त्वों की समीक्षा कीजिए।

2.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) ग्रामीण जीवन पर आधारित अन्य हिंदी नाटककारों के विख्यात नाटकों की सूची बनाए।

2) 'काला पत्थर' नाटक का हिंदी में अनुवाद करने की कोशिश कीजिए।

3) अपनी कक्षा के विद्यार्थियों की सहायता से 'काला पत्थर' नाटक का मंचन कीजिए।

4) डॉ. शुक्ल के समकालीन अन्य नाटककारों की जानकारी लीजिए।

5) डॉ. शुक्ल के अन्य नाटकों को पढिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) डॉ. प्रमोद परदेशी, 'डॉ. सुरेश शुक्ल 'चंद्र' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व', जी.३, नित्या पब्लिकेशन, भोपाल (म.प्र.), प्र.सं. 2021

2) डॉ. आभा त्रिवेदी, 'साठोत्तरी रंगमंचीय हिंदी नाटकों का अनुशीलन, शिवा पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स, बदलापुर, (म.प्र.), सं. 1996

3) फांस - संजीव

4) गोदान - प्रेमचंद

❑❑❑

इकाई–3
माटी की मूरतें (रेखाचित्र–संग्रह)

अनुक्रम

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवेचन

3.3.1 रामवृक्ष बेनीपुरी का जीवन-परिचय, कृतित्व, रेखाचित्रकार रामवृक्ष बेनीपुरी

3.3.2 'माटी की मूरतें' परिचय

3.3.3 'माटी की मूरतें' का आशय

3.3.4 'माटी की मूरतें' में चित्रित समस्याएँ

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न -

3.5 पारिभाषिक शब्द - शब्दार्थ

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य -

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश –

प्रस्तुत इकाई पढने के उपरांत आप

1. रेखाचित्र विधा से परिचित हो जाएँगे।
2. हिंदी रेखाचित्र विधा में रामवृक्ष बेनीपुरी के महत्व से परिचित हो जाएँगे।
3. रामवृक्ष बेनीपुरी जी के रेखाचित्र-साहित्य की विशेषताओं से परिचित हो जाएँगे।
4. रामवृक्ष बेनीपुरी जी के रेखाचित्रों में विषयगत वैविध्य और शैली से अवगत हो जाएँगे।
5. रामवृक्ष बेनीपुरी की भाषा की जबरदस्त क्षमता से परिचित हो जाएँगे।

3.2 प्रस्तावना –

रेखाचित्र विधा का उद्भव आधुनिक काल में भारतेंदु युग से माना जाता है। यह विधा हिंदी में पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव-स्वरुप प्रवाहित हुई है। हिंदी में रेखाचित्र का जनक शिकार साहित्य के प्रसिध्द लेखक 'पं. श्रीराम शर्मा' को माना जाता है। हिंदी के प्रसिध्द रेखाचित्रकार महादेवी वर्मा (स्मृति की रेखाएँ), बनारसीदास चतुर्वेदी (रेखाचित्र), विनयमोहन शर्मा (रेखा और रंग). प्रकाशचंद्र गुप्त (नये स्केच) आदि उल्लेखित हैं।

हिंदी रेखाचित्र विधा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा है। 1939 में 'हंस का रेखाचित्रांक' प्रसिध्द हुआ। इसका संपादन प्रेमचंद के पुत्र प्रतापराय ने किया था। 1946 में 'मधुकर' रेखाचित्रांक प्रकाशित हुआ। इसका संपादन पं. बनारसीदास चतुर्वेदी जी ने किया। हिंदी रेखाचित्र विधा इसी तरह विकसित होती रही है।

रेखाचित्र में व्यक्तित्व को समग्रता और कुछ स्थिर रुप में देखने की चेष्टा होती है। इसमें आकृति का भेद कर अंत: प्रकृति का अंकन किया जाता है। अपनी स्थिर वृत्ति के कारण रेखाचित्र की कला अपेक्षतया सीमित क्षेत्र में रहती है। साथ ही मानव व्यक्तित्व के संप्रेषण में उसकी पहुँच स्वभावत: अधिक लक्षित होती है। रेखाचित्र की विशेषता यह है कि इसमें सामान्य व्यक्तित्व या आम जनता के व्यक्तित्व का चित्रण किया जाता है। जो व्यक्ति या प्राणी या वस्तु अपनी विशिष्टताओं के कारण हमारे ऊपर अपनी गहरी छाप छोड देते हैं, उसीका अंकन रेखाचित्र में किया जाता है। जिसमें निजीपन, कहानी-की-सी जीवंतता और रोचकता होती है। रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने व्यक्ति-चित्रण को प्रधानता देकर सामान्य जन, जो ग्रामीण जीवन जीनेवाले, खेती, मजुरी से संबध्द है, उनका रेखाचित्र खिंचा है। सामान्य कहे जानेवाले व्यक्तियों में भी जीवन को प्रगट करने वाली शक्तियों की खोज उन्होंने की है। वास्तविक अनुभूति पर आधारित होने से रेखाचित्रों की विषय-वस्तु में सत्यता का गुण आया है। इन्हीं विशेषताओं से युक्त 'माटी की मूरतें' रेखाचित्र-संग्रह को उल्लेखित किया जाता है।

3.3 विषय विवरण :-

3.3.1 रामवृक्ष बेनीपुरी का परिचय :-

जन्म –

रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार के मुझफ्फरपुर जिले में बेनीपुर गाँव में हुआ था। माता-पिता का प्रेम उन्हें बचपन के चार-पाँच साल तक ही प्राप्त हुआ। चार-पाँच साल में ही माता-पिता की मृत्यु के पश्चात मामा उन्हें वंशीपचडा ले गए। वहीं पर मामा के पास वे 15 वर्ष तक रहें। कुछ तो लाड-प्यार से और कुछ मौसी के प्रेम से उनमें नटखटपन आ गया था।

शिक्षा – (साधारण किसान परिवार में बेनीपुरी जी का बचपन गुजरा। आपकी आरंभिक शिक्षा ननिहाल वंशीपचडा तथा बेनीपुरी में हुई। आप साहित्य विशारद तक पढे। काव्य-लेखन से बेनीपुरी जी की साहित्यिक यात्रा का श्रीगणेशा हुआ।

साहित्यकार – (हिंदी साहित्य के अंतर्गत उनकी लिखी 75 रचनाएँ प्राप्त होती हैं। साहित्य-कृतियाँ ही उनकी कीर्तिस्तंभ हैं। बाल-साहित्य, रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध, नाटक, यात्रावर्णन, कहानी, उपन्यास, पत्रकारिता आदि अनेक विधाओं में उनका योगदान रहा है। साहित्य-सर्जना में उनकी प्रतिभा जितनी रमती थी उतनी अन्य किसी क्षेत्र में नहीं। रामवृक्ष बेनीपुरी जी के व्यक्तित्व में साहित्यकार, पत्रकार और राजनीतिज्ञ का त्रिवेणी संगम मिलता है।

प्रकाशित रचनाएँ –

उपन्यास – 'पतितों के देश में' (1930), 'कैदी की पत्नी' (1973)

कहानी – 'चिता के फूल' (1947), 'साहस के पुतले', 'रंग-बिरंग' और 'झोपडी से महल' (1935-36)

रेखाचित्र – 'लाल तारा' (1938) 'माटी की मूरतें' (1946), 'गेहुँ और गुलाब' (1950)

नाटक – 'अंबपाली' (1947), 'तथागत' (1948)

संस्मरण – 'जंजीरें और दीवारें' (1960), 'मुझे याद है' (1955), 'मील के पत्थर' (1967)

निबंध – 'मशाल' (1961), 'हवा पर' (1961), 'वंदेवाणी विनायकौ' (1957), 'नई नारी' (1949)

बाल-साहित्य – 'हम इनकी संतान हैं' (1965), 'अमर-कथाएँ भाग 1,2,3,4' (1971),

'संसार की मनोरम कथाएँ' (1970) आदि। (इसके साथ ही एकांकी, जीवनी, टीका-साहित्य एवं अन्य साहित्य में भी बेनीपुरी जी का हिंदी साहित्य में योगदान रहा है। आपके द्वारा संपादित 'विद्यापति की पदावली' बहुचर्चित रही।

बेनीपुरी जी के साहित्य में विविधता है। बाल-साहित्य, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रावर्णन, उपन्यास आदि अनेकविध गद्य-विधाओं में उल्लेखनीय कार्य आपने किया है। सशक्त गद्य-लेखक भाषाप्रभु रामवृक्ष बेनीपुरी जी अद्वितीय हैं।

3.3.2 'माटी की मूरतें' परिचय –

'माटी की मूरतें' में कुल 12 रेखाचित्र हैं।

1) रजिया – रजिया का रेखाचित्र प्रस्तुत करते हुए लेखक ने उसके बचपन, यौवन और बुढापे तक का चित्रण किया है। रजिया एक चूडिहारिन है। लेखक जब स्वयं बचपन की आयु में थे तब रजिया भी बचपन की आयु में लेखक के घर अपनी माँ के साथ आती है। आयु बढती है तो लेखक उसे जब जब मिलते है, देखते है तो रजिया में होनेवाले बदलाव भी यहाँ चित्रित हैं।

2) बलदेव सिंह – गाँव के पहलवान के रुप में बलदेव सिंह का चित्रण यहाँ हुआ है। बंगाल के राजा के दरबार में पहलवानी करने के बाद अब वे गाँव में आये हैं। उनके शारीरिक कद–(पहलवान) का चित्रण यहाँ किया है। इसी के साथ उनकी घातपात के कारण हुई मृत्यु का चित्रण किया है।

3) सरयू भैया – यह व्यक्तिप्रधान रेखाचित्र है। सरजू भैया लेखक का मुँहबोला बडा भाई है। वह जिंदादिल, मिलनसार हँसमुख एवं मजाकिया स्वभाव का है। मानव–सेवा यही उसके जीवन का मूलमंत्र था। वह इसलिए वंदनीय एवं पूजनीय है, ऐसा लेखक को लगता है।

4) मंगर – मंगर गाँव का मेहनती इमानदार हलवाहा है। गरीब लेकिन स्वाभिमानी है। वह अपने बैलों को साक्षात महादेव के रुप में देखता है। खाने से पहले उन बैलों के मुँह पहले निवाला डालता है।

5) रुपा की आजी – 'रुपा की आजी' गाँव के लोगों की अंधश्रध्दा से दारुण मृत्यु पाती है। शादी के पश्चात् उसके परिवार–जनों की आकस्मिक मृत्यु होती है। जिससे वह डायन, भूतनी कही जाती है। गाँव के किसी बच्चे, जवान को वह देखती है, तो लोग नजर लग गयी कहते हैं।

6) देव–गाँव का साहसी – निर्भिक बालक है। बाद मे गाँव के थाने का छात्र नेता बन जाता है तथा पुलिस के अत्याचारों का शिकार बनता है। पुलिस की अमानवीयता को स्वीकार कर पूरी आयु कराहने लगता है। उसमें जो मानवीयता का भाव है उसे यहाँ रेखांकित किया गया है।

7) बालगोबिन भगत – इस संस्मरणात्मक रेखाचित्र में लेखक ने तेली जाति के कबीर पंथी भगत का चित्रण किया है। जो कबीर के पदों को सुमधूर आवाज में गाते थे। अपने इकलौते बेटे की मृत्यु के पश्चात उसकी बहू को दूसरी शादी के लिए राजी कर मायके भेजते हैं।

8) भौजी – इसमें लेखक ने भौजी के विवाहोपरांत किशोरी अवस्था से उनकी मृत्यु तक के स्मृतियों को रेखांकित किया है। उसके सभी गुण–दोष, झगडालू स्वभाव, अल्हड़पन आदि को भी चित्रित किया है।

9) परमेसर – परमेसर के रुप में एक आवारा एवं फिजुलखर्ची व्यक्ति का चित्रण है। आवारागर्दी के साथ उसमें ऐसे कुछ गुण मौजूद थे, जिससे गाँव में हँसी–मजाक का माहौल बनता रहता था। होली, दशहरा जैसे तीज–त्योहारों में गाँव में उसके रहते जो मजा आता था, लोग उसे भूलते नहीं। अतिसार के रोग से उसकी करुण मृत्यु होती है।

10) बैजू मामा – पटना जेल में मिले कैदी बैजू मामा का चित्रण यहाँ है। जो अपने वंश के लिए पहचान छिपाता रहता है। बार–बार चोरी के कारण वह जेल में लगभग अपनी आयु के तीस साल गुजारता है।

11) सुभानदादा – सुभानदादा गाँव के मुसलमान कारागीर है। वे इमानदार, विनम्र, वत्सल ऐसे व्यक्ति थे। लेखक उन्हें अपने बचपन से देखते हैं। गाँव में हिंदू–मुस्लिम एकता चाहनेवाले वे बुजुर्ग थे।

12) बुधिया – 7-8 साल की बकरी चरानेवाली बच्ची से जवानी और मातृत्व तक के रुप में बुधिया का चित्रण यहाँ किया है। बचपन की चंचल, चुलबुली लडकी जवानी में हजारों जवानों के दिलों की धडकन बनती है।

बेनीपुरी जी के साहित्य में विविधता है। बाल-साहित्य, रेखाचित्र साहित्य, संस्मरण, यात्रावर्णन तथा उपन्यास में उल्लेखनीय कार्य आपने किया है। अंतत: हम कह सकते हैं कि सशक्त गद्य-लेखक के रुप में भाषाप्रभु बेनीपुरी अद्वितीय हैं।

रेखाचित्र रामकृष्ण बेनीपुरी

'माटी की मूरतें' रेखाचित्र विधा को जानने के लिए यहाँ हम संक्षेप में 'रेखाचित्र विधा' की जानकारी लेते हैं। 'रेखाचित्र' का अर्थ-'रेखाचित्र' शब्द अंग्रजी के 'स्केच' शब्द का हिंदी रुपांतर है। जिस तरह चित्रकार रेखाओं के माध्यम से किसी वस्तु या चित्र का निर्माण करता है, ठीक वैसे ही साहित्यकार शब्दों के माध्यम से किसी व्यक्तित्व को हमारे सामने प्रस्तुत करता है। ये व्यक्तित्व प्राय: वे होते हैं, जिनसे लेखक किसी न किसी रुप में प्रभावित रहता है या जिनसे लेखक की आत्मीयता उससे जुडी हो।

रामवृक्ष बेनीपुरी निर्विवाद रुप से सफल रेखाचित्रकार हैं। सरल भाषाशैली में सिद्धहस्त कलाकारी उनकी विशेषता है। उनकी विशेष ख्याति 'माटी की मूरतें' (1946) संग्रह से रही है। इस संग्रह में उन्होंने समाज के उपेक्षित पात्रों को नायक बनाकर प्रस्तुत किया है। अपने गाँव बेनीपुर के बचपन से देखे हुए पात्रों को अपनी लेखनी से अमर बनाया है। विषय की विविधता और शैली की सरसता का संयोग इन रेखाचित्रों की विशेषता रही है। बेनीपुरी जी ने व्यक्ति चित्रण को प्रधानता दी है। राजनीतिक साहित्यिक क्षेत्र के असामान्य व्यक्ति ही नहीं, बल्कि खेती-मजूरी से संबध्द ग्रामीण व्यक्तियों की असाधारण खुबियों का अंकन उन्होंने किया है। ग्रामीण जीवन में घटित होनेवाली घटनाओं के बीच इन पात्रों के अंकन में रोचकता, मार्मिकता से ये पात्र सजीव हो जाते हैं। मनुष्य मन का अच्छा ज्ञान होने से बेनीपुरी जी ने पुरे मनोयोग से इन पात्रों का चरित्रांकन किया है। रेखाचित्रकार की तटस्थता एवं संतुलन उनमें होने से उन्होंने व्यक्ति के गुण-दोषों सहित उन्हें चित्रित किया है। पात्रों के बाह्य रुप-रंग के साथ ही चरित्रगत विशेषताओं को उन्होंने व्यक्त किया है।

प्रस्तुत रेखाचित्र-संग्रह में 12 किरदारों का चित्रण हैं। 1946 में प्रकाशित इस अमरकृति का 1953 में नवीन संस्करण प्रकाशित हुआ। लेखक स्वयं इसके बारे में सूचना देते हैं कि पिछले छह सालों में इसकी 60 हजार से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं। माटी की मूरतें ऐसी कहानियों का कोलाज है, जिसमें जीवन से जुडे उन किरदारों की कथा उकेरी गई है, जो हमारे रोजमरी के संबंधों में आज भी अपनी सदाशयता के साथ मिल जाया करते हैं। इन रेखाचित्रों में तत्कालीन समाज और सादगीपूर्ण जीवन का मानवीयता के स्तर पर चित्रण हुआ है। लेखक ने भूमिका में लिखा है, ''ये मुरतें न तो किसी आसमानी देवता की होती है, न किसी अवतारी देवता की, गाँव के ही किसी साधारण व्यक्ति, मिट्टी के पुतले ने असाधारण लौकिक कर्म के कारण एक दिन देवत्व प्राप्त कर लिया, देवता में गिना जाने लगा।'' इस तरह प्रस्तुत रेखाचित्र-संग्रह में

बेनीपुरी गाँव के जिन लोगों के संपर्क में लेखक रहे हैं, जिन्हें देखा है, उनका व्यक्ति-चित्रण यथार्थवादी ढंग से किया है।

3.3.3 'माटी की मूरतें' : प्रत्येक रेखाचित्र का आशय

3.3.3.1 रजिया

रेखाचित्र के रुप में 'रजिया' की विशेष पहचान लेखक ने करा दी है। यह सिर्फ रेखाचित्र नहीं है, बल्कि इसमें ग्रामीण जीवन के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सरोकार भी स्पष्ट होते हैं। लोकजीवन में आपसी सद्भाव, सहृदयता, साहचर्य उन दिनों में एक-दूसरे से किस-तरह जुडे हुए थे, इसका चित्रण यहाँ किया गया है।

'माटी की मूरतें' संग्रह का यह पहला रेखाचित्र है। गाँव की मुस्लिम चुडीहारिणी के बचपन से लेकर बुढापे तक का अंकन लेखक ने 'रजिया' में किया है। लेखक ने उसके बाह्य-वर्णन का इतना सजीव चित्रण किया है, जिसमें वह हु-ब-हू रुपांकित होती है।

रजिया को बाल्यावस्था में जब लेखक पहली बार उसे देखते हैं, तो उसका वर्णन यहाँ किया है। हिंदू बस्ती में रहनेवाले लडके ने इस मुस्लिम बच्ची को देखकर उसकी अलग पहचान यहाँ वर्णन की है-''कानों में चाँदी की बालियाँ, गले में चाँदी की हैकल, हाथों में चाँदी के कँगन और पैरों में चाँदी की गौडाँई-भरबाँह की बूटेदार कमीज पहने, काली साडी के छोर को गले में लपेटे, गोरे चेहरे पर लटकते हुए कुछ बालों को सँभालने में परेशान, वह छोटी-सी लडकी, जो उस दिन मेरे सामने आकर खडी हो गई थी।'' रजिया अपनी माँ के साथ लेखक के घर में आई थी। रजिया की माँ चुडिहारिणी है। बचपन में देखी रजिया की उस सूरत को लेखन ने उसी आत्मीयता से यहाँ व्यक्त किया है। रजिया की माँ लेखक के आँगन में चुडियों का बाजार पसारकर चूडियों का भाव-मोल कर रही थी। लेखक की मौसी रजिया को ठेकुए देती है। रजिया अपनी माँ के कहने के बाद ही स्वीकारती है। लेखक कुतूहलवंश उसे पूछते हैं, तो उसका जवाब वह गर्दन हिलाकर देती है। रजिया और उसकी माँ दुसरे घर के आँगन में चली जाती हैं, तो लेखक भी उनके पीछे-पीछे वहाँ जाते हैं। रजिया की माँ लेखक से मजाक में कहती है, ''बबुआजी, रजिया से ब्याह कीजिएगा'' उनके यह कहने से वहाँ से लेखक भागता है।

बचपन के इस प्रसंग के बाद लेखक अपनी पढाई के लिए शहर गए। बडे होने के साथ देखते है कि, रजिया भी बडी हो गई है। वह अब चूडियाँ पिन्हाने की कला जान गई थी। उसके हाथ से चूडियाँ पहनना नई बहुओं को अच्छा लगता है। उसके हाथ मुलायम थे, बहुत मुलायम। रजिया अपने हुन्नर के साथ नई-नई खरीदारिनों को ललचाती रहती है। खरीदारिनों को वह लुभाती है, फँसाती है।

बढती हुई रजिया, शहर से आए लेखक से बहुत से सवाल करती है। प्रश्न अटपटे होते, लेकिन उसके मन में शहर के प्रति होनेवाली जिज्ञासा, कुतूहल प्रकट होता। जिस स्वच्छंदता से वह लेखक से मिलती है

तो भौजी के कहने पर वह कुछ शर्माती है। इसके साथ ही लेखक और रजिया जब मिलते हैं, बातें करते हैं, तो सभी की नजरें उनपर रहती हैं।

रजिया किशोरी आयु से जवान होने लगी है। वह चूडियाँ पिन्हाने में निपुण होती जाती है। चुडियाँ पहननेवाली बहुओं के पतियों से मजाक करती है। पतियों से चुहलें करते हुए कहती है, ''बाबू, बडी महीन चूडियाँ है। जरा देखिएगा, कहीं चटक न जाए!'' चुडियों की अलगता, नये फॅशन की चूडियों के साथ ही चूडीहारिन भी उतनी ही हँसमुख होनी चाहिए। रजिया बिलकुल अपनी माँ से यही बातें सीखती है। जिनकी जेब से पैसे निकलते हैं, उन्हें इन्हीं बातों से खुश करके सफल चुडीहारिन बनती है।

शहर मे रहनेवाले लेखक कभी-कभार ही रजिया से अब मिलते हैं। बीच में वे देखते हैं कि जिस नौजवान से उसकी शादी हुई है, वह उसके साथ वह चूडियों की खाँची लेकर जा रहा है। लेखक के पूछने पर वह अपने ब्याह का किस्सा सुनाती है। लेखक की रानी को चूडियाँ पहनाने के लिए पहली-बार आती है, तो आँगन में धूम मचाती है। नटखटपन करती है। हँसी मजाक के माहौल में रानी की कलाई पकडकर कहती है, ''मालिक भी तुम्हारे पीछे इसी-तरह छाया की तरह डोलते रहें दुल्हन!''

समय के साथ रजिया बढती जाती है। लेखक भी संपादक के नाते अनेक जिम्मेदारियों को निभाते हुए पटना में ही रहने लगते हैं। कभी-कभार ही घर जाते हैं। पटना में रहने से लेखक कहते हैं कि वह अपने पद-प्रतिष्ठा का खयाल भी रखना पडता था। उसी बीच बाजार में जब रजिया से मुलाकात होती है, तो रजिया हमेशा की तरह ही लेखक से बातचित करने लगती है। उसके साथ हसन भी होता है। वह सौदा मुनाफा करने के लिए शहर आई है। हसन को कहकर पान खिलाती है। बदलते माहौल की बातचित करती है। लेखक से वह कहाँ रहते हैं, पूछती है। लेखक कश्मकश में पडते हैं तो कहती है, 'डरिए मत मालिक, अकेले नहीं आऊँगी, यह भी रहेगा।' हसन कहता है, ''बाबू बाल-बच्चोंवाली हो गई, किंतु इसका बचपना नहीं गया।''

चुनाव के समय गाँव का चक्कर लगाते समय लेखक मन-ही-मन रजिया को याद करते हैं। लेकिन लोगों के भीड में, भाषणबाजी के जोश में वह कुछ नहीं कर पातें। परंतु अचानक उनके सामन रजिया की पोती उसी शोख-अंदाज में आती है। चालीस-पैंतालीस सालों बाद उसी रजिया को देखकर लेखक विस्मित हो जाते हैं- ''कानों में वे वही बालियाँ, गोरे चेहरे वे वही नीली आँखें, वही भरबाँह की कमीज, वे ही कुछ लटें, सँभालती बढ़ी आ रही है।'' वह लेखक के निकट पहुँचकर सलाम करती है और हाथ पकडकर अपने घर चलने का आग्रह करती है। कुछ लोग लेखक को जानकारी देते हैं कि रजिया बीमार पडी है।

रजिया के साफ-सुथरे घर को देखकर लेखक को मेहनत और दयानत का अंदाजा आता है। हसन चल बसा है। रजिया के तीन बेटे हैं। बीमार बूढी, झुर्रियाँ आई रजिया लेखक को सलाम करती है। इस प्रसंग में लेखक कहते हैं कि उसके चेहरे से एक क्षण के लिए झुर्रियाँ कहाँ चली गई, जिन्होंने उसके चेहरे को मकडजाल बना रखा था। कोटरों में धँसी उसकी आँखे चमक उठी। शुभ्र श्वेत बालों की लटें और कानों की बालियाँ फिर से चमकती हैं। लेखक उसे इस रुप में देखकर स्तंभित रहते हैं।

इस तरह प्रस्तुत रेखाचित्र में पूरी आत्मीयता के साथ लेखक ने बच्ची से लेकर उम्र के अंतिम छोर तक आई रजिया का चित्रण किया है।

3.3.3.2 बलदेव सिंह :–

यह व्यक्ति–प्रधान शब्दचित्र 1946 में 'मधुकर' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। गाँव के पहलवान बलदेव सिंह का चित्रण इसमें हुआ है। जिंदादिल, शेरमर्द इंसाफ का पक्षधर और दीन–दुखियों और पीडितों का रक्षक, वचन निभानेवाला ऐसा बलदेव सिंह अनेक गुणों से युक्त है। ताकतवर होने के बावजूद बच्चों–सी मासूमियत भी उसमें है।

पूस के महिने में खेत–खलिहानों में रखवाली करने वाले धूनी जलाकर उसके सामने बैठे थे। इसी बीच लेखक के मामाजी को देखकर बलदेव सिंह वहाँ आता है और चिल्लाता है ''पालागी चाचाजी''। बादामी रंग का, मोटिये का जो लंबा खलीता कुर्ता पहना रखा था उसने, उसके भीतर से उसके शरीर का गठीला और सौंदर्य फूटा पडता था। इस–तरह गभरु नौजवान बलदेव पहलवान का वर्णन बाहयरुप के तौर से किया है। बातों–बातों में बलदेव कहता है कि बंगाल में किसी राजा के दरबार में पहलवानी करके काफी पैसा जमा करके अब अपनी पुश्तैनी जमीन की देखभाल करते हुए यही रहेंगे।

गाँव मे उनके आने से नई जान आ जाती है। अरवाडा खुलता है और वहाँ भोर से कुश्तियाँ, शाम को पट्टेबाजी, गदका, लाठी चलाना आदि से चहल–पहल बनी रहती। बलदेव को अपनी ताकत और हिम्मत का अंदाजा था। उसके साथ उसकी शिष्यमंडली भी रहती। उसकी सुंदरता और सुडौल शरीर पर सभी निहाल हो उठते थे। शरीर में इतनी ताकत लेकिन स्वभाव बच्चों–सा निरीह–निर्विकार, सभी के साथ नम्रता से पेश आता। बच्चों से लेकर बूढों तक सभी के साथ उसके व्यवहार अत्यंत मृदु होने–से वह लोकप्रिय बना रहता है।

इसी रेखाचित्र में लेखक ने अपने गाँव में होनेवाले हिंदू–मुसलमानों के संबंध दूध–चीनी की तरह घुले–मिले हुए थे यह भी बताया है। सभी त्योहार मिल–जुलकर मनाते। गाँव मे ताजिये के दिनों में बूढे मौलवी को बुलाकर धार्मिक कृत्य कराते थे। पहलाम के दिनों का, भेंडों की लडाई आदि का वर्णंन यहाँ हुबहू किया है। इसी समय झगडा हो जाता है। झगडे के समय लाठी–पर लाठी से प्रहार होने लगते हैं। लेखक के मामा बलदेव सिंह को शांत करते हैं। अपरिचित पहलवानों की कुश्ती में 'फाऊल–प्ले' गलत तरी–के से दिए जाने पर बलदेव वहाँ रोक लगाता है, इसकी वजह से झगडा शुरु हो जाता है। मामाजी बलदेव सिंह समझा–बुझाकर शांत करते हैं। बलदेव सिंह की इस विजय पर सारा गांव उन्हें शान से घर ले आता है।

गाँव में अहीर और राजपूतों के खानदानों में वैर की भावना बनी रही थी। बिसुनपुर में दो भाइयों में दुश्मनी पैदा हो जाती है। दोंनों में लँगडा आम के पेड को लेकर तनातनी शुरु हो जाती है। बडे भाई के लडके ने हिसाब लगाकर कहा कि मेरे हिस्से का यह पेड धोखे–से चाचाजी को मिल गया है। बलदेव सिंह के पास दोनों के निमंत्रण आते हैं। बलदेव सिंह पहले आए बडे भाई के बेटे को वचन देता है। बिसुनपुर में

अपनी शिष्यमंडली के साथ वहाँ पहुँचता है। बिसुनपुर मानों उस दिन कुरुक्षेत्र बना हुआ था। आम के पेड को लेकर खून-खराबा शुरु हो जाता है। अंत में बडे भाई का कब्जा उस पेड पर हो जाता है। ऐसे वीर शक्तिशाली बलदेव को घात-पात से मारा जाता है। इस प्रसंग को लेखक इस तरह कहते हैं, 'जिन हाथों ने यह काम किया, क्या वे वीर के हाथ थे। शेर के पंजे थे? नहीं, नहीं कुछ सियारों ने, बुजदिलों और कायरों ने छुपकर, घात लगाकर, बडे बुरे मौके पर बडे बुरे ढंग से यह कुकर्म किया।'

जवार गाँव की विधवा को उसकी जमीन वापस दिला देने के लिए बलदेव सिंह जवार में चला जाता हैं। वहाँ के पट्टीद्वारों को चुनौती देता हैं। जैसे-ही मामला ठंडा होता है, सभी उस क्षत्राणी विधवा की बात मानने लगते हैं। ऐसे में उस विधवा पर अपने शिष्यों के खर्चे का बोझ न आए इसलिए, बलदेव सिंह शिष्यों को गाँव भेजता है। इसी दरम्यान बहुत सबेरे, बिलकुल मुँह अंधेरे वह गाँव से काफी दूर शौच के लिए जाता है, तो उसपर लाठी हल्ला कर देते हैं। लाठी, गँडासे बर्धे के द्वारा चारों ओर से उसपर हमला करते हैं। कायर सिंयारो ने इस (बलदेव सिंह) शेर मर्द की दुर्गति कर दी थी। उसकी लाश इस रुप में देखकर लेखक को बलदेव सिंह की पहली मुलाकात यादी आती है-''एक भोर थी, जब मैंने बलदेव सिंह का वह रुप देखा था-आभामय, जीवनमय, यौवनमय, और, और आज भी एक भोर है जब हम उन्हें इस रुप में देख रहें हैं।''

इस तरह बलदेव सिंह जैसे पहलवान का चित्रण करते समय उसके गठीले शरीर के साथ उसके अंतरमन की कोमलता, न्यायप्रियता, विनम्रता आदि गुणों को भी रेखांकित किया है।

3.3.3.3 सरजू भैया –

लेखक के घर से सटा मकान सरजू भैया का था। उनके छोटे भाई के रुप में लेखक अपने को मानते हैं। सरजू भैया बेहद मिलनसार तथा उदार स्वभाव के व्यक्ति थे, जो सदैव सबकी मदद करने के लिए तत्पर रहते थे। दुसरों की मदद करने में ही उन्हें आनंद मिलता था। लेखक उनके बारे में लिखते हैं, ''सरजू भैया मेरे गाँव के चंद जिन्दादिल लोंगों में से एक हैं।'' मिलनसार, मजाकिया और हँसोड। वह दिल खोलकर जब हँसते हैं – शरीरभर में जो सबसे छोटी चीजें उन्हें मिली हैं-वे उनके पंक्तिबध्द छोटे-छोटे दाँत, तब बेतहासा चमक पडते है'' ऐसे हँसमुख होने के बावजूद उनका शरीर सिर्फ हड्डीयों का ढ़ाँचा। इसलिए कि दूसरों की मदत के लिए उन्होंने न सिर्फ अपना शरीर सूखा लिया है, बल्कि अपनी संपत्ती की भी कुछ कम हानि नहीं की है। दूसरों की मदत में उन्होंने अपनी घर-गृहस्थी का भी नुकसान कर दिया था।

भूकंप के कारण उनका घर ध्वस्त हो गया था। वे चाहते तो लोग उनकी मदद करके घर ठीक कर देते। परंतु सरजू भैया ने ऐसा नहीं किया। उनका मानना था कि ब्याज पर पैसे लेना मानवता के खिलाफ है।

सरजू भैया काम से जी चुरानेवाले, आलसी और बोदा गृहस्थ नहीं हैं बल्कि चतुर, फुर्तीले, काम-काजी आदमी थे। लेकिन लेन-देन के कारोबार, सूद वसुलना उनकी आदत नहीं थी। इसलिए फटेहाली की जिंदगी जी रहे थे। सरजू भैया शारीरिक रुप से अलग आलस्य-रहित और कामकाजी व्यक्ति थे। गाँव के हर लोंगों की मदद वे करते रहते। लेखक कहते हैं- 'दिन हो या रात, चिलचिलाती दुपहरिया हो या अंधेरी अधराजिया, सरजू भैया के सेवा-सदन का दरवाजा हमेशा खुला रहता है।'

लेखक को भी उन्होंने कुछ रुपये दे रखे थे, लेकिन अपनी जरुरत के बावजूद सरजू भैया उस बारे में कुछ नही बोलते। गाँव के धन्नासेठ से बमभोला की तरह कजरौटे में अँगूठा डालकर कोरे कागज पर चिपकाकर अपने लिए पैसे लेकर आते हैं। लेकिन सधुवापन के मारे किसी से यह कहते नहीं। लेकिन यह धन्नासेठ जब उनके पीछे पडता है-''जल्द रुपये दे दो, नहीं तो मैं मालिश कर दूँगा'' तब वह लेखक से इस पर बात करते हैं। इस तरह बिलकुल सीधा सरजू भैया! सरजू भैया को पाँच लडकियाँ हैं। पत्नी के मृत्यु के पश्चात उन्हें दूसरी शादी की सलाह दी जाती है, तो लेखक की पत्नी से वे कहते है, ''मैं शादी करुँ, जिससे शर्माजी को नई भौजाई से दिनरात चूहलें करने का मजा मिलें, क्यों है?'' और फिर मुस्कुराता है।

कुल मिलाकर सरजू भैया का चित्रण करते हुए लेखक ने निसंकोच, जिंदादिल स्वभाव, मिलनसार और दूसरों की मद्द करने का स्वभाव अधोरेखित किया है।

3.3.3.4 मंगर :-

अपने शरीर-सौष्ठव एवं कार्यकुशलता के कारण असाधारण मंगर देहाती खेतिहर मजदूर होने के बावजूद विलक्षण है। मंगर बेनीपुरी जी का एक बडा ही विश्वासी हलवाहा था। वह था तो दरिद्र, पर दीन नहीं था। स्वाभिमान उसकी नस-नस में भरा था। वह इतना विश्वासी था और इतना डटकर काम करता था, इसलिए अन्य मजदूरों की अपेक्षा उसे विशेष और अच्छी रोजी मिलती। वह लेखक को कभी-कभी बंधु मानता था। कभी-कभी लेखक को वह अपने कंधे पर बिठाकर घुमाता है।

मंगर स्वभाव से फक्कड है। उसने कभी किसी की बात बर्दाश्त नहीं की। वह दो टूक बातें करता था। लेकिन उसमें हट्टे-कट्टे शरीर के साथ सक्त कमाऊपन और ईमानदारी थी। अन्य हलवाहे जितने समय में दस कट्टा जमीन जोतते उतने ही समय में वह पंद्रह कट्टा जोतता था। अपने काम के प्रति वह पूरा इमानदार रहता। लेखक के चाचाजी के साथ नहीं बनती, तो सिरदर्द का बहाना बनाता है। जब चाचाजी उसके घर जाकर उसे मनाते हैं, तब वह काम पर जाता है।

गाँवभर के हलवाहे दोपहर को एक रोटी लेते। लेकिन मंगर को डेढ रोटी देनी पड़ती और वह भी सुअन्न की। मंगर आधी रोटी के दो टुकडे करके पहले बैलों को खिलाता। वह कहता महादेव मुँह ताकें; और मैं खाँऊ-यह कैसे होगा? मंगर के लिए ये बैल नहीं साक्षात् महादेव थे। गोवर्धन पूजा के दिन हर साल मंगर को एक नई धोती मिलती। उस दिन धोती लिए बिना वह बैलों के सींगो में लटकन नहीं बाँधता। परंतु धोती को वह मुरेठे की तरह लपेटे रहता। हमेशा कमर में भगवा ही लपेटे रहता। नंग धडंग रहता। मंगर का काला-कलूटा शरीर, एक संपूर्ण सुविकसित मानव पुतले का उत्कृष्ट नमूना था। मंगर का यह वर्णन उसके जवानी के दिनों की याद दिलाता है। वही दूसरी ओर लेखक ने उसके बुढापें के दिनों का भी यहाँ वर्णन किया है, जो बहुत-ही करुणाप्रद है। आज उसका यह शरीर उस पुराने शरीर का व्यंग्यचित्र मात्र रह गया है, ऐसा लेखक को लगता है।

मंगर की पत्नी भकोलिया भी उसीके समान रही। भकोलिया-मंगर आदर्श जोडी। उन्हें दो बच्चे हुए। लडकी लूली, कमाऊ पुत्र चल बसा। लडकी का ब्याह करा दिया, परंतु दामाद के रुखे बर्ताव से लडकी भी

चल बसी। भकोलिया स्वभाव में भी मंगर जैसी। वह तमककर बोलती। झपटकर चलती। जिस किसी ने छेडा, मानों काली साँपिन के फन पर पैर रखा। परंतु बुढापे के साथ वह अपनी परिस्थिति के साँचे में अपने को ढाल लेती है। जो भी काम मिलता करती, उससे जो मिलता पहले मंगर को खिलाती बाद में खुद खाती, लेकिन मंगर हमेशा उसे फटकारता रहता। अधकपारी के लिए वह किसी से दालचिनी माँग लाती है, मंगर को लेप लगाती है। मंगर आँखो पर भी लेप लगाने को कहता है। पहले ठंडक महसूस करता है, परंतु बाद में जलन होने लगती है, इसमें मंगर की आँख चली गई। विपदा से जर्जर मंगर असहाय, दीन-हीन होता है, परंतु उसका मूल स्वभाव नहीं बदलता।

इस तरह मंगर हलवाहे के रुप में लेखक ने भारत के उन खेतीहर मजदूरों का करुण चित्र खींचा है। जिन्हें बुढापे में किसी तरह की सहायता प्राप्त नहीं होती। न ही उन्हें उभारने के लिए हमारे समाज में कोई व्यवस्था है।

3.3.3.5 रुपा की आजी –

यह एक अत्यंत मार्मिक रेखचित्र है। गाँव के वातावरण का चित्रण यहाँ हुआ है। गाँव में अंधविश्वास के कारण जादू-टोने आदि के कारण रुपा की आजी पर डायन का आरोप लगाया जाता है। रुपा की आजी पर झूठी तुहमत लगाई जाती है कि वह जादू-टोना करती है। गाँव में ओझा, तांत्रिक बुलाए गए। परंतु रुपा की आजी न पागल हुई, न नंगी नाची, न उनकी देह पर फफोले उठे। रुपा की आजी सामने आते ही सब खुशामद करते हैं। कहीं वह नाराज न हो जाएँ। रुपा की आजी ब्याह कर आते ही उसके ससुर, पति, बेटे, पतोहु की आकस्मिक मृत्यु हो जाती है, लेकिन इसके लिए जिम्मेदार रुपा की आजी है ऐसा गाँववाल सोचते और अपने बाल-बच्चों को उसकी नजर से बचाने की कोशिश करते। अगर इसी-बीच किसी को कुछ हो जाता है, तो उसका दोष रुपा की आजी पर लगाते हैं।

वैसे देखा जाए तो परिवारजनों की एक के बाद एक की आकस्मिक मृत्यु के कारण रुपा की आजी ज्यादा भावुक हो जाती है। उसका दिमाग ठीक नहीं। आँखो की लाली या पानी डायनपन की निशानी नहीं, बल्कि उसकी करुणाजनक स्थिति की निशानी है। पूजा-पाठ, व्रत सब उसीकी प्रतिक्रिया है। जवानों को घूरती है, तो अपने जवान बच्चे की याद करती या उसे भूलने की कोशिश करती। बच्चों को दुलारती, प्यार करती, रुपा की आजी इससे अपनी यादों को दोहराती।

मामी के द्वारा लेखक पडोसन की बेटी की कथा सुनता है। पडोसन की बेटी अपने छः वर्ष के बालक के साथ आती है। उस वक्त वह नटखट बालक रुपा की आजी के पास खुद चला जाता है, उसे खिलाने में वह मजा लेती है। हँसती है। निष्पाप बालक भी उसके साथ हँसी मजाक करता है। हँसते-हँसते रोने लगती है तो बच्चा उसके आँसू पोछता है। उसे हँसाने की कोशिश करता है। वह दिल से इस बालक को आशीर्वाद देती है। परंतु इसके बाद लडके को सूखा रोग लग जाता है और उसी बीमारी में चल बसता है।

लेखक की मामी के बच्चे के साथ भी ऐसी दुर्गति होती है। बाद में उसे एक भी बेटा नहीं हुआ। बेटियाँ ही हुई। मामी का कलेजा आज भी फटा जा रहा है ऐसा लेखक कहते हैं। मामा भी लेखक को दुसाध बुढे

के परिवार की कहानी कहते हैं। दुसाध के दो बेटे कमाऊ मिलनसार थे। रुपा की आजी उनसे मद्द की विनंती करती है। दुसाध बूढा दूसरे दिन करने का वादा करते हैं, तो रुपा की आजी बुरा मानती है। फिर बूढे दुसाध मिन्नत आरजू करते हैं, लेकिन बुढिया मानती नहीं। उसी रात दुसाध के बडे बेटे को साँप काटता है। जहर फैलने से उस जवान बेटे की मौत हो जाती है। दुसरे ही दिन वह परिवार गाँव छोडकर चला जाता है। मामा अंगारे बरसाते हुए कहते हैं, ''अरे, यह बुढिया नहीं काल है।'' आदमी नही साँपिन है। चलती-फिरती चुडैल! बाभनी है, नहीं तो, इसे जिंदा गाड देने में कोई पाप नहीं लगता। रुपा की आजी इन्हीं अपवादों से घिरी रहती है।

अपनी पोती की शादी के लिए वह सब-कुछ बेचकर बडी धूम-धाम से कर देती है। रुपा के ससुराल जाने के बाद वह भी गाँव छोडकर चली जाती है। उसके पश्चात वह अचानक मेले में दिखाई देती है, जहाँ वह बच्चे को गोंद में लेकर झुनझुना देती है, मिठाई खिलाती है। बच्चे की माँ यह देखकर बच्चे को छीनने की कोशिश करने लगती है। लोंगों की भीड उसके पीछे पड जाती है। बुढिया भागते-भागते धडाम से कुएँ में जा गिरती है। जब तक निर्दयता पर करुणा की विजय हो तब तक वह जलसमाधि लेती है। रुपा की आजी की लाश को देखकर लेखक रविंद्रनाथ जी की कथा की याद आती है। उस कहानी की भद्र महिला भी इसी तरह भूत-भूत कहने पर गंगा में कूदकर जान देती है। रुपा की आजी भी गाँववालो के लोकापवाद की शिकार बनी। उसके परिवारजनों के मृत्यु के लिए उसे जिम्मेदार ठहराकर रुपा की आजी को हमेशा ही दोषी ठहराया जाता है। लोकापवाद से उसकी मृत्यु का दृश्य करुणा उत्पन्न करता है।

3.3.3.6 देव :-

'माटी की मूरतें' में से यह संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। देव के रेखाचित्र में लेखक ने साहसी-निर्भीक बालक की कहानी बताई है। जो बाद में अपने थाने के क्षेत्र का छात्र-नेता बनता है, पुलिस के अत्याचार का शिकार होता है। मानवीयता और पुलिस के अत्याचार का चित्रण यहाँ किया है।

विलायती अमरुद का पेड तपेसर भाई के बगीचे में था। सभी बच्चे उसपर टूट पडते थे। लेखक को लेकर वह अमरुद तोडने के लिए जाता है। पेड पर खुद सर-सर चढता है। कोट के दोनों जेब में अमरुद भरता है, लेकिन ऊपर से गिरता है। इतने में बूढे तपेसर भाई आते हैं, उनके हाथ में सोटा देखकर बडी फुर्ती से देव वहाँ से भाग जाता है। लेखक भी दूसरी राह से भाग जाते हैं। लेखक देखता है कि देव की बाँह टूटी हुई है। लेखक उसे कहते हैं तो वह लापरवाही से कहता है 'जुड जाएगी'।

जन्माष्टमी के त्योहार पर देव जिस तरह साँप को मारता है, उसका वर्णन लेखक ने बडी सूक्ष्मता से किया है। गुल्ली-डंडा खेलने के लिए जो डंडे थे उसी डंडे से, साँप को खेला-खेलाकर वह उसे मारता है। डंडे का एक हिस्सा-उसके मुँह के नजदीक ले जाता, साँप किचकिचाकर पकडता, देव खिलखिलाकर हँसता। साँप से वह मृत्यु-क्रीडा करता रहता है। देव अपने बाबा को आते देख साँप के सिर पर बार-बार डंडे मारकर उसका भुर्ता बनाता है। और किलकारियाँ मारता भाग जाता है।

देव के पिता उसकी पढाई के लिए शहर के स्कूल में भी डालते हैं। परंतु वहाँ से वह गाँव वापस आता है। अपनी घर-घृरस्थी में लग जाता है। लेकिन उसका स्वभाव अजीब बन गया था-बात का जवाब हाथ से, ठेंगे का जवाब लाठी से। अपनी मर्जी और मस्ती में वह जी रहा था। कोई उसके मुँह लगने की गुस्ताखी नहीं करता। लेखक के मामाजी उससे दूर रहने की सलाह देते - ''क्यों उससे बातें करते हो-मिलते हो, वह बदमाश है, बदचलन है। तुम पढ-लिख रहे हो, ऐसे लोंगो की संगत और चाहत अच्छी नहीं।'' लेखक फिर भी उससे मिलते रहते।

एक दिन गाँव के खेत में दोनों गप्पें मारते बैठते हैं। जो लेखक उसे अपनी कहानी कहने के लिए कहते है उसकी बातें देहात के रोमांस के एडवेंचर सुनते-सुनते शाम हो जाती है, पता नही चलता। इसी-बीच देव लेखक से कहता है कि देश के लिए फायदे का काम बताइए। लेखक उसे खादी पहनने की सलाह देते हैं। वह खादी पहनने लगता है। 1932 पटना जेल में लेखक पटना कॅम्प जेल में देव को देखते हैं और सीधे अपने ही वॉर्ड में ले आते हैं। रात में मर्मांतक पीडा से देव कराहता है। सुबह लेखक को कुनकुन से पता चलता है कि देव अपने थाने का एकछत्र नेता बनकर जेल में आया था। इसी नेतृत्व की बहुत बडी कीमत उसे चुकानी पडी थी। देव का थाना, जिलाभर में क्या, अपने काम से सारे प्रांत में प्रसिध्दी प्राप्त कर गया। सत्याग्रहियों की टोली लगातार सरकार को परेशान कर रही थी। इस खुराफात की जड देव था। अब उसे पकडा है, तो इन्स्पेक्टर ने उसे इतना सताया था। देव को वह मार-मारके बेहोश करके, उसकी छातीपर बुट सहित चढता है, हुमचने लगाता है। देव जी के मुँह से खून निकलता है। दरोगाजी चिल्लाता है और यह भी बताता है कि यह जवार गाँव के लोग छोडेंगे नही, इसे छोड दीजिए। दरोगा के हस्तक्षेप से देव बच जाता है। लेकिन उनका सारा शरीर क्षत-विक्षत हो गया था। समूचा शरीर फुल उठा। दवा-दारु हुई, देव ऊपर से अच्छे होते हैं, परंतु मर्मांतक पीडा अंदर तकही रही और इसी वजह से वे रात में सोते हैं, तो ऐसे ही कराहते रहते हैं। कुनकुन की बातें सुनकर लेखक सुबह की रोशनी में देव को देखते हैं। देह पर अब भी काली निशानें दिखाई दे रही थीं। लेकिन उनका अंतर्मन उज्ज्वल, ज्वलन्त, दिव्य उर्जस्वल था। इस तरह देव का रेखांकन किया है।

3.3.3.7 बालगोबिन भगत :-

बालगोबिन भगत तेली समाज के हैं। लेखक ने उनका रेखांकन करते समय उनके असाधारण विचारधारा की वजह से उनका महत्व यहाँ प्रस्तुत किया है।

बालगोबिन भगत मंझोले कद के गोरे चिट्ठे आदमी थे। उनकी उम्र साठ वर्ष से उपर थी और बाल पक गए थे। वे लंबी दाढी नहीं रखते थे और बिलकुल कम पहनते थे। सिर पर कबीर-पंथियों की सी कनफटी टोपी। सर्दियों मे ऊपर से कंबल ओढ लेते। वे गृहस्थ होते हुए भी सही मायने में साधु थे। माथे पर रामानंदी चंदन का टीका और गले में तुलसी की जडों की माला पहनते। उनके पास खेती-बाडी तथा साफ-सुथरा मकान था। खेत से जो भी उपज होती, उसे पहले सिर पर लादकर कबीरपंथी मठ ले जाते और प्रसाद-स्वरुप जो भी मिलता उसी से गुजर बसर करते।

कबीर के पद वे गाते थे। लेखक उसी पर मुग्ध थे। इस बारे में लेखक कहते हैं, ''कबीर के मधुर गान-जो सदासर्वदा ही सुनने को मिलते। कबीर के वे सीधे-साधे पद, जो उनके कुंठ से निकल कर सजीव हो उठते। आषाढ की रिमझिम बारिश में समूचा गाँव खेतों में काम करता है, तब बालगोबिन पूरा शरीर कीचड में लपेटे खेत में रापनी करते हुए अपने मधुर गानों को गाते। भादों की अँधियारी में उनकी खँजडी बजती, वह मधुर संगीत सब को जगाता। कार्तिक मास में उनकी प्रभातियाँ शुरु हो जातीं। गर्मियों मे अपने घर के आँगन में संगीत गाते। शाम के समय बालगोबिन के साथ उनकी प्रेमी मंडली के बीच खँजडी के साथ एकाकार होकर वे मग्न होकर नृत्य करने लगाते।''

बालगोबिन भगत की संगीत साधना का चरम उत्कर्ष तब दिखाई देता है, जब उनका इकलौता बेटा मरा। बालगोबिन ने अपने बीमार बेटे की शादी करा दी थी। बहु सुशील थी। उसने घर की पूरी जिम्मेदारी ली और भगत को दुनियादारी से बहुत कुछ निवृत्त कर दिया था। निर्मोही बनकर वे बेटे की मौत को आनंद की बात कहते हैं। आत्मा-परमात्मा में विलीन हो गई ऐसा वे मानते हैं। बेटे की श्राद्ध की अवधि पूरी होने पर-बहू के भाई को बुलाकर उसके दूसरे विवाह करने का आदेश देते हैं। बहू जाना नहीं चाहती, वह उन्हीं की सेवा में वही रहना चाहती थी, परंतु बालगोबिन उसकी कुछ नहीं सुनते।

बालगोबिन भगत की मृत्यु भी उनके अनुरुप ही हुई। वे हर वर्ष गंगास्नान को जाते। तीस कोस दूर वे जाते। व्रत, उपवास छोडनेवाले नहीं थे। किंतु बूढा शरीर साथ नहीं देता। लोगों के मना करने पर भी नहीं मानते। इस बार इस लंबे उपवास के बाद तबीयत कुछ सुस्त थी। लेकिन वे मानते नहीं, बुखार आता है, किंतु दोनों जून गाना, स्नान-ध्यान खेती-बारी की वजह से छीजने लगते हैं। एक दिन संध्या में गीत गाये। भोर में लोगों ने गीत नहीं सुना, जाकर देखा तो बालगोबिन भगत नहीं रहे, सिर्फ उनका पंजर ही मिला।

इस तरह गाँव-जीवन के सीधे-साधे भगत जैसे लोग अपनी ओर से समाज को बडी सीख दे जाते हैं। अपनी विधवा बहू को दूसरी शादी करा देने के लिए राजी करानेवाले भगत अनोखे रुप में सामने आते हैं।

3.3.3.8 भौजी –

प्रस्तुत रेखाचित्र में लेखक ने अपने भाभी का वर्णन किया है। अपनी चाची की बहु, जो लेखक की भाभी है। किशोरी से यौवनावस्था की ओर आनेवाली भाभी जब से ब्याह कर लेखक के घर आई थी। लेखक ने भौजी की उस अवस्था से वर्णन किया है।

भैया के साथ पालकी में बैठकर लेखक उस बारात में सम्मिलित हुए थे। इसी बहाने लेखक ने उस जमाने में होनेवाली शादी, बारात का वर्णन किया है। बारात में होनेवाले अतिथियों का स्वागत, दुल्हे का स्वागत और इसी बीच फूफाजी के अपमान की वजह से हुआ झगडा आदि का वर्णन लेखक ने ''अजीब बारात'' इस रुप में किया है।

शादी के पश्चात् भाभी का घर में आगमन बहुत आल्हादक रहा। लेखक कहते हैं, ''भारतीय परिवार में भौजी का वही स्थान है, जो मरुभूमि में ओएसिस का।'' भारतीय परिवारिक जीवन का रुखा-सूखापन,

निरानन्द और निस्पंद जीवन में भौजी का आगमन नई हरियाली लेकर आता है। लेखक कहते हैं, ''भौजी आई, मेरा घर भी आनंदकुंज बन गया।'' वह आते ही बच्चों के साथ, बडे-बुढियों के साथ घुलमिल जाती है। वह सब को अपने स्नेह-सूत्र में बाँधती है। बढिया खाना बनाती है, बढिया सिलाई करती, कसिदा काढती। घर के सभी ऐसी सुघड पतोहु पाकर खुख होते हैं। घर के सभी बच्चें छोटे देवर उनके घर के आँगन में आँख-मिचौली खेलते वह सभी का स्वागत करती, उनसे गप्पें लडाती। पहली होली में वह सभी ऐसी धूम मचाते हैं कि एक महीना दस दिनों तक सभी रंगों से सराबोर थे। सबकी जबान पर भौजी की तारीफ रहती है।

इसके दस बरस बाद के बदलते परिवेश के साथ घर के बदलते वातावरण का चित्रण लेखक ने किया है। घर का बँटवारा हो जाता है, एक घर में कई चूल्हें बन जाते हैं। चाचा और भाई भी अलग हो जाते हैं। परिवार के सभी लोग दिल से भी जुदा हो जाते हैं। चाची की मृत्यु के पश्चात भाभी घर की मालकिन बनी है। किसी के दिल में प्रेमभाव नहीं, न हि एक दूसरे के लिए शील स्वभाव, बल्कि कलह की भावना बनी। झगडे-कलह के वातावरण में भौजी भी बहुत झगडालु बनती है। लेखक कहते हैं, ''खानदान और प्रारंभिक वातावरण का क्या असर हाता है, स्पष्ट देखिए दस वर्षो तक जो बारुद राख के नीचे ढँकी थी, वह अचानक विस्फोट कर उठी है। जिस मुँह से कभी फुल झडते, अब उससे विज-बुझे तीर निकलते। भौजी की गालियाँ- कलेजे को भी आरपार कर जाती है।'' एक दिन ऐसी नौबत आ जाती है कि लेखक भौजी के शब्दों से घायल होकर अपना आपा खो बैठते हैं। क्रोध में पागल होकर वे भौजी पर हाथ उठानेवाले थे, उनके भैया आकर उन्हें रोकते हैं। अपने गुस्से पर लेखक शर्मिंदगी महसूस करते हैं।

इस घटना के बाद अपने परिवार को लेकर अलग घर बसाते हैं। भौजी फिर भी लेखक के परिवार जनों से झगडा करती, बक-झक करती, लेकिन कोई दूसरी स्त्री उसीके सामने लेखक की बुराई करके उसे खुश करना चाहती, तो वह भी उन्हें पसंद नहीं आता। वो उस स्त्री को ही डाँटती है। जैसे ही त्योहार के दिन आते, वह नए उत्साह से सबके साथ घुल-मिल जाती। खुद चालीस की आयु में भी वह उम्र से छोटी लगती। अपने पारिवारिक जिम्मेदारियों से, चिंता से जर्जर देवरों को खोज-खोज बुलाती। होली तो उनका प्रिय त्योहार। लेखक भौजी की इस याद को कभी नहीं भूल सकते। होली के दिन भौजी मिट्टी-पानी, अमीर-अबरख, पाने और मालपुट-गुलगुले खिलाए बिना किसी को नहीं छोडती। लेखक उसे कहते हैं कि अब हमारे बच्चे होली खेलेंगे, हम उन्हें देखेंगे। लेकिन भौजी यह बात नहीं मानती।

बच्चों से बहुत स्नेह करती है भौजी। झगडे होने के बावजूद, भौजी लेखक के बच्चे से बहुत प्रेम करती है। बिडनी के डंक मारने से रोते बच्चे लिए वह भागा-दौडी करके उसपर उपचार करती है। बच्चे का बुखार उतरने तक वह घर नहीं जाती। लेखक कहते हैं कि उसकी पत्नी रानी भौजी के बच्चों को धर्म की माँ समझती हैं। उन दोनों की शादियों में बहुत कुछ करते हैं।

इसतरह प्रस्तुत रेखाचित्र में लेखक ने अपने आत्मीय भौजी का चित्रण उसके गुण-दोषों सहित किया है। साथ ही उसके साथ अपने झगडे पर, क्रोध पर शर्मिंदगी भी व्यक्त की हैं।

3.3.3.9 परमेसर :–

लेखक के पट्टीदारी का ही व्यक्ति है परमेसर। परंतु उससे इतनी भी निकटता नहीं। उसकी आवारागर्दी, फिजूलखर्ची उसे कर्ज में डूबो दे ऐसी है, इसलिए लेखक परमेसर के बीमारी की खबर सुनकर तुरंत मिलने के लिए जाए, ऐसा नहीं सोचते। परंतु शाम को काम खत्म करके लेखक गाँव चले ही जाते हैं।

परमेसर की फिजूलखर्ची, कर्जे के साथ उसका चौपार मकान अब राममडैया बन गया है। वहीं चौका, भंडारघर, शयनघर। उसीमें उसका पूरा परिवार रहता है। उसके परिवार में पत्नी, भाई, बालबच्चें बूढें पिताजी, सभी वहीं रहते थे। उसी जगह एक कोने में पुआल पर परमेसर लेटा है। अतिसार और 104 डिग्री बुखार, दस्त पर दस्त ऐसी भीषण बीमारी से जूझ रहा है। अद्र्धचेतन अवस्था में पडा है। आँखे धँसकर गव्हर में चली गई है। आयुर्वेदीय अस्पताल के वैद्यजी आकर दवा दे जाते हैं। वैद्य कहते हैं कि यह रात निभ जाय तो कोई आशा की जाय। परंतु वह रात नहीं निभी, परमेसर चल बसा। परमेसर को अतिसार इसलिए हो जाता है क्योंकि कई जून भूखे परमेसर ने कच्चे शकरकंद पेट भर ठूँस लिये थे। शंकरकंद पचे नहीं, दस्त खुल गए, बुखार दौड आया।

परमेसर के चले जाने से लेखक ने उसकी बहुत सारी यादें यहाँ बताई हैं। जिससे उसकी आवारागर्दी, गलतियाँ होने के बावजूद गाँववालों के लिए कितनी महत्वपूर्ण थी इसका पता चलता है।

गाँव में जब जब होली, दशहरा, दीवाली, छठ या कार्तिक पूर्णिमा आती है, परमसर के लिए उसाँसे ली जाती हैं। लेखक कहते हैं, ''परमेसर की आवारागर्दी एक ऐसी आग थी, जो खुद को जलाती है, लेकिन दूसरे को रोशनी और गरमी ही देती है।'' उसे लेखक बचपन से देखते आए हैं। पढने में तेज था किंतु पढा नहीं। बडा गोरा छरहरा नौजवान होने से शादी अच्छे घर में होती है। बच्चें भी हो जाते हैं। सयाना होनेपर घर की बागडोर उसके हाथ में आ जाती हैं। वह अपनी मनमर्जी से जीने लगता हैं। गाँजे की लत लग जाती हैं। गाँजा छूटने पर भोग की चिलम जलने लगती हैं। दोस्त भी उसीके लायक मिल जाते हैं। शहर, तीरथ.., मेला घूमता रहता है। उसके दरवाजे पर हमेशा एक ढोलक और कई जोडे झाल बने रहते। शाम को परमेसर की राममडैया गुलजार हो जाती। वह होली के गीत गाता है। वसंतपंचमी से मानो उसे बदमस्तियों का लाइसेंस मिल जाता है। होली के दिन गाँव भर कीचड उछाल कर हर एक को इस धमाचौकडी में शामिल कर लेता। हो–हल्ला मचाता। भोजन करके परमेसर की होली मंडली शाम को गाँव के धनी, गरीब, एक–एक के दरवाजे पर गाते, स्वांग रचते हैं। लेखक कहते हैं, ''परमेसर क्या सिर्फ डफ ही बजाता? निस्संदेह उसके हाथ ताल पर डफ पीटे जाते, किंतु उसके तो अंग–अंग मानो गा–बजा रहे होते। उछलता, कूदता, नाचता, हा हा करता। परमेसर के बाद भी गाँव में होली होती, किंतु वैसा रंग नहीं आया।''

दशहरे के दसों रातों में वह गाँवों में कोलाहल मचाए रहता। ओझा द्वारा भूत खेलने का रिवाज भी मनोरंजक बनाता था। परमेसर के हाथ में मानों भूतों का सूत्र रहता, जिस ओझा पर जिस भूत को चाहे वह मँगाता था। कभी–कभी वह खुद अपने ही पर भूत बुलाता। उसके भूत अजब किस्म के होते। नये हावभाव

करते, नई बोलियाँ बोलते और उनके आशीर्वाद ऐसे होते कि, सुनते ही लोग लोटपोट हो जाते। बच्चों को भी हँसाता। हँसते-हँसते परमेसर की यशोगाथा गाते लोग घर आते।

कार्तिक-पूर्णिमा के लिए गंगास्नान के लिए अपनी मंडली के साथ वह जाता है। रेल से जाता है पर टिकट नहीं कटवाता। म्लेंछ को पैसे देने के बाद गंगास्थान का कोई महत्व नहीं ऐसा वह सोचता है। पहेलजाघाट से सोनपुर तक वह अलग-अलग तमाशे करता। पैसे आते ही मंडलियों के लिए मिठाई बँटता है, गाँजे पर खर्चता है। उसकी इस हालत पर लेखक उसे समझाते हैं, जिम्मेदारी की याद कराते हैं, तब अखाडाघाट पर वह भोजनालय खोलता है। इसके लिए लगनेवाले पैसों के लिए अपनी पत्नी का सोने का कंठा बेच देता है। भोजनालय में सबको खिलाता है पर कंटाह की तरह पैसे वसूलना उसे अच्छा नहीं लगता। इस तरह यहाँ भी वह नुकसानी में ही आ जाता है। चाचा, चाची समझाने की कोशिश करते हैं। लेखक गुस्से में कुछ कहना चाहते हैं, उससे पहले वह धीरे से उठता है और हँसता हुआ, 'मालिक है सियाराम, सोच मन काहे करे' गाता हुआ चलता है। इस तरह 'परमेसर' एक आवारा किस्म का आदमी होते हुए भी उसकी जिंदादिली, हँसी-मजाक, होली-दीवाली-दशहरे के त्योहारों मे कैसे रंग भरती थी, इसका सुंदर रेखांकन लेखक ने यहाँ किया है। नशे की लत होने के बावजूद वह गाँव में किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता और उसके न होने से इन त्योहारों में होनेवाली हँसी-मजाक की बातें भी गायब हो जाती हैं, इसे लेखक ने दिखाया है।

3.3.3.10 बैजू मामा :-

जब लेखक 1930, 1932, 1937, 1938, 1940 में पटना जेल जाते हैं, तब उनकी मुलाकात बैजू मामा से हो जाती है। पीछले तीस सालों से वे इस जेल को आबाद किए हुए हैं। उनके चेहरे या चाल-ढाल से, कहीं से भी वे खूंखार या मुजरिम नहीं लगते, न ही किसी तरह का बडा अपराध उन्होंने किया हो ऐसा भी नहीं। लेखक कहते हैं, ''साठ साल की उम्र, ताँबे का रंग, चेहरे पर झुर्रियाँ, बाल एक-एक सफेद, लेकिन इस बीमारी में भी, जब पैर डगमगा रहे थे, वह तनकर जा रहा था - जैसे वह नौजवान हो।''

लेखक उन्हें जेल से छूटने के बाद घर जाने की सलाह देते हैं। घर में दो भतीजें, उनके बाल-बच्चे हैं पर वह घर में खाली हाथ नहीं जाना चाहते। फिर जेल से छूटने के बाद छोटी-छोटी चोरी करके किसी-तरह तीस रुपये जमा करना चाहते हैं। तीस रुपये के लिए सिर्फ पौने-तीन रुपये की कमी थी तभी पकडे जाते हैं। फिर इस बार पुराने मुजरिम होने से पॉच साल की सजा उन्हें सुनाई जाती है। बैजू मामा के तीस रुपये की चोरी के लिए जिंदगी के तीस साल बर्बाद हो जाते हैं। इसी जेल जीवन की जिंदगी में बैजू मामा जेल में पेड -पौधे लगाते हैं, उनकी देखभाल करते हैं। आम-जामुन, अमरुद नीम जैसे बडे-बडे पेड लगाते हैं, उनकी निगरानी करते हैं। गुलाब, गेंद के पौधे लगातें हैं। पेड-पौधों से इतनी तादात्म्यता प्राप्त करते हैं कि जब वह जेल से बाहर होते हैं, उन्हें लगता है, ये पेड-पौधे मानों उन्हें पुकारते हैं।

होली के दिन जेल में सरसों के तेल में गुड देकर छ्राने गेहूँ के आटे के पके पुए और थोडे दूध में पूरा पानी डालकर उबाली गई खीर ये पकवान बनाए जाते थे। बैजू मामा की रिहाई होली के एक दिन पहले

होती है, तो वह जमादार, दरोगा से बहुत मिन्नतें करता है कि होली के पश्चात रिहाई करें। जेलर साहब कानून कैसे तोडते? बैजू मामा उसी दिन रिहा होते हैं। बैजू मामा कहते हैं, ''हुजूर आपका इसमें क्या हाथ, मेरी ही तकदीर फूट गई, बाबू! जेलरसाहब उस पर हँस पडते है। जेब से रुपया निकालकर बैजू मामा को देते हैं और कहते हैं, ''बाजार से इसी के पूए खरीदकर खा लेना।'' पर रुपया लौटाकर बैजू निकलते हैं। मेट को कहते हैं कि उनके लिए पुए निकालकर रखें। बाहर निकलते ही वे रेल स्टेशन के मालगुदाम में एक गाडीवान के बैल की चोरी करने की कोशिश करते हैं और फिर बैजू मामा जेल पहुँचते हैं। मेट ने जो पुए अपने लिए बचाकर चुराकर रखे थे, वे बैजू मामा को दे देते हैं। इसी रेखाचित्र में अंत में बैजू मामा सेसन जज से अर्ज देते हैं कि उन्होंने जेल में तीस साल बिताए हैं, बिना काम किए उन्होंने वहाँ कुछ खाया नहीं। सरकार का काम किया है, इसलिए उन्हें पिनसिन (पेंशन) मिलनी चाहिए। लेकिन इस अजीब दलील का उत्तर किसी के पास नहीं था। बैजू मामा के अपराधीपन के भीतर उनकी इन्सानियत, मासूमियत का चित्रण लेखक ने हास्य व्यंग्यात्मक रुप में किया है।

3.3.3.11 सुभान खाँ :-

लेखक ने इस रेखाचित्र में गाँव के मुसलमान सुभान खाँ का परिचय दिया है। घर की दीवारों की मरम्मत करने के लिए आए सुभानदादा को लेखक ने अपने बचपन से देखा है। लेखक बचपन में उनकी सघन, सफेद दाढी में अपनी उँगलियाँ डालकर खेलते हैं। उनके बाह्य-वर्णन में लेखक कहते हैं-लंबा, चौडा, तगडा है बदन इनका। पेशानी-चौडी, भवें बडी सघन और उभरी। आँखों के कोने में कुछ लाली और पुतलियों में कुछ नीलेपन की झलक। नाक असाधारण ढंग से नुकीली। दाढी सघन, इतनी लंबी कि छाती तक पहुँच जाए - वह छाती जो बुढापे में भी फैली हुई है। सिर पर हमेशा ही एक दुपलिया टोपी पहने होते और बदन में नोमस्तीन। कमर में कच्छेवाली धोती, पैर में चमरौधां जूता। चेहरे से नूर टपकता, मुँह से शहद झरता। भले मानसों के बोलने-चालने, बैठने-उठने के कायदे को पूरे पाबंदी करते वह!'' सुभानदादा के नमाज को लेकर लेखक बचपन में उनसे कुतहलवश बहुत सवाल करते हैं। अपनी तीरथ के लिए मामा से कर्जा लीजिए यह भी सुझाते हैं। इसी बालसुलभ बातचित में वहाँ से उनके लिए छुआरे ले आइए कहते हैं। सुभानदादा लेखक को कंधे पर बिठाकर इधर-उधर घुमाते हैं, फिर काम पर लग जाते हैं। नौ साल की उमर तक लेखक को सुभानदादा अपने घर ले जाकर अपने पोते-पोतियों, नाती-नातिनों के साथ करबला के लिए ले जाते थे। मोहर्रम के दिन मुसलमान बच्चों की तरह लेखक भी ताजिए के चारों ओर रंगीन छडी लेकर कुदते थे। ईद-बकरी ईद को सुभानदादा उन्हें भूलते नहीं थे और न होली दीवाली को लेखक उन्हें। होली के दिन नानी अपने हाथों में पुए, खीर और गोश्त परोसकर सुभानदादा को खिलाती थी। लेखक भी सुभानदादा की दाढी में रंग मल देते थे।

लेखक शहर में अंगेजी स्कूल में जाने लगे थे। छुट्टी में घर आते हैं, तो सुभानदादा उनके हाथ में छुआरे देते हैं, जो उन्होंने हज-यात्रा में से लाये थे। सुभानदादा के बेटे भी कमाने लगे थे। अब सुभानदादा अपना वक्त नमाज-बंदगी में ही बीताते थे। उनकी बुजुर्गी और ईमानदारी की वजह से पंचायतों में दूर-दूर के हिंदू-मुसलमान उन्हें पंच मुकर्रर करते।

सुभानदादा की बडी चाह थी कि वे एक मस्जिद बनाए। उनकी यह चाहत पूरी होती है। लेखक के मामाजी के बगीचे से शीशम, सखुए-कटहल आदि पेडों से मस्जिद की लकडी की जरुरत पूरी कर दी जाती है। मस्जिद के उद्घाटन के लिए जवार के सभी लोगों को न्योता दिया जाता है। हिंदू हलवाई से मिठाइयाँ बनाते हैं और हिंदुओं के सत्कार भी किए जाते हैं।

हिंदू-मुस्लिम दंगों, नफरत की हवा गाँव में भी पहुँचती है। बदलते जमाने में गाँव में हिंदू-मुस्लिम झगडे होने लगते हैं। गाय की कुर्बानी की खबर फैलती है। जवार के सुभानदादा के मस्जिद में भी गाय की कुर्बानी का प्रसंग लेखक ने यहाँ चित्रित किया है। सुभानदादा के दरवाजे पर मुसलमानों की भीड थी और लेखक के मामा की रजामंदी के बिना किसी बडी घटना के लिए किसी के पैर उठाने की हिम्मत नहीं हो सकती थी। आखिर झगडे में कल्लू का बेटा सुभानदादा से जबान लडाता है। तब सुभानदादा कहते हैं, ''यह मजहब नहीं है। मैं हज से आया हूँ। कुरान मैंने पढी है। गाय की कुरबानी लाजिमी नहीं है।'' सुभानदादा मसजिद के सामने बैठ जाते हैं और कहते हैं, ''पहले मेरी कुर्बानी होगी उसके बाद गाय की कुर्बानी हो सकेगी।'' सुभानदादा वहाँ मस्जिद के दरवाजे पर तसवीर लेकर संगमरमर की मूर्ति से निश्चल निस्पंद बैठ जाते हैं। उनकी आँखों से निकले आँसू की धारा में गाय की कुर्बानी का सवाल खत्म हो जाता है। उस समय वे साक्षात प्रेम और भाईचारे का संदेश देनेवाले देवदूत के समान लगते हैं। लेखक अपनी सुटकेस में हुसैन साहब के गंडे, अजीबो-गरीब ढंग से लिपटाये डोरे, बध्दियाँ-गंडे आदि सब सँभलकर रखते हैं। जब सुटकेस खोलते हैं, तब उन्हें हुसैनसाहब और करबला की याद आती है। और इसी के साथ सुभानदादा की याद में लेखक अपना सिर उनके सजदे में झुका देते हैं। इस तरह प्रस्तुत रेखाचित्र में लेखक ने उस समय के हिंदु-मुसलमानों के सौहार्दपूर्ण संबंधों को प्रस्तुत किया है। दूसरी ओर बदलते परिवेश में हिंदु-मुसलमानों में होनेवाले झगडे धर्म के नाम पर किस तरह बढने लगे थे, इसे भी चित्रित किया है। सुभानदादा और लेखक के मामा जैसे लोग हों, तो गाँव के लोगों में समझदारी से समझौता हो सकता है यह भी दर्शाया है।

3.3.3.12 बुधिया :-

बुधिया के प्रति लेखक की दलित नारी चेतना के साथ शोषितों के प्रति होनेवाली सहानुभूति प्रकट हुई है। बुधिया से लेखक का परिचय अनायास, आकस्मिक और अविस्मरणीय घटना थी। लेखक ने इसमें बुधिया का बचपन, जवानी एवं बुढापे को चित्रित किया है। बचपन की बुधिया चंचल और चुलबुली है। एक छोटी-सी बच्ची मैली-कुचैली धूल-धुसरित बुधिया माटी के खिलौनों की दुनिया रचकर अपने सपनों की झाँकी प्रस्तुत करती है। किशोर लेखक के भावुक मन को छू जाती है।

बुधिया का चरित्र एक अनुभूत यथार्थ होने से विश्वसनीय है। स्थल, समय और परिणामों को यहाँ सच्चाई से उद्घटित किया है। बुधिया का चित्रण लेखक ने उसके आयु के तीन संदर्भो एवं तीन गतिशील बिंबों के द्वारा रेखांकित किया है। बचपन की मैली-कुचैली, माटी के खिलौनों से अपने सपने सजानेवाली बुधिया का रुप एक तरफ है, वहीं दूसरी तरफ किशोरी एवं जवान होती बुधिया शोख, चंचल, नटखट और जीवन से भरपूर अल्हड युवती के रुप में सामने आती है। बरसाती नदी का वेग धारण किए, स्वतंत्रता और

बंधुता की चाह लिए। समाज की नजरों में किसी हद तक निर्लज्ज-अपवादों से घिरी है। लेखक को गाँव का जगदीश कहता है, ''अब बुधिया पेबंदवाली बुधिया नहीं है, अब उसकी चुनर का रंग कभी मलिन नहीं होता। उसकी चोली सिवाईपट्टी का दर्जी सीता है। माना वह रोज घास को आती-जाती है, लेकिन उसके हाथ में ठेले की बात, आप घिस्से भी नहीं पायेंगे।'' दुनिया से उसे कोई लेना देना नहीं, वह अपनी-ही इच्छा और शर्तोंपर जीना चाहती है। गाँव के नौजवान लडकों को अपने इशारे पर नचाने में उसे मजा आता था। लेखक कहते हैं कि, यह मजा शायद गोपाल-कृष्ण को भी नहीं आया होगा। वह गाते-गाते भागती-हँसती इठलाती थी, उसे शर्म नहीं आती थी। उसकी हया बेहयायी पर उतर जाती थी। वह ठहाका लगाती रहती थी।

लेखक बुधिया की तीसरी अवस्था (बुढापे) का वर्णन करते हुए लिखते हैं, ''बुधिया अब बच्चों से घिरी माँ-मातृत्व की भावना से सराबोर। शांत, स्थिर, जीने की भरपूर इच्छा रखे प्रौढा के रुप में नजर आती है। बाढ के उफान के बाद शांत, मंथर गति से आगे बढती धारा के समान प्रीतिकर, अनिर्वचनीय, अद्भुत, छबि थी बुधिया की। उसकी ममत्वपूर्ण मातृछबि के आगे-बुधिया के विगत सारे विकार धुल जाते हैं।''

इस तरह प्रस्तुत रेखाचित्र में लेखक ने बुधिया के बचपन से बुढापे तक की तस्वीर प्रस्तुत की है। नारी के जीवन में आनेवाले परिवर्तनों की अन्तर्धारा लेखक की संवेदना से अभिव्यक्त हुई है। ग्रामीण अंचल की निम्नवर्ग की बुधिया गाँव की उपेक्षिता होते हुए भी लेखक के मानवीय संवेदनापूर्ण वर्णन से महान हो गई है।

इस तरह हम देखते हैं कि 'माटी की मूरतें' इस रेखाचित्र-संग्रह में लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने चलते फिरते आम आदमियों के जीवन को स्पष्ट किया है। रामवृक्ष बेनीपुरी जी ने इन लोगों की सच्ची और भली-बुरी आदतों के साथ खिंची रेखाओं से जिंदगी का निखार अपने-आप चमकता है। मानव के मन में अपनी मिट्टी के प्रति जो स्वाभाविक प्रेम होता है उसी के बलबुते पर लेखक ने इन लोगों का चित्रांकन किया है। हजारीबाग सेंट्रल जेल के एकांत जीवन में लेखक ने अपने गाँव और ननिहाल के इन लोगों का चित्रण किया है। भारतीय गाँवों, ग्रामीण जीवन का जीवंत दस्तावेज यहाँ चित्रित है।

3.3.3 'माटी की मूरतें' रेखाचित्र-संग्रह में चित्रित समस्याएँ –

'माटी की मूरतें' 1941 ते 1945 ई. के बीच में लिखे गए संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का संग्रह है। इन रेखाचित्रों में कुल 12 व्यक्ति, जो रामवृक्ष बेनीपुरीजी के अत्यंत प्रिय है ऐसे चुनिंदा लोग हैं। हर व्यक्ति के विषय में बताते समय लेखक अपने बचपन के दिन याद करते हैं। भारतीय ग्रामीण संस्कृति से जुडे ये लोग गाँव के ही साधारण लोग हैं, साथ ही उनके असाधारण लौकिक कर्म से देवत्व प्राप्त करते हैं। मनुष्य मन की अच्छी पहचान लेखक को है। उसके साथ ही तत्कालीन ग्रामीण जीवन से जुडी अनेक समस्याओं का चित्रण भी यहाँ हुआ है। इन रेखाचित्रों के विषयवस्तु के अंग के रुप में ये समस्याएँ उभरकर आती हैं। ग्रामीण जीवन में अनेक संकटो से जूझनेवाले ये चरित्र खुद-ब-खुद इन समस्याओं को दर्शाते हैं।

रुढि एवं अंधविश्वास की समस्या – गाँव जीवन में अनेक रुढि, परंपराएँ होती हैं। उसी तरह लेखक ने इन रुढि-मान्यताओं, अंधविश्वासों के कारण होनेवाले परिणामों का सचित्र मानों 'रुपा की आजी' में दर्शाया

है। 'रुपा की आजी' में परिवार-जनों की आकस्मिक मृत्यु के लिए रुपा की आजी डायन, भूतनी कहलाई जाती है। जब कि उसे लोगो की सहानुभूति चाहिए होती है, वहाँ घृणा मिलने से अंत में उसकी दारुण मृत्यु होती है।

व्यसनाधीनता - गाँजे, भाँग की समस्या के कारण खुद की बरबादी के साथ परमेसर जैसे आदमी अपने परिवार को भी आर्थिक संकटों में डालता है। 'देव' भी इन्ही गाँव विकृतियों से अपने को हमेशा खतरे में डालता रहता है। अपने थाने के क्षेत्र का नेता बनकर पुलिस के अत्याचार सहता है।

धार्मिकता - गाँव में हिंदू-मुस्लिम संघर्ष की समस्या का चित्रण सुभानदादा के साथ हुआ है। सुभान-दादा मस्जिद का निर्माण जिस मकसद से करते हैं वहाँ गाय की कुर्बानी की बात सुनकर तिलमिला उठते हैं। 'रजिया' में भी निम्नवर्ग की मुस्लिम चूडीहारिन को लेखक जब बचपन में देखते हैं, तो उसकी अलग वेशभूषा की वजह से वे उसे देखते ही रहते हैं। क्योंकि मुस्लिम बच्ची की वह अलग पहचान उनके ध्यान में रहती है। बैजू मामा भी अपने अपराध से अपने कुलवंश की पहचान छिपाते हैं।

झगडे-कलह की समस्या - 'बलदेव सिंह' में भाई-भाई के बीच बँटवारें होते हैं, तो आम के पेड को लेकर झगडा होता है। दुसरी ओर विधवा औरत की जमीन हडपने की कोशीश की जाती है। इस झगडे को मिटाने वाले बलदेव सिंह को धोरवे से मार देते हैं। निरपराध, परोपकारी बलदेव सिंह पहलवान इस झगडे का शिकार होते हैं। 'भौजी' रेखाचित्र में भी लेखक ने घर की औरतों की झगडा करने की प्रवृत्ति को चित्रित किया है। लेखक की प्रिय भौजी भी बहुत दिनों से दबी चिनगारी के समान गाली-गलौच करती है।

न्याय-व्यवस्था एवं पुलिस के अत्याचार - 'देव' रेखाचित्र में देव के साथ इन्स्पेक्टर बहुत ज्यादती करते हैं। वह जोर से चिल्लाए इसलिए बूटों के साथ इन्स्पेक्टर देव की छाती पर हुमचने लगते हैं।

बैजू मामा जेल में बार-बार जाते हैं। आर्थिक अभाव में तीस रुपए के लिए चोरी करते हैं। दरोगाजी जेलर से बिनती करते हैं कि उन्हें एक दिन के बाद रिहा करें, ताकि वे मालपुए और खीर खा सकें। दुसरी ओर पाँच साल सजा के बाद पेन्शन की अर्जी लिखते हैं।

इस तरह प्रस्तुत रेखाचित्र-संग्रह में गाँव-जीवन की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक समस्याओं का चित्रण लेखक ने किया है।

3.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न:-

अ) निम्नलिखित में से सही पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1) रामवृक्ष बेनीपुरी जी के रेखाचित्र-संग्रह का नाम '......... मूरतें' है।

अ) सोने की   ब) चाँदी की   क) तांबे की   ड) माटी की

2) रजिया .... है।

अ) कलाकार   ब) चूडीहारिन   क) कामवाली   ड) दर्जी

3) प्रस्तुत रेखाचित्र–संग्रह में.........पहलवान है ।

अ) मंगर   ब) देव   क) बलदेव सिंह   ड) सरजू भैया

4) बालगोबिन भगत ....जाति के थे।

अ) क्षत्रिय   ब) ब्राह्मण   क) तेली   ड) निम्न

5) बैजू मामा .... साल तक जेल में थे।

अ) तीस   ब) चालीस   क) दस   ड) बीस

6) सरजू भैया की ....संताने हुई।

अ) चार   ब) पाँच   क) दो   ड) तीन

7) रजिया के खाविंद का नाम.........था।

अ) हसन   ब) अबुहसन   क) मोहसीन   ड) मुहमद

8) तपेसरभाई के बगीचे के विलायती .... के पेड के फल देव तोडता था।

अ) आम   ब) नारियल   क) पपीते   ड) अमरुद

9) मंगर की अद्र्धांगिनी का नाम.........था।

अ) सोमालिया   ब) भकोलिया   क) काली   ड) लक्ष्मी

10) परमेसर कच्चे ....पेट भर ठूँस लेता है।

अ) प्याज   ब) शंकरकंद   क) मूँगफली   ड) आलू

11) लेखक को रजिया .... नाम से पुकारती है।

अ) चाचा   ब) भाई   क) मालिक   ड) दादा

12) जवानी में हजारों दिलों की धडकन .... थी।

अ) रजिया   ब) भौजी   क) रुपा की आजी   ड) बुधिया

13) मंगर आधी रोटी पहले .... को खिलाता है।

अ) पत्नी   ब) कुत्ते   क) बैलों   ड) बच्चों

14) गाँव में .... के आने से नई जान आ गई .. जान आ गई ...जवानी आ गई।

अ) बलदेव सिंह   ब) परमेसर   क) बुधिया   ड) देव

15) रुपा की आजी जाति से ....है।

अ) तेली ब) बाभनी क) मुस्लिम ड) क्षत्राणी

ब) उचित मिलान कीजिए।

1) माटी की	अ) मस्जिद
2) रजिया	आ) तेली
3) सुभानदादा	इ) मूरतें
4) रुपा की आजी	ई) पहलवान
5) बालगोबिन भगत	उ) पटना जेल
6) परमेसर	ऊ) चूडीहारिन
7) बलदेव सिंह	ए) डायन
8) बैजू मामा	ऐ) शंकरकंद
9) सरजू भैया	आ) मंगर
10) हलवाहा	औ) बडे भाई

क) निम्नलिखित में से सही और गलत पहचानिए।

1) 'माटी की मूरतें' में 12 रेखाचित्रों का संकलन है।

2) मंगर स्वाभिमानी, ईमानदार नहीं है।

3) रजिया चूडीहारिन नहीं है।

4) बलदेव सबके साथ गुस्से से पेश आता है।

5) सरजू भैया किसी पर भी उपकार नहीं करते।

6) सकोलिया – मंगर की आदर्श जोडी है।

7) सरजू भैया की पाँच संताने हुई।

8) दुसाध के बेटे को कुत्ते ने काटा।

9) सुभानदादा का एक अरमान था, मस्जिद बनाने का।

10) कार्तिक से फागुन तक बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ शुरू होती।

3.5 पारिभाषिक शब्दावली :-

1) हैकल - चौकोर या पान के से दानों की गले में पहनने की माला।

2) छुआरे - खारक, सुखा खजुर।

3) राजमिस्त्रि - कारीगर।

4) गोडाँई - पाँव में पहनने की पायल।

5) ठेकुए - छठपूजा में ठेकुए का प्रसाद देते हैं - गेहूँ का आटा, घी, गुड से बना पकवान।

6) ताजिया - मकबरे का वह ढाँचा जिसमें इमाम हुसैन की कब्र दिखाई जाती है।

7) दुसाध - पासवान जाति।

8) तसबीह - जपमाला, सुमिरिनी माला।

9) कंटाह - श्राद्ध के ग्यारहवे दिन दान-दक्षिणा पानेवाले ब्राह्मण।

10) खुर्दबीन - माइक्रोस्कोप - ऐसा उपकरण जिससे अत्यंत सूक्ष्म चीजें भी देखी जा सकती हों।

11) दुपलिया - दो पल्लेवाली, एक प्रकार की टोपी जिसके दोनों पल्ले सीए रहते हैं।

12) खाँची - बडा टोकरा

13) निकोनी - निगरानी, देखभाल करना

14) औघड - अघोरी विद्या के अनुयायी

15) औघट - कठिण, अवघड

16) मुस्टंडा - धष्टपुष्ट

17) पुश्तैनी - पीढीजात।

18) सरगना - सरदार, मुखिया

3.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :-

अ) 1) माटी की 2) चूडीहारिन 3) बलदेव सिंह 4) तेली 5) तीस 6) पाँच 7) हसन 8) अमरुद 9) भकोलिया 10) शंकरकंद 11) मालिक 12) बुधिया 13) बैलों 14) बलदेव सिंह 15) बाभनी

ब) उचित मिलान-

1. इ - मूरतें

6. ऐ - शंकरकंद

2. ऊ – चूडीहारिन
3. अ – मस्जिद
4. ए – डायन
5. टा – तेली
7. ई – पहलवान
8. उ – पटना जेल
9. औ – बडे भाई
10. ओ – मंगर

क) सही – गलत पहचानिए –

1. सही
2. गलत
3. गलत
4. गलत
5. गलत
6. सही
7. सही
8. गलत
9. सही
10. सही

3.7 सारांश :–

1. 'माटी की मूरतें' रेखाचित्र-संग्रह में भारतीय गाँव-जीवन के 12 रेखाचित्र संकलित हैं। रामवृक्ष बेनीपुरी की यह सर्वोत्कृष्ट रचना है। भारत की लगभग सभी भाषाओं में और अंग्रजी में भी इसका अनुवाद हुआ है। इस रेखाचित्र-संग्रह में खेती-मजुरी से संबध्द ग्रामीण व्यक्तियों की असाधारण खूबियों का अंकन किया है। अनुभूत वास्तविकता के कारण इन चरित्रों की सत्यता स्वत: स्पष्ट होती है। रेखाचित्रों में घटनाओं को भी संपूर्णता के साथ रखा गया है। इसी घटनाक्रम में अपनी ओर से लेखन प्रतिक्रिया ऐसी देते हैं, जिससे विश्वसनीयता बढती है। पात्रों के बाह्यरुप वर्णन के साथ चारित्रिक विशेषताओं को भी चित्रित किया है।

2. 'रजिया' रेखाचित्र में लेखक ने एक चूडीहारिन का चित्रण किया है। उसके बचपन से वृद्धा वस्था का चित्रण इसमें है।

3. बलदेव सिंह का चित्रण करते हुए लेखक ने उसके पहलवान शरीर के साथ उसके मासूम स्वभाव का तथा उसकी करुण मृत्यु का चित्र खींचकर पाठकों के मन में संवेदना जगाते हैं।

4. 'सरजू भैया' में लेखक ने अपने बडे भाई के रुप में उनको चित्रित किया है। उनका चरित्र अनुकरणीय है। वे हमेशा दूसरों की मदद करते हैं। जिंदादिल, मिलनसार, हँसोड और मजाकिया ऐसा उनका व्यक्तित्व है।

5. 'मंगर' रेखाचित्र में लेखक ने ईमानदार हलवाहे का चित्रण किया है। जो जीवन के अंत तक अपने स्वाभिमान को सँजोता है। बुढापे की वजह से उसकी क्षीण होती प्रकृति को भी यहाँ चित्रित किया है, जिससे वास्तविकता स्पष्ट होती है।

6. रुपा की आजी गाँव में जो अफवाहें-अंधविश्वास होते हैं उसकी वजह से हमेशा नकारी जाती है। उसपर गाँववालों से अन्याय होता है, उसकी करुण मृत्यु का चित्र मन को झकझोर देता है।

7. देव रेखाचित्र में साहसी-निर्भिक बालक का चित्रण है, जो पढा-लिखा नहीं, लेकिन छात्रनेता बनता है। उसके साथ पुलिस द्वारा जो अत्याचार होते हैं, उसका चित्रण यहाँ किया है।

8. बालगोबिन भगत तेली समाज से और कबीर पंथी हैं, जो कबीर के पद सुमधूर आवाज में गाते थे।

9. 'भौजी' रेखाचित्र में लेखक ने अपने घर ब्याहकर आई अल्हड किशोरी के रुप में भौजी का चित्रण किया है। इसके साथ ही वह जिस तरह बढती जाती है, झगडती है, परंतु उसके मन में लेखक, उसके परिवार के प्रति जो प्रेम है उसे व्यक्त किया है।

10. 'परमेसर' रेखाचित्र में आवारा किंतु जिंदादिल स्थिति में रहनेवाले परमेसर को चित्रित किया है। आवारागर्दी की वजह से अपने आप को तथा परिवार को खस्ता हालत में वह डाल देता है और खुद भूखे पेट कच्चे शकरकंद खाकर अतिसार की वजह से मृत्यु पाता है।

11. 'बैजूमामा' इस रेखाचित्र में एक ऐसे अपराधी-चोर को चित्रित किया है, जिसकी भेंट लेखक से पटना जेल में होती है। तीस साल जिसने जेल में बिताए हैं, वह बिलकुल सीधा-साधा चोर है, जो सिर्फ तीस रुपये जमा करने के लिए चोरी करता रहता है।

12. 'सुभान खाँ' रेखाचित्र में लेखक ने मुस्लिम कारीगर को चित्रित किया है। हिंदू-मुस्लिम भेद से परे उनमें मानवीयता का अंश ज्यादा है, जिससे वे देवदूत के समान लगते हैं।

13. 'बुधिया' रेखाचित्र में लेखक निम्नवर्ग की बुधिया के जीवन के - बचपन, जवानी, मातृत्व के रुपों को व्यक्त किया है। उसके मातृत्व रुप को लेखक वंदन करते हैं।

3.8 स्वाध्याय:-

अ) लघुत्तरी प्रश्न-

1) रजिया के बाल्य-जीवन का चित्रण कीजिए।
2) बालगोबिन भगत का अपनी पतोहु के साथ व्यवहार लिखिए।
3) मंगर का लेखक के चाचा के साथ हुआ झगडा वर्णन कीजिए।
4) होली मंडली के साथ परमेसर होली कैसे मनाता है?
5) भौजी होली कैसे मनाती है?
6) सुभान खाँ के साथ लेखक बचपन में कैसे खेलते थे?
7) देव साँप को कैसे मारते हैं?

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'रजिया' रेखाचित्र का आशय लिखिए।
2) 'रुपा की आजी' की मृत्यु कैसे होती है?
3) 'बालगोबिन भगत' का चित्रण लेखक ने कैसे किया है?

4) मंगर के अंतिम जीवन में वह किन मुसीबतों से जूझता है?

5) 'बलदेव सिंह' रेखाचित्र का आशय लिखिए।

6) 'मैं सप्रेम नमस्कार करता हूँ -अपने प्यारे सुभानदादा को।' ऐसा लेखक क्यों कहते हैं?

7) सरजू भैया में गाँव की विकृतियों का चित्रण कैसे हुआ है?

3.9 क्षेत्रीय कार्य :-

- अपने परिचित प्रभावी व्यक्ति का रेखाचित्र लिखिए।
- हिंदी-मराठी रेखाचित्रकारों की सूची बनाइए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :-

1) स्मृति की रेखाएँ - महादेवी वर्मा

2) पथ के साथी - महादेवी वर्मा

3) व्यक्ति आणि वल्ली - पु.ल. देशपांडे

4) रामवृक्ष बेनीपुरी और उनका साहित्य - डॉ. गजानन चव्हाण

❑❑❑

इकाई–4

श्रेष्ठ निबंध – संपादक डॉ. अशोक गुप्त

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय-विवेचन

4.3.1 जगत्-प्रवाह - बालकृष्ण भट्ट

4.3.2 दाँत - प्रतापनारायण मिश्र

4.3.3 साहित्य की महत्ता-महावीरप्रसाद द्विवेदी

4.3.4 क्रोध - रामचंद्र शुक्ल

4.3.5 आचरण की सभ्यता - सरदार पूर्णसिंह

4.3.6 गेहूँ बनाम गुलाब - रामवृक्ष बेनीपुरी

4.3.7 साहित्य और जीवन - नन्ददुलारे वाजपेयी

4.3.8 देवदारु - हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

4.3.9 हिन्दी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय - रामविलास शर्मा

4.3.10 जमुना के तीरे-तीरे - विद्यानिवास मिश्र

4.3.11 पहला सफेद बाल - हरिशंकर परसाई

4.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

1. हिंदी के निबंध तथा निबंधकारों से परिचित होंगे।
2. लेखक के विचारों से परिचित होंगे।
3. शाश्वत जीवन–मूल्यों को परखने में मदद होगी।
4. चिंतन के क्षितिज का विस्तार होगा तथा लेखन–कला का विकास होगा।
5. भाषा के विभिन्न रूपों से परिचित होंगे।

4.2 प्रस्तावना

हिन्दी निबंध आधुनिक युग की देन है। निबंध का अर्थ है – बंधनयुक्त या बाँधना। किसी चीज को किसी के साथ जोड़ने, बाँधने या लगाने की क्रिया या भाव निबंध है। इसमें भावों–विचारों के विविध मतों और व्याख्याओं को सुव्यवस्थित, संगठित रूप में बाँधा जाता है। निबंध को अंग्रेजों में Essay कहा जाता है। यूरोप में फ्रान्सीसी लेखक मार्टिन निबंध के जनक माने जाते हैं। अंग्रेजी भाषा में बेकन को निबंध का पहला लेखक माना गया है। हिंदी निबंध का जनक बालकृष्ण भट्ट को माना जाता है। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जब भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा हिन्दी गद्य का स्वरूप निश्चित हो गया, तभी निबंधों का समुचित और क्रमिक विकास सम्भव हो सका। अतः निबंध साहित्य का प्रारंभ भी भारतेंदु युग से ही माना जाता है। भारतेन्दु काल से लेकर वर्तमान समय तक हिंदी निबंध साहित्य ने दीर्घकालीन यात्रा में अनेकों रूप–रंग को आत्मसात् किया। वर्तमान काल का निबंध साहित्य विविधमुखी है। इसमें विचारात्मक, समीक्षात्मक, साहित्यिक, वर्णनात्मक, विवरणात्मक, ललितात्मक, हास्य–व्यंग्यात्मक आदि अनेक प्रकार के निबंधों का विविध शैलियों में सृजन किया जा रहा है।

4.3 विषय–विवेचन

अब हम डॉ. आलोक गुप्त द्वारा संपादित 'श्रेष्ठ निबंध' संग्रह में निहित निबंधकारों के परिचय एवं उनके निबंधों के आशय पर विचार करेंगे–

4.3.1 जगत्–प्रवाह – बालकृष्ण भट्ट

बालकृष्ण भट्ट (1844-1914) का परिचय –

पंडित बालकृष्ण भट्ट हिन्दी के सफल पत्रकार, नाटककार और निबंधकार रहे हैं। वे भारतेन्दु युग के प्रतिष्ठित निबंधकार हैं। उन्हें आज की गद्य–प्रधान कविता का जनक माना जा सकता है। श्यामसुंदर दास ने 'हिंदी का मार्टिन' कहा है। रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी का स्टील' कहा है। हिन्दी प्रचार–प्रसार के लिए भट्ट जी ने 1933 में प्रयाग में 'हिन्दी वर्द्धिनी' नामक सभा की स्थापना की। 'हिन्दी प्रदीप' नामक मासिक पत्र भी

निकाला। इसके वे संपादक थे। काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा आयोजित हिंदी शब्दसागर के संपादन में भी उन्होंने बाबू श्यामसुंदर दास तथा शुक्ल जी के साथ कार्य किया। उन्होंने 'सौ अजान एक सुजान', 'रेल का विकट खेल', 'नूतन ब्रह्मचारी', 'बाल-विवाह' तथा 'भाग्य की परख' आदि छोटी-मोटी दस-बारह पुस्तकें लिखीं। उनके निंबधों की संख्या लगभग 1000 हैं। उनके निबंध 'भट्ट निबंधमाला' नाम से दो खंडों में प्रकाशित हैं। भट्ट जी ने जहाँ आँख, कान, नाक, बातचीत जैसे साधारण विषयों पर लेख लिखे हैं, वहाँ आत्म-निर्भरता, चारु-चरित्र जैसे गंभीर विषयों पर भी लेखनी चलाई है। 'चंद्रोदय' उनके साहित्यिक निबंधों में से है। समाज की कुरीतियों को दूर करने के लिए उन्होंने सामाजिक निबंधों की रचना की है।

'जगत्-प्रवाह' का आशय

मानव ने सभी क्षेत्रों में विकास के परचम फहराए हैं। अनेक ऐसे यंत्र, औजार और कल-कारखानों के निर्माण में दोगुना-चौगुना प्रगति की है। झरने, नदियाँ, समुद्र इत्यादि के प्रवाह रोक दिए हैं। कहीं पर उसके प्रवाह उलट कर दिए हैं। किन्तु लेखक का कहना है कि आज तक ऐसा कोई बुद्धिमान न हुआ जो जगत् के प्रवाह को रोक सके। या उसे एक ओर से दूसरी ओर पलट सके। मानव ने जो भी विकास किया हे वह अपने स्वार्थ के लिए किया है। धर्म पंडित भी सिर्फ पैसों के काम करते आ रहे हैं। बड़े से बड़े तपस्वी और मनस्वियों का लेखक ने अनुभव लिया है कि, वे सभी रूपया देख फिसल गए हैं। पैसों के लिए बाप-बेटे में बनती नहीं और भाई-भाई एक-दूसरे को मारने उतरते हैं।

'जगत्-प्रवाह' के कई नाम हैं। भिन्न-भिन्न समाज और संप्रदाय वालों ने अपने-अपने ढंग पर अपनी पसन्द और रुचि के अनुकूल नाम रखा है, किन्तु साधारणतः उसे सिद्धार्थक कहते हैं। बुद्धिमानों ने इस विषय में अनेक अनुमान लगाए हैं, पर कोई उसका रंग, रूप, आकार, स्थान का निर्धारण नहीं कर सका है। सच तो यह है कि जब तक यह प्रवाह अपने पूर्ण वेग से चला जाता है तभी तक है। जरा-सा मन्द पड़ा या एक निमेष मात्र को भी रुका कि कयामत या प्रलय का सामान जुट जाते देर नहीं लगती। योगाभ्यासी तथा वेदान्ती मन को मार शान्ति-शान्ति पुकारते हैं। यह नहीं विचारते कि जगत् के प्रवाह में शान्ति कहाँ? जमदेश, दारा, सिकन्दर से प्रबल प्रतापियों को कौन कहे, राम, युधिष्ठिर सरीखे जो अंशावतार माने गए हैं, जगत् के प्रवाह में पड़ उनका भी कहीं ठिकाना न लगा। जगत् का प्रवाह प्रचंड है। एक-दो मनुष्य नहीं, बल्कि देश के देश को अपनी एक लहर में बटोर न जाने कहाँ ले जा फेंकता है। जो देश सभ्य थे, उनका इस प्रचण्ड जगत् प्रवाह में पड़ ऐसा अस्त हुआ कि उसकी पुरानी बातें किस्से-कहानियों का मजूमन और चण्डूबाजों की गप्पें हो गई और जगत् का प्रवाह जैसा का तैसा बना ही रहा है। इस प्रवाह से तादात्म्य पानेवाला वह अपने गीत गाए जाता है, अपने स्थिर, निश्चय और उत्साह से जरा भी मुँह नहीं मोड़ता।

पुराने आर्यों ने इस प्रवाह को त्रिगुण-विभाग माना है। जहाँ जिस भू-भाग में जब इस प्रवाह का वेग सीधा और मनुष्य-जाति के अनुकूल रहा, प्रकृति के सब काम जब तक स्वभाव के अनुसार होते रहे, तब तक वहाँ सतोगुण का उदय रहा। तब प्रत्येक मनुष्य स्वर्ग सुख का अनुभव करता था। सच में यही उन्नति, तरक्की, सभ्यता, उदारभाव, स्वतंत्रता थी। लेकिन भारत में सतोगुण का उदय हुआ। सतोगुण घटने से रजोगुण

निर्माण हुआ, इसके परिणामस्वरूप प्रमाद, आलस्य, तृष्णा, हिंसा, अपना और पराया आदि बढ़ गए। विलायत में इन दिनों रजोगुण ही बढ़ा-चढ़ा है। बल्कि युग संध्या के क्रम पर तमोगुण की तरक्की होती जाती है। वह प्रवाह जब तमोगुण के साथ टकराता है, तब राग-द्वेष, बैर, फूट, इर्ष्या, द्वेष, हिंसा, पशुत्व, विषय-लंपटता चित्त की क्षुद्रता बढ़ती है। आज कल इसी को बड़ा सुख मान रहे हैं। निबंधकार दो टूक कहते हैं कि ऐसे पराधीन निकृष्ट जीवन से अधिक नरक के प्राणी भी श्रेष्ठ सुखी हैं।

सूर्यदेव के प्रतिदिन उदय और अस्त से आयु घटती जाती है। कार्य के बोझ से लदे हुए अपने व्यापार में व्याप्त अनेक प्रकार की विपत्ति और मरणभरी जिंदगी को देख कौन परेशान नहीं होता। इस महाप्रवाहपूर्ण भव-सागर को पार करने के लिए एकमात्र उत्तम उपाय धैर्य है। 'जगत्-प्रवाह' निबंध में लेखक ने सृष्टि से एकरूप, तादात्म्य पाने पर ही मनुष्य-प्राणि वास्तव में सुखी, संपन्न बन सकता है। सृष्टि के बिना मानव का कोई अस्तित्व नहीं है। यथा - भौतिक कामना और लोभ जैसे नदी के जल-प्रवाह से पार जाना चाहते हैं, तो धैर्य की नौका पर चढ़ने की लेखक ने अपील की है।

4.3.1 दाँत – प्रतापनारायण मिश्र

प्रतापनारायण मिश्र (1856-1894) का परिचय –

हिन्दी गद्य साहित्य के सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रतापनारायण मिश्र भारतेन्दु मण्डल के प्रमुख लेखक, कवि और पत्रकार थे। रामचंद्र शुक्ल ने उन्हें 'हिंदी का एडीसन' कहा है। मिश्र जी ने 'ब्राह्मण' नामक मासिक पत्र निकाला और उसका संपादन किया। भारतेंदु जैसी रचनाशैली, विषयवस्तु और भाषागत विशेषताओं के कारण मिश्र जी प्रतिभारतेंदु अथवा द्वितीयचंद्र कहे जाने लगे थे। मिश्र जी का 'हिंदी, हिंदू, हिदुस्तान' प्रसिद्ध नारा था। एक सफल व्यंग्यकार और हास्यपूर्ण गद्य-पद्य-रचनाकार के रूप में हिंदी साहित्य में उनका विशिष्ट स्थान है। 'निबंध नवीनतम मैं' उनके निबंधों का संग्रह है। समाजसुधार को दृष्टि में रखकर उन्होंने सैकड़ों निबंध लिखे हैं।

'दाँत' निबंध का आशय

'दाँत' दो अक्षरों से बना हुआ एक साधारण शब्द-रूप है। परंतु दाँत मनुष्य के लिए शब्द-रूप मात्र न होकर स्वाद का भंडार भी है। जिसके मुँह में दाँत हैं, उनके मुँह की शोभा का वर्णन अपरिमित माना जाता है। मुख की सारी शोभा इस पर ही निर्भर है। मनुष्य की मानसिकता भी दाँत पर ज्यादा निर्भर है। यदि दाँत नहीं हैं, तो मनुष्य खिन्नता से ग्रस्त हो जायेगा। इसीलिए दाँतों का होना मनुष्य के लिए जीवित होने का संकेत है।

रचनाकार ने दाँतों की तुलना हीरा, मोती, मणिक से की है। यह अन्य अवयवों से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। किसी भी भोजन का स्वाद इस पर ही निर्भर होता है। बुड़ढे से पूछिए दाँत के बिना जीवन कैसा है? तब उसका उत्तर होगा, -दाँत के बिना जीवन नीरस है। क्योंकि उसे रोटी को दाल या दूध भीगोकर खाना रोटी को तोड़कर खाने का मजा ही कुछ और है। रोटी को तोड़ते समय सारे अवयव आपस में मिल

जाते है, तब सुकून का भाव होता है। दाँत का होना हर एक रस के साथ अवश्य है। श्रृंगार रस के संदर्भ में दाँत चमकदार का रूप बनकर प्रस्तुत होते हैं, हास्य रस का तभी मजा है जब दाँत हँसते हुए दिखाई पड़ते हैं, करुणा और क्रोध के संदर्भ दाँत अपने ही होठों पर घाव करते नजर आते हैं तो और भी सुंदर लगते है। भयानक रस के संदर्भ में दाँत प्राणियों का रूप पा लेते हैं, तो उनमें पौरुषता का संकेत स्पष्ट दिखता है। बीभत्स रस का प्रत्यक्ष दर्शन, तिब्बती साधु के मैले दाँतों से होगा। इस प्रकार लेखक महोदय ने दाँतों की शोभा एवं व्यक्ति के मानसिक स्थिति का सुंदर चित्रण किया है। दाँतों के कारण मनुष्य का व्यक्तित्व समाज के सम्मुख खुलकर उपस्थित होता है। दाँत ही मनुष्य के बाह्य-सौंदर्य में और भी निखार लाता है।

लेखक का कहना है कि दाँत के माध्यम से ही व्यक्तित्व को जाना जाता है। दाँतों को मुँह से बाहर दिखाते रहना ठीक नहीं रहेगा। कभी दाढ़ की पीडा होने पर दाँत को निकालने की बात करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि दाँत को निकालना अर्थात स्वार्थ से परिपूर्ण अंधे लोगों को समाज से बाहर निकालने के समान है। जब तक देश भर में अपनत्व का भाव है उसे हम दाँत-रोटी का संबंध मानेंगे। लेखक दाँत-रोटी के समान हिन्दु-मुसलमानों को अपनत्व के साथ रहने का संकेत भी देते हैं। लेखक महोदय दाँतों का महत्व बताते हुए कहते हैं की आज हमारे देश के दिन बुरे हैं। हमें जिस प्रकार बत्तीस दाँतों के बीच जीभ रहती है उसी प्रकार रहना चाहिए। दुनियादारी की बातों में आकर गलत नहीं करना चाहिए। इस प्रकार 'दाँत' निबंध के ज़रिए लेखक नैतिकता का पाठ पढाने का कार्य करते हैं।

4.3.3 साहित्य की महत्ता – महावीरप्रसाद द्विवेदी

महावीरप्रसाद द्विवेदी (1864-1938) का परिचय –

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी जी हिन्दी के ऐसे युग-प्रवर्तक साहित्यकार हैं, जिन्होंने हिन्दी को परिष्कृत एवं परिमार्जित करने में अपनी सारी शक्ति लगा दी। सन् 1903 में 'सरस्वती' के सम्पादन से यह कार्य आरम्भ हुआ। हिन्दी गद्य का स्थिर रूप द्विवेदी जी के दृढ़ मनोबल का परिणाम है। उन्होंने साहित्यकारों के लेखों पर 'लाल स्याही' चलाई और ज़रूरत पड़ने पर उन्हें समझाया भी। द्विवेदी जी ने उसी साहित्य को प्रोत्साहन दिया जिसमें समाज- सुधार एवं नैतिकता से परहेज नहीं था। उनके निबन्धों में भावुकता के स्थान पर चिन्तन पक्ष प्रबल है। तत्सम-बहुल ओजपूर्ण भाषा के हिमायती होने एवं तथ्यपरक विश्लेषण के आग्रही होने के कारण उनकी भाषा बालकृष्ण भट्ट एवं प्रतापनारायण मिश्र की तरह प्रवाहमयी नहीं है। उनकी 'रंजन', 'साहित्यालाप', 'विचार-विमर्श', 'अतीत-स्मृति' आदि महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं। 'साहित्य की महत्ता' निबंध द्विवेदी जी की वैचारिकता एवं देश-प्रेम का उत्तम उदाहरण है।

'साहित्य की महत्ता' निबंध का आशय –

महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'साहित्य की महत्ता' निबंध के माध्यम से व्यक्ति, समाज के लिए साहित्य के महत्व को रेखांकित किया है। साहित्य को ज्ञान-राशि के संचित कोष का नाम दिया है। सब तरह के भावों को प्रकट करने की योग्यता रखने वाली और निर्दोष होने पर भी, यदि कोई भाषा अपना निज का साहित्य नहीं रखती तो उसे रूपवती भिखारिनी कहा है। धार्मिक विचारों और सामाजिक संघटन का, उसके

ऐतिहासिक घटनाचक्रों और राजनीतिक स्थितियों का प्रतिबिम्ब साहित्य में ही मिलता है। सामाजिक शक्ति या सजीवता, सामाजिक अशक्ति या निर्जीवता और सामाजिक सभ्यता तथा असभ्यता का निर्णायक एकमात्र साहित्य है।

द्विवेदी जी का कहना है की जिस जाति-विशेष में साहित्य का अभाव या उसकी न्यूनता आपको दिख पड़े, आप यह निसन्देह निश्चित समझिए कि वह जाति असभ्य किंवा अपूर्ण सभ्य है। जातियों की क्षमता और सजीवता यदि कहीं प्रत्यक्ष देखने को मिल सकती है, तो उनके साहित्य-रूपी आईने ही में मिल सकती है। आप भोजन करना बन्द कर दीजिए या कम कर दीजिए, आपका शरीर क्षीण हो जायेगा और नष्ट होने लगेगा। इसी तरह आप साहित्य के रसास्वादन से अपने मस्तिष्क को वंचित कर दीजिए, वह निष्क्रिय होकर धीरे-धीरे किसी काम का न रह जायेगा। बात यह है कि शरीर का खाद्य भोजनीय पदार्थ है और मस्तिष्क का खाद्य साहित्य। लेखक का कहना है कि हम अपने मस्तिष्क को हमेशा तरोताजा बनाना है तो उच्च स्तरीय साहित्य पढ़ना है। साथ ही उसमें नवीनता तथा पौष्टिकता लाने के लिए उसका निर्माण भी करना चाहिए। मस्तिष्क का बलवान और शक्ति-सम्पन्न होना अच्छे ही साहित्य पर अवलम्बित है। आवश्यकता, अनुकूलता, अवसर और अवकाश होने पर हमें एक नहीं, अनेक भाषाएँ सीखकर ज्ञानार्जन करना चाहिए। किसी भी भाषा से द्वेष नहीं करना चाहिए। ज्ञान कहीं भी मिलता हो उसे ग्रहण ही कर लेना चाहिए। ज्ञान, विज्ञान, धर्म और राजनीति की भाषा सदैव लोकभाषा ही होनी चाहिए। अतएव अपनी भाषा के साहित्य की सेवा और अभिवृद्धि करना, सभी दृष्टियों से हमारा परम धर्म है।

महावीरप्रसाद द्विवेदी 'साहित्य की महत्ता' निबंध के जरिए संदेश देते हैं कि यदि हमें जीवित रहना है और सभ्यता की दौड़ में अन्य जातियों की बराबरी करना है तो हमें श्रमपूर्वक, बड़े उत्साह से, सत्साहित्य का निर्माण और प्राचीन साहित्य की रक्षा करनी चाहिए। साहित्य ही ऐसा साधन है जो समाज में परिवर्तन ला सकता है।

4.3.4 क्रोध – रामचंद्र शुक्ल

रामचंद्र शुक्ल (1884-1941) का परिचय –

आचार्य रामचंद्र शुक्ल बीसवीं शताब्दी के हिन्दी के प्रमुख साहित्यकार हैं। उनके द्वारा लिखी गई सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुस्तक है 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', जिसके द्वारा आज भी काल-निर्धारण एवं पाठ्यक्रम निर्माण में सहायता ली जाती है। हिन्दी निबंध के क्षेत्र में भी शुक्ल जी का महत्वपूर्ण योगदान है। भाव, मनोविकार संबंधित मनोविश्लेषणात्मक निबंध उनके प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उनके निबंध 'चिंतामणि' नामक ग्रंथ के दो भागों में संग्रहित हैं। 'मित्रता' निबंध जीवनोपयोगी विषय पर लिखा गया उच्चकोटि का निबंध है, जिसमें शुक्लजी की लेखन शैलीगत विशेषताएँ झलकती हैं।

'क्रोध' निबंध का आशय–

'क्रोध' निबंध में शुक्ल जी ने सामाजिक जीवन में क्रोध का क्या महत्व है, क्रोधी की मानसिकता-जैसै समबन्धित पहलुओं का विश्लेषण किया है। अब तक आप क्रोध के कार्य-कारण ज्ञान और उसकी

आवश्यकता से परिचित हो चुके हैं। आप जान चुके हैं कि अपनी रक्षा और समाज के उपकार के लिए भी क्रोध करना जरूरी होता है। आप स्वयं कई बार अनुभव करते हैं कि क्रोध करने वाला व्यक्ति कारण और परिणाम को बिना सोचे लाल-पीला हो अकेले ही कई शत्रुओं पर टूट पड़ता है। इसमें उसकी अपनी पराजय ही है, समाज भी उसका साथ नहीं देता। इसी को क्रोध का अंधापन कहते हैं। जब कोई परिणाम को विचार किए बिना, अपनी सामर्थ्य को आँके बिना, योजना बनाएँ बिना, विपक्षी पर टूट पड़े तो उसकी असफलता निश्चित ही है। वह किसी सिनेमा का 'हीरो' नहीं, जो अकेले ही दस-पंद्रह पहलवानों को पछाड़ दे। वास्तविक जगत् में ऐसा नहीं होता, इसलिए ऐसी स्थिति में क्रोध पर संयम रखना जरूरी हो जाता है। परिस्थिति को देखते हुए यदि बुद्धि का प्रयोग कर क्रोध न करें तो भयंकर परिणाम से बच सकते हैं। आप रामायण में भी देखते हैं कि श्रीराम ने लंका पर अचानक ही चढ़ाई नहीं की, उसके लिए पहले पूरी योजना बनाई, सेना एकत्र की, समुद्र पर पुल बनाया, फिर योजनाबद्ध तरीके से रावण का वध किया और विजय प्राप्ति हासिल की। यदि विरोधी की शक्ति को बिना जाँचे हुए तत्काल टूट पड़ते, तो न जाने क्या अनर्थ हो जाता।

यहाँ लेखक ने स्पष्ट किया है कि यदि कोई सुने कि उसका शत्रु बीस-पच्चीस लोगों को साथ लेकर उस पर आक्रमण करने के लिए आ रहा है, तो वह तुरंत ही बिना सोचे-समझे क्रोध में दाँत पीसते हुए उन सभी का सामना करने मैदान में आ जाता है, तो उसके मारे जाने में कोई संदेह नहीं रह जाता। अतः कार्य-कारण के संबंध को बिना सोचे उपर्युक्त स्थिति में क्रोध पर काबू रखना बहुत जरूरी है। अधिकतर क्रोध करने वाला व्यक्ति अपनी कमी की ओर देखता नहीं, दूसरे यानी विपक्षी की गलती को ही बढ़ा-चढ़ाकर देखता है। ऐसे में उसे अपने क्रोध के परिणाम का ध्यान नहीं रहता है।

अतः क्रोध के मूल उद्देश्य को पहले समझना चाहिए। व्यक्ति, क्रोध दो कारणों से करता है-पहला, वह विपक्षी को डरा सके, दूसरा उससे क्षमा याचना या पश्चात्ताप करवा सके। कई बार क्रोध किसी के घमंड को खत्म करने के लिए भी किया जाता है।

एक और उदाहरण द्वारा लेखक ने क्रोध को शांत करने की बात स्पष्ट की है। चाणक्य अपने विवाह की धुन में प्रसन्न-वदन जा रहे थे कि उनकी इस प्रसन्नता में सूखी घास ने पैरों में चुभ कर बाधा डाली, फिर क्या था? चाणक्य ने क्रोध में आकर अपने मूल उद्देश्य विवाह को भुला दिया और लगे उस सूखी घास को जड़ों से उखाड़ने। इतना ही नहीं, यह घास फिर पैदा न हो जाए इसके लिए उन्होंने उसकी जड़ों को गलाने के लिए उसमें मट्ठा भी डालना शुरू कर दिया। इस प्रकार का क्रोध भला किसको डराने, किससे क्षमा-याचना करवाने या किससे बदला लेने के लिए किया गया था। ऐसा क्रोध तो मनुष्य के दिमागी हाल में अव्यवस्था या असंतुलन उत्पन्न होने पर ही हो सकता है। इसका कोई लाभ नहीं, कोई कारण नहीं और न इससे किसी भी प्रकार सफलता की प्राप्ति हो सकती है।

क्रोध में कभी घृणा और कभी दया का भाव भी मिला होता है। उदाहरण देते हुए लेखक ने स्पष्ट किया है कि कोई अत्याचारी यदि किसी अबला को सता रहा है तो देखने वाले के हृदय में अबला के प्रति

दया और अत्याचारी के प्रति घृणा का सम्मिलित भाव देखा जाता है। यहाँ अबला का संकट धन देकर दूर नहीं किया जा सकता, अपितु उस कष्ट को दूर करने के लिए अत्याचारी का दमन जरूरी है, जो क्रोध से ही संभव हो सकता है। क्रोध संक्रामक रोग की तरह भी होता है। अपने ऊपर क्रोध करते देखकर दूसरे का भी अपने मनोभावों पर कोई काबू नहीं रहता। इसीलिए क्रोध शांति को समाप्त करने वाला मनोविकार माना जाता है। नीतिशास्त्र में ही नहीं, अपितु सभ्य समाज में भी क्रोध पर संयम करने का टिप्पणी उपदेश दिया जाता है। गीता में भगवान कृष्ण ने क्रोध से बुद्धिनाश और बुद्धि के नष्ट हो जाने पर व्यक्ति के नष्ट हो जाने की बात स्पष्ट की है। आपको पहले भी बताया गया है कि आततायियों को दबाने के लिए, समाज-सुधार के लिए, लोगों के कष्टों को दूर करने के लिए किया गया क्रोध समाज के लिए उपयोगी ही नहीं, जरूरी भी है।

4.3.5 'आचरण की सभ्यता' – सरदार पूर्णसिंह

सरदार पूर्णसिंह (1881-1931) का परिचय

श्रेष्ठ निबंधकार सरदार पूर्णसिंह महावीरप्रसाद द्विवेदी – युग के निबंधकार हैं। इन्होंने निबंध रचना के लिए मुख्य रूप से नैतिक विषयों को ही चुना है। उनमें भावावेग के ही विचारों के सूत्र भी लक्षित होते हैं, जिन्हें प्रयत्नपूर्वक जोड़ा जा सकता है। सरदार पूर्णसिंह की रचनाएँ : इनके हिन्दी में कुल छह निबंध उपलब्ध हैं – 1. सच्ची वीरता, 2. आचरण की सभ्यता, 3. मजदूरी और प्रेम, 4. अमेरिका का मस्त योगी वॉल्ट हिवटमैन, 5. कन्यादान और 6. पवित्रता। इन्हीं निबंधों के बल पर इन्होंने हिन्दी गद्य साहित्य के क्षेत्र में अपना स्थायी स्थान बना लिया। सरदार पूर्णसिंह के निबंध विचारात्मक होते हुए भावात्मक कोटि में आते हैं।

'आचरण की सभ्यता' निबंध का आशय

'आचरण की सभ्यता' सरदार पूर्णसिंह का भावात्मक निबंध है। इसमें विद्या, कला, कविता, साहित्य, धन तथा राजस्व सभी से अधिक शुद्ध आचरण को महत्व दिया है। इसके लिए लेखक ने नम्रता, दया, प्रेम तथा उदारता को हृदय में स्थान देना आवश्यक बताया है। अच्छे आचरणवाले व्यक्ति के प्रेम तथा धर्म से सारे संसार का कल्याण होता है। सभी व्यक्तियों को सुख, शांति एवं आनंद की प्राप्ति होती है। वे मौन और शांत रहकर संसार की भलाई में लगे रहते हैं। सच्चे आचरण का प्रभाव हमारे मानव हृदयों पर पड़ता है। जो पुजारी, मुल्ला अथवा पादरी सच्चे आचरण वाला होता है, उसकी बातें सभी व्यक्तियों के हृदयों को प्रभावित करती हैं।

लेखक कहते हैं कि दूसरे व्यवहारों की तरह आचरण की भी अपनी एक भाषा होती है, परंतु वह भाषा मौन होती है। इसका दूसरे व्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है। आचरण के कोश में कोई शब्द नहीं है। सभ्यता का आचरण स्वयं को व्यक्त करता हुआ भी अव्यक्त तथा मौन रहता है और आकर्षक राग गाता हुआ भी राग के भीतर विद्यमान रहता है। इसके मीठे वचनों में उसी प्रकार की मूक भावना निहित रहती है, जिस प्रकार किसी बच्चे की तोतली बोली में एक आकर्षक मौन छिपा हुआ रहता है। सदाचरण आत्मा पर प्रभाव डालकर धीरे-धीरे मनुष्य की आत्मा को अपने रंग में रंग लेता है। इस सदाचरण का न कोई रंग, न कोई

आकार और न ही कोई दिशा होती है। आत्मा के सदाचरण से ही इसकी सुगन्ध फैल जाती है। सदाचरण से मन तथा हृदय की भावनाएँ परिवर्तित हो जाती हैं। आचरण की एक बूँद पूरे विश्व को भिगो देती है। सदाचरण के द्वारा निर्जीव में भी जीवन का संचार हो जाता है तथा सूखे कुएँ भी जल से लबालब भर जाते हैं। लेखक का कहना है कि सदाचारी मनुष्य अपने श्रेष्ठ आचरण के बल से दूसरों को प्रभावित करता है। आचरण की मौन-रूपी भाषा बहुत ही शक्तिशाली, सार्थक और प्रभावपूर्ण होती है।

लेखक का कथन है कि पुस्तकों में लिखे हुए उपदेशों और नियमों के अध्ययन से आचरण का विकास संभव नहीं है। सारे वेदों और शास्त्रों को पढ़कर आचरण का विकास नहीं हो सकता। पुस्तकीय ज्ञान व्यक्ति को सदाचारी नहीं बना सकता। लेखक सरदार पूर्णसिंह आचरण एवं समाज के उत्थान के लिए कठोर भौतिक कर्तव्यों की पृष्ठभूमि के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि हिन्दुओं की अवनति का प्रमुख कारण उनका अतीत के गौरव में खोए रहना है। यदि उनका संबंध किसी प्राचीन असभ्य जाति के साथ होता है तो उनके वर्तमान वंश में भी ऐसे मनुष्य होते, जो अधिक होते। इनमें ऋषि भी होते तथा पराक्रमी वीर भी, सामान्य भी होते तो धैर्यशाली वीर पुरुष भी। लेकिन आजकल हिन्दू लोग अपने पूर्वज ऋषियों के पवित्र तथा प्रेम-जीवन को जानकर अहंकार के भाव से भरे हुए प्रसन्न हुए जा रहे हैं, जिनकी गाथाएँ उपनिषदों और पुराणों में उपलब्ध हैं। परन्तु उनके स्थानयुक्त जीवन का अनुसरण करने की शक्ति इनमें दिखाई नहीं पड़ रही है। इसी का परिणाम है कि ये दिन-प्रतिदिन अवनति के गड्ढे में गिरते जा रहे हैं तथा इन्हें अपनी उन्नति के लिए कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है।

लेखक का कहना है कि धर्म के आचरण की उपलब्धि दिखावटी आड़म्बरों-आचरणों से नहीं होती, यदि ऐसा होता तो भारतवासी अब तक सूर्य के समान विशुद्ध आचरण से सम्पन्न हो गए होते। लेखक बताते हैं कि जहाँ पर आचरण की सभ्यता का आगमन हो जाता है। उस स्थान की शोभा ही निराली हो जाती है। वहाँ पर शारीरिक, मानसिक अथवा आध्यात्मिक किसी प्रकार का लड़ाई-झगड़ा या विद्रोह नहीं रहता।

इस निबंध में लेखक हमें यह संदेश देते हैं कि सदाचरण एक अपूर्व वस्तु है। जिस व्यक्ति को आचरण का यह भंडार मिल जाता है, उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं रह जाता। सदाचरण सभी विद्याओं में, कलाओं, साहित्य एवं राजस्व से भी श्रेष्ठ है। सदाचरण की मौन भाषा मन के विभिन्न क्रिया-कलापों से स्वयं प्रकट होती है। इसके निर्माण में दीर्घकाल लगता है। इसकी प्राप्ति आसानी से नहीं होती। आचरण की सभ्यता के विकसित होने पर मानव में मानसिक सभ्यता का उदय होता है तथा समस्त द्वंद्व स्वयं ही समाप्त हो जाते हैं। इस निबंध के माध्यम से लेखक ने हमें रचनात्मक कार्यों में लगने का भी संदेश दिया है।

4.3.6 'गेहूँ बनाम गुलाब' – रामवृक्ष बेनीपुरी

रामवृक्ष बेनीपुरी (1902-1968) का परिचय–

रामवृक्ष बेनीपुरी जी एक महान विचारक, चिंतक, क्रांतिकारी, पत्रकार, संपादक एवं साहित्यकार के रूप में अविस्मरणीय हैं। वे एक सच्चे देशभक्त और क्रांतिकारी भी थे। इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम में आठ वर्ष जेल में बिताए। इनके कई प्रसिद्ध ग्रंथ हैं – 'पतितों के देश में' (उपन्यास), 'चिंता के फूल'

(कहानी), 'माटी की मूरतें' (रेखाचित्र), 'अम्बपाली' (नाटक), 'गेहूँ बनाम गुलाब' (निबंध/रेखाचित्र), 'पैरों में पंखें बांधकर' (यात्रावृत्तांत), 'जंजीरो और दीवारें' (संस्मरण) बेनीपुरी जी के महत्वपूर्ण निबंध-संग्रह हैं - 'माटी की मुरतें', 'गेहूँ बनाम गुलाब', 'वन्देवाणी' और 'विनायक'।

'गेहूँ बनाम गुलाब' का आशय-

रामवृक्ष बेनीपुरी का चर्चित निबंध है- 'गेहूँ बनाम गुलाब'। 'गेहूँ' और 'गुलाब' को लेखक ने प्रतीकात्मक ढंग से प्रयोग किया है। गेहूँ का संबंध मनुष्य शरीर को पुष्ठ होने अर्थात् उसकी भौतिक सुख - सुविधाओं से है और गुलाब का संबंध उसके मन अर्थात् भावात्मक एवं मानसिक आनंद से है मानव जीवन में गेहूँ और गुलाब दोनों का अपना-अपना महत्व है। मानव के लिए पेट और मस्तिष्क दोनों की ही उपयोगिता है। गेहूँ खाने के काम आता है, इससे हमारा शरीर पुष्ट होता है, अतः गेहूँ हमारी भूख और आर्थिक प्रगति का द्योतक है। गुलाब को हम सूँघते हैं, इससे हमारा मन पुलकित होता है, इसलिए गुलाब हमारी संस्कृति का प्रतीक है।

आरंभ से मनुष्य अपने भूख को शांत करने के लिए गेहूँ को आवश्यक मानकर महत्व देता आया है; किन्तु प्राचीन समय में उसने भूख मिटाने के ही अपने जीवन का मूल उद्देश्य नहीं समझा। अपनी शारीरिक तृप्ति के साथ अपनी मानसिक तृप्ति को भी उपाय खोजे। जहाँ उसने जानवर को मारकर उनका मांस खाया, वहीं उसने उनकी खाल से ढोल और सिंगों से तुरही भी बनाई। भूख को शांत करने के लिए जब उसने ऊखल और चक्की में गेहूँ को कुटा और पीसा तो उससे उत्पन्न संगीत ने उसे आनंद प्रदान किया। अर्थात् उस समय धन और संस्कृति या भूख और सौंदर्य में समन्वय था।

वर्तमान समय में मानव का दृष्टिकोण बदल गया है। वह धन के पीछे पागल के समान भाग रहा है। पेट भरना उसका परम लक्ष्य बन गया है। सौंदर्य, कला एवं संस्कृति से अपना संबंध उसने तोड़ दिया है। कला और संस्कृति गहरी कीचड़ में धँस चुकी है, इसलिए लोग दुखी हैं, जीवन त्रासदीपूर्ण है। अपने को ऊपर उठाने के लिए इन्द्रिय संयमन और वृत्ति का उन्नयन अनिवार्य है। इन्द्रिय संयमन और वृत्ति-उन्नयन से आशय है - अपनी इन्द्रियों पर संयम रखकर अपने आचरण को ऊपर उठाना। ऐसे कार्य करना जिससे किसी को कोई चोट अथवा नुकसान नहीं पहुँचे। इन्द्रिय-संयमन के द्वारा मनुष्य में अपनी दुष्प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखने में सहयोग मिलेगा। लेकिन इन्द्रियों पर संयम रखना आसान नहीं है, बड़े - बड़े ऋषि - मुनि भी इसमें असफल रहे हैं। अपनी वृत्तियों को श्रेष्ठ बताना, उनका रास्ता बदलना इन्द्रिय संयमन का उचित उपाय नहीं है।

पशुओं के लिए केवल गेहूँ का महत्व है, उसके लिए गुलाब कोई महत्व नहीं रखता। मनुष्य में उसका मस्तिष्क, हृदय तथा पेट ऊपर से नीचे की ओर व्यवस्थित होता है, पशुओं में ऐसा न होकर सबकुछ एक खाद्य जैसा ही होता है। अर्थात् मनुष्य के लिए मानसिक तुष्टि महत्वपूर्ण है, वही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। मनुष्य के जीवन में गेहूँ से अधिक गुलाब की उपयोगिता है। भौतिक आवश्यकताओं से अधिक मानसिक तुष्टि आवश्यक है एक न एक दिन यह बात अवश्य सिद्ध होकर रहेगी, जब मनुष्य का ध्यान गेहूँ अर्थात

भौतिक संसाधनों को जुटाने से होने वाले असाध्य कष्ट की ओर जाएगा। इसके लिए विज्ञान को सृजनशील बनना होगा। उसे जीवन की समस्याओं पर ध्यान देना होगा। विज्ञान के माध्यम से ऐसे उत्तम किस्म के खाद, बीज और सिंचाई और जुताई के उन्नत तरीके प्रबंध किए जाएँ, जिससे गेहूँ की समस्या का पूर्णतः समाधान हो और सम्पूर्ण विश्व में गेहूँ हवा और पानी के समान सभी को उपलब्ध हो।

लेखक के अनुसार संस्कृति और भौतिक प्रगति की दुनिया आरंभ होने जा रही है। यह दुनिया संतोष प्रदान करने की होगी इस दुनिया में मन को संतोष मिलेगा और मानव संस्कृति विकसित हो सकेगी। हम शरीर बाह्य आवश्यकताओं के बंधन से मुक्त हो सकेंगे और हमारा मन की आध्यात्मिक शांति का नया संसार विकसित करेगा। बेनीपुरी जी ने अलंकृत भाषा का प्रयोग किया है। सूत्रात्मकता उनकी निबंधों को विशेष बनाती है। एक सूत्र के रूप में अपनी बात को वे कह देते हैं। उनकी शैली भावुकता-प्रधान है। भाषा में आपने शब्द-चित्रों को अत्यन्त सजीव बना दिया है। 'गेहूँ और गुलाब' में विचारों की गम्भीर अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। साथ ही उसमें उपदेशात्मकता भी आ गई है।

4.3.7 'साहित्य और जीवन' -नन्ददुलारे वाजपेयी (1906-1967)

नन्ददुलारे वाजपेयी (1906-1967) का परिचय –

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बाद हिन्दी निबंध साहित्य में जो गम्भीर आलोचक मिले, उनमें नन्ददुलारे वाजपेयी अग्रणी हैं। उन्होंने प्रारम्भ में भारत दैनिक पत्र का सम्पादन किया। समीक्षात्मक निबंध के क्षेत्र में वाजपेयी जी का महत्त्वपूर्ण कार्य है। इनके निबंध हिन्दी साहित्य-बीसवीं शताब्दी, आधुनिक साहित्य एवं नया साहित्य-नए प्रश्न आदि ग्रन्थों में संग्रहित हैं। महाकवि सूरदास एवं जयशंकर प्रसाद उनके स्वतंत्र ग्रन्थ हैं। वाजपेयी की समीक्षात्मक दृष्टि किसी वाद-विशेष से प्रेरणा ग्रहण नहीं करती। लेकिन, वे दृढ़ रूप से मानते थे कि श्रेष्ठ साहित्य में युग-चेतना का संस्पर्श अवश्य होता है। उनका सर्वाधिक महत्त्व आधुनिक साहित्य के मूल्यांकन के लिए मदृष्टि के नवोन्मेषफ के कारण है। इस दृष्टि से उनकी सुप्रसिद्ध पुस्तक महिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दीफ को युगान्तरकारी पुस्तक के रूप में स्मरण किया जाता है।

'साहित्य और जीवन' का आशय–

साहित्य और जीवन एक चिन्तनात्मक निबंध है। इसमें साहित्य और जीवन के अन्तःसम्बन्ध, साहित्य में निरूपित जीवन और यथार्थ जीवन में अन्तर, साहित्य समीक्षा में प्रचलित दृष्टियाँ एवं निबंधकार का दृष्टिकोण आदि तथ्यों का क्रमबद्ध आकलन हुआ है। यहाँ वे स्थूल प्रगतिवादी समीक्षा पर प्रहार भी करते हैं।

देश-विदेश में साहित्य और जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने की ज़ोरदार माँग बढ़ रही है। इसपर खूब चर्चा हो रही है। इस विषय के व्याख्यान स्कूलों और कॉलेजों में आयोजित किए जा रहे हैं। लेखक स्वदेशी लिबास में रहने में खुद को प्रतिष्ठित मानने लगे हैं। आलोचक साहित्यकार की अपेक्षा जेल का चक्कर लगा आने वाले सैनिक साहित्यिक के बड़े गुण-गान करते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में जोशीले लेख छपते हैं। इसे

वाजपेयी जी ने उन्माद की उपमा देकर साहित्य–समीक्षा को जड़ से उखाड़ फेंकने का षड़यंत्र बताकर जीवन को पाखंडपूर्ण बनाने की कोशिश होने के संकेत दिए हैं। साहित्य राजनीतिक प्रोपेगण्डा का साधन बना है। ऐसा भारत के साथ अन्य देशों में भी होता रहा है। साहित्य और जीवन का सम्बन्ध देखने के लिए क्षणिक राष्ट्रीय आवश्यकताओं की परिधि से ऊपर उठने की आवश्यकता है। साहित्य की शब्दावली में हम क्षणिक मिथ्या यथार्थ को ग्रहण करने में लगकर वास्तविक यथार्थ का तिरस्कार न करें, जो विविध आदर्शों से सुसज्जित है। हमें साहित्य और जीवन का सम्बन्ध अत्यन्त व्यापक अर्थ में लेना चाहिए। हमें देश और काल की सुविधा से दूर रहना चाहिए।

साहित्य के साथ जीवन का सम्बन्ध स्थापित करने का आग्रह यूरोप में फ्रेंच राज्य–क्रांति के उपरान्त किया गया। इंग्लैण्ड में वड्र्सवर्थ और फ्रांस में विक्टर ह्यूगो आदि साहित्यकार इस विचार–शैली में से हैं। यूरोप का मध्यकालीन जीवन असंगत हो गया था। उसके स्थान में नवीन जीवन का उदय हुआ था। जिसके मूल में बड़ी ही सरल और सात्त्विक भावनाएँ थीं। नवीन जीवन के उपयुक्त ही नवीन समाज का विकास हुआ और इसी विकास के अनुकूल साहित्य में भी प्रकृति–प्रेम, सरल जीवन आदि की भावनाएँ दिख पड़ीं। साहित्य अधिकांश में राष्ट्र के सामाजिक और राजनीतिक संगठनों का प्रयोग–साधन बन गया। नवीन युग की नवीन वस्तु के रूप में उसको बाज़ार अच्छा मिला और आज उसका सिक्का यूरोप ही नहीं, भारत में भी धड़ल्ले से चल रहा है। साहित्य और जीवन का सम्बन्ध जोड़ने के बहाने साहित्य को मिथ्या बताने के उपक्रमों की वाजपेयी जी ने निन्दा की है। साहित्य और जीवन का सम्बन्ध जोड़ने के सिलसिले में समीक्षकों ने साहित्यकार के व्यक्तिगत बाह्य–जीवन से भी परिचित होने की परिपाटी निकाली है। साहित्यकार को भी पब्लिकमैन बना दिया है। साहित्यालोचन की पुस्तकें निकालीं। उनमें यह आग्रह किया गया कि साहित्यकार की व्यक्तिगत जीवनी का परिचय प्राप्त किए बिना उसके मस्तिष्क और कला का विकास समझ में नहीं आ सकता। ऐतिहासिक अनुसन्धानों के इस युग में यदि कवियों और लेखकों का अन्वेषण किया गया, तो कुछ अनुचित नहीं होगा। इस प्रणाली से बहुत–से लाभ भी हुए होंगे। मस्तिष्क और कला के विकास का पता चला। बहुत–से पाखंडी प्रकाश में आए। संक्षिप्त में साहित्य और जीवन का वह सम्बन्ध है, जिसको हम साहित्य–समीक्षा की एक स्थायी कसौटी बना सकते हैं।

4.3.8 'देवदारु' – हजारीप्रसाद द्विवेदी (1907 -1979 ई.)

हजारीप्रसाद द्विवेदी (1907-1979) **का परिचय –**

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी वर्तमान युग के मूर्धन्य निबंधकार हैं। विचारात्मक निबंध की परंपरा में द्विवेदी जी का महत्वपूर्ण योगदान है। उनके निबंधों में विषय की विविधता परिलक्षित होती है। साहित्य, संस्कृति, धर्म, राजनीति, क्रीडा, प्रकृति, कला, ऋतु – उत्सव, मनोविनोद यह सब इनके निबंध का मुख्य विषय रहे हैं। 'अशोक के फूल' (1948), 'मध्यकालीन धर्म साधना' (1952), 'विचार और वितर्क' (1957), 'विचार प्रवाह' (1959), 'कुटज' (1964), 'साहित्य सहचर' (1965), 'आलोक पर्व' (1972)

आदि उनके प्रमुख निबंध-संग्रह हैं। इनके निबंधों की भाषा संस्कृतनिष्ठ हिंदी है। 'आलोक पर्व' के लिए सन 1973 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से वे सम्मानित हुए हैं।

'देवदारु' निबंध का आशय–

'देवदारु' निबंध 'कुटज' निबंध-संग्रह में संकलित है। देवदारु वृक्ष इतिहास एवं संस्कृति का मूक साक्षी है। वह युग-युगों के इतिहास को अपने में समेट कर खड़ा रहता है। वह युगों से अपनी गौरवमयी परंपरा का सम्यक रूप से निर्वाह कर रहा है, लेकिन वह कभी-भी किसी के सामने नतमस्तक नहीं हुआ। जिंदगी की प्रतिकूल परिस्थितियों और विषमताओं में गौरव के साथ जीने के लिए देवदारु हमें शिक्षा प्रदान करता है।

देवदारु उल्लास का सूचक है। इसका पुराना नाम 'देव-तरू' है। 'देव-तरु' का अर्थ देवता का तरु नहीं, देवता भी और तरु (पेड़) भी। देवता होकर वह मुक्त है, तरू होकर वह अर्थ है। देवदारु को वह नाम कैसे और क्यों पड़ा यह कह नहीं सकते। लेकिन नाम बहुत ही पुराना है, महाभारत से भी पुराना। कहा जाता है यह देवताओं का प्यारा वृक्ष है। इसकी ऊंचाई के कारण इसे 'गगनस्पर्शी' भी कहा गया है। यह पहाड़ी प्रदेश में ज़्यादा पाया जाता है, इसकी जड़ें बहुत गहरी होती हैं। इसे देवताओं का प्यारा वृक्ष इसलिए कहा जाता है कि महादेव शिव ने समाधि लगाने के लिए देवदारु की जड़ों में ही अपना आसन लगाया। कामदेव ने समाधि को भंग करने का प्रयास किया, लेकिन उन विपरीत परिस्थितियों में देवदारु अचल खड़ा रहा। देवदारु निर्विकार है, कोई बाह्य परिस्थितियाँ उसे वश कर नहीं सकती। इसलिए इसे देवता का काठ कहा जाता है। देवता होते हुए भी वह महादेव और कामदेव जैसे देवताओं के समान निर्बल और चंचल नहीं है, किसी भी परिस्थिति में अचल, अडिग रहने के कारण इसे देवता का काठ कहा जाता है। कहा जाता है की महादेव - पार्वती के प्रणय-प्रसंग को देखने के कारण यह महावृक्ष नहीं बन सका। साथ ही देवदारु के वनस्पति के मर्यादा का पालन नहीं कर पाया। इसमें फल उपजाते नहीं, जो फूल खिलते हैं, वह काठ के समान ही हैं।

लेखक के गाँव में एक महान भूत-भगवान ओझा हैं, जो देवदारु के लकड़ी से भूत को भगाते हैं। इससे वह पूरे गाँव में महान पंडित बने, लेकिन इनका यह देवदारु लकड़ी का प्रयोग गाँव में कोई नहीं जानता था एक बार पंडित सुनसान अंधकार में बगीचे से गुज़र रहे थे, तब सामने भूत को देखकर उन्होंने उसे ललकारा। वह भूत घोड़े पर चला आ रहा था और उसको गर्दन नहीं था तब पंडित जी ने जूता उतारा और गायत्री मंत्र का उच्चारण करके देवदारु लकड़ी से भूत को मारने लगे। देवदारु के भयंकर मार से भूत ने माफी माँगकर पंडित जी का गुलाम बन गया।

लेखक के मन में देवदारु के प्रति गहरी श्रद्धा का भाव है। देवदारु के विविध प्रकार हैं- खुंसट, पाधा, खूम, सनकी, सिझोटा, झबरेला, चपरगेंगा, गदरैना, खिटखिटा, झक्की, झुमरैना, धोकरा, नटखटा, चुनमुन, बांगुस, चौरंगी देवदारु आदि नाम हैं। हर देवदारु का अपना महत्व होता है। एक देवदारु इतना कमनीय था कि महादेव ने उसे अपना बेटा बना लिया था और पार्वती की वक्ष से दूध गिर पडा था। देवदारु एक शानदार वृक्ष है। वह सुंदर, सुडौल भी है। वह धरती से रस पी लेता है और अपनी शाखाओं से आकाश को छूने का

प्रयास करता है। उसके बार-बार झूमने में एक विशेष प्रकार की मस्ती दिखाई देती है। ज़माना बदलने के साथ अनेक वृक्षों और लताओं ने वातावरण के साथ समझौता कर लिया। लेकिन देवदारु अब भी अचल अपनी प्रतिष्ठा को बनाया रखता है।

'देवदारु' निबंध के जरिए लेखक कहना चाहते हैं कि समस्याओं के सामने देवदारु पेड़ के समान अटल रहना चाहिए। देवदारु काल-परिवर्तन के साथ अपने को बदले बिना अपनी प्रतिष्ठा के साथ खड़े रहते हैं, उसी प्रकार हम भी चाहे परिवार में हो या समाज में अपने अस्तित्व को हमेशा बनाया रखना चाहिए। देवदारु वृक्ष को हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने एक प्रतीक के रूप में पाठक के सामने रखा है। देवदारु के साहित्यिक महत्व के बारे में भी उन्होंने बताया है। देवदारु वृक्ष से संबंधित सभी तथ्यों और मिथकों को सही ढंग से समेटने में द्विवेदी जी सफल हुए हैं।

4.3.9 'हिन्दी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' – रामविलास शर्मा

रामविलास शर्मा (1912-2001) का परिचय –

डॉ. रामविलास शर्मा हिन्दी के प्रसिद्ध मार्क्सवादी आलोचक हैं। मार्क्सवादी समीक्षा को उन्होंने अपने निबन्धों एवं ग्रन्थों द्वारा स्थान प्रदान किया। अपने जीवन के उत्तरकाल में उन्होंने भाषा, इतिहास, संस्कृति एवं वैदिक साहित्य पर महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इन्होंने प्रेमचंद, निराला, रामचन्द्र शुक्ल, भारतेन्दु, महावीरप्रसाद द्विवेदी पर स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखे हैं। रामविलास शर्मा के महत्वपूर्ण निबंध-संग्रहों में 'प्रगति और परंपरा' (1949), 'साहित्य और संस्कृति' (1949), 'भाषा साहित्य और संस्कृति' (1954), 'प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ' (1954), 'लोक जीवन और साहित्य' (1955), 'स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य' (1956), 'विराम चिह्न' (1957), 'परम्परा का मूल्यांकन' (1981), 'आस्था और सौंदर्य' (1961), 'साहित्य- स्थायी मूल्य और मूल्यांकन' (1968), 'परम्परा का मूल्यांकन' (1981), 'भाषा युग- बोध और कविता' (1981), कथा-विवेचन और गद्य-शिल्प' (1982), 'भारतेंदु युग और हिन्दी भाषा की विकास परंपरा' (1985) सम्मिलित हैं।

'हिन्दी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध का आशय

बाबू शिवपूजन सहाय पुरानी पीढ़ी के बुजुर्ग साहित्यकार हैं। साहित्यकार उनसे मिलते, तो उनकी सज्जनता, शिष्टता और विनम्रता से बेहद प्रभावित होते थे। फिर भी उनका रंग-ढंग समझना आसान नहीं था। हिंदी के महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की उम्र में वे बड़े थे। फिर भी दोनों का व्यवहार सहज मित्र जैसा था। हिन्दी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय निराला पर अपने अतुल अधिकार और स्नेह की प्रसन्नता कभी छिपाते नहीं थे। निराला जी का भी उनपर बड़ा स्नेह था। वे एक युगप्रवर्तक महाकवि निराला जी के साथ थे, मानो उनकी कृपा-दृष्टि की उन्हें तनिक भी चिन्ता नहीं थी।

लेखक ने सहाय जी से निराला जी के सम्बन्ध में संस्मरण लिखने का निवेदन किया। तो उन्होंने दो टूक मना कर दिया और कहा कि श्री. निराला जी के विषय में मैं यदि लिखूँगा तो हिन्दी-संसार उसे पसन्द

नहीं करेगा। संस्मरण लिखने में वास्तव में उन्हें प्रेतबाधा का भय न था, भय था सजीव भूतों से यानी तत्कालीन समीक्षक, आलोचक, साहित्यकारों का कठोरतम और कटुतम सत्य प्रकट होने पर कुछ स्वर्गीय मित्रों की आत्मा को कष्ट होगा। कुछ लोगों की आत्मा शाप देगी तथा कई जीवित सज्जन मानहानि के लिए तंग करेंगे। इसलिए उन्होंने निराला जी पर संस्मरण लिखा नहीं। सहाय जी वर्षो तक दर-दर भटककर यह सीख चुके थे कि वर्तमान समाज में सच बोलने से बढ़कर दूसरा पाप नहीं है। निराला का चित्र उनके सामने था; दूसरा निराला बनने के लिए वे ज़रा भी उत्सुक न थे।

अपने अन्तिम दिनों में विशेषकर निराला जी के निधन के बाद-उन्होंने बहुत-से संस्मरण लिखे। सच्चाई यह है कि उन्होंने जो कुछ लिखा है, वह आंशिक सत्य है; महत्त्वपूर्ण कटु सत्य को प्रकट न करने में ही उन्होंने बुद्धिमानी समझी। वर्तमान समाज-व्यवस्था में सत्य पर पर्दा डालने के लिए किसी डिक्टेटर के आदेशों की ज़रूरत नहीं है। समाज के स्वार्थी-जन साहित्यकारों को बाध्य करते हैं कि वह अपनी खैर चाहता हो तो सच्चाई के पीछे बहुत न पड़े। शिवपूजन जी मतवाला-मण्डल के सदस्य थे। 'मतवाला' और 'जागरण' में अपनी चुटीली हास्यरस की टिप्पणियों के लिए वे विख्यात थे। 'साहित्य' की एक टिप्पणी में उन्होंने रूपनारायण पाण्डेय जी का ऐसा शब्दचित्र आँका था, जो किसी बहुत ऊँचे दर्जे के कलाकार के लिए ही सम्भव था। वे कलाकार थे। कलाप्रेमी थे। कलाकारों के भक्त थे। अपनी बातचीत में इस कलाप्रियता का परिचय देते थे। निराला जी की तरह आनन्द और उल्लास, व्यंग्य-विनोद और परिहास से उन्हें सहज स्नेह था।

शिवपूजन जी गृहस्थी के भार से दबे हुए थे। जीविका के लिए उन्हें अथक परिश्रम करना पड़ता था। ज़िन्दगी के धपेड़ों ने उन्हें ध्वस्त करके उल्लास की भूमि में करुणा का स्रोत प्रवाहित किया। निराशा और थकन, अनचाही परिस्थितियों में निरानन्द परिश्रम की वेदना उन्हें अनुभव करनी पड़ी। उम्र के हिसाब से सहाय जी को परिस्थिति से विवश होकर अधिक परिश्रम करना पडा है। इस कारण उनकी स्मृतिशक्ति कम हुई है। तन-मन की क्षमता क्षीण हुई है। मस्तिष्क और नेत्र पर ज़बरदस्ती करने से वे बहुत परेशान थे। उनकी विनम्रता के नीचे छिपा हुआ उनका कठिन जीवन-संघर्ष, उनकी अपार थकन और निस्सीम वेदना उनके अधिकांश प्रशंसकों की दृष्टि से ओझल रही है। बाबू श्यामसुन्दर दास की तरह उनके नाम के साथ हमेशा बाबू शब्द जुड़ा रहा। स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद वे आचार्य हो गए। हिंदी के यशस्वी लेखक और पत्रकार आचार्य शिवपूजन सहाय को पद्मभूषण आज़ादी के बाद 1960 में भले ही मिला, पर वह साहित्य- जगत् में 'हिन्दी-भूषण' के नाम से पहले ही विख्यात हो गए थे और यह उपाधि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान उन्हें दी थी।

आखिर 'हिन्दी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' ऐसा निबंध है, जिसमें संस्मरण और रेखाचित्र के तत्त्व घुलमिल गए हैं। यहाँ एक साहित्यकार के साहित्यिक अवदान, सत्यनिष्ठा, जीवन-संघर्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। भाषा की प्रांजलता, तथ्यों का प्रस्तुतिकरण, वस्तुनिष्ठता के साथ संवेदनात्मक संस्पर्श शुक्ल जी के निबंधों की याद दिलाता है। शिवपूजन सहाय के पत्रों के अंशों का उपयोग करके इसे आत्मीय संस्पर्श दिया गया है। बाबू शिवपूजन सहाय ने उपन्यास, कहानी, निबंध, जीवनी, संस्मरण, बाल-साहित्य

तथा व्यंग्य-विनोद आदि विविध विधाओं पर लेखनी चलाकर उन्होंने साहित्य-सेवा का प्रशंसनीय कार्य किया है। उनके द्वारा रचित रचनाएँ साहित्य गुणवत्ता और परिमाण, दोनों दृष्टियों से बहुआयामी हैं।

4.3.10 'जमुना के तीरे-तीरे' – विद्यानिवास मिश्र

विद्यानिवास मिश्र (1926-2005) **का परिचय–**

विद्यानिवास मिश्र ललित निबंधकार के रूप में विशेष प्रसिद्ध हैं। सांस्कृतिक विरासत के प्रति अहंभाव, लोक-जीवन में आस्था और गहरी मानवतावादी दृष्टि इनके निबन्धों को विशिष्ट बनाती है। कहीं-कहीं परम्परा के प्रति अतिशय लगाव दिखाई देता है, लेकिन अपने परिवेश के प्रति सजगता भी है। व्यथा और निराशा में समकालीन बोध व्यंजित होता है। वे संस्कृत शब्दावली के साथ लोक-जीवन में प्रचलित देशज शब्दों एवं भोजपुरी कहावतों को गूँथते जाते हैं, लेकिन भाषा की प्रवाहिता को नुकसान नहीं होता। उनके निबंधों में- 'गाँव का मन', 'छितवन की छाँह', 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है', 'तुम चन्दन हम पानी', 'शेफाली झर रही है', 'वसन्त आ गया हैं पर कोई उत्कंठा नहीं', 'आँगन का पँछी और बनजारा मन', 'परम्परा बन्धन नहीं' आदि उनके प्रसिद्ध निबंध हैं। विद्यानिवास मिश्र जी के निबंधों में भावात्मक, वर्णनात्मक, समीक्षात्मक, विचारात्मक व संस्मरणात्मक आदि का समावेश है। आपकी भाषा संस्कृतनिष्ठ है। भाषा में उर्दू, अंग्रेजी के शब्द भी मिलते हैं।

'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध का आशय

'जमुना के तीरे-तीरे' यह ललित निबंध है। लेखक ने जमुना नदी को प्रतीक बनाकर मनुष्य जाति का जीवन किस तरह से जिया जाता है, इस संबंध में जानकारी देने का प्रयास किया है। जमुना नदी के किनारे चलते समय मनुष्य को नदी के पानी में उतरने का मोह होता है, परंतु प्रत्यक्ष रुप में जब वह नदी के पानी में उतरना चाहता है, तो उसे नदी में डूबने का भय निर्माण हो जाता है, ठीक उसी तरह से जिस तरह मनुष्य के मन में संसार तथा सांसारिक जीवन के प्रति आकर्षक तो रहता है, परंतु मन में इस बात का भय भी बना रहता है की संसाररुपी नाव में बैठकर दूसरे किनारे तक पहुँचूँगा या नहीं। इसका भय सदैव उसके मन में बना रहता है। जिस प्रकार नाव में बैठकर यात्री दूसरे किनारे पहुँचने की आकांक्षा रखते हैं, किंतु जाते समय अनेक तरह की समस्याएँ उनको सताती रहती हैं, जैसे की अचानक आँधी या तुफान का आ जाना, या फिर नाव में छेद पड़ जाना। ऐसी अवस्था में नाव में बैठे हुए यात्री सुरक्षित रूप से दूसरे किनारे तक नहीं पहुँच पाते। उन्हें किनारे तक पहुँचने के लिए अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है और तभी जाकर कुछ लोगों को किनारा प्राप्त होता है। वैसे ही विद्यानिवास मिश्र जी ने इस निबंध के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है की संसाररुपी नाव को भी किनारे तक पहुँचना मुश्किल हो जाता है। मनुष्य जाति को सांसारिक जीवन व्यतीत करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उसके जीवन में कभी सुख आता है तो कभी दुःख। इस अवस्था में पारिवारिक जिम्मेदारी निभाना मुश्किल हो जाता है। अनेक कठिनाइयाँ उसके समक्ष आ कर खडी हो जाती हैं। कई लोगों को तो इस सांसारिक जीवन से ऊब आती है। उनके जीवन की

लालसा ही समाप्त हो जाती है। उनके मन में जीवन और संसार के प्रति कुछ आकर्षण ही दिखाई नहीं देता। वे आत्मघात कर लेते हैं। अपने जीवन को समाप्त कर देते हैं।

मनुष्य को सांसारिक जीवन बिताते समय तरह-तरह की कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है। खुद के बारे में और परिवार के बारे में सोचना ही है, परंतु समाज और दुनिया के बारे में भी सोचना पड़ता है। जीवन व्यतीत करते समय कई ऐसी परिस्थितियाँ निर्माण हो जाती हैं, जिससे उभरना मनुष्य के लिए असंभव हो जाता है। नाव में सफर करते समय भी जल में वास्तव करनेवाले प्राणियों का भय बना रहता है कि अचानक नाव का रूप बदल गया और यात्री पानी में गिर गए तो पानी में वास्तव करवाले प्राणी उन्हें निगलने में तैयार ही रहते हैं। इस तरह से सांसारिक जीवन में भी बहुत से लोग ऐसे होते हैं, जिनसे दूसरों की तरक्की या दूसरों का विकास देखा नहीं जाता। उस आगे जानेवाले व्यक्ति को कैसे रोका जाए, इसके बारे में ही निरंतर रुप से तरह-तरह के षड़यंत्र कुछ लोग बंनाते रहते हैं। इस निबंध के माध्यम से विद्यानिवास मिश्र जी को यही बात स्पष्ट करनी है की मनुष्य अपने सांसारिक जीवन में आसानी के साथ सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। वह कठिन परिश्रम और हौसलों के बल पर ही इस संसारुपी नाव में बैठकर किनारे तक पहुँच पाता है।

निबंध में भारतीय संस्कृति और पारंपरिक जीवन के प्रति अतिशय लगाव और विपरित होते जीवन लय के कारण उत्पन्न व्यथा स्पष्ट रूप से प्रकट हुई है। बुद्धिवाद और अवसरवादिता पर व्यंग्य करते हुए निबंधकार भारतीय परिपाटी के प्रति आस्था प्रकट करते हैं।

4.3.11 'पहला सफेद बाल' – हरिशंकर परसाई

हरिशंकर परसाई (1924-1995) **का परिचय–**

हरिशंकर परसाई हिन्दी के ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने व्यंग्य को साहित्य में प्रतिष्ठा दिलाई। इनके निबन्धों से हिन्दी में व्यंग्यात्मक निबन्धों का प्रारम्भ हुआ। वे हिंदी के पहले रचनाकार हैं, जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया। परसाई के निबन्धों में परिस्थितियों का सूक्ष्म निरीक्षण एवं उनका व्यापक जीवन-अनुभव प्रकट हुआ है। प्रगतिशील दृष्टिकोण और गहरी सामाजिक निष्ठा उनके निबन्धों को अलग पहचान देते हैं।

'पहला सफेद बाल' निबंध का आशय–

हरिशंकर परसाई के निबंध साहित्य के विकास के प्रथम चरण में सन् 1963 में 'बेईमानी की परत' शीर्षक से निबंध-संग्रह प्रकाशित हुआ। 'पहला सफेद बाल' निबंध इसी संग्रह में निहित है। प्रस्तुत निबंध में लेखक ने नौजवानों को प्रेरणा देते हुए सचेत किया है कि यौवन सिर्फ काले बालों का नाम नहीं है। आज लेखक को उसके कान के पास काले बालों के बीच एक सफेद बाल दिखाई दिया और उसने लेखक के मन को झकझोर दिया। अब तक लेखक अपने काले बालों को देखकर प्रसन्न होता था और वार्द्धक्य को अँगूठा दिखाता था। लेखक को इस बात का दुख हो रहा है कि सिर पर सफेद कफन बुना जा रहा है, वह यौवन की लाश को ढक लेगा, जो बूढ़े ही जन्मे हैं उन्हें दुःख नहीं होगा।

लेखक को लगता है कि वास्तव में आईना बड़ा दयालु होता है। वह हमारी विकृति को सुधारता है, हमारे चेहरे को सुड़ौल बनाने में सहायता करता है, परंतु आज वह एकाएक क्रूर कैसे हो गया, वह एक सफेद बाल को छिपा नहीं सका? उर्दू कवियों के आईने संवेदनशील होते हैं, परंतु यह हिंदी लेखक का आईना है। मगर आईने का कोई दोष नहीं है। बाल तो लेखक का अपना सफेद हुआ है, बाल को देखकर लेखक का साहस छूट रहा है। क्योंकि आज किले में पहली बार सुरंग लगी है दुश्मन को आते अब क्या देर लगेगी? लेखक के मन में बाल को उखाड़ने का विचार आया, परंतु लेखक ने सुना है, कि एक सफेद बाल उखाड़ने से वहाँ एक गुच्छा सफेद हो जाता है, यह सफेद बाल रावण जैसा वरदानी है। लेखक के चाचा ने सफेद बाल उखाड़ने के लिए एक नौकर रखा था, पर थोड़े ही समय में उनका सारा सिर सफेद हो गया था। जिससे बाल काले होते हैं, वह तेल लगाने का विचार लेखक के मन में आया, पर इससे शत्रु मरेगा नहीं, उसकी वरदी बदल जाएगी। वे बुढ़ापे से हार मानकर यौवन का ढोंग रचते हैं। क्योंकि केवल काले बालों से यौवन का भ्रम उत्पन्न किया नहीं जा सकता है। यह सफेद बाल धीरे-धीरे सभी बालों को अपनी ओर मिला लेगा।

लेखक ने देखा है कि सफेद बाल के आते ही, अब तक क्या पाया, आगे क्या करना है, आदि के बारे में आदमी हिसाब लगाने लगता है, सफेद बालों के मौसम में बड़े-बड़े समझौते होते हैं। बाल तो हृदय से नहीं उगता है, वह सतही है। यौवन सिर्फ काले बालों का नाम नहीं है, यौवन नवीन भाव, नवीन विचार ग्रहण करने की तत्परता का नाम है। यौवन साहस, उत्साह, निर्भरता और खतरे भरी जिंदगी का नाम है। यौवन लीक से बच निकलने की इच्छा का नाम है। और सबसे ऊपर, बेहिचक बेवकूफी करने का नाम यौवन है।

लेखक अपने मन को समझा रहा है कि सफेद बाल से क्या होता है? यह तो पहला सफेद बाल है और अगर तू ढीला नहीं होता, तो क्या बिगड़ने वाला है। सफेद बाल का दिखना तो एक पर्व है। दशरथ को कान के पास सफेद बाल दिखे, तो उन्होंने राम को राजगद्दी देने का संकल्प किया। परंतु लेखक के पास कोई उत्तराधिकारी नहीं और सौंपने के लिए भी कुछ है नहीं। लेखक को लगता है कि उसका कोई पुत्र होता तो वह मुश्किल में पड़ जाता। क्योंकि राज-पाट के दिन चले गए, अब तो धन-दौलत के दिन हैं। परंतु लेखक के पास ऐसा कोई है नहीं। परंतु यह पर्व बिना दिए कैसा चला जाएगा? लेखक की पीढ़ी के बाल तो जन्म से ही सफेद हैं। उनके पास केवल भविष्य है और वह भी आने वाली पीढ़ी का है। अब लेखक के पास विराट भविष्य है और उत्तराधिकारी तो पीढ़ी के पुत्र हैं। लेखक अब अपनी पीढ़ी के समस्त पुत्रों को विराट भविष्य दे रहा है। यद्यपि अब वह मूर्त नहीं है, परंतु लेखक की पीढ़ी उसे मूर्त करने में जुटी है। लेखक की पीढ़ी अब धँस रही है, आने वालों के लिए भविष्य बचा है। वह उनके लिए वर्तमान बनकर आएगा। लेखक की पीढ़ी के पास कोई वर्तमान ही नहीं था। वे हमें भविष्य दे रहे हैं। वे नवनिर्माण में अपने आप को मिटा रहे हैं। वे जानते हैं कि काम बंद करने और मरने का क्षण एक ही होता है।

लेखक कहते हैं कि हम ययाति-जैसे स्वार्थी नहीं हैं। ययाति पुत्र की जवानी लेकर युवा हो गया था, उसने बाल के साथ मुँह भी काला कर दिया था। लेखक की पीढ़ी नींव में धँस रही है और आने वालों को

कलश दे रही है। इस प्रकार लेखक ने यहाँ ययाति के मिथक के द्वारा नौजवानों का वर्तमान और भविष्य छीन लेने वाली बुजुर्ग पीढ़ी पर करारा व्यंग्य किया है। साथ ही दशरथ के मिथक के द्वारा नौजवानों को प्रेरणा देते हुए यौवन के प्रति सचेत किया है।

4.4 स्वयं–अध्ययन के लिए प्रश्न

(अ) समग्र पाठ्यक्रम पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. बालकृष्ण भट्ट .... युग के रचनाकार हैं।

   अ) द्विवेदी युग ब) भारतेंदु युग क) शुक्ल युग ड) शुक्लोत्तर युग

2. 'जगत्-प्रवाह' निबंध में जनम-मरण के क्लेश से छुटकारा पाने के लिए .... की नौका पर चढ़ने को कहा है।

   अ) लोभ ब) बैर क) धैर्य ड) ईर्ष्या

3. बडे-बडे तपस्वी, मनस्वी, न्यायशील .... के कारण फिसल जाते हैं।

   अ) रूपया ब) रौब क) तपस्या ड) इनमें से कोई नहीं

4. .... का होना मनुष्य के लिए जीवित होने का संकेत है।

   अ) नाक ब) कान क) दांत ड) जीभ

5. लेखक दाँत-रोटी के समान .... को अपनत्व के साथ रहने का संकेत देते हैं।

   अ) हिन्दू- मराठों ब) हिन्दू-मुसलमानों क) पेड-पौधों ड) इनमें से कोई नहीं

6. .... के संचित कोष का नाम साहित्य है।

   अ) बुद्धिजिवियों ब) रचनाकारों क) ज्ञानराशि ड) दानराशि

7. मस्तिष्क के विकास का एकमात्र साधन .... है।

   अ) साहित्य ब) कसरत क) कर्म ड) मोबाईल

8. क्रोध शांति .... करनेवाला मनोविकार है।

   अ) प्रदान ब) भंग क) प्राप्त ड) उत्कट

9. क्रोध अंधा होता है, क्योंकि-

   अ) उसकी आँखें नहीं होतीं। ब) इसमें परिणाम की चिंता नहीं होती।

   क) वह बहुत परोपकारी होता है। ड) वह चल नहीं सकता।

10. जब क्रोध हमारे हृदय में बहुत दिनों तक टिका रहता है, तो वह.........

अ) वैर कहलाता है।　　　　ब) अपने आप शांत हो जाता है।

क) अमर्ष कहलाता है।　　　　ड) चिड़चिड़ाहट बन जाता है।

11. सरदार पूर्णसिंह .... युग के निबंधकार हैं।

अ) भारतेन्दु युग　ब) द्विवेदी युग　क) शुक्ल युग　ड) उपर्युक्त में से कोई नहीं

12. ''आचरण के मौन व्याख्यान से मनुष्य को एक नया जीवन प्राप्त होता है।'' यह कथन किसका है।

अ) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी　　ब) बाबू श्यामसुन्दर दास

क) चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'　　ड) सरदार पूर्णसिंह

13. सरदार पूर्णसिंह के अनुसार आचरण की गुप्त गुहा में क्या प्रवेश नहीं कर सकता है?

अ) शब्द और वाणी　　ब) भाव और विवेक

क) धर्म और राजनीति　　ड) उपर्युक्त सभी

14. मैदान जोते जा रहे हैं, बाग उजाड़े जा रहे हैं, किसके लिए?

अ) गेहूँ के लिए　　ब) गुलाब के लिए

क) शान्ति के लिए　　ड) खुशी के लिए

15. गेहूँ और गुलाब के बीच आवश्यक है –.....।

अ) विरोध　ब) सन्तुलन　क) शान्ति　ड) होड़

16. गुलाब .... की दुनिया का प्रतीक है।

अ) स्वर्ग　ब) धरती　क) मानस　ड) मस्तिष्क

17. साहित्य को .... प्रोपेगण्डा का साधन बनाया जा रहा है।

अ) सामाजिक　　ब) धार्मिक

क) सांस्कृतिक　　ड) राजनीतिक उत्तर- राजनीतिक

18. साहित्य और जीवन का सम्बन्ध हम साहित्य-समीक्षा की .... बना सकते हैं।

अ) स्थायी कसौटी　　ब) अस्थायी कसौटी

क) राजनितिक कसौटी　　ड) इनमें से कोई नहीं

19. देवदारु वृक्ष .... का मूक साक्षी है।

अ) इतिहास और राजनीतिक　　ब) इतिहास एवं संस्कृति

क) संस्कृति और धार्मिक　　ड) मानव और प्राणि

20. जिंदगी के प्रतिकूल परिस्थितियों और विषमताओं में गौरव के साथ जीने की शिक्षा .... हमें प्रदान करता हैं।

अ) गुलाब　　ब) क्रोध　　क) देवदारु　　ड) दाँत

21. आचार्य शिवपूजन सहाय को 'हिंदी-भूषण' नाम से सम्बोधित किसने किया था?

अ) निराला　　ब) अज्ञेय　　क) बच्चन　　ड) द्विवेदी

22. ''वर्तमान समाज में सच बोलने से बढ़कर दूसरा पाप नहीं है।'' यह वाक्य किस निबंध से है?

अ) हिंदी-भूषण शिवपूजन सहाय　　ब) जमुना के तीरे-तीरे

क) पहला सफेद बाल　　ड) क्रोध

23. जमुना नदी को .... का प्रतीक बनाया है।

अ) जानवर　　ब) पशु　　क) बुद्धि　　ड) मनुष्य जाति के जीवन

24. .... के बल पर ही संसारुपी नाव में बैठकर किनारे तक पहुँचा जा सकता है।

अ) भय　　ब) ताकत

क) कठिन परिश्रम और हौसलों　　ड) इनमें से कोई नहीं

25. 'पहला सफेद बाल' परसाई जी का .... निबंध है।

अ) गंभीर　　ब) व्यंग्य　　क) विवेचनात्मक　　ड) मधुर

आ) उचित मिलान कीजिए।

1. निम्नलिखित निबंधों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची ।	सूची ।।
1. जगत्-प्रवाह	अ) महावीरप्रसाद द्विवेदी
2. दाँत	ब) रामचंद्र शुक्ल
3. साहित्य की महत्ता	क) बालकृष्ण भट्ट
4. क्रोध	ड) प्रतापनारायण मिश्र

उत्तर-

1. 1. (अ), 2. (ब), 3. (क), 4. (ड)
2. 1. (ब), 2. (अ), 3. (क), 4. (ड)
3. 1. (अ), 2. (ब), 3. (अ), 4. (ड)
4. 1. (क), 2. (ड), 3. (अ), 4. (ब)

2. निम्नलिखित निबंधों को उनके रचनाकारों के साथ सुमेलित कीजिए।

1. आचरण की सभ्यता	अ) हज़ारीप्रसाद द्विवेदी
2. गेहूँ बनाम गुलाब	ब) सरदार पूर्णसिंह
3. साहित्य और जीवन	क) नन्ददुलारे वाजपेयी
4. देवदारु	ड) रामवृक्ष बेनीपुरी

उत्तर-

1. 1. (अ), 2. (ब), 3. (क), 4. (ड)
2. 1. (ब), 2. (ड), 3. (क), 4. (अ)
3. 1. (अ), 2. (ब), 3. (ड), 4. (क)
4. 1. (अ), 2. (क), 3. (ब), 4. (ड)

3. निम्नलिखित रचनाकारों को उनके निबंधों के साथ सुमेलित कीजिए।

1. रामविलास शर्मा	अ) पहला सफेद बाल
2. विद्यानिवास मिश्र	ब) गेहूँ बनाम गुलाब
3. हरिशंकर परसाई	क) हिन्दी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय
4. रामवृक्ष बेनीपुरी	ड) जमुना के तीरे-तीरे

उत्तर-

1. 1. (अ), 2. (ब), 3. (ड), 4. (ब)
2. 1. (ब), 2. (अ), 3. (क), 4. (ड)
3. 1. (क), 2. (ड), 3. (अ), 4. (ब)
4. 1. (अ), 2. (ब), 3. (क), 4. (ड)

4. निम्नलिखित पंक्तियों को उनके निबंधों से सुमेलित कीजिए।

1. धीरज धरे सौ उतरै पारा	अ) जमुना के तीरे-तीरे
2. दीर्घदंताः क्वचिन्मूर्खाः	ब) गेहूँ बनाम गुलाब
3. गहना कर्मनो गतिः	क) दाँत
4. शौक दीदार अगर है, तो नजर पैदा कर	ड) जगत्-प्रवाह

उत्तर -

1. 1. (अ), 2. (ब), 3. (क), 4. (ड)
2. 1. (अ), 2. (ब), 3. (ड), 4. (क)
3. 1. (अ), 2. (ड), 3. (क), 4. (ब)
4. 1. (ड), 2. (क), 3. (ब), 4. (अ)

5. निम्नलिखित निबंधकारों को उनकी पत्रिका से सुमेलित कीजिए।

1. बालकृष्ण भट्ट	अ) तरुण भारत
2. प्रताप नारायण मिश्र	ब) सरस्वती
3. महावीरप्रसाद द्विवेदी	क) हिंदी प्रदीप
4. रामवृक्ष बेनीपुरी	ड) ब्राह्मण

उत्तर-

1. 1. (अ), 2. (ब), 3. (क), 4. (ड)
2. 1. (अ), 2. (ब), 3. (ड), 4. (क)
3. 1. (क), 2. (ड), 3. (ब), 4. (अ)
4. 1. (ड), 2. (क), 3. (ब), 4. (अ)

इ) नीचे लिखे प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए।

1. निम्नलिखित निबंधकारों के कार्यकाल का सही क्रम पहचाने।
    1. हरिशंकर परसाई, रामविलास शर्मा, सरदार पूर्णसिंह, बालकृष्ण भट्ट
    2. बालकृष्ण भट्ट, सरदार पूर्णसिंह, रामविलास शर्मा, हरिशंकर परसाई
    3. सरदार पूर्णसिंह, हरिशंकर परसाई, रामविलास शर्मा, बालकृष्ण भट्ट

4. हरिशंकर परसाई, बालकृष्ण भट्ट, रामविलास शर्मा, सरदार पूर्णसिंह

2. निम्नलिखित निबंधकारों के कार्यकाल का सही क्रम पहचाने।

   1. प्रतापनारायण मिश्र, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामचंद्र शुक्ल, नंददुलारे वाजपेयी
   2. रामचंद्र शुक्ल, प्रतापनारायण मिश्र, नंददुलारे वाजपेयी, हजारीप्रसाद द्विवेदी
   3. हजारीप्रसाद द्विवेदी, प्रतापनारायण मिश्र, रामचंद्र शुक्ल, नंददुलारे वाजपेयी,
   4. प्रतापनारायण मिश्र, रामचंद्र शुक्ल, नंददुलारे वाजपेयी, हजारीप्रसाद द्विवेदी

3. निम्नलिखित वाक्य का सही कारण पहचाने।

   आचरण की सभ्यता में लेखक ने हिंदुओं की अवनति का प्रमुख कारण इसे बताया है-

   1. अतीत के गौरव में खोए रहना
   2. पूर्वजों के प्रेम जीवन को जानकर अहंकार में प्रसन्न रहना
   3. ऋषियों के अनुकरण की शक्ति दिखाई नहीं देती
   4. उपरोक्त सभी

4. निम्नलिखित निबंधों में से गलत कथ्य को पहचाने।

   1. गेहूँ बनाम गुलाब - इंद्रियों पर संयमन रखने का महत्व
   2. क्रोध - विवेक पर संयम रखने का महत्व
   3. आचरण की सभ्यता- सदाचार का महत्व
   4. पहला सफेद बाल- साहित्य का महत्व

5. निबंध की शैलीगत विशेषता के आधार पर निबंधकार की गलत शैली को पहचाने।

   1. सरदार पूर्णसिंह - भावात्मक
   2. नंददुलारे वाजपेयी - चिंतनात्मक
   3. हजारीप्रसाद द्विवेदी - ललित
   4. रामविलास शर्मा - व्यंग्य

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ-

अभिषिक्त - जिसका अभिषेक हुआ हो, विधिपूर्वक स्नान

अकिल - अक्ल, ज्ञान, बुद्धि

करील - ऊसर और कँकरीली भूमि में होनी वाली एक प्रकार की कँटीली झाडी

चेतन - जिसमें सोचने-समझने की शक्ति हो

दोआबा - आपस में मिलनेवाली दो नदियों के बीच की भूमि या प्रदेश

धारणा - बोध या विचार

नाद - शब्द, ध्वनि

नेती - योग की एक क्रिया

परिपाटी - श्रेणी, सिलसिला, रीति, प्रणाली

परिज्ञान - विशेष ज्ञान

सिद्धार्थक - सफेद सरसों, अंजिर

सिद्धांत - विचार एवं तर्क द्वारा निश्चित किया हुआ मत, उसूल

समिधा - हवन में जलाने की लकड़ी

लियाकत - योग्यता, सामर्थ्य

हस्तामलकवत् - हाथ में रखे आँवले की तरह

हिमाकत - बेवकूफी, मूर्खता

क्षुधा - भूख

मुहावरों के अर्थ

अकिल (अक्ल) भिड़ाना - कई प्रकार के उपाय सोचना या विचार करना

पुलकित होना - ख़ुशी से गदगद होना, प्रसन्न होना

बाल बाँका न होना - किसी भी प्रकार की हानि न पहुंच पाना

हक्का बक्का रह जाना - हैरान रह जाना

हड्डी पसली चूर-चूर हो जाना - बहुत घायल होना

हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और- कहना कुछ और करना कुछ

त्राहि-त्राहि कर उठना - बचाव या रक्षा के लिए पुकारना

4.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर-

(अ) 1. भारतेंदु 2. धैर्य 3. रूपया 4. दाँत

5. हिन्दू-मुसलमानों 6. ज्ञानराशि 7. साहित्य 8. भंग

9. इसमें परिणाम की चिंता नहीं होती। 10. अमर्ष कहलाता है।

11. द्विवेदी युग 12. सरदार पूर्णसिंह 13. शब्द और वाणी 14. गेहूँ के लिए

15. सन्तुलन 16. मस्तिष्क 17. राजनीतिक 18. स्थायी कसौटी

19. इतिहास एवं संस्कृति 20. देवदारु 21. निराला

22. हिंदी-भूषण शिवपूजन सहाय 23. मनुष्य जाति के जीवन

24. कठिन परिश्रम और हौसलों 25. व्यंग्य

आ) 1) 1. (क), 2. (ड), 3. (अ), 4. (ब)

2) 1. (ब), 2. (ड), 3. (क), 4. (अ)

3) 1. (क), 2. (ड), 3. (अ), 4. (ब)

4) 1. (ड), 2. (क), 3. (ब), 4. (अ)

5) 1. (क), 2. (ड), 3. (ब), 4. (अ)

इ) 1. बालकृष्ण भट्ट, सरदार पूर्णसिंह, रामविलास शर्मा, हरिशंकर परसाई

2. प्रतापनारायण मिश्र, रामचंद्र शुक्ल, नंददुलारे वाजपेयी, हजारीप्रसाद द्विवेदी

3. उपरोक्त सभी

4. पहला सफेद बाल- साहित्य का महत्व

5. रामविलास शर्मा- व्यंग्य

4.7 सारांश

(1) 'जगत्-प्रवाह' निबंध में लेखक ने सृष्टि से एकरूप, तादात्म्य पाने पर ही मनुष्य-प्राणि वास्तव में सुखी, संपन्न बन सकता है। सृष्टि के बिना मानव का कोई अस्तित्व नहीं है। यथा- भौतिक कामना और लोभ जैसे नदी के जल-प्रवाह से मानव पार जाना चाहते हैं तो धैर्य की नौका पर चढ़ने की लेखक ने अपील की है। मानव स्वार्थी है। सूर्यदेव के प्रतिदिन उदय और अस्त से मानव का आयुष्य भी घटना तय है। यदी महाप्रवाहपूर्ण भव-सागर को पार करना चाहते हैं, तो मानव के पास धैर्य एकमात्र उत्तम उपाय होने की बात लेखक बालकृष्ण भट्ट ने कहीं है।

(2) 'दाँत' निबंध के रचनाकार प्रतापनारायण मिश्र ने दाँतों की तुलना हीरे, मोती, मणिक से की है। यह अन्य अवयवों से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। दाँत के माध्यम से व्यक्तित्व की पहचान होती है। दाँत ही मनुष्य के बाह्य-सौंदर्य में और भी निखार लाता है। मुख की सारी शोभा दाँत पर ही निर्भर है। मनुष्य की

मानसिकता भी दाँत पर ज्यादा निर्भर है। यदि दाँत नहीं हैं, तो मनुष्य खिन्नता से ग्रस्त हो जाएगा। इसीलिए दाँतों का होना मनुष्य के लिए जीवित होने का संकेत बताया है। तात्पर्य- दाँत को निकालना अर्थात स्वार्थ से परिपूर्ण अंधे लोगों को समाज से बाहर निकालने के समान है। लेखक महोदय दाँतों का महत्व बताते हुए कहते हैं- आज हमारे देश के दिन बुरे हैं। हमें जिस प्रकार बत्तीस दाँतों के बीच जीभ रहती है, उसी प्रकार रहना चाहिए। इस प्रकार 'दाँत' निबंध के ज़रिए नैतिकता का पाठ पढाने का कार्य निबंधकार ने किया है।

(3) 'साहित्य की महत्ता' निबंध के जरिए महावीरप्रसाद द्विवेदी संदेश देते हैं कि यदि हमें जीवित रहना है और सभ्यता की दौड़ में अन्य जातियों की बराबरी करना है तो हमें श्रमपूर्वक, बड़े उत्साह से, सत्साहित्य का उत्पादन और प्राचीन साहित्य की रक्षा करनी चाहिए। साहित्य ही ऐसा साधन है जो समाज की दिशा बदल सकता है। साहित्य में जो शक्ति छिपी रहती है, वह तोप, तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पाई जाती। जो मनुष्य इतने महत्वशाली साहित्य की सेवा और अभिवृद्धि नहीं करता, वह समाजद्रोही, देशद्रोही, जातिद्रोही, आत्मद्रोही होने का करार द्विवेदी ने दिया है।

(4) 'क्रोध' के लेखक रामचंद्र शुक्ल ने मुख्यतः क्रोध बढ़ने के क्रमशः तीन कारण बताएँ हैं- पहला हमें किसी की बात बुरी लगी हो, दूसरा वह बात बुरी लगने के कारण सहन न होती हो और तीसरा सहन न होने की स्थिति में वह दुःखयुक्त क्रोध व्यक्ति के अंदर ही जमा हो जाए। क्रमशः इन तीनों स्थितियों के बाद जो क्रोध की अवस्था होती है उसे 'अमर्ष' कहते हैं। यह अमर्ष वस्तुतः वह दुःख या द्वेष है, जो विपक्षी या शत्रु का कोई उपकार अथवा बुरा न कर सकने के कारण पैदा होता है। उचित अवसर प्राप्त होने पर वह उसे पूरी तरह बरबाद कर सकता है। इस प्रकार लेखक ने दैनिक जीवन में विभिन्न अवसरों पर पैदा होने वाले क्रोध, उसके प्रकट करने के तरीके, उससे होने वाली हानियाँ, उससे होने वाले समाज के हित तथा क्रोध के विभिन्न रूपों के मनोवैज्ञानिक वर्णन कर क्रोध पर विवेक का संयम रखने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया है, ताकि क्रोध के अंधेपन में व्यक्ति अपना संतुलन ही न खो बेठे।

(5) 'आचरण की सभ्यता' निबंध के जरिए सरदार पूर्णसिंह ने आचरण की सभ्यता के रूप में जीवन-मूल्यों को संकल्पित कर एक मायने में उन्होंने प्राणिमात्र के अभ्युदय, सुख और शान्ति को ही परिभाषित किया है। मानवता की अभिवृद्धि के लिए आचरण की सभ्यता परम आवश्यक है। मानवीय मूल्यों का क्षेत्र व्यापक है। उसकी अभिव्यक्ति मन, वचन और कर्म की समष्टि में समाहित है। मानवीय मूल्यों की परख हेतु आचरण की सभ्यता को आधार मानकर प्रतिपाद्य प्रस्तुत करने में निबंधकार ने अभूतपूर्व प्रयास किया है।

(6) 'गेहूँ बनाम गुलाब' निबंध में रामवृक्ष बेनीपुरी ने सर्वप्रथम गेहूँ को भूख शांत करने वाले अनाज व श्रम का प्रतीक माना है। गुलाब मानसिक तृप्ति व विलासिता का सूचक माना है। लेखक ने दूषित मानसिकतावालों को राक्षसता का नाम दिया है। यह राक्षसता भौतिक समृद्धि की वजह से पैदा होती है, जो मानव का शोषण व उत्पीड़न करती है, उसे गुलाम बनाती है। बेनीपुरी जी का उद्देश्य मानव जीवन में गेहूँ और गुलाब में संतुलन बनाए रखने का है। अर्थात् मानव अपने इंन्द्रियों के संयमन व वृतियों के उन्नयन द्वारा श्रेष्ठ मानव बनकर भौतिक जगत की बुराईयों को दूर कर सकता है।

(7) 'साहित्य और जीवन' निबंध में नंददुलारे वाजपेयी साहित्य और जीवन में घनिष्ठ से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने की बात करते हैं। फिर भी दोनों में अन्तर रहेगा। क्योंकि साहित्य में प्रभावशाली और सुन्दर विशेषताएँ रहती हैं। लेकिन असली जिंदगी में वह मेल नहीं खातीं। साहित्य में मनुष्य का जीवन ही नहीं, जीवन की वे कामनाएँ हैं, जो पूरी जिंदगी में भी पूरी नहीं होंगी। जीवन यदि मनुष्यता की अभिव्यक्ति है, तो साहित्य में उस अभिव्यक्ति की आशा-उत्कण्ठा भी सम्मिलित है। जीवन यदि सम्पूर्णता से रहित है, तो साहित्य उसके सहित है। तभी तो उसका नाम साहित्य है।

(8) 'देवदारु' निबंध के माध्यम से हजारीप्रसाद द्विवेदी जिंदगी की प्रतिकूल परिस्थितियों और विषमताओं में गौरव के साथ जीने के लिए देवदारु हमें शिक्षा प्रदान करने की बात कहते हैं। लेखक के मन में देवदारु के प्रति गहरी श्रद्धा का भाव है। देवदारु उल्लास का भी सूचक है। देवदारु के साहित्यिक महत्व के बारे में भी बताया है। देवदारु वृक्ष से संबंधित सभी तथ्यों और मिथकों को सही ढंग से समेटने में द्विवेदी जी सफल हुए हैं। 'देवदारु' निबंध से लेखक यह कहना चाहते हैं कि मानव को भी अपनी समस्याओं के सामने देवदारु के समान अटल रहना चाहिए। देवदारु काल-परिवर्तन के साथ अपने को बदले बिना अपनी प्रतिष्ठा के साथ खड़े रहते हैं, उसी प्रकार हम भी चाहे तो परिवार में हो या समाज में, अपने अस्तित्व को हमेशा बनाए रख सकते हैं। देवदारु वृक्ष को हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने एक प्रतीक के रूप में पाठक के सामने रखा है।

(9) 'हिन्दी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय' निबंध के जरिए रामविलास शर्मा ने पुरानी पीढ़ी के बुजुर्ग साहित्यकार का निबंध क्षेत्र में योगदान, उनकी सत्यनिष्ठा, जीवन-संघर्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति की है। बाबू शिवपूजन सहाय कलाप्रेमी थे। कलाकारों के भक्त थे। हिंदी के महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी के अच्छे मित्र थे। निराला जी का भी उनपर बड़ा स्नेह था। वर्तमान समाज में सच बोलने से बढ़कर दूसरा पाप नहीं है। इस कारण शिवपूजन जी कठोरतम और कटुतम सत्य प्रकट करने से परे रहे। गृहस्थी के भार से वे दबे रहे। जीविका के लिए उन्हें अथक परिश्रम करना पड़ा। उनका मानना है की वर्तमान समाज-व्यवस्था में सत्य पर पर्दा डालने के लिए किसी डिक्टेटर के आदेशों की ज़रूरत नहीं है। समाज के निहित स्वार्थी-जन साहित्यकार को बाध्य करते हैं कि वह अपनी खैर चाहता हो तो सच्चाई के पीछे बहुत न पड़ने का संदेश देते हैं। स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद वे आचार्य हो गए। उन्हें सन् 1960 में 'पद्मभूषण' मिला। साहित्य-जगत् में 'हिन्दी-भूषण' के नाम से वे विख्यात हो गए।

(10) 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध के माध्यम से विद्यानिवास मिश्र स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य अपने सांसारिक जीवन में आसानी के साथ सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। वह कठिन परिश्रम और हौसलों के बल पर ही इस संसारुपी नाव में बैठकर किनारे तक पहुँच पाता है। भारतीय संस्कृति और पारंपारिक जीवन के प्रति अतिशय लगाव और विपरित होते जीवन लय के कारण उत्पन्न व्यथा यहाँ स्पष्ट रूप से प्रकट हुई है। बुद्धिवाद और अवसरवादिता पर व्यंग्य करते हुए निबंधकार भारतीय परिपाटी के प्रति आस्था प्रकट करते हैं।

(11) 'पहला सफेद बाल' ऐसा व्यंग्य-निबंध है, जिसमें हरिशंकर परसाई की वैचारिक परिपक्वता प्रकट हुई है। यहाँ हल्के-फुल्के ढंग से गम्भीर कथ्य को प्रस्तुत किया गया है। पहला सफेद बाल दिखने पर मनुष्य की

मानसिकता और वर्तमान परिवेश का संकेत देते हुए निबंधकार भावी पीढ़ी के प्रति अपनी आस्था प्रकट करते हैं। यहाँ लेखक ने ययाति के मिथक के द्वारा नौजवानों का वर्तमान और भविष्य छीन लेने वाली बुजुर्ग पीढ़ी पर करार व्यंग्य किया है।

4.8 स्वाध्याय–

दीर्घोत्तरी प्रश्न (उत्तर सीमा 600-800 शब्दों में)

1. 'जगत्-प्रवाह' की विशाल शक्ति का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।
2. 'दाँत' निबंध का महत्व अपने शब्दों में लिखिए।
3. 'साहित्य की महत्ता' निबंध का प्रतिपाद्य विशद कीजिए।
4. क्रोध के परिणामों को बताइए।
5. ''आचरण की सभ्यता और मानव-मूल्यों का सम्बन्ध वैसा ही है, जैसे शरीर का आत्मा के साथ।'' इस कथन का परीक्षण कीजिए।
6. गेहूँ और गुलाब की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कर लेखक के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
7. साहित्य और जीवन के संबंधों पर चर्चा कीजिए।
8. देवदारु वृक्ष को देवताओं का प्यारा वृक्ष क्यों कहा गया है? हजारीप्रसाद द्विवेदी का निबंध 'देवदारु' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
9. हिंदी-भूषण बाबू शिवपूजन सहाय के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
10. 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
11. ''पहला सफेद बाल' शीर्षक व्यंग्य-निबंध में लेखक ने बुजुर्ग पीढ़ी पर करारा व्यंग्य किया है।'' स्पष्ट कीजिए।
12. ''गेहूँ सिर धुन रहा है खेतों में, गुलाब रो रहा है बगीचों में'' से क्या तात्पर्य है?
13. 'साहित्य और जीवन' निबंध का विचार अपने शब्दों में लिखिए।
14. ''जीवन का अर्थ 'वाह' नहीं, 'आह' है; 'हँसी' नहीं, 'रुदन' है; 'स्वर्ग' नहीं, 'नरक' है'' – रामवृक्ष बेनीपुरी की बात को स्पष्ट कीजिए।

लघुत्तरी प्रश्न (उत्तर सीमा 300-400 शब्दों में)–

1. 'जगत्-प्रवाह' निबंध का सार बताइए।
2. दाँतों के लाभ पर विचार कीजिए।
3. साहित्य की सेवा न करने वाले को द्विवेदी ने देशद्रोही क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।
4. क्रोध बढ़ने के तीन कारण बताइए।
5. 'आचरण की सभ्यता' निबंध के आधार पर मानवी मूल्यों को रेखांकित कीजिए।

6. गेहूँ और गुलाब का सम्बन्ध किनसे हैं?
7. साहित्य और जीवन के आपसी सम्बन्ध को स्पष्ट कीजिए।
8. देवदारु 'देवता का काठ' क्यों कहलाया?
9. बाबू शिवपूजन सहाय के निराला के प्रति के प्रेम को व्यक्त कीजिए।
10. हरिशंकर परसाई ने यौवन के बारे में क्या बताया है?

4.9 क्षेत्रीय कार्य–

1. प्रस्तुत निबंधों में से किसी एक का मराठी में अनुवाद करने का प्रयास करें।
2. प्रस्तुत निबंध-संग्रह और न. वि. केळकर जी के निबंधों की तुलना कीजिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए–

1. जयनाथ नलिन, हिंदी निबंधकार।
2. डॉ. उपाध्याय, हिंदी निबंध के सौ वर्ष।
3. शहा (डॉ). मु. ब., हिंदी निबंधों का शैलीगत अध्ययन।
4. बाबूराम, हिन्दी निबंध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
5. मिश्र कृष्णबिहारी (सं.), सरदार पूर्ण सिंहः श्रेष्ठ ललित निबंध, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. तिवारी रामचंद्र, हिन्दी निबंध व निबंधकार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

उपयोगी इंटरनेट सूची

1. http://epgp.inflibnet.ac.in/ahl.php?csrno=18
2. htto://www.hindisamay.com/
3. http://hindinest.com/
4. htto://www.dli.ernet.in/
5. http://www.archive.org

❑❑❑